पथ के आगे भी पथ है

कहानियों का संग्रह

सुरजीत सिंह साहनी

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Surjeet Singh Sahney 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7018-950-8

Cover Design: Aman Sharma
Typesetting: Pooja Sharma

First Edition: May 2025

प्रस्तावना

"पथ के आगे भी पथ है" कहानियों की किताब के इस संग्रह में 56 कहानियाँ है और इसे मैंने 2 किताबों में प्रकाशित किया है।

यह बात मेरे लिए किसी करिश्में से कम नहीं है कि मेरी किताब प्रकाशित होने से कुछ वर्ष पहले 23 मार्च 2022 को मुझे हृदय रोग की वजह से अस्पताल में दाखिल कराना पड़ा था और डॉक्टरों की कार्यकुशलता और ईश्वर की कृपा से मैं अस्पताल से बिल्कुल ठीक होकर घर वापिस लौट आया था और मैंने कुछ महीनों के बाद ही लिखने का काम फिर से शुरू कर दिया था और मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि मैं अपनी लिखी कहानियों को आप सबके सामने प्रस्तुत कर पाया हूं।

मेरी लिखी कहानियाँ आपको सदा जीवन में आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देंगी। मैं अपनी लिखी कहानियाँ उन पाठकों को समर्पित करना चाहता हूं जो कहानियाँ लिखने की कोशिश कर रहे हैं और लेखक बनना चाहते हैं और यह बात सच है कि हर लेखक किस्से कहानियों को लिखने की कला को जीवन भर सीखता रहता है और अगर किसी कहानी को लिखने में, मुझ से कहीं पर कोई गलती हो गई हो, तो कृपया आप मुझे क्षमा कर दीजिएगा। मेरी लिखी कहानियाँ मेरे गुरु जी स्वामी अमरानंद सरस्वती जी को समर्पित हैं जिन्होंने मुझे कहानियाँ लिखने की प्रेरणा दी थी और उनके आशीर्वाद से ही मैं अपनी किताब प्रकाशित कर पाया हूं। मेरी लिखी सारी कहानियाँ काल्पनिक हैं।

सुरजीत सिंह साहनी

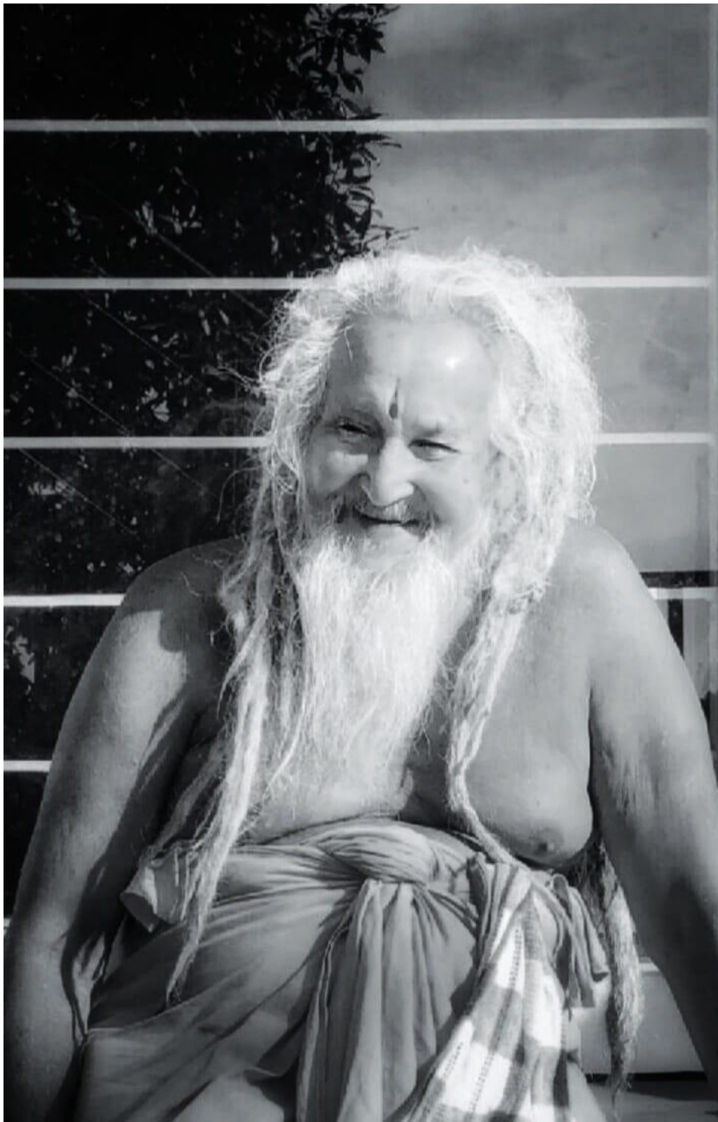

मेरी प्रेरणा के स्रोत - गुरुजी स्वामी अमरआनंद जी

मैं जीवन की गहमागहमी से जब भी उदास हो जाता हूं तब मैं अपनी ही लिखी कविता "पथ के आगे भी पथ है" पढ़ता हूं और ज़िंदगी के पथ पर वापिस लौट आता हूं।

पथ के आगे भी पथ है

पथ के आगे भी पथ हैं,
मत मान ले अपनी हार यहाँ,
उठ मेरे कदमों से कदम मिला,
ये सपनो से भरी है पगडंडी,
उठ देख ज़रा, तू नज़र उठा,
फिर झूमेंगा गगन, झूमेंगी ज़मीं,
कदमो में ज़रा तू मस्ती ला।
किस दिशा में तुझको बढ़ना है,
कुछ सोच, फिर कदमों को बढ़ा,
बिखरे सपनो की सोच भी मत,
यहाँ पल पल बड़ा निराला है,
यह ईश्वर की महिमा है,
कि सपनो से बड़ा भी जीवन है,
इसकी कीमत, तू कुछ तो लगा।
पथ के आगे भी पथ है,
रुकना है नही, थमना है नही,
और न ही तुझको जूझना है,
पर जिस नाव में भी तू बैठा है,
बस तू उसकी पतवार चला,
पथ के आगे भी पथ है,
मत मान ले अपनी हार यहाँ,
उठ मेरे कदमों से कदम मिला,
उठ, मेरे कदमों से कदम मिला।

अनुक्रमणिका

कहानी 1: ईश्वर के बंदे..1

कहानी 2: एक बूढ़ा जोड़ा 11

कहानी 3: आस्था का करिश्मा - किस्सा चींटियों का..17

कहानी 4: मास्टर केदारनाथ..27

कहानी 5: करिश्मा 37

कहानी 6: डोडी...45

कहानी 7: परिवर्तन...57

कहानी 8: क्या पता ईश्वर की कृपा से कल बारिश हो जाए 65

कहानी 9: जब तकदीर दरवाज़े पर दस्तक देती है...75

कहानी 10: भगवान बच्चों की प्रार्थना को बहुत जल्दी सुनते हैं...........................89

कहानी 11: एक चोर..99

कहानी 12: एक किस्सा किताबों का 107

कहानी 13: खंडहर बोल उठे 119

कहानी 14: एक किस्सा घर पर चोरों के आने का 129

कहानी 15: कुछ सुनहरी पल 135

कहानी 16: माहतो और बेला 142

कहानी 17: ज़िंदगी एक रंगमंच है 153

कहानी 18: ट्रेन लेट होने के यादगार सिलसिले 165

कहानी 19: जन्मदिन मुबारक हो...169

कहानी 20: मदारी...175

कहानी 21: घर ने कहा...181

कहानी 22: जीने की राह... 187
कहानी 23: बन्नो की शादी.. 195
कहानी 24: पड़ोसी 207
कहानी 25: मैं एक लेम्प पोस्ट हूं.. 223
कहानी 26: पोस्टमैन गौरीशंकर... 229
कहानी 27: लकी 235
कहानी 28: यह ईश्वर का नियम था 'एक हाथ दे एक हाथ ले' 245
कहानी 29: जननी जन्मभूमि.. 255
कहानी 30: और चिड़िया उस वृक्ष से उड़ गई.. 263
कहानी 31: गुल्लक 267
कहानी 32: एक किस्सा मां की ममता का 273
कहानी 33: यात्रा.. 285
कहानी 34: बोलने वाला नीला तोता 289
कहानी 35: सुघड़ गृहणी 293
कहानी 36: शिवराम 301
कहानी 37: घर वापसी 311
कहानी 38: अलविदा.. 319
कहानी 39: एक अनकही कहानी... 326
कहानी 40: एक किस्सा अधूरी प्रेम कहानी का.. 333
कहानी 41: एक जोकर 336
कहानी 42: किस्सा पासपोर्ट टिकट और यात्रा का....................................... 345
कहानी 43: माता पिता 351

कहानी 1: ईश्वर के बंदे

यह कथा एक बूढ़े दंपति की है। जो एक दूसरे से अपार प्रेम करते थे। वह पति पत्नी, लगभग 75 वर्ष के थे और उन्होंने हाल ही में, पुना शहर की गीता सोसाइटी में एक घर खरीदा था और आज गीता सोसाइटी में जब सामान से भरा हुआ एक ट्रक आ कर रुका, तो उस कालोनी के सब लोग बहुत हैरान हुए थे कि उनकी सोसायटी में रहने के लिए यह कौन से नये लोग आये हैं, पर तभी उस समान से भरे ट्रक के साथ ही एक टैक्सी भी आ कर उस सोसाइटी के आँगन में रुकी थी, जिसमें से वह बूढ़े दंपति बाहर निकले थे। दोनों ही बहुत वृद्ध थे और उन दोनों के चेहरे से ईश्वरीय नूर टपक रहा था और उनको देख कर ऐसा आभास हो रहा था, जैसे वो वृद्ध दंपति ईश्वर के कोई खास बन्दे हों। उन्होंने गीता सोसाइटी में तीसरी मंज़िल पर एक घर लिया था। गीता सोसाइटी के बहुत से लोग उस समय सोसायटी के आंगन में ही खड़े थे। उस बुज़ुर्ग दंपति ने बहुत आत्मियत से सब को अपना परिचय दिया था। उनका नाम मीरा महिपाल और जयराम महिपाल था। गीता सोसाइटी के अधिकतर लोग बहुत शिक्षित थे और अच्छे स्वभाव के थे। सब लोगों ने देखा की उस वृद्ध दंपति की टैक्सी में सामान कुछ अधिक था, तो यह देख कर वहां पर

खड़े सब लोग उनकी सहायता करने लगे थे, क्योंकि उन्हें लग रहा था कि वह सामान उन वृद्ध दम्पति के लिये कुछ अधिक भारी था। उस पल सोसाइटी के सब लोगों ने आगे बढ़ कर उनका स्वागत किया था और उनके सामान को, उनके फ्लैट तक ले जाने में उनकी सहायता करने लगे थे। सहायता करने के इस परोपकारी कार्य में, गीता सोसायटी का वॉचमैन बहादुर भी उनकी मदद कर रहा था।

कुछ दिनों में ही वह वृद्ध दम्पति अपने दयालु और सरल स्वभाव से सोसायटी के हर सदस्य के चहेते बन गए थे। उस वृद्ध दंपति को घर में काम करने के लिए, नंदा नाम की एक अच्छी औरत भी मिल गई थी, जो उन्हें खाना बना कर खिलाती थी और उनकी अच्छी तरह से देखभाल करती थी। मीरा जी और जयराम जी बहुत सरल स्वभाव के थे और सुबह शाम पूजा पाठ करना उनका नियम था और वो दोनों वृद्ध मिल कर प्रतिदिन रामायण का पाठ करते थे।

मीरा जी की तबियत कुछ अच्छी नही रहती थी क्योंकि एक तो उनकी वृद्ध अवस्था थी और दूसरा उन्हें चलने में भी थोड़ी कठिनाई होती थी, इसलिए मीरा जी अधिकतर बिस्तर पर ही लेटी रहती थी और कभी कभी वह बहुत प्रेम से जयराम जी से आग्रह करती थी कि वह उन्हें रामायण का एक विशेष अध्याय पढ़ कर सुनायें और जयराम जी जब रामायण का वह अध्याय अपनी सुन्दर और बुलंद आवाज़ में पढ़ते थे, तो जैसे वहाँ पर साक्षात भगवान उपस्थित हो जाते थे। जयराम जी रामायण की इतनी सुन्दर व्याख्या करते थे कि जैसे उस पल उनके कंठ में खुद भगवान का वास हो, उनके कंठ से निकले मीठे स्वर सब सुनने वालों का दिल जीत लेते थे।

रसोई घर में खाना बनाती हुई नंदा बाई का ध्यान भी रामायण के पाठ में लगा रहता था और वो देखती थी कि मीरा जी कितने प्रेम से आँखें मूंदे रामायण का पाठ सुन रही होती थी। जयराम जी का उच्चारण सुनने में इतना मधुर लगता था कि जिसके भी कानों में उनकी मधुर आवाज़ सुनाई देती थी, वो मंत्र मुग्ध सा उनकी मीठी वाणी सुनने में खो जाता था। मीरा जी और जयराम जी का उस सोसाइटी में आगमन, गीता सोसायटी के सब लोगों के लिए एक सुंदर घटना थी। जब भी जयराम जी अपनी मधुर और बुलंद आवाज़ में रामायण का पाठ करते थे, उनकी मीठी वाणीं को सुनकर सोसाइटी के लगभग सब घरों की खिड़कियाँ खुलने लगती थी और आसपास के घरों में चलते हुए टीवी सैट

धीरे धीरे बंद होने लगते थे। उस समय लगभग सारी सोसाइटी के लोग, जयराम जी की मधुर आवाज़ में रामायण का पाठ सुन रहे होते थे और यह बात सच थी कि रामायण के पाठ के वह स्वर इतने मधुर थे कि सुनने वाले के सीधा दिल में उतर जाते थे। उस सोसाइटी के आस पास रहने वाले सब लोग रामायण के उस मधुर पाठ को सुनते और आँखें बंद करके ध्यान मगन हो जाते थे। उस सोसायटी के कुछ दंपति, मीरा जी और जयराम जी के जैसे दीवाने हो गए थे। रामायण का पाठ सुनने की वजह से, सोसायटी के लोगों की मीरा जी और जयराम जी से मुलाकातें होने लगी थी और धीरे धीरे रिश्तों की यह कस्तूरी जैसी महक, सारी सोसायटी में फैलने लगी थी। अपनत्व और प्रेम के रहते, कभी मीरा जी आचार बनाकर अपनी बहुओं, बेटियों को भेजती थी, तो कभी आसपास के घरों से, इडली, कॉफी, पराँठे, सांभर, कांदेपोहे बन कर उनके घर पर आते थे। उस सोसायटी के बहुत से लोग, अपने सब काम छोड़ कर मीरा जी और जयराम जी को मंदिर ले कर जाते थे और ऐसे कार्य करने में कपूर साहब सदा आगे रहते थे। श्रीमती गणपति अक्सर अपने पति से कहती थी कि " देखो तो जयराम जी कितना प्रेम करते हैं अपनी पत्नी से, मीरा जी जब भी उन्हें पाठ करने के लिए कहती हैं, जयराम जी उसी पल उन्हें रामायण का पाठ सुनाते हैं " तब श्रीमती गणपति के पति अपनी पत्नी की ओर देखते हुए उससे कहते थे " हाँ यह बात तो सच है " गीता सोसायटी में रहने वाले, एक बंगाली दंपति भी कुछ ऐसा ही सोचते थे, वो संगीत प्रेमी थे और अक्सर अपने घर पर संगीत सुन रहे होते थे, पर जैसे ही जयराम जी का रामायण का पाठ शुरू होता था, वो अपना संगीत छोड़ कर, उनका रामायण का पाठ सुनने में ध्यान मगन हो जाते थे। श्रीमती घोष अपने पति से अक्सर यह कहती थी " कितनी मधुर आवाज़ है जयराम जी की और कितनी सुन्दर जोड़ी है दोनो की, लगता है जैसे इन दोनों की जोड़ी को ईश्वर ने खुद अपने हाथों बनाया है " और उनके पति भी अपनी पत्नी की कही बात में हामी भरते थे और कहते थे " हाँ यह बात तो सच है " उस सोसाइटी में अचानक प्रेम के उफान उठने लगे थे और लोगों में सो रही ईश्वर के प्रति श्रद्धा फिर से जागने लगी थी। सोसाइटी के कितने नवविवाहित जोड़े, मीरा जी और जयराम जी से आशीर्वाद लेने के लिए उनके घर पर आने लगे थे।

पर उन सबसे अलग एक लड़का राजू भी था, जो कभी कभी जयराम जी के घर का सामान बाजार से लेकर आता था और कहने को तो वो उनकी सहायता करता था, पर हर सामान की खरीद में, वो पैसों की हेराफेरी करता था, वो इस बात का फायदा उठाता

था और वो इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानता था कि यह बुज़ुर्ग लोग अपना सामान खरीदने के लिए खुद बाज़ार नही जा सकते। राजू की ज़ुबान में जैसे शहद घुला हुआ था और जयराम जी और मीरा जी उसे देख कर मुस्करा भर देते थे, भीतर से वो राजू की चालाकियों को बहुत अच्छी तरह से जानते और समझते थे, पर फिर भी वो दोनो अनजान बने रहते थे। मीरा जी और जयराम जी की यह विशेषता थी कि वो कभी भी किसी से नाराज़ नहीं होते थे। शायद दोनों इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानते थे कि अब उनकी ज़िन्दगी के थोड़े ही दिन बाकी बचे थे और वो दोनों ज़िंदगी की गहमागहमी को पीछे छोड़ कर, सुख की तलाश में ज़िन्दगी में बहुत आगे बढ़ चुके थे।

इसी तरह दिन बीतते गए, पर एक दिन मीरा जी को देर रात अस्पताल ले जाना पड़ा, शायद उन्हें लकवे का अटैक आया था और मौके की नज़ाकत को समझ कर, कपूर साहब ने जल्दी से मीरा जी को अपनी कार में बिठा कर उन्हें जल्दी से अस्पताल पहुंचा दिया था और उस समय सोसाइटी के बहुत से लोग अपने अपने वाहनों पर सवार होकर अस्पताल पहुंच गए थे। जयराम जी मीरा जी की ऐसी हालत देख कर, भीतर से बहुत फिक्रमंद थे और देर रात 2 बजे, डॉक्टर ने सब उपस्थित लोगों को बताया कि अब मीरा जी खतरे से बाहर हैं, पर साथ ही एक बुरी खबर भी सुना दी कि मीरा जी, अब कभी चल नहीं पायेंगीं, क्योंकि शायद लकवे के अटैक की वजह से उनकी पहले से ही कमज़ोर टांगें, अब और भी कमज़ोर हो चुकी थी।

जयराम जी के लिये यह बहुत कठिन समय था, पर जयराम जी के चेहरे पर यह सोच कर संतोष था कि मीरा जी जैसी भी थी, पर इस समय सही सलामत उनके सामने थी और इस बात से जयराम जी संतुष्ट दिखाई दे रहे थे। जयराम जी, मीरा जी के निकट ही बैठे थे। मीराजी अब तक होश में आ चुकी थी और उनके चेहरे पर शुक्राना के भाव थे और वो सोसाइटी के सब लोगों को हाथ जोड़ कर धन्यवाद कर रही थी।

यह देख कर, सोसाइटी के लगभग सब लोगों की आँखें भर आई थी। यह प्रेम के बहुत अनूठे पल थे। यह लम्हें कुछ ऐसे थे जैसे रात के सन्नाटे में, ईश्वर की रोशनी जगमगाई थी, जिससे सब के हृदय में ईश्वरीय प्रकाश हो गया था।

कुछ दम्पति मीरा जी को दिलासा देते हुए यह कह रहे थे " मीरा जी आप चिंता मत कीजिए, आप जहां जाना चाहेगी, हम आपको वहाँ अपने हाथों में उठा कर ले जायेंगे "

सोसायटी के सब लोग उन्हें हिम्मत दे रहे थे और मीरा जी और जयराम जी जानते थे कि सोसायटी के सब लोग उन्हें दिल से बहुत प्यार करते थे, उन्हें बहुत चाहते थे। सोसाइटी के वॉचमैन बहादुर ने भी उनकी बहुत सहायता की थी, उन्हें उठा कर गाड़ी में डालने से लेकर, अस्पताल तक ले जाने में उनकी मदद की थी और बहादुर वॉचमैन इस दुखद घटना से बहुत दुखी था। गए वर्षो में न जाने कितनी ही बार जयराम जी और मीरा जी ने उसे सुन्दर कपड़े दिये थे और बहादुर इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानता था कि मीरा जी और जयराम जी उससे बहुत स्नेह रखते थे। मीरा जी आए दिन उसे गर्म भोजन भेज देती थी, वो जानती थी कि कड़ी धूप में एक ही जगह पर बैठे रहना कितना कठिन कार्य है। बहादुर भी मीरा जी और जयराम जी को अपने माता पिता समान समझता था। वो उनसे अपने दिल की बातें करना चाहता था, पर वो इस बात को भी जानता था कि वो इस सोसायटी का एक मामूली सा वॉचमैन है, पर वो इस बात से अनभिज्ञ था कि मीरा जी और जयराम जी अपने दिल में छोटे बड़े का कोई भेद भाव नही रखते थे, उनके लिए सब इंसान एक समान थे। बहादुर बहुत कठिन परिस्थितियों में उस शहर में आया था, गाँव में उसकी मंगनी टूट गई थी और वो इस बात से नाराज़ हो कर शहर चला आया था। वो एक गरीब आदमी था और उस अजनबी शहर में उसके दिल की बात सुनने वाला कोई भी नही था, इसलिए वो अधिकतर खामोश ही रहता था। पर मीरा जी और जयराम जी ने उसके दिल की धड़कन को पहचाना था और उसकी आंखों की खामोशी को समझा था और जब से मीरा जी और जयराम राम जी उस सोसायटी में रहने के लिए आये थे, बहादुर खुश रहने लगा था। यह उनके बीच मौन प्रेम के आदान प्रदान का नतीजा था।

अस्पताल से सही सलामत घर पर आने के बाद, बहुत दिन सुख शांति से बीत गए थे और मीरा जी और जयराम जी का रामायण पढ़ने का खूबसूरत दौर चलता रहा।

पर आज मीरा जी की तबियत कुछ ठीक नहीं थी, मीरा जी ने देखा कि उस पल जयराम जी सो रहे थे, इसलिए मीरा जी ने अपने पति को परेशान करना उचित नहीं समझा था। पर जैसे ही जयराम जी की आंख खुली, तब मीरा जी ने बिस्तर पर लेटे लेटे ही उनसे अनुरोध किया था कि वो उन्हें रामायाण का भरत मिलाप वाला अध्याय सुनाएं, तब जयराम जी ने रामायण की पुस्तक को प्रणाम करने के बाद, पुस्तक में से वह अध्याय

खोला था और जयराम जी मीरा जी के पैरों के निकट कुर्सी डाल कर बैठ गये थे और अपनी सुन्दर और बुलंद आवाज़ में रामायण का पाठ करने लगे थे।

जयराम जी की मधुर आवाज़ को सुनकर धीरे धीरे सोसाइटी के बहुत से लोग उनके घर में आने लगे थे और वो सब लोग, घर के एक कोने में आकर चुपचाप ज़मीन पर बैठ गए थे। मीरा जी और जयराम जी ने देखा कि उनके घर पर सोसायटी के बहुत से लोग एकत्रित हो गए थे और सब लोग बहुत शांति से रामायण का पाठ सुन रहे थे। यह देख कर मीरा जी और जयराम जी मंद मंद मुस्कराने लगे थे। उस पल मीरा जी और जयराम जी को सोसायटी के सब सदस्य अपने परिवार के सदस्य की भांति लगने लगे थे। जब रामायण का पाठ समाप्त हुआ, तब नंदा बाई, सब लोगों को घर में ही बनाया हुआ प्रसाद बांटने लगी थी और मीरा जी ने हाथ जोड़ कर घर आए सब लोगों का अभिनन्दन किया था और सब लोग प्रसाद ग्रहण करने के बाद, मीरा जी के पैरों में माथा टेक कर उन्हें प्रणाम करके जाने लगे थे। पर उनमें से किसी को भी यह पता नहीं था कि मीरा जी और जयराम जी से यह उनकी अंतिम मुलाकात थी। उसी दिन देर रात लगभग 2 बजे अचानक मीरा जी की नींद खुली गई और उन्होंने पास ही सो रहे जयराम जी को जगाया था और उनसे अनुरोध किया था कि वो उन्हें रामायण का पाठ सुनाएं। जयराम जी ने उसी पल रामायण की पुस्तक निकाली थी और ग्रंथ को प्रणाम करने के बाद, जयराम जी एक कुर्सी खींच कर मीरा जी के पैरों के निकट ही बैठ गये थे। पर आज मीरा जी की तबियत को देख कर जयराम जी के चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ दिखाई देने लगी थी। वो मीरा जी के चेहरे पर पीड़ा के भाव देख रहे थे, जो उस पल आँखें मुँदे चुपचाप लेटी हुई थी, शायद वो अपनी पीड़ा बता कर इतनी रात को जयराम जी को परेशान नहीं करना चाहती थी। जब जयराम जी ने रामायण का पाठ शुरू किया उस समय रात के 2 बज रहे थे। रात को 2 बजे रामायण का पाठ सुनकर सोसायटी के सब घरों में धीरे धीरे बत्तियाँ जलने लगी थी। इतनी रात को रामायण का पाठ होता देख कर, सब लोग थोड़े हैरान हुए थे। यहां तक कि सोसायटी के गेट पर बैठा बहादुर भी, मन ही मन में सब की कुशलता की प्रार्थना कर रहा था।

पाठ चलता रहा और अचानक मीरा जी ने अपनी गर्दन एक ओर फैंक दी थी और उनका बदन धीरे धीरे ठंडा होने लगा था। उस पल मीरा जी का एक हाथ जयराम जी के हाथों में था। मीरा जी के बदन को ठंडा होता देख कर, जयराम जी घबरा गए थे और

रामायण का पाठ बीच में ही रुक चुका था। जयराम जी को समझते देर नहीं लगी थी कि मीरा जी उन्हें छोड़ कर दूसरी दुनिया में जा चुकी थी, उस पल मीरा जी का एक हाथ उनके हाथों में ही था जो उनकी मृत्यु के पश्चात अब बिलकुल ठंडा पड़ चुका था। जयराम जी मीरा जी के हाथों को अपने हाथों में लेकर रोने लगे थे और उन्होंने देखा कि उस पल भी मीरा जी की आँखें उनकी ओर ही देख रही थी, जैसे उनकी आंखें उन से कह रही थी कि "रुक क्यों गए हो, रामायण पढ़ो न, मैं सुन रही हूँ" अब तक 75 वर्षीय जयराम जी की हिम्मत भी जवाब दे चुकी थी, वह जान चुके थे कि मीरा जी की आवाज़ अब हमेशा हमेशा के लिए खामोश हो चुकी है और मीरा जी का अस्तित्व अब हमेशा हमेशा के लिए समाप्त हो चुका है। अब उन्हें कोई भी यह नहीं कहेगा कि "जयराम जी मुझे रामायण का वह वाला अध्याय पढ़ कर सुनाइये" जयराम जी की निगाहें अचानक मीरा जी के हाथों पर पड़ी और उन्हें देख कर, उन्हें कुछ ऐसा अनुभव हुआ जैसे उन अंतिम लम्हों में मीरा जी उनका वह हाथ छोड़ना नहीं चाह रही थी और यह इतने भावुक कर देने वाले पल थे कि जयराम जी का सब्र का प्याला टूट गया था और वो मीरा जी के आकस्मिक निधन को सह नहीं पाए थे और मीरा जी के हाथों को, अपने हाथों में पकड़े पकड़े ही, उनकी पकड़ भी धीरे धीरे ढीली पड़ने लगी थी और मीरा जी का हाथ अपने हाथों में पकड़े पकड़े ही, उन्होंने भी वहीं पर अपने प्राण त्याग दिये थे। उस समय सुबह के 6 बजने को थे। रामायण का पाठ रुकते ही कुछ लोगो का माथा ठनका था। पर सब लोगों ने सोचा कि शायद मीरा जी सो गई होंगी इसीलिये जयराम जी ने रामायण का पाठ बन्द कर दिया होगा। आखिर वह दोनों थे तो बूढ़े ही, शायद उनकी आँख लग गई होगी। पर जब सुबह 7 बजे के लगभग दूध वाले ने मीरा जी के घर का द्वार खटखटाया और दरवाज़ा नहीं खुला, तो सारी सोसायटी में कोहराम मच गया था। सोसायटी के सब लोग उनके फ्लैट के बाहर इकट्ठा होने लगे थे और जब बहुत खटखटाने के बाद भी मीरा जी के घर का दरवाज़ा नहीं खुला, तब सब का माथा ठनका और सब ने उसी पल निर्णय लिया कि दरवाज़े तोड़ा दिया जाए और दरवाज़ा टूटने के बाद जिसने भी घर के भीतर के उस दृश्य को देखा, वो हैरान रह गया। उन्होंने देखा कि मीरा जी के हाथों में जयराम जी का हाथ था और मीरा जी के पैरों में जयराम जी का सिर रखा हुआ था, और उन दोनों ने उसी मुद्रा में अपने प्राण त्याग दिये थे।

जिसने भी उस दिल को हिला देने वाले दृश्य को देखा था, वो रोता हुआ उस घर से बाहर निकला था। सोसायटी के सब सदस्य मीरा जी और जयराम जी के इस अक्समिक निधन से बहुत दुखी थे। सोसायटी के गणमान्य सदस्य कपूर साहब भी दिल को हिला देने वाले इस दृश्य को देख कर सकते में आ गए थे। अब सोसायटी के सब सदस्य उनके क्रियाक्रम की तैयारी करने लगे थे। सब मीरा जी और जयराम जी की कहानी को जानते थे कि उनका एक ही पुत्र था, जो फौज में था और वो भी बरसों पहले युद्ध के मैदान में लड़ते लड़ते शहीद हो चुका था। अब जो भी दाहसंस्कार की क्रियाएं करनी थी, वह उन सब लोगों ने मिल कर ही करनी थी। जैसे मीरा जी और जयराम जी अपने जीवन के अंतिम क्षणों में भी, अनेक रिश्ते कायम कर गये थे, जो यकीनन बेमिसाल रिश्ते थे।

मीरा जी और जयराम जी, दूसरी दुनिया में जाने से पहले, उस सोसायटी के हर सदस्य के भीतर मान, सम्मान, प्रेम के बीज डाल गये थे और अब उस सोसाइटी में सब तरफ प्रेम के फूल ही फूल खिलने लगे थे। अनजाने में सोसायटी के सब लोगों का एक दूसरे से बहुत गहरा रिश्ता बना चुका था और बेशक इसकी वजह मीरा जी और जयराम जी ही थे।

सब कुछ होने के बाद, सोसाइटी के लोगों ने एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया था कि सोसायटी में एक छोटे से मंदिर का निर्माण किया जायेगा और उस मंदिर में सुबह और शाम रामायण का पाठ होगा। नंदा बाई को उस घर से माता पिता का प्रेम मिला था और उस घर से जाने से पहले, नंदा बाई ने मीरा जी और जयराम जी की एक तस्वीर अपने पास रख ली थी और जाते जाते उस घर को अपने दोनों हाथ जोड़ कर प्रणाम करने के बाद वो रोते रोते अपने घर की ओर चल दी थी।

अभी मीरा जी और जयराम जी की मृत्यु को कुछ दिन ही बीते थे कि कपूर साहब, मीराजी और जयराम जी का दिया हुआ एक चैक ले कर नंदा बाई के घर पहुंचे, तब कपूर साहब ने देखा कि नंदा बाई के घर में मीरा जी और जयराम जी की तस्वीर मंदिर में रखी हुई थी, उसी पल उन्हें मीरा जी और जयराम जी के कहे शब्द याद आ गये, जब मीरा जी ने कपूर साहब से कहा था कि नंदा बाई हमारी बेटी की तरह ही है। नंदा बाई की मीरा जी और जयरामजी के प्रति अटूट श्रद्धा को देख कर कपूर साहब की आँखें भर आईं थी और उस पल वो मन ही मन में, मीरा जी और जयराम जी की दूरदर्शिता पर विचार कर रहे थे।

कपूर साहब ने अपने बैग में से एक चैक निकला था, जो एक लाख रुपयों का था और उन्होंने वह चैक पूरे सम्मान के साथ नंदा बाई को दे दिया था और उन्होंने नंदा बाई को बताया था कि यह सब पहले से ही तय था। कपूर साहब ने नम आंखों से नंदा बाई को बताया था कि "वो तुम से बहुत प्रेम करते थे" और कपूर साहब के मुंह से यह सब सुन कर नंदा बाई अपनी रुलाइयाँ नहीं रोक पाई थी और वो फूट फूट कर रोने लगी थी। पर तब तक कपूर साहब उसे रोता हुआ छोड़ कर वहाँ से चल पड़े थे क्योंकि अब उनकी खुद की आँखों से भी आंसू बहने लगे थे। मीरा जी और जयराम जी की वसीयत के मुताबिक उनका घर बेच कर, वह धन अनाथालय को दान स्वरूप दे दिया गया था।

अचानक सोसायटी में सब कुछ अच्छा होने लगा था। एक दिन बहादुर के गाँव के कुछ लोग, बहादुर का रिश्ता लेकर आए थे और यह वही लोग थे, जिससे किसी कारणवश बहादुर की मंगनी टूट गई थी। पर अब ईश्वर के आशीर्वाद से रिश्ता फिर से स्थापित चुका था और कुछ दिन के बाद ही, बहुत धूमधाम से बहादुर का विवाह हो गया था और उसका घर संसार भी बस गया था। पर इस बीच एक दुखद घटना भी घटी थी, जो लड़का मीरा जी के घर का सामान बाज़ार से खरीद कर लाता था और उसमें हेराफेरी करता था, उस लड़के के साथ एक सड़क दुर्घटना घटी थी, जिसमें उसकी दोनो टाँगें जाती रही थी और अब वो लड़का एक व्हीलचेयर पर था और गीता सोसाइटी के उसी मंदिर में रामायण का पाठ सुन रहा था और उस पल उसकी आँखों में से पश्चाताप के आंसू बह रहे थे। सोसायटी के सब लोगों ने मिल कर जीवन भर के लिए राजू के खानपान का बंदोबस्त कर दिया था। क्योंकि सोसायटी के सब सदस्य राजू के बारे में सिर्फ इतना ही जानते थे कि राजू ने मीरा जी और जयराम जी को अपना सहयोग दिया था और उस पल राजू मंदिर के एक कोने में चुपचाप खड़ा हुआ रो रहा था और सोसाइटी के सब लोग उसको हिम्मत बंधा रहे थे। शायद यह सुख उसे इसलिए नसीब हुआ था कि वह भी मीरा जी और जयराम जी के संपर्क में रहा था और शायद मीरा जी और जयराम जी ने उसे सच्चे दिल से क्षमा कर दिया था। इन दृश्यों को देख कर कुछ ऐसा लगता था कि ईश्वर से कोई भी बात छिपी नहीं रह सकती थी और सही वक्त आने पर, वह सबको, उनके किए कर्मों के मुताबिक फल देता था। अब उस सोसाइटी में, सब बूढ़े बुज़ुर्गों का मान सम्मान होने लगा था। सब लोग, बुज़ुर्गों में मीरा जी और जयराम जी की रूहों को देखते थे। बेशक यह प्रेम और आस्था का एक बेमिसाल जादू था और इसके खूबसूरत रंग, सिर्फ

वो ही शख्स देख सकता था, जो ईश्वर के विशाल साम्राज्य पर दिल से यकीन करता था और इस बात में कोई संदेह नहीं था कि हम जब भी कोई कर्म करते हैं, उसका अच्छा या बुरा फल, हमें इसी ज़िन्दगी में और यहीं मिलता हैं।

जय राम जी की।

समाप्त

कहानी 2: एक बूढ़ा जोड़ा

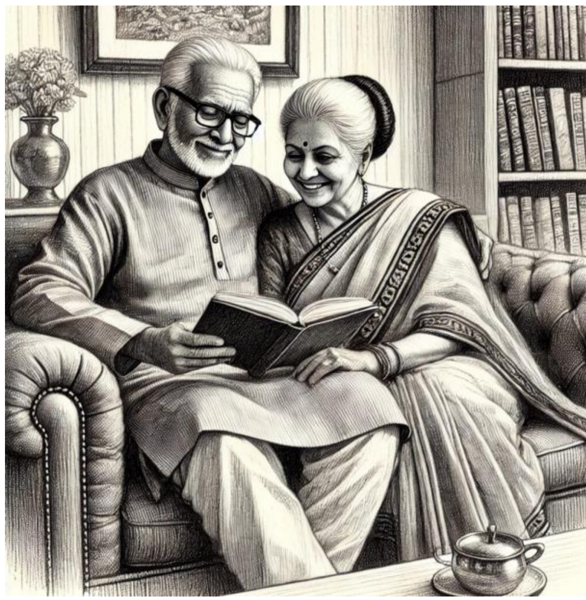

बरसों साथ रहने की वजह से पति पत्नी एक दूसरे को बहुत अच्छी तरह से जानने और समझने लगते है और वर्षों साथ रहने की वजह से वो एक दूसरे की कमजोरियों से भली भांति परिचित हो जाते हैं और ज़िंदगी में आये कमज़ोर क्षणों में, वो एक दूसरे के सामने ढाल बन कर खड़े हो जाते हैं और यह एक ऐसे ही बूढ़े जोड़े की कहानी है।

आज गोपाल जी और नंदनी जी दोनो साथ मिलकर, अपने घर के सुन्दर हरे भरे बगीचे की देख रेख कर रहे थे। तब गोपाल जी ने हंसते हुए अपनी पत्नी से कहा था "अभी सुबह सुबह ही थक जाओगी, तो बाज़ार सामान लेने कौन जायेगा?" तब नंदनी जी ने गोपाल जी की ओर देखते हुए कहा था "मुझे पता है कि आज हमें बाज़ार से सामान लेने जाना है" तब गोपाल जी ने बगीचे में पड़े झूले पर बैठते हुए अपनी पत्नी से कहा था "मैं तो बगीचे में काम करने से ही बहुत थक गया हूं" तब नंदनी जी ने मुस्कराते हुए उनसे कहा था "हां हां, मुझे पता है कि अब आपको एक कप चाय और चाहिए" और यह कहकर नंदनी जी मुस्कराते हुए घर के भीतर चली गई थी और गोपाल जी मुस्कराते हुए

पास ही पड़ी हुई अखबार को पढ़ने लगे थे। अब गोपाल जी और नंदनी जी 75 वर्ष के आसपास के हो चुके थे और वो अकेले ही रहते थे। उनकी कोई औलाद नहीं थी। उन दोनो की झुकी हुई कमर जिंदगी की सारी कहानी को बयां कर रही थी कि उन दोनों ने मिलकर ज़िंदगी की लम्बी यात्रा कैसे तय की होगी।

कुछ समय झूले पर साथ बैठ कर चाय पीने और अपने घर का सब काम समाप्त करने के बाद, गोपाल जी और नंदनी जी पास के ही बाज़ार में सामान लेने के लिए पैदल ही घर से निकल पड़े थे, पर अभी उन्होंने सामान खरीदा ही था कि इतने में बहुत तेज़ बारिश होने लगी थी और वो दोनो सामान का बोझ उठाए बहुत मुश्किल से, जैसे तैसे करके अपने घर पहुंचे थे और बारिश में भीगने की वजह से, वो दोनो ठंड से ठिठुरने लगे थे और थक जाने की वजह से, उन दोनो की सांसें भी बहुत तेज़ चल रही थी। तब गोपाल जी के माथे पर आए पसीने को देख कर नंदनी जी अपनी जगह से बहुत मुश्किल से उठी थी और उन्होंने अपने साड़ी के पल्लू से गोपाल जी के माथे पर आए पसीने को पोंछा था और बहुत प्रेम से उनके माथे पर स्पर्श करके गोपाल जी से कहा था "ठहरो मैं तुम्हारे लिए पानी लेकर आती हूं" और फिर बहुत मुश्किल से वो धीरे धीरे चलती हुई रसोई घर में गई और गोपाल जी के लिए कुछ बिस्किट और पानी लेकर वापिस गोपाल जी के पास लौट आई और बहुत प्रेम से उनके पास ही बैठ गई थी। तब गोपाल जी ने बहुत प्रेम से नंदनी जी की ओर देखते हुए कहा था "तुम मेरा कितना ध्यान रखती हो" तब नंदनी ने हंसते हुए बहुत प्रेम से गोपाल जी से कहा था "मैं तुम्हारा ध्यान नहीं रखूंगी तो क्या काला चोर रखेगा" और इस बात पर वो दोनो ही खिलखिला कर हंस दिए थे।

आज जैसे गोपाल जी और नंदनी जी के लिए क़यामत की रात थी। ठंड लग जाने की वजह से नंदनी जी ने बिस्तर पकड़ लिया था और उस समय बाहर तूफान जोरों पर था और सारी रात आसमान में रह रह कर बिजलियाँ कड़क रही थी और गोपाल जी नंदनी जी को बीमार देख कर, गहरी चिंता में डूब गए थे। बारिश में भीग जाने की वजह से नंदनी जी तेज़ बुखार से तप रही थी और वो रह रह कर दर्द से कराह रही थी और यह समय उन दोनों के लिये ही जैसे परीक्षा की घड़ियाँ थी।

बाहर रह रह कर अब भी बिजलियाँ कड़क रही थी और तूफान भी बहुत जोरों पर था कि अचानक उसी पल घर की बिजली भी चली गई थी। तब गोपाल जी अंधकार में

ठोकरें खाते हुए, जैसे तैसे करके रसोईघर में पहुंचे थे, पर घबराहट होने की वजह से उनसे न जाने कितने ही बर्तन हाथों से छूट कर नीचे गिर पड़े थे और बर्तनों के यूं अचानक गिरने से, स्याह अंधकार में बहुत भयानक शौर उत्पन्न हुआ था। पर गोपाल जी ने बहुत मेहनत से जैसे तैसे कर के एक दीया जला लिया था, तब जा कर उनकी जान में जान आई थी। उन्होंने बहुत कठिनाई से रसोई घर में नीचे गिरे बर्तन उठाकर ऊपर रखे थे और गोपाल जी जलते हुए दीए को लेकर नंदनी जी के पास वापिस लौट आए थे और उन्होंने नंदनी के बिस्तर के करीब पड़े टेबल पर, वह दीया रख दिया था। उस पल दीये के मद्धम से प्रकाश में गोपाल जी नंदनी जी के चेहरे की ओर बहुत ध्यान से देख रहे थे और नंदनी जी की बिगड़ती तबीयत को देख कर उनके चेहरे पर चिंता की लकीरें गहरी होती जा रही थी। जैसे यह पल गोपाल जी की कठिन परीक्षा ले रहे थे। बाहर गहरे अंधकार में रह रह कर बिजलियाँ कौंध रही थी और बादलों की गर्जन जैसे सारे माहौल को अशांत करने पर तुली हुई थी और तेज हवाओं से सारे घर की खिड़कियाँ बजने लगी थी और बहुत भयानक शोर उत्पन्न कर रही थी, पर उस पल भी गोपाल जी का सारा ध्यान नंदनी जी के ऊपर केंद्रित था और वो उनके पाँव के करीब बैठ कर उनके पाँव को दबा रहे थे और उस पल उनकी आँखें आँसुओं से भरी हुईं थी और उनकी आंखों के सामने जैसे बीती ज़िन्दगी के चलचित्र चल रहे थे और उन कठिन लम्हों में वो ज़िंदगी के चंद खूबसूरत लम्हों को याद करके थोड़े रुआंसे से हो गए थे और उस पल उनकी आंखों में आए आंसुओं को देखने वाला पास कोई भी नही था। चिंता भरे उन लम्हों में उनकी निगाहें जलते दीये की लो पर ही लगी हुई थी, जिसकी लो तेज़ हवाओं से कभी थोड़ी मद्धम सी पड़ जाती थी। दीये की लो को ऐसे लहराते देख कर, गोपाल जी थोड़े चिंतित हो उठे थे।

पता नही क्यों उन्हें कुछ ऐसा अनुभव हो रहा था कि कहीं जलते दीये की लो से नंदनी जी की सांसें न जुड़ी हों और किसी अनिष्ट की कल्पना मात्र से उनका हृदय कांप गया था और ये ही सब सोचकर वो बहुत तेज़ कदमों से रसोई घर की ओर बढ़े थे और अंधेरा होने की वजह से उन्हें रास्ते में बहुत सी ठोकरें भी लगी थी और कांपते हाथों से तेल की शीशी को खोजने की वजह से, उनके हाथों से बहुत से बर्तन भी ज़मीन पर गिर गए थे, जिससे रात के सन्नाटे में, बहुत भयानक शोर उत्पन्न हुआ था। पर जब उन्होंने दीये में पर्याप्त मात्रा में तेल डाल दिया था, तब वह दीया एक बार फिर से जगमगाने लगा था और उस दीये को अच्छी तरह से जगमगाने देख कर उन्होंने चैन की सांस ली थी। पर

अंधकार में की इस भागादौड़ी की वजह से, वो बहुत थक चुके थे और इसी वजह से वो अपनी पत्नी के पाँव में सिर रख कर वहीं पर सो गए थे। पर नींद में भी उनके चेहरे पर चिंता की लकीरें बहुत साफ दिखाई दे रही थी। सुबह जब नंदनी जी ने अपनी आँखें खोली, तब वह अपने आप को कुछ बेहतर अनुभव कर रही थी, पर जैसे ही उनकी निगाह अपने पैरों में सिर रख कर सोये गोपाल जी पर पड़ी, तो वो गोपाल जी के लिए थोड़ी फिकर मंद सी हो उठी थी। उस पल नंदनी जी मन ही मन में सोच रही थी कि शायद रात भर गोपाल जी उनके पांव दबाते रहे होंगे और इसीलिए शायद वो थक कर मेरे पैरों पर अपना सिर रख कर सो गये होंगे। इसी बीच गोपाल जी की आंख खुल गई थी और वो नंदनी जी को होश में आया देख कर खिल उठे थे और उनकी आंखें खुशी से चमकने लगी थी। पर जब नंदनी जी ने अपने पति को जागते हुए देखा तो उन्होंने बहुत प्रेम से उनसे पूछा "आप कैसे हो जी" नंदनी जी अपने पति को बरसों से जानती थी और वो जानती थी कि गोपाल जी बहुत ही कमज़ोर दिल के इंसान है और इस आकस्मिक बन आई परिस्थिति की वजह से वो बहुत घबरा गये होंगे। उस समय नंदनी जी का एक हाथ अपने पति के हाथ पर था और वो बहुत प्रेम से उनके हाथों को सहला रही थी। उस पल गोपाल जी खुशी के मारे अपनी पत्नी से बस इतना ही कह पाए थे "मैं तुम्हारे लिए दूध गर्म करके लाता हूं" और यह कहते हुए, वो बहुत तेज़ी से उठे थे और रसोई घर में दूध गर्म करने के लिए बर्तन को ढूंढने लगे थे, जैसे उस पल उनकी बूढ़ी हड्डियों में जवानी का जोश भर गया था और खुशी की उसी हड़बड़ी में उनके हाथों से मालूम नही कितने ही बर्तन छूट कर नीचे गिर पड़े थे, पर अब बर्तनों के गिरने का शोर भयानक नहीं लग रहा था। पर बर्तनों के गिरने के शोर को सुनकर नंदनी जी के चेहरे पर एक कोमल सी मुस्कराहट जरूर आ चुकी थी, जैसे वो जानती थी कि अधिक खुश हो जाने की वजह से गोपाल जी के हाथों से बर्तन फिसल कर नीचे गिर रहे होंगे। थोड़ी देर में ही गोपाल जी नंदनी जी के लिए एक कप गर्म दूध ले आए थे और उन्होंने बहुत प्रेम से सहारा देकर नंदनी जी को बिस्तर पर बिठा दिया था और दूध का कप उनके कांपते से हाथों में थमा दिया था। तब नंदनी जी ने बहुत गौर से अपने पति के चेहरे की ओर देखा था और उनसे बहुत प्रेम से पूछा था "आप कैसे हो जी" और उस पल जैसे गोपाल जी की आंखों से आंसुओं का बांध टूट पड़ा था और वो फूट फूट कर रोने लगे थे और उन्होंने रोते हुए ही नंदनी जी से कहा था "तुम्हारी तबियत ठीक नहीं थी, तो मैं कैसे ठीक रह सकता था"

और यह कह कर वो फिर से रोने लगे थे। आंखों को नम कर देने वाले उन लम्हों में नंदनी जी ने गोपाल जी का हाथ अपने हाथों में थाम लिया था और वो बहुत प्रेम से उनकी ओर देख रही थी और अब तक बाहर तूफान थम चुका था और सुबह का सूर्य अपनी पूरी गरिमा के साथ फिर से आसमान में निकल आया था और सारा आसमान परिन्दों की मीठी किलकारियों से गूंजने लगा था और बारिश की पानी की बूंदें टप टप की मधुर संगीत करती हुई धरती पर गिर रही थी, जिससे बहुत सुन्दर संगीत उत्पन्न हो रहा था। अंधकार के गहरे बादल अब छट चुके थे और एक खूबसूरत सुबह उन दोनो का इंतज़ार कर रही थी और यहां से उनकी जीवन यात्रा एक बार फिर से आरंभ हुई थी और वर्षों तक उन दोनो को एक दूसरे का साथ रहा था।

समाप्त

कहानी 3: आस्था का करिश्मा - किस्सा चींटियों का

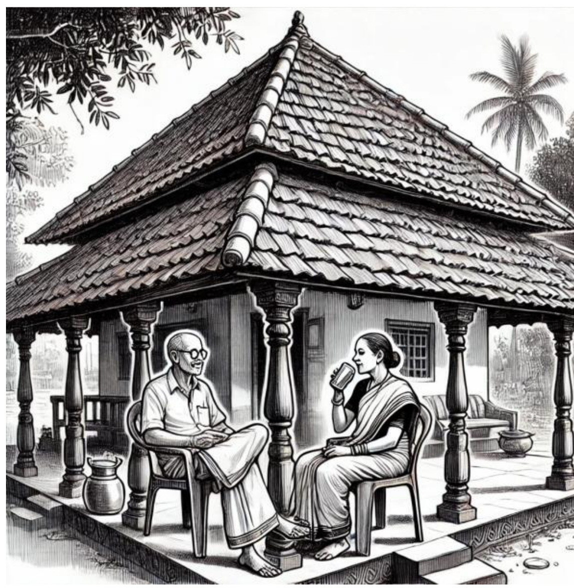

यह कहानी वर्ष 1968 के आसपास की है, जब शहर में रहने वाले रिटायर्ड बैंक अधिकारी, चिंतामणि और उनकी शिक्षिका पत्नी कावेरी ने अपनी पुश्तैनी ज़मीन पर एक छोटा सा घर बनाया था। वो घर सब सुख सुविधाओं से संपन्न था और चिंतामणि अपनी पत्नी कावेरी के साथ उस घर में सुख शांति के साथ रहने लगे थे। उनकी कोई औलाद नहीं थी। चिंतामणि और कावेरी की ईश्वर में बहुत आस्था थी और वो गांव में पहाड़ी पर बने मंदिर में बहुत श्रद्धा के साथ जाते थे और ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि उनकी जिंदगी में सुख शांति बनी रहे और चिंतामणि और कावेरी अपनी जिंदगी से बहुत खुश थे। चिंतामणि कभी कभी इस बात से थोड़ा चिंतित ज़रूर हो जाते थे कि उनकी बहुत सी पूंजी घर बनाने में ही खर्च हो गई थी और अब उनके पास थोड़ी बहुत पूंजी ही बची थी, पर चिंतामणि और कावेरी को रिटायार्ड होने के बाद पेंशन भी मिलती थी और यह उन दोनो के लिए एक बहुत बड़ा सहारा था। पर यह भी सच था कि उनके खर्चे बहुत

कम थे और पति पत्नी दोनों ही अपनी सादी सी जिंदगी से बहुत खुश थे और उनकी खुशी का एक कारण यह भी था कि उनका बरसों का अपना घर बनाने का सपना सच हो गया था। चिंतामणि ने अपने आधे एकड़ की ज़मीन पर बने घर में बहुत अच्छा बगीचा बनाया हुआ था और उस बगीचे में उन्होंने फूलों के पौधे के साथ कुछ फलदार वृक्ष भी लगाए हुए थे और अब दोनों पति पत्नी का अधिकतर समय, अपने घर के खूबसूरत बरामदे में बैठ कर, चाय पीते हुए बीतता था और उन्होंने अपने बगीचे की देखभाल करने के लिए डोंडीबा नाम के एक बूढ़े माली को भी रखा हुआ था और डोंडीबा बूढ़ा होने पर भी, बगीचे का सारा काम बहुत मेहनत और ईमानदारी के साथ करता था, पर पिछले लगभग 15 दिनों से, बीमार पड़ने की वजह से डोंडीबा छुट्टी पर था। चिंतामणि और कावेरी समय गुज़ारने के लिए आसपास के घरों के छोटे बच्चों को पढ़ा दिया करते थे और ऐसा करने से उनका समय भी अच्छा व्यतीत हो जाता था और वो दोनों अपनी जिंदगी से बहुत खुश थे। चिंतामणि और कावेरी मिलकर अपने घर के सब काम कर लेते थे और घर के सामान की ज़रूरत पड़ने पर वो दोनों पैदल ही गांव के छोटे से बाजार में चले जाते थे और उस समय जैसे समय को पंख लग गए थे।

एक दिन थोड़ी बारिश हो रही थी और चिंतामणि और कावेरी थोड़ा भीग कर अपने घर वापिस पहुंचे थे और घर पर लौटते समय चिंतामणि ने देखा कि उनके बगीचे में और घर की नींव के आसपास बहुत सी चींटियां चल रही थी, जो धीरे धीरे उनके घर के भीतर भी जा रही थी और इतनी सारी चींटियों को एक साथ देख कर, चिंतामणि मन ही मन में थोड़े चिंतित हो उठे थे, क्योंकि चिंतामणि शहर के रहने वाले थे और उन्होंने इतनी सारी चीटियां एक साथ कभी नही देखी थी और उन्होंने कहीं से सुन रखा था कि चींटियां घर की नींव को खोखला कर देती है और उससे घर को बहुत नुकसान हो सकता था और यही सब कुछ सोच कर, चिंतामणि मन ही मन में बहुत चिंतित हो उठे थे। पर उन्होंने अपने इस भय को, कावेरी से नही कहा था, क्योंकि उन्हें भय था कि चिंता करने की वजह से कहीं कावेरी के स्वस्थ पर खराब प्रभाव न पड़े। घर पर आने के बाद चिंतामणि ने जल्दी से अपने भीगे हुए कपड़े बदले थे और वो घर की सब खिड़कियों से झांक कर नीचे की ओर देख रहे थे और उनको इस बात ने बहुत चिंता में डाल दिया था, क्योंकि उन्हें अपने घर के आसपास सब तरफ, बहुत सी चींटियां चलती दिखाई दे रही थी जो धीरे धीरे खिड़की और दरवाज़े के रास्ते से भीतर भी आने लगी थी। पर कावेरी का इस

ओर अधिक ध्यान नहीं था और वो रसोई घर के काम में व्यस्त हो गई थी और बारिश की वजह से हुई ठंड को देखते हुए, वो रसोई घर में चाय बना रही थी, पर जब कावेरी ने चिंतामणि के हाथों में चाय का कप पकड़ाया, उस समय चाय पीते पीते भी, चिंतामणि सिर्फ चींटियों के बारे में ही सोच रहे थे और उन्हें गंभीर अवस्था में सोचता हुआ देख कर, कावेरी ने चिंतित होते हुए चिंतामणि से पूछा था "आपकी तबीयत तो ठीक है न, आप जब से घर वापिस आए हैं, कुछ सोच रहे है, क्या बात है, सब ठीक तो है न" कावेरी ने बहुत प्रेम से चिंतामणि से पूछा था। तब चिंतामणि ने कुछ संभल कर कावेरी से कहा था "नहीं कोई विशेष बात नहीं है, बस थोड़ी ठंड लग रही है और कुछ खास बात नहीं है" यह कह कर चिंतामणि ने कावेरी को चिंतामुक्त कर दिया था। पर भीतर से उन्हें चींटियों की चिंता खाए जा रही थी और उनकी चिंता करने की मुख्य वजह यह थी, कि उन्होंने जीवन भर की पूंजी को घर बनाने में खर्च कर दिया था और अब बुढ़ापे में, वो अपने बनाए घर का नुकसान होते हुए कैसे देख सकते थे। जैसे तैसे करके करवट बदलते बदलते उनकी रात कटी थी और सारी रात बाहर हल्की हल्की बारिश होती रही थी, पर उस पल चिंतामणि की सारी सोचें, अपने घर की नींव के आसपास घूमती चींटियों पर अटक गई थी और वो चींटियां अब खिड़की और दरवाज़े के रास्ते से धीरे धीरे घर के भीतर भी आने लगी थी।

सुबह कावेरी ने घर के दरवाज़े और खिड़ियों पर चींटियों को देखा तो उसने झाड़ू से वहां पर अच्छी तरह से सफाई कर दी थी और सब जगह पर थोड़ी सी हल्दी डाल दी थी, पर कावेरी को यह नहीं पता था कि चिंतामणि चींटियों को लेकर ही बहुत चिंतित हैं। बाहर अभी भी धीमें धीमें बारिश हो रही थी और कावेरी ने देखा कि उनके घर के भीतर धीरे धीरे चलती हुई डोंडीबा की बूढ़ी पत्नी आ रही थी और उसने अपने शरीर को बारिश से बचाने के लिए, एक बोरी से ढक रखा था और उसने कावेरी के निकट आकर कावेरी से कहा था "मुझे डोंडीबा ने भेजा है, कुछ दिन से वो बीमार हैं और उन्होंने मुझे बगीचे में साफ सफाई करने के लिए कहा है" यह कह कर डोंडीबा की बूढ़ी पत्नी खामोश हो गई थी। कावेरी ने उसकी बूढ़ी अवस्था का ध्यान करते हुए उसे घर के भीतर बुला लिया था और उसे एक कप चाय पीने के लिए दी थी और साथ में खाने के लिए कुछ बिस्किट भी दिए थे और कावेरी ने उसे बहुत प्रेम से कहा था "आपने ऐसे ही कष्ट किया अगर बगीचे में एक दो दिन साफ सफाई नहीं होगी, तो आसमान नहीं टूट पड़ेगा, अब

बारिश हो रही है और आप भी संभल कर घर जाइए और जब डोंडीबा ठीक हो जाएगा तो आप उसे भेज दीजिएगा" उस पल डोंडीबा की पत्नी, कावेरी को बहुत ध्यान से देख रही थी, फिर पता नहीं क्या सोच कर उसके मुंह से निकला था "आपके बारे में मेरा पति ठीक ही बोलता है कि आप दोनों देवता समान है, इसीलिए उसे आपके घर की इतनी चिंता रहती है" उस बूढ़ी औरत के मुंह से अपनी तारीफ सुनकर कावेरी मुस्कराने लगी थी और डोंडीबा की पत्नी ने जाने से पहले चिंतामणि की ओर इशारा करके कावेरी से पूछा था "लगता है साहब की तबियत कुछ ठीक नहीं है" तब कावेरी ने डोंडीबा की पत्नी से कहा था "हां इन्हें भीगने की वजह से थोड़ा बुखार हो गया है, मैं इन्हें काढ़ा बना कर देने वाली हूं" तब डोंडीबा की पत्नी ने अपने हाथ जोड़ कर कावेरी से कहा था "ईश्वर करे कि ये जल्दी ठीक हो जाएं" और वो दोनो को असीस देती हुई धीमें धीमें कदमों से अपने घर की ओर जाने लगी थी, पर घर की ओर जाने से पहले, उसने बगीचे पर एक सरसरी नज़र डाली थी और उसने बगीचे में पत्तों के बीच में चलती चींटियों को देख लिया था और फिर उसकी निगाहें चींटियों का पीछा करते हुए घर की दीवार तक पहुंच गई थी और सब तरफ चींटियों को चलते देख कर, उसने मन ही मन में सोचा था कि वो घर जाते ही चींटियों वाली बात डोंडीबा को ज़रूर बताएगी और वो समय रहते चींटियों का कोई न कोई उपाय ज़रूर कर लेगा।

अब कावेरी का सारा ध्यान चिंतामणि की ओर लगा हुआ था और उसने अपने चेहरे पर चिंता के भाव लिए, चिंतामणि के माथे को हाथ लगा कर देखा, तो उसे लगा कि चिंतामणि को थोड़ा बुखार है। कावेरी का लगा कि शायद बारिश में भीग जाने की वजह से चिंतामणि को बुखार हो गया है और यही सोच कर वो घरेलू उपचार करने की कोशिश करने लगी थी और उसने एक कप काढ़ा बनाया था और उसे चिंतामणि को पीने के लिए दिया था, पर कावेरी के लिए चिंतामणि का "बुखार और चुप्पी" चिंता का विषय बनती जा रही थी। रात भर बाहर बारिश होती रही और नींद की अवस्था में चिंतामणि ने एक भयानक सपना देखा और उसने अपने सपने में देखा कि उनके घर में चारों तरफ से चींटियां भीतर चली आ रही हैं और सारा घर चींटियों से भर गया है और यह वास्तव में बहुत डरा देने वाला सपना था, जिसे देख कर चिंतामणि की आधी रात को आंख खुल गई थी और वो पसीने से लथपथ हो चुका था। चिंतामणि को जगा देख कर कावेरी की नींद भी खुल गई थी और जब उसने चिंतामणि को पसीने से भीगा हुआ

देखा, तब उस पल कावेरी मन ही मन में, चिंतामणि की सेहत को लेकर बहुत चिंतित हो उठी थी और वो चिंतामणि के माथे को थपथपा कर, उसे सुलाने की कोशिश करने लगी थी और उस पल चिंतामणि मन ही मन में यह फैसला कर चुका था, कि थोड़ा ठीक होते ही, दोनो पहाड़ पर बने मंदिर में दर्शन के लिए जायेंगे और ईश्वर से प्रार्थना करेंगे और उस पल चिंतामणि सोच रहे थे कि अब ईश्वर ही उन्हें चींटियों की इस विपदा से बचाएंगे। दूसरी तरफ कावेरी की आंखों से नींद कोसों दूर थी और वो चिंतामणि के लिए बहुत चिंतित थी। रात जैसे तैसे करके कट गई थी और सुबह होते होते, बारिश भी रुक चुकी थी और अब गुनगुनी सी धूप निकल आई थी और मौसम का मिज़ाज थोड़ा ठीक होते देख कर, कावेरी ने चिंतामणि को पास के एक डाक्टर के पास लेकर जाने का फैसला किया था और डाक्टर ने चिंतामणि को देखने के बाद, कावेरी को यह कह कर चिंता मुक्त कर दिया था "घबराइए नहीं इन्हें मामूली सा बुखार है और कुछ भी नहीं है और यह बुखार भी एक दो दिन में ठीक हो जाएगा" डॉक्टर ने कावेरी को दवाई दे दी थी और कावेरी को यह समझा दिया था कि इस दवाई को कैसे देना है। दो दिन में चिंतामणि का बुखार टूट गया और कमजोरी की अवस्था में ही, चिंतामणि कावेरी से ज़िद करने लगे थे कि उन्हें पहाड़ पर बने उस मंदिर में दर्शन के लिए जाना है। उस समय चींटियों की विकट समस्या को देख कर चिंतामणि को लगा कि वह मंदिर में जाकर ईश्वर से प्रार्थना करेंगे और अब सिर्फ ईश्वर ही है उनकी मदद कर सकता है। कावेरी को चिंतामणि का कमजोरी की हालत में मंदिर जाने का ख्याल थोड़ा विचित्र लगा था और उसने चिंतामणि को बहुत प्रेम से समझाने की कोशिश भी की थी कि "अभी तुम्हें थोड़ी कमज़ोरी है और तुम्हें आराम करना चाहिए" पर चिंतामणि ने कावेरी की एक न सुनी थी, इसलिए मन मार कर कावेरी को भी हां करनी पड़ी थी और उस पल वो मन ही मन सोच रही थी कि वो भगवान के घर ही जा रहे है और अब वो ही हमारी रक्षा भी करेंगे और यह सब सोचकर, उन दोनों ने अपने घर को ताला लगाया और वो दोनों धीरे धीरे चलते हुए उस पहाड़ के निकट पहुंचे, जिस पहाड़ की चोटी पर मंदिर बना हुआ था। एक एक सीढी को कठिनाई से चढ़ते हुए वो दोनो जैसे तैसे करके 3 घंटे की पैदल यात्रा करने के बाद मंदिर में पहुंच गए थे और उन्होंने अपने साथ लाए फल, बहुत श्रद्धा के साथ मंदिर में अर्पण कर दिए थे और वो दोनों मंदिर में लगी घंटी को बजाकर मन ही मन में ईश्वर से प्रार्थना करने लगे थे। उस पल कावेरी अपने पति की सेहत को लेकर चिंतित थी और वो

चिंतामणि की सेहत के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी, पर दूसरी तरफ चिंतामणि घर पर आई चींटियों की विपदा से परेशान थे और वो मन ही मन में ईश्वर से ये प्रार्थना कर रहे थे कि "हे ईश्वर हमें चींटियों के इस अजीब संकट से बचाइए" दूसरी तरफ जब शाम को डोंडीबा की पत्नी अपने घर पहुंची, तब उसने अपने पति को बगीचे की सारी हालत कह सुनाई और उससे यह भी कहा कि उसने बगीचे में चारों तरफ चींटियों को चलते हुए देखा हैं और वो चींटियां घर की दीवारों पर भी चढ़ रही हैं और उसके कहने के अंदाज से, उसकी चिंता साफ झलक रही थी। डोंडीबा अब खुद को थोड़ा पहले से बेहतर अनुभव कर रहा था और उसने अपनी पत्नी से कहा था "तू परेशान मत हो, मेरे पास सब उपाय हैं, मैंने फूल पत्तों के डाक्टर के पास काम करके उनसे बहुत कुछ सीखा हुआ है और कल सुबह ही मैं बगीचे की सब चींटियों को भगा दूंगा, तुम इस बात की बिलकुल भी चिंता मत करो" उस पल डोंडीबा की पत्नी ने अपने पति से कहा था, वो दोनो बहुत भले लोग हैं और आज तो साहब की तबियत भी कुछ ठीक नहीं लग रही थी, मेम साहब कह रही थी कि साहब को बुखार आया है "डोंडीबा और उसकी पत्नी दोनों बहुत भले लोग थे और उनसे किसी का भी दुख दर्द नही देखा जाता था। उस समय कुछ सोचते हुए डोंडीबा ने अपनी पत्नी से कहा था" कल सुबह हम अपने बेटे को भी साथ ले जाएंगे और बगीचे की सारी साफ सफाई का काम एक ही दिन में समाप्त कर देंगे और ये ही सोच कर डोंडीबा साथ ले जाने वाले सामान की तैयारी करने लगा था। डोंडीबा जानता था कि बीमार पड़ने की वजह से उसने 15 दिन की जो छुट्टी ली थी उसकी वजह से यह बखेड़ा खड़ा हुआ था और अब उसे बगीचे की साफ सफाई का काम और चींटियों को भागने का काम बहुत सावधानी से करना था।

सुबह होते ही डोंडीबा अपनी पत्नी और बेटे के साथ चिंतामणि के घर पहुंच गया था, पर वहां पर पहुंच कर उन्होंने देखा कि घर पर ताला लगा हुआ था। वह गेट खोलकर भीतर चले गए थे और उन्होंने भीतर जाने से पहले रबड़ के स्पेशल जूते पहन लिए थे जिससे चींटियां उन्हें काटे नही और सबसे पहले डोंडीबा ने घर के आसपास मशीन की मदद से, सब तरफ एक विशेष कीटनाशक दवाई का स्प्रे मारा था, जिससे चीटियां बहुत तेज़ी से मरने लगी थी और फिर उन्हें घर की नींव के आसपास उबलता हुआ पानी डाला था, जिससे चींटियों के घर और अंडे टूट कर बिखरने लगे थे और इस बीच डोंडीबा की पत्नी सारे बगीचे में झाड़ू लगाने लगी थी और झाड़ू लगाते समय उन सबने देखा कि सारे

घर में, गूलर के वृक्ष के फल बिखरे हुए थे और फल मीठे होने की वजह से उन पर लाखों की तादाद में चींटियां आ गई थी (गूलर का फल जंगली फल होता है जो दिखने में बिल्कुल अंजीर की तरह दिखाई देता है और बहुत से राज्यों में गूलर के वृक्ष की पूजा होती हैं क्योंकि लोगों की ऐसी मान्यता है कि गूलर के वृक्ष पर कुबेर का वास होता है इसलिए उस वृक्ष की शाखाओं को कभी काटते नही हैं) डोंडीबा और उसके सारे परिवार ने कम से 5 से 6 बोरी भर कर गूलर का सड़ा हुआ फल बगीचे से निकाला था और अब उन्हें चींटियों के आने की वजह समझ आ चुकी थी और वो सारे काम को बहुत सावधानी से कर रहे थे और कुछ घंटों की मेहनत के बाद ही, सारा बगीचा पहले की तरह ही साफ दिखाई देने लगा था और सुरक्षा को देखते हुए उन्होंने घर की नींव को सब तरफ से चुना पोत दिया था और चुने में कुछ कीटनाशक दवाई भी मिला दी थी, इसलिए अब दीवारों पर भी चींटियों का कहीं नामोनिशान नहीं रहा था और जब सब काम समाप्त हो गया, तो वो तीनो अपना हाथ मुंह धोकर एक पेड़ की छांव में बैठ कर खाना खाने लगे थे। आज तीनो ने मिल कर बहुत मेहनत मुशक्त का काम किया था और उस काम को करने के लिए डोंडीबा की जानकारी बहुत महत्वपूर्ण साबित हुई थी और सब काम को ठीक से अंजाम देने के बाद, डोंडीबा का सारा परिवार बहुत खुश था।

जब मंदिर के दर्शन करने के बाद, चिंतामणि और कावेरी घर पहुंचे, तो वो दोनो घर की साफ सफाई को देख कर बहुत हैरान हुए थे और उन्होंने उसी पल हाथ जोड़ कर ईश्वर का धन्यवाद किया था और फिर उन्होंने देखा कि डोंडीबा और उसका परिवार एक वृक्ष की छांव में बैठ कर शांति से भोजन कर रहा था। चिंतामणि और कावेरी चेहरे पर प्रसन्नता के भाव लिए हुए, उनके पास आए और चिंतामणि ने अपने चेहरे पर आश्चर्य के भाव लिए हुए डोंडीबा से पूछा था "डोंडीबा आपने यह चमत्कार कैसे कर दिया" उस पल चिंतामणि की खुशी का ठिकाना नहीं था और उन्हें यकीन हो गया था कि इस चमत्कारिक कार्य में, सिर्फ ईश्वर का ही हाथ हो सकता है, ईश्वर की कृपा के बिना यह कठिन कार्य मुमकिन नहीं हो सकता था। तब डोंडीबा ने चिंतामणि को सब बताया कि पहले वो फूल पत्तों के डाक्टर के पास काम करते थे और इसी वजह से उन्हें कीटनाशक दवाइयों की बहुत अच्छे से जानकारी है।

कुछ समय बाद सब लोग घर के बरामदे में बैठे हुए थे और अब कावेरी ने देखा की चिंतामणि पहले की तरह ही चहकने लगे थे और यह देख कर कावेरी समझ गई थी कि

चिंतामणि की बीमारी की वजह, वास्तव में चींटियां थी, जिन्हें देख कर वो बहुत चिंतित हो उठे थे। कावेरी तब तक सबके लिए चाय बना कर ले आई थी और डोंडीबा चिंतामणि को घर की नींव की सुरक्षा को लेकर चिंतामणि को कुछ सुझाव दे रहा था और उसने चिंतामणि से कहा था "साहब आप घर की नींव के आसपास कम से पांच फीट तक पक्का फर्श बना दीजिए, ऐसा करने से अधिक बारिश होने पर भी पानी घर की नींव में नहीं जायेगा" और डोंडीबा के सुझाव को देखते हुए चिंतामणि ने घर का सारा काम उसके हाथों में सौंप दिया था और अब चिंतामणि को यकीन हो चुका था कि डोंडीबा ईश्वर का भेजा हुआ संदेशवाहक हैं, जिसने उनकी सारी चिंताएं पल भर में समाप्त कर दी थी। उस पल कावेरी ने मुस्कराते हुए चिंतामणि से कहा था "अब मुझे तुम्हारे बीमार पड़ने की असली वजह समझ आ गई है कि तुम चींटियों से भयभीत हो गए थे" तब चिंतामणि ने मुस्करा कर अपनी पत्नी की ओर देखा और उससे कहा था "अरे नही, मैं तो बारिश में भीगने की वजह से बीमार हुआ था" तब कावेरी ने मुस्कराते हुए कहा था "मैं 40 साल से आपके साथ रह रही हूं और मैं आपके बारे में सब कुछ जानती हूं" तब चिंतामणि ने नकली गुस्सा करते हुए कावेरी से कहा था "क्या जानती हो" तब कावेरी ने हंसते हुए कहा था "यही कि तुम बहुत बहादुर हो" और यह कहते हुए वो खिलखिला कर हंस दी थी और यह बात सच थी कि चिंतामणि को स्वस्थ देख कर कावेरी बहुत खुश थी।

चिंतामणि और कावेरी ने डोंडीबा के सारे परिवार को नए कपड़े दिए थे और डोंडीबा को सम्मान देने के लिए उन्होंने डोंडीबा को सिर पर बांधने के लिए एक पगड़ी भी थी और उन्होंने डोंडीबा के सारे परिवार से कहा था कि कल वो सब लोग पहाड़ पर बने मंदिर में दर्शनों के लिए जायेंगे और यह सुनकर डोंडीबा का परिवार बहुत खुश हुआ था।

अगले दिन सुबह ही डोंडीबा का सारा परिवार नए कपड़े पहन कर चिंतामणि के घर पर आया था और चिंतामणि और कावेरी ने देखा कि डोंडीबा ने नए कपड़ों के साथ, उनकी दी हुई नई पगड़ी भी अपने सिर पर बांध रखी थी और वो सब बहुत खुश दिखाई दे रहे थे। कावेरी चिंतामणि को चहकते हुए देख कर बहुत खुश थी और उस पल वो मन ही मन में ईश्वर को धन्यवाद कर रही थी क्योंकि कावेरी ने अपनी आंखों से ईश्वर के चमत्कार को होते हुए देखा था और डोंडीबा ईश्वर के उस चमत्कार का ज़रिया बन गया था। डोंडीबा उनके सामने ईश्वर का संदेशवाहक बन कर प्रकट हुआ था और उसने कुछ समय में ही उनकी सारी चिंताएं समाप्त कर दी थी और ऐसा होना सिर्फ ईश्वर की असीस

से ही मुमकिन हो सकता था। चिंतामणि और कावेरी ने 30 फीट ऊंचे गूलर के वृक्ष की किसी शाखा को नहीं काटा था क्योंकि गांव के लोग गूलर के वृक्ष की पूजा करते थे और गांव वालों की ऐसी मान्यता थी कि गूलर के वृक्ष पर कुबेर जी का वास होता है और चिंतामणि और कावेरी को गांव की इन मान्यताओं पर बहुत विश्वास था। पर अब वो गूलर के वृक्ष के फल से बहुत सावधान हो गए थे और उन्होंने अपने घर के पीछे एक खड्डा खोद रखा था, जिसमें वो घर में गिरे हुए सूखे पत्ते और सड़े फल खाद बनाने के लिए डाल देते थे और फिर उस खड्डे को मिट्टी से ढक देते थे और कुछ दिन में ही, उन्हें घर की बनी हुई अच्छी खाद मिल जाती थी और पौधों को घर की बनी खाद मिलने से, घर का बगीचा और भी सुंदर दिखाई देने लगा था और चिंतामणि और कावेरी के घर की सुंदरता देख कर, कुछ ऐसा आभास होता था कि उन पर ईश्वर की विशेष कृपा हो गई थी।

समाप्त

कहानी 4: मास्टर केदारनाथ

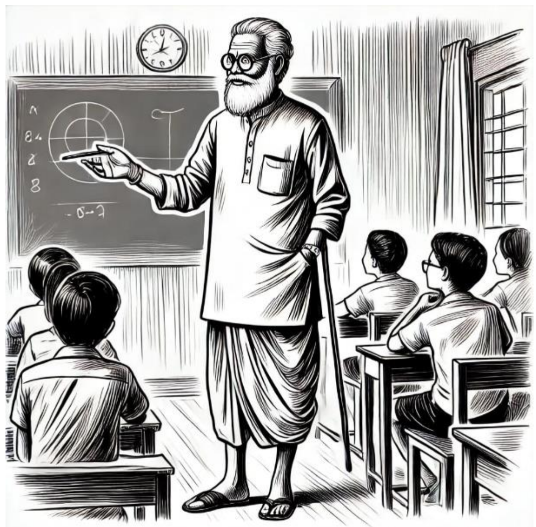

यह वर्ष 1970 के आसपास की बात है। एक पाठशाला के अध्यापक "मास्टर केदारनाथ" अपने सब विद्यार्थियों में बहुत प्रिय थे। मास्टर केदारनाथ स्वभाव से बहुत सीधेसादे और सरल इंसान थे और उनकी वेशभूषा भी बहुत साधारण सी होती थी। वो अधिकतर हल्की नीले रंग की कमीज और मलमल की सफेद धोती पहनते थे और कभी कभी वो हल्की ग्रे कलर की सूती पेंट और सफेद रंग की कमीज़ पहनते थे जो उनके सादे से व्यक्तित्व पर बहुत अच्छी दिखाई देती थी। उस पाठशाला के सब बच्चे देखते थे कि मास्टर केदारनाथ जब भी स्कूल में प्रवेश करते थे तब वो अपने टिफन में से एक रोटी निकाल कर गाय को ज़रूर खिलाते थे और यह उनका हर रोज़ का नियम था। 1970 में सरकारी स्कूलों की इमारतें बहुत सादी सी होती थी और यह पाठशाला भी बहुत छोटी सी थी और उस पाठशाला में कुल पांचवीं कक्षा तक ही शिक्षा देने की व्यवस्था थी। उस पाठशाला की इमारत इतनी पुरानी हो चुकी थी कि बारिशों के दिनों में उस पाठशाला की छत से पानी टपकता था और जब भी कभी तेज़ बारिश होती थी तब मास्टर केदारनाथ सब बच्चों को अपनी कुर्सी के निकट बिठा लेते थे और सब बच्चों को कोई शिक्षाप्रद कहानी सुनाते थे और फिर वह बारिश का दिन सब बच्चों के लिए एक यादगार दिन बन

जाता था। मास्टर केदारनाथ सब बच्चों से बहुत स्नेह रखते थे और बच्चे भी उनसे बहुत प्रेम करते थे। सब बच्चों में अक्सर एक होड़ सी लगी रहती थी कि कौन सबसे पहले मास्टर जी को अपना होम वर्क की कॉपी दिखायेगा और सब बच्चों में अच्छे और परोपकारी कार्यों को करने का एक उत्साह सा बना रहता था और सब बच्चे अपने किए अच्छे कामों के बारे में मास्टर केदारनाथ को जरूर बताते थे और मास्टर केदारनाथ सब बच्चों की बातें बहुत ध्यान से सुनते थे और समय समय पर उनका मार्गदर्शन भी करते रहते थे। मास्टर केदारनाथ स्कूल के सब बच्चों का मनोबल बढ़ाते रहते थे और बच्चों के प्रशंसनीय कार्यों की प्रशंसा भी किया करते थे और वो सब बच्चों को अच्छे और सच्चे मार्ग पर चलने की शिक्षा देते थे।

जब कभी कोई बच्चा उनके पढाने के दौरान खिड़की से बाहर देख रहा होता था तो वह उस विद्यार्थी को अक्सर यह कहते थे कि यह बच्चा बड़ा होकर ज़रूर कोई लेखक या कवि बनेगा। मास्टर साहब की बात को सुनकर सब बच्चे मुस्कराने लगते थे। इस खूबसूरत रचनात्मक माहौल से सब बच्चों का बहुत सुन्दर मानसिक विकास होने लगा था। मास्टर केदारनाथ ने अपने जीवन में कभी भी किसी बच्चे को गुस्सा नही किया था पर हां जब कोई बच्चा गलत काम करता था तो वो उस बच्चे को मीठी सी झिड़की अवश्य दे देते थे। सब बच्चे मास्टर केदारनाथ का बहुत आदर करते थे। मास्टर केदारनाथ पढ़ाई में कमज़ोर बच्चों को अक्सर अपने घर पर पढ़ने के लिए बुला लिया करते थे पर उन्होंने अपने किसी भी विद्यार्थी से पढ़ाने के लिए कभी कोई पैसे नही लिए थे। मास्टर केदारनाथ “विद्या” को इस प्रकार बेचे जाने के बहुत खिलाफ थे। जब भी बच्चे मास्टर केदारनाथ के किराये के घर में इकट्ठे होते थे तब पढ़ाई के साथ साथ, वहाँ पर खूब हँसी मज़ाक भी होता था और बेशक वह बहुत सुन्दर और यादगार वातावरण होता था। मास्टर केदारनाथ की इस प्रकार की शिक्षा नीति से बच्चों की बुद्धि का बहुत सुन्दर विकास हो रहा था, जिसमें बच्चों को शिक्षक का लेशमात्र भी भय नहीं था। मास्टर केदारनाथ एक किराये के घर में रहते थे और वो अपनी थोड़ी सी तनख्वाह में भी बहुत संतुष्ट थे और उनके मस्तक पर एक विशेष चमक दिखाई देती थी जो किसी का भी ध्यान अपनी ओर खींच लेती थी।

मास्टर केदारनाथ जिस दिन भी बिमारी होने के वजह से या किसी उलझन की वजह से पाठशाला में नहीं आ पाते थे, उस दिन सब बच्चों को मास्टर केदारनाथ जी की कमी

बहुत खलती थी। कुछ अच्छे और यादगार वर्ष बीतने के बाद, जब सब बच्चे प्राइमरी स्कूल की शिक्षा समाप्त करके हाई स्कूल में चले गए, तब कुछ पल के लिए सब बच्चे बहुत उदास हो गए थे और फिर एक दिन ऐसा भी आया कि जब सब बच्चे हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त करने के बाद एक दूसरे से बिछड़ गए। कोई उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश चला गया, तो कोई अपने पिता के कारोबार को आगे बढ़ाने में अपने पिता की सहायता करने लगा था।जैसे समय के थपेड़ों ने और उनकी जरूरतों ने सब बच्चों को तितर बितर कर दिया था। ज़िंदगी की भागादौड़ी में और अधिक व्यस्तता की वजह से सब बच्चे एक दूसरे को लगभग भूल चुके थे। सब बच्चे अपने लक्ष्य को पाने की होड़ में लग गए थे और उस समय एक दूसरे से जुड़े रहने के लिए कोई माध्यम भी उपलब्ध नहीं था। जब सब बच्चे एक दूसरे से बिछड़े तो उनके बीच में दूरियाँ इतनी बढ़ गई थी कि वो चाह कर भी एक दूसरे से संपर्क नही रख पाए थे और समय के साथ साथ लगभग सब विद्यार्थी, मास्टर केदारनाथ को भूल गए थे। समय का पहिया घूमता गया, घूमता गया, पर इस बीच एक विद्यार्थी "सत्यदेव" जो हाई स्कूल और कालेज में पढ़ने के बाद, विदेश चला गया था और फिर वहीं का हो कर रह गया था, उसे लगभग 20 वर्षों के बाद 42 वर्ष की उम्र में, मास्टर केदारनाथ का ध्यान हो आया था और जब वो हिंदुस्तान वापिस लौटा तब उसे बचपन के सब किस्से कहानियाँ धीरे धीरे याद आने लगे थे जो वक्त के साथ साथ कहीं खो गए थे। सत्यदेव ने देखा कि अब सब कुछ बदल चुका था। सत्यदेव को अपने बचपन की वह पाठशाला याद आई थी जिसमें वह पढ़ा करता था। पर अब तक वह पाठशाला हाई स्कूल की एक पक्की इमारत में बदल चुकी थी। सत्यदेव को धीरे धीरे अब वह पल याद आने लगे थे जब बारिश के दिनों में मास्टर केदारनाथ सब बच्चों को कोई किस्सा कहानी सुनाते थे और सब बच्चे बहुत चाव से वह कहानी सुनते थे। उन दिनों को याद करके सत्यदेव की आंखें भर आई थी और वो मन ही मन में सोच रहा था कि वो कितने खूबसूरत और सुनहरी दिन थे और आंखों को नम कर देने वाले उन पलों में उसे अपने स्कूल के सब सहपाठी याद आने लगे थे और उस पल सत्यदेव मन ही मन में यह सोच रहा था कि मास्टर केदारनाथ के पास सब बच्चों के लिये कितना समय होता था और मास्टर केदारनाथ पर आकर उसकी सारी सोचें जैसे वहीं पर थम सी गई थी। उस समय सत्यदेव बस एक ही बात सोच रहा था कि मास्टर केदारनाथ अब इस समय कहाँ पर होंगे और किस हाल में होंगे। मास्टर केदारनाथ की पूछताछ करने

पर स्कूल वालों ने सत्यदेव को बताया कि लगभग 15 साल पहले मास्टर केदारनाथ अपनी नौकरी से रिटायर्ड हो चुके थे और अब वो कहां पर हैं और क्या कर रहे हैं इसकी उनको कोई जानकारी नही है। उस पल सत्यदेव के मन में मास्टर केदारनाथ की न जाने कितनी ही यादें ताज़ा हो गई थी और आंखों को नम कर देने वाले उन लम्हों में, उसे याद आया कि जैसे मास्टर केदारनाथ किसी विद्यार्थी को कह रहे हों, "नहीं नहीं, ऐसा मत करना, इससे तुम्हें पाप लगेगा, एक अच्छा इंसान दूसरों इंसान के काम आता है और तुम सब भी अपने जीवन में अच्छे काम ही करना" मास्टर केदारनाथ की कही उन बातों को याद करके सत्यदेव ने मन ही मन में निश्चय कर लिया था कि वो कैसे भी करके मास्टर केदारनाथ जी को ढूंढ निकालेगा।

इधर उधर से पूछताछ करने पर, सत्यदेव को किसी ने बताया कि मास्टर केदारनाथ रिटायर्ड होने के बाद किसी ड्राइक्लिनर की छोटी सी दुकान पर काम करने लगे थे। यह सब जानकर सत्यदेव उन्हें ढूंढते ढूंढते उस ड्राइक्लीनिंग की दुकान पर पहुँचा और उस ड्राइक्लीनिंग की दुकान पर बैठे दुकानदार ने सत्यदेव की पूछ ताछ के दौरान मास्टर केदारनाथ की ढेरों तरीफ़े कर डाली थी और उसने सत्यदेव को यह भी बताया कि मास्टर केदारनाथ जी उसकी दूकान के पास ही एक किराए के घर में रहते थे। पर हर वर्ष किराये का घर बदलने की मजबूरी की वजह से वो नौकरी भी उस घर के आसपास ही ढूंढते थे। मास्टर केदारनाथ के बारे में यह सब सुनकर सत्यदेव का मन भर आया था और उस पल सत्यदेव मन ही मन में यह सोच कर बहुत दुखी हो चुका था कि मास्टर केदारनाथ को बुढ़ापे में यहां वहां नौकरी की तलाश में भटकना पड़ रहा था। तब उस दुकानदार ने सत्यदेव को बताया कि जब उसने अंतिम बार मास्टर जी को देखा था, तब वो किसी किताबों की लाइब्रेरी में काम कर रहे थे। सत्यदेव का मास्टर केदारनाथ को खोजने का सफर एक बार फिर से शुरू हुआ था और बहुत ढूंढने पर सत्यदेव को वह लाइब्रेरी की दुकान भी मिल गई थी जिस लाइब्रेरी की दुकान पर मास्टर केदारनाथ जी काम करते थे और उस लाइब्रेरी के मालिक ने सत्यदेव को बताया कि मास्टर केदारनाथ उसके पास लगभग 7 साल पहले काम करते थे पर किसी वजह से वो अपने गाँव वापिस लौट गए थे। मास्टर केदारनाथ के बारे में सोच कर उस पल वह दुकानदार भी थोड़ा उदास दिखाई दे रहा था। उस दुकानदार ने सत्यदेव को बताया कि मास्टर जी बड़े दयालु इन्सान थे और उसके लिए पिता तुल्य थे। फिर कुछ पल रूककर उस दुकानदार ने सत्यदेव से कहा कि

मैंने उन्हें कहा भी था कि मैं आपके रहने का बंदोबस्त भी यहीं कहीं आसपास ही कर दूंगा और आप यहीं पर रुक जाइए, पर मास्टर जी देवता जैसे इंसान थे और उन्हें किसी का भी अहसान लेना या किसी पर बोझ बनना बिलकुल भी पसंद नही था। यह कहते कहते वह व्यक्ति भी थोड़ा रूआंसा सा हो गया था। उस लाइब्रेरी के मालिक ने सत्यदेव से कहा कि मेरे पिता का बचपन में ही देहांत हो गया था और मैंने मास्टर केदारनाथ में अपने पिता को देखा था पर मैंने भी अपनी न समझी से उन्हें खो दिया। मास्टर केदारनाथ की दुखी कर देने वाली दास्तां को सुनाने के बाद कुछ पल के लिए वह दुकानदार भी कुछ रूआंसा सा हो चुका गया था। फिर उस दुकानदार ने सत्यदेव से पूछा था कि आप मास्टर केदारनाथ के क्या लगते हैं और आप उन्हें क्यों खोज रहे हैं। तब सत्यदेव ने उस दुकानदार से सिर्फ इतना ही कहा था कि मैं मास्टर केदारनाथ जी का एक विद्यार्थी हूं।

मास्टर केदारनाथ जी की खोज एक बार फिर शुरू हो चुकी थी और उसी खोजबीन में सत्यदेव को मास्टर केदारनाथ जी का एक और सुराग मिला, उनकी खोजखबर निकालते निकालते सत्यदेव को मास्टर केदारनाथ जी के गाँव का पता चल गया था। मास्टर केदारनाथ के एक जानने वाले ने सत्यदेव को बताया कि गांवों में मास्टर जी का एक पुश्तैनी घर था, बस इतनी जानकारी सत्यदेव के लिए काफी थी और उसी पल सत्यदेव मास्टर केदारनाथ की खोज में उस गाँव की ओर रवाना हो गया था।

पहले रेल और फिर उस गांव तक पहुंचने के लिए सत्यदेव को बस का सफर करना पड़ा था। जब सत्यदेव मास्टर केदारनाथ जी के उस छोटे से गाँव में पहुंचा, तो उस गांव को देखने के बाद सत्यदेव को लगा कि इस 1 लाख की आबादी वाले छोटे से गांवों में उसे मास्टर केदारनाथ जी का घर ढूंढने में कोई अधिक कठिनाई नहीं होगी। उस छोटे से गांवों को देख कर सत्यदेव के मन में मास्टर केदारनाथ से मिलने की उम्मीद बंध चुकी थी और मास्टर साहब से मिलने की खुशी ने जैसे सत्यदेव के पैरों में पंख लगा दिए थे। उस पल सत्यदेव अपने बचपन के दिनो को याद कर रहा था और उसे वह पल रह रह कर याद आ रहे थे कि मास्टर केदारनाथ जी कैसे सब बच्चों को अच्छी बातें सिखाते थे और उनकी ईश्वरीय मुस्कुराती आंखों में सब बच्चों के लिये आपार प्रेम होता था।

पर सत्यदेव को उस गांव में मास्टर केदारनाथ नाथ जी के घर को खोजना जितना आसान दिखाई दे रहा था वास्तव में वह इतना आसान काम नहीं था। मास्टर केदारनाथ

को उस गांव में खोजना कुछ ऐसा था जैसे भुसे के ढेर में से सुई को खोजना। पर सत्यदेव ने भी मन ही मन में ठान लिया था कि कैसे भी हो वो मास्टर साहब को खोज कर ही दम लेगा। इसी खोजबीन में सत्यदेव गांव की छोटी बड़ी गलियों में, मास्टर केदारनाथ जी का नाम बता कर उनके बारे में पूछताछ करने लगा था और उसी खोजबीन के तहत सत्यदेव गांव की एक छोटी सी पाठशाला में भी गया था और इसी तरह मास्टर साहब की खोज करते करते, उसकी मुलाकात एक 75 वर्षीय वृद्ध व्यक्ति से हुई थी और उस वृद्ध व्यक्ति ने सत्यदेव की ओर देख कर उससे पूछा था "कहीं तुम केदारी को तो नहीं खोज रहे, वही, जो मास्टरी करने के लिए शहर चला गया था" उस 75 वर्षीय बूढ़े व्यक्ति से यह बात सुन कर, सत्यदेव को उम्मीद की एक किरण दिखाई देने लगी थी। उसने जल्दी से उस बूढ़े आदमी से कहा था "जी हां, मैं उन्हीं की बात कर रहा हूं" अब तक सत्यदेव समझ चुका था कि कि मास्टर साहब की उम्र भी अब लगभग 75 वर्ष के आसपास की हो चुकी होगी और इस बीच उस वृद्ध आदमी ने, सत्यदेव को मास्टर साहब के घर का पता बता दिया था और मास्टर साहब का वह पुश्तैनी घर उसी गली के नुक्कड़ पर था। सत्यदेव को पहली नज़र में देखने पर ही वह घर बहुत पुराना सा लगा था। तब सत्यदेव ने धड़कते दिल से उस घर का दरवाज़ा खटखटाया था और कुछ पल बाद ही एक अधेड़ सी दिखाई देने वाली महिला ने उस घर का दरवाज़ा खोला था और उनसे हुई थोड़ी सी बातचीत के दौरान ही उन्होंने बहुत सम्मान से सत्यदेव को अपने घर के भीतर बुला कर बहुत सम्मान के साथ एक सोफे पर बिठाया था और उस अधेड़ महिला ने सत्यदेव को बताया कि मास्टर जी बहुत नेक इंसान थे और उस महिला से बातचीत के दौरान सत्यदेव को पता चला कि मास्टर जी यह घर उन्हें बेच कर वहां से चले गए थे और सत्यदेव के यह पूछने पर कि अब वो कहां गए होंगे, के जवाब में उस अधेड़ महिला ने कहा था कि घर बेच कर शायद मास्टर जी को अपनी दो बेटियों की शादी करनी थी। उस अधेड़ महिला ने सत्यदेव को बताया कि कुछ वर्ष पहले मास्टर जी की पत्नी का देहान्त हो गया था और यह कहते कहते उस अधेड़ महिला की आँखें भर आई थी और फिर अचानक ही वो फूट फूट कर रोने लगी थी और रोते रोते ही उसने सत्यदेव से कहा था कि कुछ इसी तरह से मेरे पिता ने भी मेरा विवाह किया था और उस पल वो भी अकेले थे और उन्होंने भी मरने से पहले बहुत से कष्ट झेले थे। यह सब सुनकर सत्यदेव का दिल भर आया था और वो उस पल मन ही मन में सोच रहा था कि मास्टर

केदारनाथ गरीबी की वजह से दर दर भटक रहे थे और वहीं दूसरी तरफ उनके सब शिष्य हर तरह से संपन्न थे और यह वास्तव में सत्यदेव के लिए बहुत दुख की बात थी। उस अधेड़ महिला का चेहरा देख कर उसके दुख का अंदाजा लगाया जा सकता था और सत्यदेव को मालूम था कि उस महिला ने जो भी बातें कही थी वह सब बातें उसने दिल की गहराइयों से कही थी। उस पल सत्यदेव मन ही मन में सोच रहा था पता नही मास्टर जी अब किस हाल में होंगे और पता नही कहां होंगे।

उस अधेड़ महिला ने सत्यदेव की ओर ध्यान से देखते हुए उससे पूछा था "पर आप कौन हैं और आप मास्टर जी को क्यों खोज रहे है" तब सत्यदेव ने बहुत भारी मन से उस महिला को बताया था कि "मैं उनका एक विद्यार्थी हूँ" यह सुनकर वह महिला बहुत हैरान हुई थी और उसको हैरानी की अवस्था में वहीं छोड़ कर सत्यदेव वहाँ से निकल पड़ा था और उस गांव में बहुत खोजने पर भी सत्यदेव को मास्टर केदारनाथ का कहीं कुछ पता नही चला था और इस बात से सत्यदेव का मन बहुत भारी हो चुका था और अब सत्यदेव को मास्टर केदारनाथ जी के मिलने की कोई उम्मीद नज़र नहीं आ रही थी। उसी मायूसी भरे पलों में वो गांव के बस स्टाप पर पहुंच गया था और अभी वो मास्टर साहब के बारे में कुछ सोच ही रहा था कि तभी सत्यदेव की निगाहें पेड़ की छांव में बनी एक किताबों की दुकान पर पड़ी और उसने गौर से देखा कि किसी ने कपड़े का शामियाना लगा कर उस दुकान को बहुत यत्न से बनाया हुआ था और उस किताबों की दुकान पर उस समय एक सा छोटा बच्चा बैठा दिखाई दे रहा था, उस बच्चे ने सत्यदेव को जब दुकान पर आते देखा तो सत्यदेव से कहा "नमस्ते सर, आप को क्या चाहिए" सत्यदेव ने बहुत ध्यान से उस छोटे से बच्चे की ओर देखा था और बरबस ही उसकी छोटी सी उम्र और कर्तव्य निष्ठा को देख कर उसके चेहरे पर मुस्कान आ चुकी थी और सत्यदेव ने उस बच्चे से कहा था "बेटे एक अंग्रेजी का अखबार देना" और उस बच्चे ने बहुत तेज़ी से एक अंग्रेज़ी का अखबार निकाला और सत्यदेव के हाथों में सौंप दिया था। उस बच्चे की मासूमियत देखकर सत्यदेव ने उस बच्चे से पूछा था "अरे तुम अभी इतने छोटे हो और इतनी छोटी उम्र में काम कर रहे हो, क्या तुम पढ़ने के लिये पाठशाला नहीं जाते?"

उस बच्चे ने सत्यदेव से बहुत सम्मान के साथ कहा था "जी हां सर, मैं पाठशाला में पढ़ने जाता हूँ और यहां तो मैं सिर्फ किसी की सहायता करने के लिए बैठा हूँ" उस बच्चे का अदब और हाजिरजवाबी को देख कर, सत्यदेव के चेहरे पर बरबस ही मुस्कान

चली आई थी और उसके मुँह से न जाने क्यों निकल ही गया था "भगवान तुम्हें लम्बी उम्र दे" अभी सत्यदेव उस छोटे बच्चे से बातें कर ही रहा था कि सत्यदेव ने देखा कि एक बूढ़ा व्यक्ति हाथों में पानी का मटका उठाए हुए, उसी ओर चला आ रहा था और उसे देख कर सत्यदेव की आंखें भर आई थी क्योंकि यह बूढ़ा इंसान और कोई नही उसके मास्टर जी ही थे। मास्टर जी ने जब वह पानी का मटका नीचे रखा, तभी आगे बढ़ कर सत्यदेव ने मास्टर जी के पांव को छू कर प्रणाम किया, तब मास्टर केदारनाथ ने बहुत ध्यान से सत्यदेव की ओर देखा और मुस्कराते हुए उससे कहा था "बेटे मैंने आपको पहचाना नहीं है" तब सत्यदेव ने बहुत भावुक होकर मास्टर जी से कहा "मास्टर जी मैं आपका विद्यार्थी सत्यदेव हूं" सत्यदेव का नाम सुनकर मास्टर केदारनाथ के झुर्रियों पड़े चेहरे पर मुस्कान आ गई थी और उन्होंने बहुत प्रेम से सत्यदेव को अपने गले से लगा लिया था और उन्होंने मुस्कराते हुए सत्यदेव से कहा था "बहुत वर्ष हो गए हैं स्कूल को छोड़े हुए और अब मेरी आंखों की रोशनी भी थोड़ी कम हो गई है, माफ करना मैं तुम्हें पहचाना नहीं" मास्टर जी की बात सुनकर सत्यदेव की आंखें भर आई थी और उसने बहुत भावुक होकर मास्टर जी से कहा था "मास्टर जी आपने हजारों बच्चों को अच्छी राह दिखाई है बच्चों को अच्छे संस्कार दिए है फिर आपको कोई कैसे भुल सकता है" सत्यदेव की बातें सुनकर मास्टर केदारनाथ मुस्कराने लगे थे। तब सत्यदेव ने मास्टर केदारनाथ से कहा था "आपको इस हालत में देख कर दिल को बहुत ठेस पहुंची" सत्यदेव को भावुक होता देख कर मास्टर जी ने कहा "मैं बिल्कुल संतुष्ट हूं और मुझे कोई तकलीफ नहीं है, बस अब मेरी उम्र थोड़ी अधिक हो गई है, तुम मेरी चिंता बिलकुल मत करो मैं बिल्कुल ठीक हूं" सत्यदेव बहुत गौर से मास्टर जी की आंखों में देख रहा था, जहां पर उसे संतुष्टि के अदभुत भाव दिखाई दे रहे थे, पर सत्यदेव को उस पल कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि अब उसका मास्टर जी का विद्यार्थी होने के नाते से कर्तव्य बनता था कि वो उन्हें अपनी ओर से सुख पहुंचाने की कोशिश करे और यही सब सोच कर सत्यदेव ने मास्टर जी के इनकार करते हुए भी, उन्हें उसी गांव में एक छोटी सी दुकान ले कर दी थी जिसमें उसने उनकी सब किताबें सलीके के साथ लगा दी थी और किताबों की उसी दुकान को लग कर उन्हें एक छोटा सा घर भी ले दिया था और उनका सब कार्य ठीक से करने के बाद सत्यदेव ने मास्टर जी से जाने की आज्ञा मांगी थी, उस पल मास्टर जी की आंखें नम हो गई थी और उन्होंने सत्यदेव से बहुत प्रेम से कहा था "इस सब की कोई

आवश्यकता नहीं थी सत्य, तुम मुझे ढूंढते हुए यहां तक आ पहुंचे, यही मेरे लिए किसी इनाम से कम नहीं था" तब सत्यदेव ने बहुत प्रेम और सम्मान से मास्टर जी से कहा था "यह सब मैंने आपके लिए नही, अपने लिए किया है मास्टर जी और अगर सब कुछ देख समझ कर भी, मैं यूं ही चला जाता तो शायद मैं अपनी निगाहों में खुद ही गिर जाता" उस पल मास्टर जी की आंखें आंसुओं से भरी हुई थी और उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी और उन्होंने सत्यदेव से कहा था "तुम बिलकुल नहीं बदले सत्य, जब तुम मेरे विद्यार्थी थे, तब भी तुम बहुत समझदारी की बातें किया करते थे" उस पल सत्यदेव ने मुस्कराते हुए मास्टर जी से कहा था "सब बच्चों ने समझदारी की बातें आप से ही सीखी हैं मास्टर जी" सत्यदेव की बात सुनकर मास्टर जी मुस्कराने लगे थे। मास्टर जी से आज्ञा लेने से पहले सत्यदेव ने मास्टर जी को अपना फोन नम्बर दिया था और उनसे कहा था कि उन्हें जब भी कोई कठिनाई हो तो वो उसे फोन ज़रूर करें और सत्यदेव ने यह कह कर मास्टर जी के मन का बोझ कम कर दिया था कि वो अमरीका की एक कंपनी में काम करता है और उसे वह कंपनी बहुत अच्छी तनख्वाह देती है और उसके लिए यह सब एक मामूली सी रकम है। मास्टर जी यह सुनकर बहुत खुश हुए थे कि सत्यदेव अमरीकन की एक कंपनी में उच्च पद पर कार्य कर रहा है और लगते हाथ ही उन्होंने सत्यदेव को आशीर्वाद दे दिया था "सदा सुखी रहो" सब कार्य ठीक से करने के बाद सत्यदेव ने मास्टर जी से आज्ञा ली थी और जब वो शहर जाने वाली बस पर सवार हुआ था उस पल उसके चेहरे पर एक सतुष्टि से भरी मुस्कान थी और बेशक वह लम्हें सत्यदेव के लिए बहुत अनमोल लम्हें थे। थोड़ी देर में ही वह बस धूल उड़ाती हुई शहर की ओर रवाना हो चुकी थी और उस पल सत्यदेव ने अपनी आंखें मूंद रखी थी, जैसे उस पल वो बचपन के सुनहरी दिन याद करने की कोशिश कर रहा था और उसकी इसी कोशिश की वजह से उसके चेहरे पर एक कोमल सी मुस्कराहट आ चुकी थी। शहर पहुंच कर सत्यदेव ने मास्टर केदारनाथ के बहुत से शिष्यों को इस बात की जानकारी दी थी कि हाल ही में उसका मास्टर केदारनाथ से मिलना हुआ था और इस बात का सारा विवरण उसने अपने सब दोस्तों को बताया था, मास्टर साहब की दुख भरी कहानी सुनकर मास्टर केदारनाथ के सब विद्यार्थी मास्टर केदारनाथ से मिलने गांव पहुंचे थे और वह पल मास्टर केदारनाथ जी की जिंदगी के और उन विद्यार्थियों की जिंदगी के भी सुनहरी पल बन गए थे। अब जब तब कोई न कोई विद्यार्थी, मास्टर केदारनाथ से मिलने गांव आता जाता

रहता था और इन मुलाकातों की खबरे सत्यदेव तक पहुंचती रहती थी और अब वो मास्टर साहब के लिए बहुत खुश था।

मास्टर जी की सहायता करने वाला वह छोटा बच्चा, मास्टर जी का विद्यार्थी था और सत्यदेव की भांति ही वो मास्टर जी की जब तब मदद कर दिया करता था और खाली समय में मास्टर केदारनाथ उस छोटे बच्चे को पढ़ा दिया करते थे और अपनी आदत और पक्के आदर्शो की वजह से मास्टर जी उस छोटे बच्चे से पढ़ाने के कभी पैसे नही लेते थे। इस मामले में मास्टर केदारनाथ असूल के बहुत पक्के इंसान थे पर वो छोटा बच्चा भी कर्तव्य निभाने में कुछ कम नहीं था, वो जब तब मास्टर जी की मदद कर दिया करता था। मास्टर केदारनाथ ने ज़िंदगी भर अपने शिक्षक होने का धर्म पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ निभाया था और दूसरी तरफ उनका वह नन्हा सा शिष्य भी, अब सत्यदेव की भांति ही अपना विद्यार्थी धर्म बहुत ईमानदारी से निभा रहा था। जैसे ईश्वर ने मास्टर केदारनाथ के सब विद्यार्थियों की तरफ से उस छोटे नन्हें से फरिश्ते को मास्टर केदारनाथ जी की मदद करने के लिए भेज दिया था और वह बच्चा, अपने कार्य को बहुत अच्छी तरह अंजाम दे रहा था और वह नन्हा सा विद्यार्थी एक अच्छे सेनापति की भांति मास्टर केदारनाथ की हर संभव सहायता करने के लिए हर समय तैयार रहता था। ईश्वर की असीस से छोटे बच्चों के भविष्य निर्माता मास्टर केदारनाथ जैसे सच्चे और ईमानदार शिक्षक को कभी भी किसी की सहायता की जरूरत नहीं पड़ सकती थी क्योंकि उन जैसे सच्चे और ईमानदार शिक्षकों पर ईश्वर की कृपा दृष्टि सदा बनी रहती थी और शायद इसीलिए कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी, उनके जैसे उजले चरित्र वाले इंसान का मनोबल कभी भी नहीं टूटता था। ईश्वर महान है और वो अपने प्यारे बंदों को किसी भी हाल में खुश रख सकता था। न जाने कितने ही मास्टर केदारनाथ जैसे सच्चे और ईमानदार शिक्षक बच्चों को ईमानदारी और सच्चाई का पाठ पढ़ाते पढ़ाते और जीवन की कठिनाईयों से जूंझते जुंझते वक्त की अमिट धुंध में समा जाते है। आप सब अपने शिक्षकों का सदा सम्मान करिए, क्योंकि आपके शिक्षक आपको जीवन की कठिनाईयों से जूंझना सिखाते है और आपके जीवन को नई दिशा देते हैं।

समाप्त

कहानी 5: करिश्मा

यह कहानी बीहड़ के रेगिस्थान की है जहाँ पर जब रेत के तूफान आते थे तो सब तरफ अंधेरा सा छा जाता था और कुछ भी दिखाई नही देता था। इसी बीहड़ के रेगिस्थान के एक छोटे से गाँव में एक औरत अपने 2 वर्ष के बच्चे को वृक्ष पर बंधे एक कपड़े के झूले में झूला झुला रही थी और उसे अपनी सुरीली आवाज़ में लोरी सुना रही थी। उस औरत का एक छोटा सा झोपड़ी नुमा घर था जो मिट्टी और कुछ ईंटों से बना हुआ था। वो औरत लोरी गाते हुए बहुत ममतामई निगाहों से अपने बच्चे को देख रही थी और उस सांवली सी दिखाई देने वाली औरत के चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ दिखाई दे रही थी।

वह औरत विधवा थी और उस औरत की माली हालत बिल्कुल भी अच्छी नही थी। उस औरत के घर पर अब बस महीने भर का अनाज बचा था और रेगिस्थान के बीहड़ में ऐसा होना गुपचुप सा आर्थिक संकट की ओर एक इशारा था।

रेगिस्थान के बीहड़ में रहने वाले अधिकतर लोग किसान थे या मवेशी पालते थे और बीहड़ के गाँव में रहने वाले अधिकतर किसान साल भर का अनाज और जीवन उपयोगी वस्तुएँ एक ही बार खरीद कर रख लेते थे, पर उस औरत के पति का देहांत हुए अभी कुछ ही महीने बीते थे और अब उस घर की सुरक्षा करने वाला और कमाने वाला उस औरत के सिवा और उस घर में कोई भी नही था। कभी इस मातम मनाते घर में ढेर सारी खुशियाँ थी और उनके परिवार के अच्छे दिन थे। तब उनके पास तीन चार गाय थी जिसका दूध बेच कर उनकी अच्छी गुज़र बसर हो जाती थी, पर जब से उस औरत के पति का देहांत हुआ था बीहड़ के गाँव में रहने वाली उस अकेली औरत के ऊपर जैसे दुखों का पहाड़ टूट पड़ा था। उस औरत के पति के गुज़र जाने के बाद कुछ ही महीनों में एक एक करके उनकी दो गाय भी गुज़र गई थी और अब उनके घर पर एक कमज़ोर सी दिखाई देने वाली गाय आँगन में बंधी हुई थी और वह गाय भी ठीक समय पर चारा न मिलने की वजह से बहुत कमज़ोर दिखाई दे रही थी।

वह औरत अपनी मुसीबतों से अकेली लड़ रही थी। एक तरफ तो वो घर के रोज़मर्रा के कामों में जी जान से जुटी हुई थी और साथ ही वो अपने 2 वर्ष के छोटे बच्चे की देखभाल भी कर रही थी। पर इतनी मेहनत मुशक्त करने के बाद भी उसकी आँखों में अपने बच्चे के लिये ममता कम नही हुई थी।

वह अपने बच्चे को अपनी सुरीली आवाज़ में लोरी सुनाती हुए सोच रही थी कि अगर उसकी आर्थिक परिस्थिति और भी खराब हो गई तो वो पास के किसी गाँव में चली जायेगी और मेहनत मजदूरी कर लेगी पर अपने बच्चे को कोई भी कष्ट नही होने देगी।

बीहड़ के उस रेगिस्थान में उस छोटे से कच्चे घर में रात बहुत कयामत सी गुज़रती थी। एक तरफ वह औरत अपने छोटे बच्चे को कपड़े के बने झूले में डाल कर लोरियाँ सुना कर सुलाने की कोशिश कर रही होती थी और दूसरी तरफ रेगिस्थान की तेज़ हवाओं से उसके घर का किवाड़ बजता रहता था और घर के बाहर आँगन में बंधी गाय रंभाती रहती थी। कुल मिलाकर यह सारा माहौल जैसे उस मासूम औरत की कठिन परीक्षा ले रहा था।

जब कभी उस औरत का बच्चा थोड़े समय के लिए सो जाता था, तब वह औरत अपने घर में बने एक छोटे से मंदिर में दीया जलाती थी और आंसू बहाते हुए ईश्वर से ये प्रार्थना करती थी कि "हे ईश्वर अभी सिर्फ तू ही हमारी रक्षा कर सकता है" और एक दिन उस औरत की ज़िन्दगी में एक करिश्मा हुआ।

उस समय सरकार की एक स्वास्थ्य अभियान की योजना के अंतर्गत बहुत से डॉक्टरों के दल गाँव गाँव भेजे जा रहे थे जो अनपढ़ और गरीब लोग का मुफ्त इलाज कर रहे थे और छोटे बच्चों को चेचक प्लेग और पोलियो जैसी भयानक बीमारियों से लड़ने के लिए टीके लगा रहे थे। उसी योजना के अंतर्गत डॉक्टरों का एक दल डॉक्टर अभय श्रीवास्तव के संचालन में उसी गाँव में आया हुआ था।

डॉक्टर अभय श्रीवास्तव एक ऐसे डॉक्टर थे जो हिंदुस्तान में अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद विदेश से शिक्षा ले कर हिन्दुस्तान वापिस लौटे थे। 35 वर्षीय डॉक्टर अभय श्रीवास्तव बहुत अदभुत समझ बूझ वाले बहुत दयालु इंसान थे।

जब डॉक्टर अभय श्रीवास्तव अपने कुछ सहयोगी डॉक्टरों की टीम के साथ उस औरत के घर के करीब पहुँचे तब उन्होंने उस औरत के घर पर बहुत अदभुत दृश्य देखा, उन्होंने देखा कि एक औरत अपने छोटे बच्चे को घर के आंगन में लगे पेड़ पर बंधे एक कपड़े के झूले में झूला झुला रही थी और अपनी मधुर और ममतामई आवाज़ में अपने बच्चे को लोरी सुना रही थी। वह दृश्य वास्तव में बेहद खूबसूरत था। उस समय आसपास का वातावरण बहुत शांत था और सुबह की गुनगुनी धूप उस सुखद दृश्य को चार चाँद लगा रही थी।

उस पल डॉक्टर अभय ने अपने सब सहयोगियों को खामोश रहने के लिए कहा था और वो खुद भी आँखें बंद करके उस औरत की लोरी को ध्यान मगन होकर सुन रहे थे और जब उस औरत का बच्चा सो गया तब उस औरत का ध्यान टूटा और उसने देखा कि उसके घर के आँगन में कुछ लोग खड़े थे।

लोरी की मधुर आवाज़ बन्द होते ही डॉक्टर अभय ने अपनी आँखें खोली और उस औरत से बातचीत करने के लिये आगे बढ़े और उन्होंने उस औरत को अपना और अपने साथियों का परिचय दिया।

उस औरत को बीहड़ के इस रेगिस्थान में अकेले देख कर डॉक्टर अभय बहुत हैरान थे। उन्होंने बातचीत करने के लिए उस औरत से कहा “आप बहुत अच्छा गाती हैं, हम काफी देर से आपकी सुरीली आवाज़ का आनन्द ले रहे थे” डॉक्टर अभय के मुंह से प्रशंसा के मीठे शब्द सुनकर वह औरत बस मुस्करा भर दी थी, पर डॉक्टर अभय ने देखा कि अपनी तारीफ सुन कर भी उसे कुछ खास खुशी नही हुई थी। बस चेहरे पर एक बुझी बुझी सी मुस्कान चली आई थी। फिर डॉक्टर अभय ने अपनी बातचीत के सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए और उस औरत के घर पर एक सरसरी नज़र डालते हुए उस औरत से पूछा “आपके घर पर और कितने सदस्य रहते हैं” ज़िन्दगी से मायूस उस औरत ने मुस्कराने की कोशिश करते हुए कहा “इस घर में मेरे बच्चे और मेरे सिवा और कोई भी नही रहता जी” वह औरत एक सीधी सादी बंजारन थी और बहुत भोली थी और उसे लाग लपेट करके बातचीत करनी नही आती थी और यह बात उसका चेहरा देख कर ही प्रकट होती थी।

“ओह” यह सुनते ही डॉक्टर अभय के चेहरे पर अफसोस के भाव उभर आये थे और वो अपनी पैनी निगाहों से घर की माली हालत को भांपने की कोशिश कर रहे थे और उन्होंने घर के आँगन में बंधी उस कमज़ोर सी गाय को भी देख लिया था और उन्हें यह समझते देर नही लगी थी कि यह औरत बहुत कठिन आर्थिक दौर में से गुज़र रही है। फिर डॉक्टर अभय से रहा नही गया और उन्होंने पूछ ही लिया “और आपके पति...” उन्होंने देखा कि उनके इस सवाल से उस औरत के चेहरे पर बेहद पीड़ा भरे भाव उभर आए थे और उस औरत ने डॉक्टर अभय को बताया कि उसके पति को गुज़रे हुए 6 महीने हो चुके हैं।

डॉक्टर अभय को उस औरत की उम्र 25 वर्ष के आसपास की लग रही थी और इतनी कम उम्र में उस औरत का विधवा का जीवन व्यतीत करना जैसे यह उस औरत पर बहुत बड़ा ज़ुल्म था।

अपना सब काम निबटाने के बाद जब डॉक्टर अभय वहाँ से जाने लगे तब उन्होंने उस औरत की सहायता करने के लिये उस औरत को एक छोटा सा झूठ बोला। उन्होंने उस औरत से कहा कि उनका एक छोटा बच्चा है जिसे किसी बीमारी की वजह से ठीक से नींद नही आती और उन्होंने उस औरत को गुज़ारिश की कि अगर वह एक बार फिर

से वह लोरी गुनगुना दें, तो वो उस लोरी को अपने रिकॉर्ड प्लेयर में रिकार्ड कर लेंगे और फिर वो उस लोरी की रिकार्डिंग को अपने बच्चे को सुनाकर उसे सुख की मीठी नींद सुलाने की कोशिश करेंगे। उन्होंने बहुत प्रेम से उस बंजारन औरत से कहा कि "मुझे यकीन है कि आपकी सुरीली आवाज़ सुनकर मेरा बच्चा भी सुख की मीठी नींद सो जायेगा" उस औरत में माँ की ममता कूट कूट कर भरी हुई थी वह डॉक्टर अभय के उस प्यार भरे आग्रह को टाल न सकी थी और उसने अपने बच्चे को ममतामई निगाहों से देखते हुए लोरी गुनगुनी शुरू कर दी थी और डॉक्टर अभय ने उस खूबसूरत लोरी को अपने रिकॉर्ड प्लेयर पर रिकार्ड कर लिया था और पुरस्कार के तौर पर उस बंजारन औरत को 5000 रुपये दिये थे। उस पल वह औरत हैरान होकर डॉक्टर अभय को देख रही थी। पहली बार उस बंजारन औरत ने डॉक्टर अभय से वह पैसे लेने से इनकार कर दिया था और भोलेपन से डॉक्टर अभय से ये कहा था कि इतने मामूली से काम के मैं इतने पैसे कैसे ले सकती हूँ। वह बेचारी गाँव की रहने वाली थी और उस में लेशमात्र भी लालच नही था। पर डॉक्टर अभय की ज़िद के आगे उस औरत की एक न चली थी और उस औरत को डॉक्टर अभय की दी हुई धनराशि स्वीकार करनी पड़ी थी। अपने कार्य को ठीक से अंजाम देने के बाद डॉक्टर अभय की टीम वापिस शहर लौट गई।

इतने सारे पैसे एक साथ देख कर उस औरत की आँखों में मारे खुशी के आंसू बहने लगे थे और उसने उन पैसों से जल्दी ही अपने घर में कुछ महीने का राशन भर लिया था। अब वो थोड़ी सी निश्चिंत सी हो गई थी और ईश्वर का धन्यवाद कर रही थी कि घर बैठे ईश्वर ने उसके लिये मदद भेज दी थी।

उधर डॉक्टर अभय उस औरत की मीठी आवाज़ से बहुत प्रभावित थे और साथ ही उन्हें उस औरत और उसके बच्चे के भविष्य की चिंता हो रही थी। वह जानते थे कि रेगिस्थान के उस बीहड़ में रह कर, अपनी और अपने बच्चे की देख भाल करना, उस औरत के लिये एक टेढ़ी खीर साबित होने वाला था।

डॉक्टर अभय जब शहर वापिस लौटे तो उन्होंने उस औरत की रिकार्डिंग को अपने कुछ उन दोस्तों को सुनाया जो संगीत के क्षेत्र में स्थापित थे। डॉक्टर अभय के दोस्तों को उस बंजारन औरत की आवाज़ बहुत भा गई थी। डॉक्टर अभय के सभी दोस्त डॉक्टर अभय का बहुत सम्मान करते थे और डॉक्टर अभय ने उस बंजारन औरत की सहायता

करने के लिए अपने सब दोस्तों से अनुरोध किया कि अगर हो सके तो उस बंजारन औरत की सहायता करिये वो बहुत कठिन परिस्थितियों से जूँझ रही है। डॉक्टर अभय श्रीवास्तव ने अपने दोस्तों को उस बंजारन औरत का पता दे दिया था और उनसे आश्वासन लिया था कि वो सब उस बंजारन औरत की सहायता अवश्य करेंगे। अपने सारे कामों से निबट कर डॉक्टर अभय अपने मरीजों को देखने में व्यस्त हो गये थे और कुछ महीने हिंदुस्तान में रहने के बाद वो विदेश चले गये थे।

आज तीस वर्षों के बाद डॉक्टर अभय श्रीवास्तव हिन्दुस्तान वापिस लौटे थे और एक बहुत शानदार पाँच सितारा होटल में अपने परिवार के साथ डिनर कर रहे थे। तब डॉक्टर अभय श्रीवास्तव ने देखा कि एक अधेड़ सी उम्र की दिखाई देने वाली महिला उनके टेबल की ओर चली आ रही थी और डॉक्टर अभय बहुत हैरान होकर उसकी ओर देख रहे थे और उस औरत को पहचानने की कोशिश कर रहे थे पर उन्हें कुछ भी याद नही आ रहा था। इतने में वो महिला मुस्कराती सी उनके बहुत करीब आ गई थी और उनके निकट आते ही उसने डॉक्टर अभय को हाथ जोड़ कर नमस्ते कहा था। फिर उस महिला ने कुछ मुस्कराते हुए डॉक्टर अभय से कहा था "क्या आपने मुझे पहचाना डॉक्टर साहब" डॉक्टर अभय श्रीवास्तव ने देश और विदेश में हज़ारों मरीजों का इलाज किया था और उस पल उन्होंने अपनी याददाश्त पर बहुत जोर डाला था पर फिर भी वो उस महिला को पहचानने में असफल रहे थे।

कुछ पल रुक कर उस अमीर सी दिखाई देने वाली महिला ने डॉक्टर अभय से कहा "मैं रेगिस्थान के बीहड़ में रहने वाली वो ही बंजारन हूँ जिसकी अपने आज से ठीक 30 साल पहले 5000 रुपया देकर मदद की थी" उस महिला की बात सुनकर डॉक्टर अभय को 30 साल पुराना सारा किस्सा याद आ गया था पर फिर भी उन्हें अपनी आँखों पर यकीन नही हो रहा था। वह उस महिला की बात सुनकर बहुत खुश हुए थे और अभी तक आश्चर्यचकित से खड़े थे। वह बरसों पुराने उस किस्से को याद करने की कोशिश कर रहे थे और उन्हें रेगिस्थान की उस बंजारन में और उस सभ्य सी दिखाई देने वाली महिला में ज़मीन आसमान का अंतर दिखाई दे रहा था।

उन्होंने अपनी कुर्सी से उठकर उस औरत का स्वागत किया था और अपने परिवार के साथ बैठने के लिये उस महिला को आमंत्रित किया था। तब उस महिला ने उन्हें

बताया कि वह अपने बेटे और बहू के साथ आई है और उनके ठीक पीछे की टेबल पर अपने परिवार सहित बैठी है। उन खूबसूरत लम्हों में दो परिवारों का बहुत प्रेम से मिलन हुआ और उस बंजारन औरत ने जो अब हिन्दुस्तान की बहुत बड़ी गायिका बन चुकी थी अपने सारे परिवार को बताया कि कैसे डॉक्टर अभय ने 30 वर्ष पहले उनकी मदद की थी और उस मदद की वजह से वो गायिकी के इतने ऊँचे मुकाम तक पहुँच पाई थी। उस महिला ने डॉक्टर अभय श्रीवास्तव को बताया कि उनके विदेश चले जाने के बाद कैसे उनके दोस्तों ने उसकी मदद की थी और उसे संगीत की दुनिया में नई ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया था। बरसों के बाद डॉक्टर अभय को अपनी आँखों के सामने देख कर उस औरत की आँखों से झर झर आंसू बह रहे थे और वो हाथ जोड़े डॉक्टर अभय श्रीवास्तव के सामने खड़ी थी। उन्हीं खूबसूरत लम्हों में उस औरत ने डॉक्टर अभय श्रीवास्तव को बताया कि उसने उन्हें ढूंढने की बहुत कोशिश की थी पर असफल रही थी क्योंकि डॉक्टर अभय श्रीवास्तव उस समय विदेश में थे।

वह बंजारन महिला कुछ समय के बाद ही जान गई थी कि डॉक्टर अभय ने उससे झूठ बोल कर, उसे 5000 रुपये की मदद दी थी। वो औरत डॉक्टर अभय की उस सच्चाई को जान गई थी कि उस समय तक डॉक्टर अभय की खुद की शादी भी नही हुई थी फिर उनके बच्चे होने का तो सवाल ही पैदा नही होता था। फिर ऐसे देवता जैसे इंसान को कोई कैसे भूल सकता था। वो कहते हैं न कि ईश्वर की मर्ज़ी के बिना कहीं पर एक पत्ता भी नही हिलता और यह बात पत्थर पर पड़ी लकीर की भांति सत्य साबित हुई थी। इस कहानी से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि जब भी किसी नेक इंसान को ईश्वर की सहायता की ज़रूरत पड़ती है और वो सच्चे मन से ईश्वर को याद करता है तब ईश्वर किसी न किसी रूप में आकर उसकी सहायता ज़रूर करता है। पर यह बात और है कि उन हैरान कर देने वाले करिश्मों को सिर्फ कुछेक लोग ही जान पाते हैं कि कैसे किसी के जीवन में सिर्फ क्षण भर में जीवनभर के सारे अंधकार मिट गये थे और ईश्वरीय रोशनी हो गई थी। ईश्वर महान है वो कुछ भी कर सकता है। सदा शुभ हो।

समाप्त

कहानी 6: डोडी

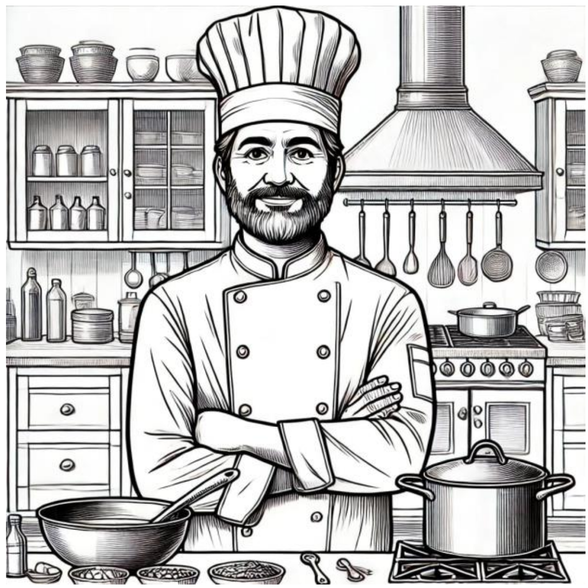

"डोडी" का असली नाम विनय माथुर था। डोडी का हसमुख व्यक्तित्व अक्सर लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लेता था। विनय माथुर अब 43 वर्ष का हो चुका था और अब वो अपनी पत्नी सुधा के साथ दिल्ली शहर में रहता था। विनय माथुर और सुधा अपनी जिंदगी से बहुत खुश थे और उन्हें सिर्फ इस बात का ही दुख था कि उनकी कोई औलाद नहीं थी, पर फिर भी वो दोनो अपनी ज़िंदगी हँसी खुशी बीता रहे थे। विनय उत्तर प्रदेश का रहने वाला था और कालेज के समय से ही उसके सब दोस्त, उसे प्यार से डोडी कहते थे। डोडी ने होटल मैनेजमेंट का कोर्स किया था और पिछले लगभग 20 वर्षों से डोडी एक पांच सितारा होटल में काम कर रहा था। डोडी के हसमुख व्यक्तित्व में एक विशेष बात थी कि वो बहुत बातूनी था और वो अपने सरल स्वभाव की वजह से बहुत जल्दी ही लोगों को अपना दोस्त बना लेता था। डोडी को किस्से कहानियाँ सुनाने की आदत थी और वो जहां भी चार लोगों में बैठ जाता था, फिर वहीं पर उसकी महफिल जम जाती थी और एक दिन उसकी इसी आदत की वजह से, पांच सितारा होटल से उसको अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा था। उस समय होटल में एक सख्त आफिसर

आया हुआ था, जिसे विनय माथुर का होटल के ग्राहकों के साथ बैठ कर यूं गपशप करना, बहुत नागवार गुज़रा था और उन्होंने उसे यह कह कर नौकरी से निकाल दिया था कि पांच सितारा होटल आपको किस्से कहानियाँ सुनाने के लिए पैसे नहीं दिए जाते, वो आपको काम करने के पैसे देते है। उस आफिसर को, विनय के साथ काम करने वाले बहुत से लोगों ने समझाने की कोशिश की थी, पर उस आफिसर ने किसी की एक बात नही सुनी थी और 20 साल नौकरी करने के बाद, विनय माथुर को इतनी साधारण सी बात के लिए अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ गया था और इस वजह से उसके सब दोस्त बहुत दुखी थे। पांच सितारा होटल की काम करने वाली सारी टीम में, सबसे जिंदादिल इंसान डोडी ही था, जो आज दुखी मन से अपना सारा सामान बैग में डाल कर भारी मन से उस होटल से विदा हो रहा था, जिस होटल में उसने 20 वर्ष तक पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ काम किया था।

घर पर जब डोडी की पत्नी सुधा को इस बात का पता चला कि आज विनय की नौकरी चली गई है, तो क्षण भर के लिए इस दुखद खबर को सुनकर वो हक्की बक्की रह गई थी और वो अपने पति को बहुत अच्छी तरह से जानती थी कि विनय एक ईमानदार और मेहनती इंसान है, पर जब सुधा ने विनय को बहुत मायूस होते देखा, तब उसने विनय से कहा था "अरे छोड़ो ऐसी नौकरी को, जो किसी से प्यार से दो बातें करने पर पर टोकती है, हमने न अपना ढाबा खोल लेना है, तुम चिंता मत करो, मैं हूं न तुम्हारे साथ, हम कुछ न कुछ जरूर कर लेंगे" तब विनय ने बहुत प्यार से सुधा की ओर देखा था और उसे होटल का सब किस्सा कह सुनाया था।

तब उस पल सुधा ने गुस्से से कहा था "आग लगे ऐसे नकचढ़े और खडूस अफसर को वो जरूर अपने घर पर हिटलरी कानून झाड़ता होगा" यह सुनकर विनय के हसमुख चेहरे पर मुस्कान आ गई थी और उसकी मायूसी क्षण भर में छू मंतर हो गई थी। उस पल सुधा ने बहुत प्यार से विनय से कहा था "तुम बैठो मैं तुम्हारे लिए चाय बना कर लाती हूं" और देर रात तक वो दोनो आपस में बातें करते रहे थे और आपस में विचार विमर्श करते रहे थे कि अब उन्हें आगे क्या करना चाहिए और बातों ही बातों में, कब उनकी आंख लग गई, उन्हें इस बात का पता तक नहीं चला था। पर विनय की अचानक नौकरी छूट जाने के बाद अब आगे क्या करना है, इस बारे में वो दोनो किसी निष्कर्ष पर नहीं

पहुंच पाए थे और वो उलझन अब भी ज्यूं की त्यों ही बनी हुई थी और यह वास्तव में उन दोनों के लिए बहुत चिंताजनक बात थी।

तब सुधा ने विनय को एक सुझाव दिया था कि क्यों न हम कहीं पर अपना ढाबा खोलें, तब विनय ने हंस कर सुधा से कहा था कि "मैं सारी ज़िंदगी पांच सितारा होटल में काम करता रहा हूं, अब क्या मैं ढाबे पर दाल रोटी बेचूंगा" विनय की बात किसी हद तक ठीक भी थी, वो 30 लाख रुपए सालाना की पगार पर पांच सितारा होटल में काम कर रहा था और अब वो अचानक एक छोटे से ढाबे पर कैसे बैठ सकता था। पर तब सुधा ने विनय को ज़ोर डाल कर कहा था कि "इसमें हर्ज ही क्या है, हमें लोगों को प्यार से अच्छा खाना खिलाना है, फिर इसमें पैसे थोड़े कम मिलें या ज्यादा, इससे क्या फर्क पड़ता है" सुधा की दलील में दम था। तब विनय ने सुधा से पूछा था "चलो ठीक है मैंने तुम्हारी बात मान ली, पर हम यह ढाबा कहां पर खोलेंगे" विनय की इस बात पर सुधा सोच में पड़ गई थी, तब उसने कुछ सोचते हुए विनय से कहा था "हमें अपना ढाबा किसी हाइवे के ऊपर खोलना चाहिए" सुधा को इन सब बातों का कोई विशेष अनुभव नहीं था, पर वो कोई रास्ता निकालने का प्रयास कर रही थी और अब उनके पास सोचने के सिवा और कोई रास्ता भी नहीं था और एक दिन उन दोनो ने तय किया कि वो अपने गांव के निकट, कोई अच्छी सी जगह देख कर अपना ढाबा वहीं खोलेंगे और उन दोनो को इस बात का पता था कि दिल्ली से दूर ज़मीनें बहुत सस्ती थी और उनके ढाबे का यह प्रयोग सफल हो सकता था। जल्दी ही उन्होंने अपना दिल्ली वाला घर बेच दिया और वो दिल्ली को अलविदा कह कर, अपने गांव की ओर रवाना हो गए थे। सुधा ने विनय को यह कहते हुए हिम्मत दी थी कि हम अपने रहने का घर भी उसी जमीन पर बना लेंगे और अगर ढाबा इतना नही भी चला, तो हमारे पास, हम दोनों के लिए इतना पैसा तो है कि हमें सारी ज़िंदगी कुछ कमी नहीं होगी। सुधा की दलील में दम था क्योंकि उन दोनो ने, सालों बचत करके कुछ धन राशि जोड़ी हुई थी और वैसे भी उन्हें फ़िज़ूल खर्च करने की आदत नही थी और जो कुछ भी था, वो उन दोनो के लिए बहुत था।

गांव पहुंच कर उन्होंने आसपास की सब जगह देखी और विनय ने उस सड़क पर ढाबा खोलना तय किया, जो सड़क एक महानगर की ओर जाती थी और उस जंगल जैसी जगह के आसपास तीन छोटे शहर भी थे और उनकी जमीन के ठीक पीछे एक नदी बहती थी और सुंदरता की दृष्टि से उस जगह को उपयुक्त जानकर उन्होंने तय किया कि

अब वो यहीं पर रहेंगे और अपना ढाबा भी यही खोलेंगे। फिलहाल उन्हें पैसों की कोई दिक्कत नही थी क्योंकि दिल्ली में उन्होंने जिस घर को बेचा था, उसमें उन्हें एक एकड़ जगह के साथ, एक बना बनाया घर भी मिल रहा था और विनय और सुधा को यह सौदा अच्छा लगा था। उन दोनो को बहुत सादी सी ज़िंदगी व्यतीत करने की आदत थी, इसलिए उन्हें आने वाले कुछ वर्षों के लिए, अपने भविष्य की कोई विशेष चिंता नहीं थी।

विनय ने अपने 20 साल के होटल व्यापार के तुजूर्बे का फायदा उठाते हुए उस ज़मीन पर आगे थोड़ी पार्किंग की व्यवस्था की और सड़क के किनारे पर एक छोटा सा ढाबा बना लिया था और उसी ढाबे के पीछे उन्होंने उस ढाबे में काम करने के लिए एक पति पत्नी लक्ष्मी और शाम के रहने की व्यवस्था भी कर दी थी।

विनय ने अपने उस छोटे से ढाबे के रसोई घर में खाना बनाने के लिए इतने शानदार उपकरण लगाए थे कि कोई छोटा होटल वाला उन उपकरणों की कल्पना भी नहीं कर सकता था। गैस चूल्हे बहुत बड़े थे और कुकिंग करने का सामान सब पांच सितारा होटल की तरह ही था। निसंदेह विनय का होटल व्यापार करने का अनुभव थोड़ा कम था पर होटल को कैसा होना चाहिए और उसका खाना किस प्रकार बनाना चाहिए इन सब बातों में विनय को महारत हासिल थी और उसके साथ काम करने वाले उसके सब दोस्त भी उसकी सूझबूझ का लोहा मानते थे।

इस बीच विनय और सुधा ने अपनी जमीन को सुंदर बनाने के लिए फलों और फूलों के बहुत से पौधे लगा दिए थे और जब वो अपनी सारी व्यवस्था से संतुष्ट हो गए थे, तब उन्होंने अपने घर में बने हुए छोटे से मंदिर में पूजा करने के बाद अपने ढाबे का उदघाटन कर दिया था। फिलहाल उन्होंने अपने ढाबे में पांच छह किस्म के परांठे बनाने से शुरुआत की थी और उन परांठों के साथ विशेष प्रकार की पुदीने की चटनी, दही और विनय ने अपनी विशेष रेस्पी से आलू का एक ऐसा परांठा भी बनाया था जिस परांठे के ऊपर शहद डाला जाता था और उस परांठे का स्वाद बेहद लज़ीज़ था।

लक्ष्मी और शाम दोनो पति पत्नी गांव के रहने वाले भोलेभाले इंसान थे और वो दोनो विनय की सब व्यवस्थाओं को बहुत हैरान होकर देखते थे और उस पल वो दोनो मन ही मन में सोचते थे कि इतने जंगल में यहां पर खाना खाने कौन आएगा और उन्हें

यह सोच कर मन ही मन में बहुत दुख भी होता था और उन दोनो पति पत्नी की सहानुभूति विनय और सुधा के साथ थी। वो दिन भर जमीन पर काम करते थे और फिर सुधा की खाना बनाने में मदद भी करते थे। कभी कभी कुछ डरते डरते लक्ष्मी अपने दिल की बात सुधा से कह भी देती थी "दीदी आपको विश्वास है कि लोग यहां पर खाना खाने आयेंगे" तब सुधा हंस कर उससे कहती थी "जहां पर खाना अच्छा मिलता हो और उसे प्यार से खिलाया जाता हो, वहां पर लोग मीलों दूर से भी खाना खाने के लिए आ जाते हैं" फिर लक्ष्मी के चेहरे पर आए परेशानी के भावों को अनुभव करके सुधा उससे कहती थी "तू चिंता मत कर लक्ष्मी, भगवान सब ठीक कर देगा" बेचारी लक्ष्मी इस बात को नहीं जानती थी कि विनय पहले होटल के व्यवसाय से जुड़ा हुआ था और उसे इन सब कामों में महारत हासिल थी।

उदघाटन के पहले दिन विनय और सुधा ग्राहक का इंतज़ार करते रहे, पर उनके ढाबे पर कोई ग्राहक नही आया और यह वास्तव में बहुत मायूस कर देने वाली बात थी। पर सुधा को पूरा यकीन था कि जो इंसान बस एक बार विनय की रेस्पी से तैयार किए गए परांठे खा लेगा, वो विनय का मुरीद हो जायेगा और सुधा को मालूम था कि विनय का लोगों के बीच बैठ कर किस्से कहानियाँ सुनाने का शौंक एक दिन होटल में आए हुए सब ग्राहकों का दिल जीत लेगा पर इस सबके लिए ग्राहकों का ढाबे पर आना बहुत आवश्यक था।

कुछ दिन यूं ही बीत गए पर उस जंगल जैसी जगह पर ढाबे पर एक भी ग्राहक नही आया और यह वास्तव में उन सब के लिए बहुत मायूस कर देने वाली बात थी। अब विनय और सुधा की इन दुखद भावनाओं के साथ लक्ष्मी और शाम भी इतना अधिक जुड़ चुके थे कि उनके गले के नीचे रोटी नहीं उतर रही थी।

पूरी तैयारी के साथ वो सुबह अपने ढाबे पर ग्राहकों का इंतज़ार करते रहते थे और आती जाती गाड़ियों को देखते रहते थे और देर रात को अपने ढाबे की सब लाइटें बंद करके थोड़े मायूस होकर सो जाते थे और इस बीच विनय के सब दोस्तों के फोन भी आ रहे थे और सबने विनय का उत्साह बढ़ाया था और विनय से कहा था कि अगर उसे किसी भी तरह की कोई मदद चाहिए हो तो वो सब हाज़िर हैं और विनय जानता था कि उसके सब दोस्त बहुत अच्छे थे और उससे बहुत सहानुभूति रखते थे।

पर वो कहते हैं न कि सब दिन एक समान नहीं रहते और जो लोग सब्र करते हैं और सच्चे मन से ईश्वर को याद करते हैं ईश्वर उनके दिल की आवाज़ जरूर सुनता है और एक दिन विनय के ढाबे पर कुछ ऐसा ही हुआ।

एक दिन बारिश में भीगते हुए कालेज के एक लड़का और लड़की उनके ढाबे पर आए और विनय से पूछने लगे कि उनके ढाबे पर खाने के लिए क्या क्या मिलेगा ? तब ढाबे पर आए पहले ग्राहक को देख कर विनय और सुधा बहुत खुश हुए थे और उन्होंने, उन्हें अपने ढाबे की सबसे अच्छी जगह पर बिठाया था और उनको भीगा हुआ देखकर सुधा उन्हें ढाबे के पीछे बने अपने घर में ले गई थी और उन दोनों को उसने बदन पोंछने के लिए तौलिया दिया था और पहनने के लिए उनके मुताबिक कुछ वस्त्र भी दे दिए थे। उनकी इस अवभागत से वह दोनो बच्चे बहुत खुश हुए थे। पर विनय और सुधा ने उनकी यह मदद किसी लालच की वजह से नहीं की थी। बिना किसी स्वार्थ के किसी की यूं मदद करना विनय और सुधा के व्यक्तित्व का हिस्सा था। वो दोनो किसी को भी तकलीफ में देख कर मदद करने के लिए तैयार हो जाते थे।

अब उन बच्चों को बहुत अच्छा अनुभव हो रहा था, पर बारिश में भीगे होने की वजह से उन्हें उस पल बहुत ठंड भी लग रही थी पर अब दोनो ने थोड़ी राहत की सांस ली थी। उन्हें आराम से बैठा देख कर विनय ने उन्हें बताया कि हम आपको बहुत गर्मा गर्म परांठे परोसेंगे। विनय और सुधा के मधुर व्यवहार को देख कर वो बहुत खुश हुए थे और उन्होंने दो आलू के परांठों का आर्डर दिया था और जब उन्होंने उन आलू के परांठों को चखा तो वो वाह वाह कर उठे। उस समय विनय और सुधा को ढाबे पर कोई और काम न होने की वजह से वो दोनो भी बच्चों के पास ही बैठे गए थे और तब बातों ही बातों में उन बच्चों ने विनय को बताया कि वो दोनो शहर में होटल मैनेजमेंट का कोर्स कर रहे हैं, तब उन दोनो बच्चों ने विनय से पूछा था "अंकल आपने इस जंगल जैसी जगह पर अपना ढाबा क्यों खोला है" तब विनय ने उन्हें सब किस्सा कह सुनाया कि वो यहां पर किन परिस्थितियों में आए थे। उनकी सारी कहानी सुनकर वह लड़का और लड़की सोच में पड़ गए थे और उनके चेहरे से पता चल रहा था कि उन्हें विनय की बिना किसी विशेष कारण के नौकरी चले जाने का बेहद अफसोस हुआ था। खाना खाने के बाद इसी व्यवसाय से जुड़े होने की वजह से उन दोनो बच्चों ने विनय से ढाबे का किचन देखने की इच्छा ज़ाहिर की थी और विनय तो वैसे ही बहुत बातूनी किस्म का इंसान था

वो उन्हें अपने ढाबे के रसोई घर में ले आया था और वो दोनो बच्चे, विनय के किचन की व्यवस्था देख कर दंग रह गए थे। उन्होंने कभी कल्पना में भी नहीं सोचा था कि जंगल में बने एक ढाबे का किचन इतना शानदार भी हो सकता है। वो लड़का और लड़की विनय से बहुत प्रभावित दिखाई दे रहे थे और उन्होंने अपना बिल देने के बाद, विनय और सुधा को उनके इस नए काम की शुभकामनाएं दी थी और वो दोनो बच्चे अपनी राह पर चल दिए थे। पर उन बच्चों से बातें करके अब तक विनय और सुधा में थोड़े उत्साह का संचार हो चुका था क्योंकि उनके ढाबे पर आया पहला ग्राहक उनके खाने से और उनके मधुर व्यवहार से बहुत संतुष्ट और खुश हो कर गया था और बेशक यह उनके ढाबे के लिए बहुत शुभ संकेत थे।

पर अगले ही दिन विनय के ढाबे पर लगभग 100 मोटर साईकिल और स्कूटर आकर रुके थे और यह सब लड़के लड़कियाँ उन दो बच्चों के कालेज के ही थे जिन्होंने कल विनय के ढाबे पर खाना खाया था। उस पल जैसे विनय के ढाबे पर ग्राहकों का मेला सा लग गया था और कालेज के बच्चों को आया देख कर उनके ढाबे पर और भी ग्राहक आने लगे थे। यह देख कर विनय और सुधा तो खुश थे ही, पर लक्ष्मी और शाम की खुशी का भी कोई ठिकाना नहीं रहा था। इतने लोगों को एक साथ आया देख कर वह लड़का और लड़की रसोई घर में, विनय और सुधा की सहायता करने लगे थे और वो बच्चे यह देख कर बहुत हैरान हुए थे कि विनय के उपकरणों ने और गैस के विशेष चूल्हों ने, बहुत से लोगों के लिए परांठे लगभग एक घंटे में ही बना लिए थे और यह वास्तव में बहुत आश्चर्यजनक बात थी। विनय के रसोई घर में रखे चार चूल्हों की आग, इतनी जोरदार थी कि एक मिनट में उन चार चूल्हों पर चार पराठे एक साथ बन रहे थे और उस समय विनय के हाथ बिजली की गति से काम कर रहे थे। यह सब देख कर बच्चे और खुद सुधा भी विनय से बहुत प्रभावित हो गई थी और लक्ष्मी और शाम तो हक्के बक्के से विनय को काम करते हुए देख रहे थे। कालेज के सब बच्चे और दूसरे ग्राहक, बहुत चाव से परांठे खा रहे थे और कुछ ग्राहकों ने विनय की नई रेस्पी से बने परांठों का ज़ायका भी लिया था और उनके चेहरे पर विनय के लिए प्रशंसा के भाव दिखाई दे रहे थे। यह आलू के विशेष परांठे थे जिनके ऊपर पर शहद डाल कर उन्हें परोसा गया था और उनका ज़ायका वास्तव में बहुत लाजवाब था और आज का दिन विनय के ढाबे का एक यादगार दिन था और सब कामों से निबट कर विनय कालेज के बच्चों के बीच जा बैठा था और

उन्हें अपनी लच्छेदार मीठी बातें सुनाने लगा था और सब बच्चे बहुत चाव से विनय की बातें सुन रहे थे और सुधा यह सब देख कर मुस्करा रही थी। तब उस पल लक्ष्मी ने सुधा से कहा था “बाबा रे बाबा, साहब काम में बहुत तेज़ हैं” और फिर विनय को बहुत सम्मान देते हुए लक्ष्मी ने सुधा से कहा था “साहब बातें भी बहुत अच्छी करते हैं” तब सुधा ने मुस्कराते हुए लक्ष्मी से कहा था “साहब थोड़ी बातें नहीं करते, वो बहुत सारी बातें करते हैं” और यह कह कर सुधा खुद भी हंसने लगी थी और उसकी बातों से ज़ाहिर हो रहा था कि उस पल उसे विनय पर बहुत प्यार आ रहा था। फिर कुछ पल रूककर सुधा ने मुस्कराते हुए लक्ष्मी से कहा था “लक्ष्मी, साहब पहले एक बड़े होटल में काम करते थे इसलिए उन्हें यह सब काम करने का अभ्यास है” यह सुनकर लक्ष्मी और भी हैरान हो गई थी क्योंकि लक्ष्मी गांव की रहने वाली एक सीधी सादी औरत थी उसे पांच सितारा होटल के बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं थी कि बड़े होटलों में खाना बनाने वाले जो शेफ होते हैं उनकी पगार लाखों में होती है।

अब ढाबे पर लोगों के आने से मेला सा लग गया था और ढाबे का माहौल बहुत खुशनुमा सा हो गया था और उस अच्छे माहौल को देखते हुए विनय ने ढाबे के एक कोने में एक मंच और माइक की व्यवस्था भी कर दी थी, जिससे वहां पर आने वाले ग्राहक अपना कुछ गाना बजाने का कार्यक्रम भी कर सकते थे और विनय ने देखा कि अब कुछ बच्चे अपनी गिटार और पियानो के साथ ढाबे पर आने लगे थे और वहां का अच्छा माहौल देख कर वो अपना गीत गाने का शौंक भी पूरा कर लेते थे और संगीत की उस महफिल की वजह से ढाबे के माहौल को चार चांद लग गए थे और अच्छे वातावरण को देखते हुए विनय ने उस दिन अपने ढाबे का नाम “डोडी के स्पेशल परांठे” रख दिया था और उस दिन विनय ने बहुत देर तक अपने सब दोस्तों के साथ फोन पर बातें की थी और विनय के कुछ दोस्तों ने उससे कहा था कि वो जल्दी ही उसके ढाबे को देखने के लिए आयेंगे और उसके जिगरी दोस्त जसवंत ने तो विनय से यहां तक कह दिया था “ओ यार मेरे रहने का भी इंतज़ाम करके रखियो, मैं तेरी भाभी को साथ लेकर तेरे ढाबे पर आ रहा हूं” और जसवंत के मुंह से यह प्यार भरे मीठे बोल सुनकर विनय और सुधा के चेहरे पर मुस्कान आ गई थी और विनय ने हंसते हुए जसवंत से कहा था “ओ आजा यार, तेरे लिए पूरा घर खाली करवा दूंगा” और फोन पर सब दोस्तों से बातें

करने के बाद आज बहुत दिनों के बाद विनय और सुधा को सुख की मीठी नींद आई थी, क्योंकि उन का किया हुआ प्रयोग सफल हो चुका था।

अगले ही दिन होटल मैनेजमेंट सीख रहे बच्चों के मुंह से विनय की तारीफ सुनकर उन बच्चों के कालेज के प्रोफेसर ने विनय को कालेज के बच्चों को प्रेरित करने के लिए कालेज आने का न्योता दिया था और उन्होंने विनय से आग्रह किया था कि वो कालेज में होटल मैनेजमेंट पढ़ रहे बच्चों के साथ अपने अनुभव शेयर करें और उन सब बच्चों को सफल होने का रास्ता बताएं और निसंदेह विनय कालेज के सब बच्चों के लिए एक शानदार व्यक्ति था क्योंकि उसने अपनी ज़िंदगी के 20 वर्ष पांच सितारा होटल के व्यवसाय को दिए थे और अब विनय को ढाबा खोलने के बाद इस व्यवसाय का थोड़ा और अधिक व्यक्तिगत अनुभव हो गया था कि इस कारोबार को ठीक ढंग से शुरू करने के लिए किन किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए और अगर विनय के इस कार्य को अनुभव की दृष्टि से देखा जाए, तो इसे कुछ यूं भी कहा जा सकता था कि विनय की लगभग सारी ज़िंदगी होटल के कारोबार में बीती थी तो यह कुछ गलत नही था।

विनय को लिए कालेज से न्योता मिलना और बच्चों को अपने विभिन्न किस्म के अनुभवों से अवगत कराना, कालेज के बच्चों के लिए और विनय के लिए भी एक शानदार अनुभव था और कालेज से यूं न्योता मिलना, विनय और सुधा के लिए बहुत बहुत सम्मान की बात थी और इससे उनके विश्वास को एक नई ऊर्जा मिली थी।

कालेज के बच्चों के साथ अपना अनुभव शेयर करके विनय को बहुत अच्छा अनुभव हुआ था और वहीं कालेज के सब प्रोफेसर भी विनय के ज्ञान और उसके सरल स्वभाव से बहुत प्रभावित हुए थे और साथ ही विनय की लच्छेदार और मीठी बातों ने, वहां पर उपस्थित सब लोगों का दिल जीत लिया था। तब कुछ प्रोफेसरों ने विनय को सुझाव दिया था कि वो अपने कुकिंग की रेस्पी और कुकिंग के अनुभव यू टयूब पर डालें और अपने वीडियो बनाएं और उन सब प्रोफेसरों ने विनय से कहा था कि इससे आपकी व्यक्तिगत प्रसिद्धि तो बढ़ेगी ही, साथ ही इस कार्य से आपका व्यापार भी बढ़ेगा और नए बच्चों को आपसे कुछ सीखने का मौका भी मिलेगा। विनय को प्रोफेसरों का यह सुझाव बहुत पसंद आया था और उसने अगले ही दिन से, डोडी के परांठों के नाम से अपना यू टयूब चैनल शुरू कर दिया था और उसे यह देख कर बहुत हैरानी हुई थी कि बहुत जल्दी

ही वो हिन्दुस्तान की कुकिंग के लिए प्रसिद्ध शख्सियतों में शामिल हो चुका था और इन सब कार्यो में कालेज के बच्चों का विशेष योगदान रहा था। अब होटल मैनेजमेंट सीख रहे सब बच्चे विनय को अपना गुरु मानने लगे थे और यह अनुभव विनय और सुधा की जिंदगी में एक आश्चर्जनक बदलाव ले आया था और वहीं लक्ष्मी और शाम यह सब देख कर बहुत हैरान थे और उन्होंने कभी सपने में भी नही सोचा था कि उनके ढाबे को ऐसी सफलता मिलेगी।

यू टयूब पर कुकिंग के अपने वीडियो बनाकर डालने से विनय को इतनी सफलता मिली थी कि अब हर राह पर छोटे बड़े खोमचे वाले डोडी के स्पेशल पराठों के नाम से अपना व्यापार करने लगे थे।

डोडी के स्पेशल पराठों के ढाबे की सफलता का सफर यही पर समाप्त नहीं हुआ था अब होटल मैनेजमेंट कर रहे कुछ बच्चों ने विनय से कहा था कि वो उनकी तरह ही अपना ढाबा खोलना चाहते हैं और इस काम के लिए उन्होंने विनय की मदद मांगी थी और विनय ने खुश हो कर न केवल उन्हें ढाबे के लिए योग्य जगह खोज कर दी थी, बल्कि उन्हें अपने जैसा किचन भी बना कर दिया था और बच्चों के माता पिता ने खुश होकर, उस ढाबे का नाम भी डोडी के स्पेशल पराठों के नाम से रख दिया था और अपने लाभ में से 10 % का हिस्सा, विनय को देना शुरू कर दिया था और कुछ इस तरह से एक वर्ष में लगभग 150 डोडी के स्पेशल पराठों के नाम से ढाबे खुल गए थे और उन सब ढाबों में 10 % का लाभ विनय को मिलने लगा था। अब तक विनय ने अपने असिस्टेंट के तौर पर, एक CA भी रख लिया था और अपने ढाबे के बढ़ते व्यापार को देख कर विनय ने अपना एक विशेष कानूनी सलाहकार भी नियुक्त कर लिया था। धीरे धीरे डोडी के स्पेशल पराठों के ढाबे का व्यापार विदेशों में भी फैलने लगा था और लोग उसके ढाबे के नाम के कापी राइट्स के उसे पैसे देने लगे थे और विनय के परांठों के व्यापार की एक चेन सी बन गई थी, जिसने विनय को हिन्दुस्तान के होटल व्यापार में शिखर पर पहुंच दिया था और अब विनय के बहुत से मित्र भी नौकरी छोड़ कर ढाबे का व्यापार करने लगे थे और सब सफलता के शिखर पर थे।

आज होटल व्यापार से जुड़े लोगों का एक बहुत बड़ा समारोह हो रहा था, जिसमे हिन्दुस्तान के सब बड़े होटलों के नुमाइंदे मौजूद थे और इस समारोह में विनय को विशेष

तौर पर सम्मानित किया जाना था और इस समारोह में विनय की पत्नी सुधा के साथ साथ, विनय के सब दोस्त भी उपस्थित थे और इस विशेष समारोह में वो आफिसर भी अपनी पत्नी के साथ मौजूद था जिसने लगभग तीन वर्ष पहले विनय को नौकरी से निकाला था।

जब विनय को होटल मैनेजमेंट के व्यापार में मिली अदभुत सफलता को देखते हुए उसे पुरस्कार दिया जा रहा था, तब पांच सितारा होटल का वह अधिकारी अपनी कुर्सी से उठ कर मंच पर चला आया था और उसने सब गणमान्य लोगों के सामने विनय से अपने दुर्व्यवहार की माफी मांगी थी और सब लोगों को बताया था कि उसी ने विनय को नौकरी से निकाला था और इस बात के लिए वो खुद को बहुत शर्मिंदा महसूस कर रहा था पर डोडी ने उस अफसर के पद का ध्यान रखते हुए उन्हें प्यार से अपने गले से लगा लिया था। इस बीच विनय के कुछ दोस्त डांस करते हुए मंच पर आ गए थे और सब दोस्त विनय की सफलता का जश्न मना रहे थे और उन दोस्तों में जसवंत भी शामिल था। खुशी के उस माहौल को देख कर पांच सितारा होटल का वह अधिकारी भी डांस करने लगा था और उस पल लोगों में बैठी उस अधिकारी की पत्नी ने बहुत धीमें से कहा था "लो अब हिटलर भी डांस करने लगा है" उस पल जसवंत ने मंच पर खड़े होकर सब श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा था कि वो विनय के बारे में दो शब्द कहना चाहता है और उसने विनय की ओर बहुत प्यार से देखते हुए कहा था "विनय कालेज से ही बहुत हसमुख व्यक्ति था और ये अपनी मीठी और लच्छेदार बातों से सबका दिल जीत लेता था, इसलिए मैंने विनय का निक नेम 'डोडी' रख दिया था" फिर कुछ रूक कर उसने लोगों से कहा था कि "आप जानते हैं कि डोडी का मतलब क्या होता है और फिर मुस्करा कर जसवंत ने कहा था, पंजाबी में फूल की कली को डोडी कहते है और मेरा यार जैसा सारी दुनिया में दूसरा कोई भी नहीं है इसके दिल में किसी के लिए भी कोई दुर्भावना नही है और शायद इसी वजह से ईश्वर ने इसकी तकदीर में इतनी सफलता लिखी है" और यह कह कर जसवंत ने बहुत प्यार से विनय को अपने गले से लगा लिया था और उस समारोह में उपस्थित सब लोग विनय के सम्मान में अपनी जगह पर खड़े होकर तालियाँ बजाने लगे थे।

इतनी सफलता मिलने के बाद भी विनय ने अपने रहने के स्थान में कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया था और ढाबे की व्यवस्था भी बिल्कुल पहले की तरह ही रखी हुई

थी, पर हां अब होटल मैनेजमेंट कर रहे बहुत से बच्चे उसके ढाबे पर विशेष ट्रेनिंग लेने के लिए आने लगे थे और वो एक दो महीने उसके पास काम करके ढाबे का सब काम काज सीखते थे और विनय और सुधा उन सब बच्चों को अपने बच्चे समझ कर उन्हें काम काज सिखाते थे।

एक दो वर्षों के बाद विनय और सुधा दिल्ली के करोल बाग बाजार में घूम रहें थे और उन्होंने देखा कि फुटपाथ के किनारे पर एक व्यक्ति डोडी के स्पेशल पराठे के नाम से अपना एक छोटा सा ठेला चला रहा था। यह देख कर विनय और सुधा ने उस खोमचे वाले से आलू के दो स्पेशल हनी पराठे लिए थे और एक कोर परांठे का खाने के बाद ही विनय ने मुंह बनाकर उस खोमचे वाले से कहा था "यह तो कुछ खास परांठा नही है यार" तब उस पल उस खोमचे वाले ने थोड़ा नाराज़ होकर विनय की ओर देखा था और उससे कहा था "साहब सारी दुनिया डोडी की रेस्पी के हनी परांठे खा रही है और आप अजीब आदमी हैं, आपको परांठा पसंद नही आया" और यह कहते हुए उसने थोड़ा नाराज़ होकर परांठे की प्लेट विनय के हाथों से वापिस ले ली थी तब विनय ने मुस्कराते हुए उस खोमचे वाले से कहा था "अरे भाई परांठा तो खाने दे" और यह कह कर विनय ने वह प्लेट उस खोमचे वाले के हाथ से वापिस ले ली थी और सुधा मुस्करा कर यह सब देख रही थी और अगर उस खोमचे वाले को इस बात का पता चल जाता कि यह इंसान ही डोडी है तो शायद वो बेहोश हो कर नीचे गिर पड़ता।

समाप्त

कहानी 7: परिवर्तन

डॉक्टर अभय श्रीवास्तव अब 45 वर्ष के हो गए थे और उनके परिवार में उनकी मां, उनकी पत्नी सुधा और दो बहुत प्यारे प्यारे बच्चे थे जो अभी स्कूल में ही पढ़ते थे। डॉक्टर अभय के परिवार में उनको छोड़ कर सबकी ईश्वर पर बहुत आस्था थी। डॉक्टर अभय की मां और सुधा अक्सर प्रसाद बनाकर मंदिर में ले जाते थे और सब श्रद्धालुओं में बहुत प्रेम और श्रद्धा के साथ बांटते थे। डॉक्टर अभय की मां हमेशा अपने बेटे से कहती रहती थी कि मंदिर में भगवान को प्रणाम करके अपने काम पर जाया करो इससे तुम्हारा दिन अच्छा गुज़रेगा पर डॉक्टर अभय ने मां की बात को कभी भी गंभीरता से नहीं लिया था और उनकी पत्नी सुधा ने अब इस विषय पर डॉक्टर अभय से कुछ भी कहना छोड़ दिया था। वो इस बात को समझ गई थी कि वो जितना डॉक्टर अभय का ध्यान इस ओर खींचने का प्रयास करेगी डॉक्टर अभय पर इस बात का विपरीत असर पड़ेगा। सुधा को इस बात का यकीन था कि एक न एक दिन डॉक्टर अभय का ध्यान भी ईश्वर की ओर जरूर जायेगा। सुधा जब भी अपने पति से यह कहती थी कि मैं और मां प्रसाद बनाकर मंदिर जा रहे है और मैंने आपका और बच्चों का नाश्ता टेबल पर रख दिया है आप सब समय

पर नाश्ता कर लेना, उस पल डॉक्टर अभय अपनी पत्नी की बात सुन कर चादर तान कर सो जाते थे और सुधा को इस बात का पता होता था कि मंदिर की बात सुनकर डॉक्टर अभय मन ही मन में मुस्करा रहे होंगे और सुधा जानती थी कि डॉक्टर अभय को भगवान के अस्तित्व पर बिलकुल भी यकीन नही था और इसकी वजह शायद यह रही होगी कि उन्होंने विज्ञान पढ़ा था और पढ़ लिख कर वो एक काबिल डॉक्टर बन चुके थे और उन्हें सिर्फ आंखों देखी और कानों सुनी बातों पर ही यकीन था पर यह बात भी सच थी कि उन्होंने कभी भी किसी की श्रद्धा का मज़ाक नहीं उड़ाया था। सुधा मंदिर में जाकर अक्सर सबके लिए प्रार्थना किया करती थी और ईश्वर से सब के लिए दुआएं मांगती थी। डॉक्टर अभय श्रीवास्तव बहुत दयालु इंसान थे और उन्होंने एक अच्छे डॉक्टर के कर्तव्य का सदा पालन किया था। एक दिन डॉक्टर अभय अपनी कार पर अस्पताल जा रहे थे कि उन्होंने देखा कि एक बूढ़ा इंसान सड़क पार करते समय अचानक ही उनकी कार के सामने आकर बेहोश हो कर गिर पड़ा था। यह देख कर डॉक्टर अभय ने जल्दी से अपनी कार सड़क के किनारे पर लगाई थी और वो अपना डॉक्टरी का बैग लेकर उस बूढ़े की मदद करने लगे थे और उसकी जांच पड़ताल करने पर उन्हें कुछ अधिक समझ नही आया था पर इस बीच उन्होंने अपने अस्पताल की एंबुलेंस को फोन करके तुरंत वहां पर आने के लिए कह दिया था।

वो बूढ़ा इंसान लगभग 70 वर्ष का लग रहा था और उसके कपड़े भिखारियों जैसे ही थे पर उसका व्यक्तित्व फिर भी बहुत आकर्षक था उसका चौड़ा माथा, बड़ी बड़ी विनम्र आंखें और आंखों के करीब खींची लकीरों से वो एक भला इंसान दिखाई पड़ रहा था। डॉक्टर अभय ने अस्पताल पहुंच कर उस बूढ़े व्यक्ति को जल्दी से प्राथमिक उपचार दिया था और उस बूढ़े व्यक्ति का खून जांच पड़ताल के लिए लेब में भेज दिया था। डॉक्टर अभय उस बूढ़े की बीमारी बारे में एक दूसरे डॉक्टर के साथ भी विचार विमर्श कर रहे थे और उस डॉक्टर ने डॉक्टर अभय की चिंता को कम करने के लिए उनसे कहा था कि शायद इन्हें कमज़ोरी की वजह से चक्कर आ गए होंगे, पर फिर भी डॉक्टर अभय ने उस बूढ़े इंसान का ECG किया था और उसमें सब कुछ ठीक दिखाई दे रहा था अब डॉक्टर अभय को उस बूढ़े की ब्लड रिपोर्ट आने का इंतज़ार था। उन्हें शक था कि कहीं ब्लड क्लॉट न हो गए हों और अगर ऐसा हुआ तो ब्लड रिपोर्ट से उन्हें पता चल जाना था। पर कुछ समय के बाद जब उनकी बल्ड रिपोर्ट आई उसमें ऐसे कोई भी लक्षण नहीं

थे। उस बूढ़े की बल्ड रिपोर्ट एकदम ठीक थी। जब उन्हें लगा कि वह बूढ़ा व्यक्ति थोड़ा बेहतर है और खतरे से बाहर है, तो उन्होंने उस बूढ़े व्यक्ति को अस्पताल के एक कमरे में शिफ्ट कर दिया था और उस बूढ़े व्यक्ति की माली हालत को देखते हुए उन्होंने अस्पताल का सारा बिल खुद अदा ही कर दिया था। जब उस बूढ़े व्यक्ति को थोड़ा होश आया, तब डॉक्टर अभय ने उस बूढ़े से बहुत सम्मान से कहा था "घबराइये मत बाबा आप अब बिल्कुल ठीक हैं और अस्पताल में हैं" उस पल उस बूढ़े के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान आ चुकी थी और उन्होंने अपने हाथ जोड़ कर डॉक्टर अभय का शुक्रिया अदा किया था और डॉक्टर अभय से कहा था "मेरे पास अस्पताल में देने के लिए पैसे नहीं हैं" तब डॉक्टर अभय ने मुस्कराते हुए उनका हाथ अपने हाथों में लेते हुए बहुत प्रेम से उनसे कहा था "आप अस्पताल के बिल की चिंता मत करिए बाबा मैंने आपका बिल अस्पताल में अदा कर दिया है" उस पल उस बूढ़े की आंखें भर आई थी और उसने हाथ जोड़ कर डॉक्टर अभय को शुक्रिया कहा था और उस पल उसके हाथ बहुत कांप रहे थे। तब डॉक्टर अभय ने बहुत प्रेम से उनसे कहा था "आप घबराइए मत आप बहुत जल्दी ही अच्छे हो जायेंगे" और यह कह कर उन्होंने पास खड़ी नर्स को कुछ हिदायतें दी थी और फिर वो अस्पताल के दूसरे मरीज़ो को देखने में व्यस्त हो गए थे।

जब रात को डॉक्टर अभय अपने घर पर वापिस आए तब कपड़े बदलने के बाद वो चैन से सोफे पर बैठ गए थे। तब सुधा ने उनसे बहुत प्रेम से पूछा था "क्या मैं आपके लिए चाय बना कर ले आऊं" तब डॉक्टर अभय ने सुधा से कहा था "नही, अब थोड़ी देर में खाना ही खाऊंगा" तब डॉक्टर अभय ने अपनी मां और सुधा को सुबह का सारा वाक्या कह सुनाया था कि कैसे एक बूढ़ा व्यक्ति सड़क पर अचानक गिर कर बेहोश हो गया था और उन्होंने उसे अस्पताल में दाखिल कर दिया था। अब तक डॉक्टर अभय की मां अपने बेटे के करीब आ कर बैठ गई थी और उसने बहुत प्यार से डॉक्टर अभय को स्पर्श किया था और उससे कहा था "यह तुमने बहुत अच्छा काम किया है बेटे पता नही उस बूढ़े का कोई होगा भी या नहीं" यह कह कर डॉक्टर अभय की मां थोड़ी सोच में पड़ गई थी तब डॉक्टर अभय ने अपनी मां से मुस्कराते हुए कहा था "तुम क्यों चिंता कर रही हो मां वो अब बिल्कुल ठीक हैं और शायद उन्हें एक दो दिन में अस्पताल से छुट्टी भी मिल जायेगी" उस पल डॉक्टर अभय की मां ने डॉक्टर अभय से कहा "ईश्वर जरूर तुम्हें इस अच्छे काम का फल देगा" तब डॉक्टर अभय ने मुस्कराते हुए अपनी मां से कहा था "अरे

मां मैंने यह काम कोई फल पाने के लिए नहीं किया था मैं एक डॉक्टर हूं और यह मेरा कर्तव्य था" उस पल सुधा अपने पति को बहुत स्नेह से देख रही थी और उसे मन ही मन में डॉक्टर अभय पर बहुत प्यार आ रहा था। सुबह जब डॉक्टर अभय अस्पताल जाने के लिए घर से निकलने वाले थे तब डॉक्टर अभय की मां ने उनके हाथों में एक टिफन थमा दिया था तब डॉक्टर अभय ने आश्चर्य से अपनी मां की ओर देखा था "यह भोजन मैंने अपने हाथों से उस मरीज के लिए बनाया है पता नही उस बेचारे ने भोजन भी किया होगा या नहीं" उस पल मुस्कराते हुए डॉक्टर अभय ने अपनी मां से कहा था "मां अस्पताल में सब कुछ मिल जाता है पर फिर भी तुमने यह इतने प्यार से उनके लिए बनाया है, तो मैं उन्हें यह जरूर दे दूंगा" और यह कह कर उन्होंने वह टिफन अपनी मां के हाथों से ले लिया था और डॉक्टर अभय अस्पताल के लिए घर से निकल पड़े थे, पर अस्पताल जाने से पहले उन्होंने उस बूढ़े मरीज़ के लिए रास्ते में से दो जोड़ी कपड़े भी खरीद लिए थे। जब डॉक्टर अभय उस बूढ़े मरीज़ के कमरे में पहुंचे तो उन्हें वह बूढ़ा मरीज एक दम स्वस्थ दिखाई दे रहा था तब उन्होंने मुस्कराते हुए अपनी मां के हाथों से बना हुआ भोजन का डिब्बा उस बूढ़े मरीज़ के हाथों में थमा दिया था और उनसे बहुत प्रेम से कहा था "यह भोजन मेरी मां ने आपके लिए बनाया है" डॉक्टर अभय के मुंह से यह सुनकर उस बूढ़े की आंखों में आंसू बहने लगे थे और वो बूढ़ा कुछ कहता, इससे पहले ही डॉक्टर अभय ने कपड़ों का लिफाफा उस बूढ़े मरीज़ के हाथों में देते हुए उससे कहा था "बाबा यह कुछ कपड़े मैंने आपके लिए लिए हैं इन्हें पहन लीजिएगा" अब वह बूढ़ा भरी आंखों से डॉक्टर अभय की ओर देख रहा था और उसने भरराई हुई आवाज़ में डॉक्टर अभय से कहा था "मैं आपका यह अहसान कैसे चुकाऊंगा" और डॉक्टर अभय को उस बूढ़े मरीज़ की आंखों में नमी देख कर कुछ ऐसा आभास हुआ था जैसे वह बूढ़ा व्यक्ति बहुत भावुक हो चुका था और अगर वो शायद थोड़ा बिस्तर से उठने लायक होता तो अभी तक वो उसके पांव में गिर कर रो रहा होता।

तब डॉक्टर अभय ने बहुत प्रेम से और उन्हें सम्मान देते हुए कहा था "बाबा इंसान ही इंसान के काम आता है और यह तो मेरा कर्तव्य था" और उनको रोते देख कर डॉक्टर अभय ने उनसे कहा था "अब आप आराम करिए और कुछ भी मत सोचिए धीरे धीरे सब सामान्य हो जायेगा" और यह कह कर वो अस्पताल के दूसरे मरीजों को देखने में व्यस्त हो गए थे।

रात को अस्पताल से घर लौटने से पहले डॉक्टर अभय ने उस बूढ़े मरीज़ से मिलना ठीक समझा था और अब तक उस बूढ़े मरीज़ की बल्ड रिपोर्ट भी आ चुकी थी जो बिलकुल ठीक थी और यही सब बताने के लिए जब डॉक्टर अभय उस बूढ़े मरीज़ के कमरे में पहुंचे, तो यह देख कर वो हैरान रह गए थे कि वह बूढ़ा मरीज़ अस्पताल से जा चुका था। डॉक्टर अभय अभी यह सब सोच ही रहे थे कि उन्हें टेबल पर एक पत्र पड़ा मिला और उस पत्र पर एक फूल भी रखा हुआ था जब डॉक्टर अभय ने वो पत्र पढ़ा, तो वो मन ही मन में मुस्कराए और पत्र को अपने कोट की जेब में रख कर वो घर की ओर चल दिए थे। वह पत्र उस बूढ़े मरीज़ ने डॉक्टर अभय को लिखा था और उस पत्र में लिखा था "मैं आपके इस परोपकारी कार्य का बदला सारी ज़िंदगी नही चुका पाऊंगा पर मैं आपको असीस तो दे ही सकता हूं आप अपने हर काम में सदा सफल हों और आपके सारे परिवार पर ईश्वर की कृपा बनी रहे" और सबसे नीचे उस पत्र में लिखा था "आपकी मां के हाथ का बना हुआ भोजन वास्तव में बहुत स्वादिष्ट था आप मेरी तरफ से उन्हें धन्यवाद ज़रूर कहिएगा, ईश्वर आपको सदा सुखी रखे" डॉक्टर अभय ने वह पत्र बहुत बार पढ़ा था और फिर मुस्करा कर उस पत्र को अपने जेब में रख लिया था।

घर पहुंचने पर डॉक्टर अभय ने सारा किस्सा अपनी मां और पत्नी को कह सुनाया था तब उनकी मां ने कहा था "पता नही वह बूढ़ा किस मुसीबत का मारा होगा, बेचारा" और फिर सब उस बात को भूलकर रात का भोजन करने लगे थे पर उस पल भी डॉक्टर अभय के दिमाग में उसी बूढ़े व्यक्ति का मुस्कराता हुआ चेहरा घूम रहा था। अगले दिन अस्पताल जाते हुए डॉक्टर अभय उसी सड़क पर आसपास सब तरफ नज़र दौड़ा रहे थे कि शायद कहीं पर उस बूढ़े व्यक्ति की कोई झलक दिखाई दे जाए पर ऐसा कुछ भी नही हुआ था। डॉक्टर अभय बहुत दिन तक अस्पताल जाते हुए उसी सड़क के आसपास अपनी नज़र दौड़ते रहे पर फिर वह बूढ़ा आदमी उन्हें कभी भी दिखाई नही दिया था।

एक दिन वो अस्पताल के पहली मंज़िल से चौथी मंज़िल पर लिफ्ट से जा रहे थे पर चौथी मंज़िल पर पहुंच कर लिफ्ट का दरवाज़ा नहीं खुल रहा था और उनकी लिफ्ट का दरवाज़ा पांचवीं मंज़िल पर जा कर खुला और डॉक्टर अभय इस बात से बहुत हैरान हुए थे और उसी हैरानी की अवस्था में उन्होंने फिर से चौथी मंज़िल पर जाने के लिए लिफ्ट का बटन दबाया, पर अब लिफ्ट तीसरी मंज़िल पर आ कर रुक गई और लिफ्ट का दरवाज़ा खुदबखुद खुल गया। तब डॉक्टर अभय तीसरी मंज़िल पर लिफ्ट से उतर गए

और सीढ़ियों से चौथी मंज़िल पर जाने लगे और चौथी मंजिल पर पहुंच कर उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति ठीक लिफ्ट के सामने गिरा हुआ था और उसके सिर से बहुत खून बह रहा था। उन्होंने जल्दी से इस घटना की जानकारी अस्पताल के स्टाफ को दी और जल्दी से उस जख्मी इंसान को अस्पताल में दाखिल कर दिया। उस आदमी के बारे में पता चला कि वो आदमी अस्पताल में किसी मरीज़ से मिलने आया था और डॉक्टर अभय को जब उस आदमी के गिरने की वजह का पता चला तो वो बहुत हैरान हुए और उन्हें देखा कि लिफ्ट के सामने फर्श पर बहुत फिसलन सी थी जिसकी वजह शायद चौथी मंज़िल पर किसी सफाई कर्मचारी से गलती से साबुन का पानी गिरा रह गया था जिससे फर्श में फिसलन आ गई थी। डॉक्टर अभय ने उस सफाई कर्मचारी को बहुत गुस्सा किया था और वो अस्पताल सफाई कर्मचारी भी अपनी गलती से बहुत शर्मिंदा सा खड़ा था। कुछ समय के बाद अस्पताल के स्टाफ ने डॉक्टर अभय को बताया कि वह आदमी जो लिफ्ट के सामने गिर गया था वो अब बिल्कुल ठीक है और उसे सिर पर मामूली सी चोट ही आई है। तब तक डॉक्टर अभय दूसरे मरीजों को देखने में व्यस्त हो चुके थे। रात को जब डॉक्टर अभय अस्पताल से घर लौट रहे तब उन्होंने फूलों की एक दुकान के पास अपनी कार रोकी और वहां से अपनी मां के लिए पूजा के कुछ फूल ले लिए थे। डॉक्टर अभय ने अपने घर पर अस्पताल वाली घटना का जिक्र नहीं किया था क्योंकि वो जानते थे कि उनकी मां को जब इस घटना का पता चलेगा तो वो बेवजह ही चिंतित हो जायेगी। अगले दिन जब वो अपनी कार से अस्पताल जा रहे थे तो उन्होंने कुछ खरीदने की सोच कर एक जगह पर अपनी कार रोकी और कार से बाहर निकलने के लिए अपनी कार का दरवाज़ा खोलने लगे, पर कार का ड्राइविंग सीट वाला दरवाज़ा इतना जाम हो चुका था कि बहुत जोर लगाने पर भी कार का दरवाज़ा नहीं खुला था, इस बात से जुंझला कर डॉक्टर अभय कार का दूसरी तरफ का दरवाज़ा खोलकर अभी अपनी कार बाहर निकलने की सोच ही रहे थे कि उन्होंने देखा कि एक कार बहुत तेज़ी से उनकी कार की ओर आई थी और ड्राइविंग सीट वाले दरवाज़े को घिसटती हुई एक पेड़ से जा टकराई थी और उस कार का चालाक जख्मी हो गया था। इस आकस्मिक घटना को देख कर डॉक्टर बहुत हैरान हुए थे और इतना तो वो उसी पल समझ गए थे कि अगर उन्होंने ड्राइविंग सीट का दरवाज़ा खोलकर बाहर निकलने की कोशिश की होती तो वो भी इस दुर्घटना का शिकार हो सकते थे और उससे आगे की कल्पना मात्र से वो कांप गए थे। उस कार दुर्घटना की जांच पड़ताल कर रहे पुलिस अधिकारी ने डॉक्टर अभय को बताया कि घटना में उस

चालक का कोई दोष नही था, दुर्भाग्य से उस कार की अचानक ही ब्रेक फेल हो गई थी और लोगों को बचाने के लिए उसने अपनी कार जानते बूझते हुए उस पेड़ से टकराई थी जिस पेड़ के करीब डॉक्टर अभय की कार खड़ी थी। यह घटना बहुत हैरान कर देने वाली थी और उस पर हैरानी की बात यह थी कि उस कार चालक को भी कोई खास गंभीर चोटें नही आई थी और वो कार चालक डॉक्टर अभय से उस घटना की माफी मांग रहा था। उस घटना से एक बात निश्चित थी कि अगर डॉक्टर अभय की कार का ड्राइविंग सीट वाला दरवाज़ा खुल गया होता तो शायद आज वो जीवित न होते और इस हैरान कर देने वाली बात को सिर्फ डॉक्टर अभय ही जानते थे। डॉक्टर अभय हैरान परेशान अस्पताल पहुंचे और कुछ पल उस घटना पर ही विचार करते रहे और वो इस बात पर भी हैरान थे कि इतनी खतरनाक घटना होने पर भी उन्हें एक खरोंच तक भी नही आई थी। पर हां उनकी कार का ड्राइविंग सीट वाला दरवाज़ा कार की टक्कर लगने से ज़रूर थोड़ा खराब हो गया था। उस पल डॉक्टर अभय ने मन ही मन में यह निश्चय कर लिया था कि वो इस घटना की जानकारी अपने परिवार को नही देंगे। डॉक्टर अभय देर रात तक इन्हीं दो घटनाओं पर विचार करते रहे और फिर थक कर गहरी नींद में सो गए थे और गहरी नींद में उन्होंने देखा कि वह बूढ़ा मरीज़ अपने चेहरे पर बहुत मीठी मुस्कान लिए उनसे कह रहा था "डॉक्टर अभय अगर मैं आपको न रोकता तो आपने चौथी मंज़िल पर लिफ्ट से बाहर निकलना था और आपने दुर्घटनाग्रस्त हो जाना था मैंने ही आपको चौथी मंजिल पर उतरने से रोका था और जब आपकी कार की दुर्घटना हुई थी उस पल भी मैंने ही आपकी ड्राइविंग सीट का दरवाज़ा लॉक कर दिया था ताकि आप उस घटना से बच सकें, डॉक्टर अभय आप बहुत दयालु और अच्छे इंसान हैं और इस दुनिया में आप जैसे कर्तव्य निष्ठा रखने वाले इंसान की बहुत ज़रूरत है" इतना कह कर वह बूढ़ा मरीज़ डॉक्टर अभय के ख्यालों में से ओझल हो गया था। उसी पल डॉक्टर अभय उठ बैठे थे और वो बहुत हैरानी से इधर उधर देखने लगे थे और वो इस सपने से बहुत हैरान थे। उन्हें इस बात की बहुत हैरानी हो रही थी कि उस बूढ़े इंसान को उनके साथ घटी उन घटनाओं का पता कैसे चला होगा। वो अभी इस विषय पर सोच ही रहे थे कि तब तक उनकी पत्नी सुधा की आंख खुल गई थी और उसने डॉक्टर अभय को जगा हुआ देख कर उनसे पूछा था "आपकी तबियत तो ठीक है न जी" डॉक्टर अभय अपने सपने की बात अपनी पत्नी को बता कर उसे परेशान नहीं करना चाहते थे इसलिए उन्होंने सुधा से बस इतना ही कहा था "मेरी तबीयत बिलकुल ठीक है मैं बस पानी पीने के लिए उठा था" और पानी पीने के

बहाने से डॉक्टर अभय अपने बिस्तर से धीरे से उठे थे और उन्होंने सारे घर का एक चक्कर लगाया था और अपनी मां और बच्चों को सुकून चैन से सोता हुआ देख कर वो वापिस अपने बिस्तर पर लौट आए थे और फिर अचानक उन्हें उस बूढ़े मरीज़ के लिखे पत्र का ख्याल आया था और वो उसी पल उठे थे और अपनी कोट की जेब में उस पत्र को ढूंढने लगे थे पर बहुत खोजने पर भी उन्हें वह पत्र कहीं दिखाई नहीं दिया था और इस बात से डॉक्टर बहुत भीतर ही भीतर से हैरान थे। उस पल वो मन ही मन में सोच रहे थे कि वह पत्र उन्होंने अपनी जेब में रखा था फिर वो पत्र कहां गया फिर उन्होंने सोचा कि शायद सुधा ने कहीं पर रख दिया होगा और यही सोचते सोचते करवट बदलते बदलते मालूम नही कब उनकी आंख लग गई थी।

सुबह जब वो सोकर उठे, उस पल उन्होंने देखा कि उनकी मां और सुधा मंदिर जाने के लिए प्रसाद बना रहे थे, तब उन्होंने अपनी पत्नी से पूछा था "सुधा क्या तुम्हें मेरे कोट की जेब में से कोई पत्र मिला था" सुधा ने बहुत आश्चर्य से डॉक्टर अभय की ओर देखा था और उनसे कहा "नही तो, क्या कुछ खो गया है" तब डॉक्टर अभय ने अपनी पत्नी को परेशान देख कर उससे कहा था "नही कुछ खास नहीं बस अस्पताल का एक बिल था और कुछ नही" अब तक डॉक्टर अभय समझ चुके थे कि इस पहेली को सुलझाना उनके बस की बात नही थीं और सब विचारों को वहीं छोड़ कर उन्होंने अपनी मां से कहा था "मां आज मैं भी मंदिर में प्रणाम करके ही अस्पताल जाऊंगा" डॉक्टर अभय के मुंह से यह सुनकर उनकी मां और पत्नी उनकी ओर बहुत हैरानी से देखने लगे थे और उस पल वो मन ही मन में बहुत खुश भी थे, इसलिए दोनो हाथ जोड़ कर ईश्वर का शुक्रिया अदा कर रहे थे। मंदिर में जाने के लिए जब सुधा और मां कार में बैठ रहे थे तब कार के दरवाज़े पर खरोंच के निशान देख कर डॉक्टर अभय की मां और पत्नी ने एक साथ पूछा था "कार पर यह खरोंच के निशान कैसे पड़े" उस पल मुस्कराते हुए डॉक्टर अभय ने उन से कहा था "कुछ नही मां यह एक छोटे बच्चे की शैतानी की वजह से पड़े हैं" और इतना कह कर डॉक्टर अभय मुस्करा दिए थे और उनकी कार तेज़ी से मंदिर की ओर रवाना हो गई थी और डॉक्टर अभय में आए इस सुखद परिवर्तन से उनकी मां और पत्नी बहुत खुश थे।

समाप्त

कहानी 8: क्या पता ईश्वर की कृपा से कल बारिश हो जाए

हरिराम जी 72 वर्ष की उम्र में भी सड़क के किनारे पर बैठ कर जूते टांकने और छतरी को ठीक करने का काम बहुत मेहनत से करते थे और वो अपने इस काम में बहुत दक्ष थे। हरिराम जी पिछले 55 वर्षों से इसी कार्य से अपनी रोज़ी रोटी कमाते आ रहे थे, पर अब ज़माना बदल गया था और अब उन्हें जूते टांकने का और छतरी को ठीक करने का अधिक काम नहीं मिलता था, पर फिर भी जैसे तैसे करके उनका गुज़ारा हो जाता था पर यह बहुत दुख की बात थी कि कई बार काम न मिलने की वजह से हरिराम और उसकी पत्नी को फाके भी काटने पड़ते थे।

आज भी हरिराम फुटपाथ पर बैठने के अपने ठिकाने से, बहुत दुखी मन से सामान समेट रहा था और अपना सारा सामान साइकिल पर रखने के बाद वो यह सोचते हुए अपने घर की ओर चल पड़ा था कि क्या पता ईश्वर की कृपा से शायद कल बारिश हो जाए और उसे कम से कम छतरी ठीक करने का कोई काम ही मिल जाए जिससे उसे दो पैसे कमाने का अवसर मिल जाए और यही सब सोचते हुए वो कब अपने घर पर पहुंच

गया था उसे इस बात का पता तक नहीं चला था। हरिराम की पत्नी ने घर का दरवाज़ा खोला था और भीतर उम्मीद लिए उसने अपने पति की आंखों में देखा था और उनके हाथों से खाने का डिब्बा और दूसरा सामान पकड़ कर उसे अपने घर में ठीक स्थान पर रख दिया था, पर इस बीच उसकी निगाहें अपने पति के उदास चेहरे को बहुत गौर से रही थी और अपने पति को यूं निराश देख कर वो सारी कहानी समझ गई थी पर फिर भी उसने अपने पति की हिम्मत बढ़ाते हुए उससे कहा था "अरे चिंता क्यों करते हो आज काम नहीं मिला तो क्या हुआ, काम कल मिल जाएगा, तुम चिंता मत किया करो" तब हरिराम ने अपने झुर्रियों पड़े चेहरे पर फीकी सी मुस्कान लाते हुए अपनी पत्नी की ओर देखते हुए उससे कहा था "तुम कभी हिम्मत नहीं हारती और तुम जानती हो कि तुम्हारी इन्हीं मीठी बातों की वजह से मैं अगले दिन पूरे जोश के साथ फिर काम पर निकल जाता हूं" अपने पति की ओर मुस्करा कर देखते हुए उसने कहा था "तुम बातें बनाना नहीं छोड़ते" और इतना कहने के साथ साथ उसने अपने पति का वर्षों पुराना नीले रंग का कोट, दीवार पर लगे कील पर लटका दिया था और अपने पति की सफेद रंग की पगड़ी को एक बक्से के ऊपर सुरक्षित रखने के बाद वो रसोई घर में खाना बनाने का काम में लग गई थी और खाना बनाते हुए एक पल के लिए उसकी निगाह रसोई घर में पड़े अनाज के डिब्बों पर भी पड़ी थी, जिनमें अब बस कुछ ही दिनों का अनाज बचा था और यह देख कर वो मन ही मन में बहुत चिंतित हो गई थी पर खाना परोसते समय उसने अपने चेहरे के भावों को बहुत खूबसूरती के साथ छिपा लिया था।

खाना खाते हुए हरिराम ने अपनी पत्नी की ओर देखते हुए कहा था "पता नहीं आजकल पहले जैसी बारिश क्यों नहीं होती, कुछ वर्ष पहले तो लोग बारिश के दिनों में सुबह से ही अपनी छतरी ठीक करवाने के लिए मेरे पास दौड़े चले आते थे" उस पल हरिराम बरसों पहले के दिनों को याद कर रहा था और क्षण भर के लिए उसकी आंख भर आई थी पर फिर उसने बहुत खूबसूरती से अपने चेहरे के भाव छिपा लिए थे। हरिराम की पत्नी बरसों से हरिराम के साथ रहती हुई आ रही थी और वो जानती थी कि उसका पति बिल्कुल भी लालची इंसान नहीं था और जब वो अपनी ज़रूरत भर के पैसे कमा लेता था, तब वो बच्चों की तरह खुश होकर घर वापिस लौट आता था। पर इस मुश्किल समय वो अपने पति को दिलासा देने के सिवा और कुछ भी नहीं कर सकती थी, पर भीतर से वो अपने पति के उतरे हुए चेहरे को देख कर बहुत मायूस हो चुकी थी और वो

इस बात को भी जानती थी कि बुढ़ापे की वजह से दिन प्रतिदिन उसके पति की आँखें कमज़ोर होती जा रही थी और अब उसके हाथ भी कांपने लगे थे और भविष्य के बारे में सोच कर कई बार वो बहुत चिंतित हो जाती थी पर फिर वो खुद को यह कह कर दिलासा दे देती थी कि वक्त आने पर ईश्वर हमारी मदद ज़रूर करेगा और उन दोनो के ईश्वर में विश्वास की वजह से उनकी ज़िंदगी की गाड़ी पटरियों पर चलती हुई आ रही थी और उन दोनो को किसी से भी कोई शिकवा शिकायत नहीं थी।

रात भर दोनो में बातें होती रही थी और वो दोनो अतीत के उन दिनों को याद कर रहे थे, जब वो दोनो जवान थे और बातों के इन्हीं सिलसिलों के बीच हरिराम की पत्नी ने ठंड को देखते हुए बिस्तर भी लगा दिया था और दोनों अपने ऊपर कंबल ओढ़ कर सोने की तैयारी करने लगे थे और सोने से पहले हरिराम ने अपनी पत्नी की ओर देखते हुए कहा था "शायद कल बारिश हो जाए और छतरी ठीक करवाने के लिए कुछ ग्राहक आ जाएं" और इन्हीं सोचों को सोचते हुए वो दोनो गहरी नींद में सो गए थे और कुछ समय बाद ही बहुत तेज़ बारिश होने लगी थी और सारी रात पानी बरसता रहा था।

जब सुबह हरिराम और उसकी पत्नी की आंख खुली तो उन्होंने देखा कि बाहर हल्की हल्की बारिश हो रही है और यह देख कर हरिराम जल्दी से अपनी पत्नी को बोला था "ईश्वर ने हमारी बात सुन ली है और क्या पता आज छतरी ठीक करवाने के लिए कुछ ग्राहक आ जाएं तुम जल्दी से मेरा खाने का डिब्बा बांध दो" और इतना कहते ही हरिराम जल्दी से तैयार होने लगा था और सुबह की चाय पीते ही वो अपने सिर पर पगड़ी बांध कर और नीला कोट पहन कर तैयार हो गया था और उस पल हरिराम के चेहरे पर बच्चों जैसा उत्साह दिखाई दे रहा था और यह देख कर हरिराम की पत्नी के चेहरे पर मुस्कान आ गई थी और उसने जल्दी से खाने का डिब्बा हरिराम के हाथों में थमा दिया था और बहुत प्यार से उससे कहा था "थोड़ा ध्यान से साइकिल चलाना" तब हरिराम ने मुस्कराते हुए उससे कहा था "तुम क्या मुझे अब भी बच्चा समझती हो" तब हरिराम की पत्नी ने मुस्कराते हुए अपने पति से कहा था "बच्चा तो नहीं, पर जब तुम खुश होते हो उस पल तुम सब कुछ भूल कर आसमान में उड़ने लगते हो" तब अपनी साइकिल पर सवार होते हुए हुए हरिराम ने अपने टूटे हुए चश्में के पीछे से अपनी पत्नी की ओर देखते हुए मुस्करा कर उससे कहा था "तो क्या तुम मुझे बूढ़ा समझती हो, मैं अभी भी बहुत दूर तक साइकिल चला सकता हूं" तब अपने पति को खुश देख कर खुश होते उसने कहा था

"अब जल्दी जाओ, क्या पता कोई ग्राहक तुम्हारा इंतजार कर रहा हो" और अपनी पत्नी की बात सुनते ही हरिराम जल्दी से अपनी साइकिल पर सवार होकर अपने हर रोज़ के अड्डे की ओर रवाना हो गया था और अगर उस पल कोई हरिराम को तेज़ी से साइकिल चलाते हुए देखता तो किसी को इस बात यकीन नहीं होता कि हरिराम एक बूढ़ा इंसान है। हरिराम ने फुटपाथ के बीचोंबीच लगे एक बहुत बड़े वृक्ष की ओट में, अपना बैठने का अड्डा बनाया हुआ था और सड़क बनाने वालों ने शायद उस वृक्ष को इसलिए नहीं काटा था क्योंकि वो वृक्ष वर्षों पुराना था और उसकी छांव बहुत ही ठंडी थी। उस वृक्ष के पीछे उसको छू कर जाती हुई एक सरकारी दीवार थी, जिसकी ओट में हरिराम और एक चायवाले ने अपनी रेहड़ी लगाई हुई थी और बारिश के माहौल को देखते हुए हरिराम ने बहुत जल्दी से अपना बैठने का आसन सजा लिया था और अगर उस पल कोई हरिराम के काम करने की चुस्ती फुर्ती को देखता तो शायद एक भी व्यक्ति उन्हें बूढ़ा नहीं कह पाता।

हरिराम ने अपने बैठने की जगह को एक ऊंचे आसन का रूप दिया हुआ था और वो आते ही अपना बक्सा अपने आसन के निकट रख देता था और फिर वो एक छोटा सा प्लास्टिक का पेपर छत के तौर पर अपने सिर से थोड़ा ऊपर बांध देता था, जिससे उस पर बारिश का पानी न गिरे और वैसे भी वहां पर इतना घना वृक्ष था कि उस वृक्ष से बारिश का पानी नीचे गिरना लगभग नामुमकिन था।

चाय वाले का नाम आत्माराम था और वो नौजवान लड़का था और वो बहुत दिनों से हरिराम को घर पर उदास जाते हुए देख रहा था और उसे इस बात का अहसास था कि हरिराम काका को सारा दिन कोई भी काम नहीं मिला था और वो बिना एक भी पैसा कमाए, खाली हाथ घर वापिस लौट गए थे और आत्माराम ने घर पर वापिस आते ही अपनी पत्नी से इस सारे किस्से का ज़िक्र किया था, तब उसकी पत्नी ने मंदिर में दीया जलाते हुए उसकी ओर देख कर कहा था "कभी कभी भगवान अच्छे इंसानों की बहुत कठिन परीक्षा लेता है" तब आत्माराम ने अपनी पत्नी से कहा था "इतनी अधिक उम्र में उनको हाथों का काम करते हुए देख कर मुझे बहुत दुख होता है पर क्या करूं कुछ समझ में नहीं आता" कुछ रुककर उसने अपनी पत्नी की ओर देखते हुए उससे कहा था "काका बहुत स्वाभिमानी इंसान हैं और वो कभी किसी की मदद स्वीकार नहीं करेंगे" तब उस पल उसकी पत्नी ने उसकी ओर देखते हुए उससे कहा था "अच्छे इंसानों की यही तो

निशानी होती है" फिर एक लम्बी सांस छोड़ते हुए आत्माराम ने कहा था "हां तुम ठीक कहती हो, अच्छे इंसानों की यही तो निशानी होती है" इतने में उसकी पत्नी घर के पुराने पड़े तीन चार छाते निकाल कर ले आई थी और उन्हें अपने पति के हाथों में रखते हुए उससे कहा था "इन्हें ले जाकर काका को ठीक करने के लिए दे देना, इससे उनको दो पैसे कमाने का एक मौका मिल जाएगा" उस पल आत्माराम की आंखों में अपनी पत्नी के लिए प्रशंसा के भाव उभर आए थे और उसने बहुत प्रेम से अपनी पत्नी का हाथ अपने हाथों में लेते हुए उससे कहा था "तुम्हारे पास हर समस्या का समाधान होता है" तब उसकी पत्नी ने अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा था "अब रहने भी दो, अभी रसोई घर में मेरा बहुत सा काम बाकी है" और उस छोटी सी प्रेम भरी बातचीत के बाद आत्माराम की पत्नी अपने रसोई घर के काम में व्यस्त हो गई थी।

सुबह आत्माराम जब अपने घर से चाय की रेहड़ी ले कर निकल रहा था, तब उसकी पत्नी ने उसके हाथों में एक स्टील का डिब्बा देते हुए उससे कहा था "इस डिब्बे में काका के लिए बेसन के लड्डू हैं और तुम उनको कोई भी बहाना बना कर यह लड्डू उन्हें ज़रूर खिला देना मुझे पता है कि वो वैसे इन लड्डुओं को नहीं खाएंगे" फिर कुछ भावुक होते हुए उसने आत्माराम से कहा था "वो मेरे पिता की उम्र के हैं और मुझे उन्हें इस उम्र में काम करते हुए देख कर बहुत दुख होता है" आत्माराम ने मुस्करा कर अपनी पत्नी की ओर देखा था और उससे कहा था "मैं बहुत भाग्यशाली इंसान हूं" तब उसकी पत्नी ने अपना घूंघट ठीक करते हुए उससे कहा था "अब रहने भी दो और काम पर जल्दी से जाओ नहीं तो लोग सुबह की चाय नहीं पी पाएंगे" और इतना कह कर वो घर के भीतर चली गई थी और घर के भीतर आते ही उसने मंदिर में एक दीया जला दिया था।

जब आत्माराम अपनी चाय की रेहड़ी लेकर अपने रोज़ाना के अड्डे पर पहुंचा, तो उसने देखा कि हरिराम जी उससे पहले ही वहां पर आकर अपनी जगह पर जमे हुए थे और बहुत उम्मीद से वो आते जाते हुए लोगों को देख रहे थे। आत्माराम ने सबसे पहले अपनी चाय की रेहड़ी सही स्थान पर लगाई थी और फिर वो ग्राहकों के लिए चाय बना कर देने के काम में जुट गया था पर उसका सारा ध्यान हरिराम की ओर ही लगा हुआ था और उसे हरिराम जी के चेहरे पर मायूसी के भाव देख कर कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। उसने जल्दी से एक कप स्पेशल चाय बनाई थी और हरिराम जी की ओर यह कहते हुए बढ़ा दी "काका एक कप चाय पी लो आज बहुत ठंड है" हरिराम जी आजकल एक एक

पैसा बचा रहे थे और मुफ्त में किसी से कुछ लेना उन्हें अच्छा नहीं लगता था, सो उन्होंने आत्माराम से कहा "भाई मै चाय घर से पी कर ही आया हूं, पर आपका शुक्रिया कि आपने चाय के लिए मुझ से पूछा" आत्माराम को काका से इसी जवाब की उम्मीद थी, इसलिए उसने झट से कहा "आज मेरी पत्नी का जन्मदिन है काका, क्या आप उसे अपना आशीर्वाद नहीं देंगे" और यह कहते हुए उसने बेसन के लड्डुओं का डिब्बा उनके हाथों में थमा दिया था। लड्डुओं का डिब्बा हाथों में लेते हुए हरिराम जी ने खुश होते हुए आत्माराम से कहा था "भाई पत्नी के जन्मदिन की बधाई हो और आपकी जोड़ी सदा सलामत रहे" हरिराम ने खुश होकर लगते हाथ ही आत्माराम को आशीर्वाद दे दिया था। उस पल हरिराम जी को खुश देख कर आत्माराम के चेहरे पर मुस्कान आ गई थी और उसने लगते हाथ ही अपनी रेहड़ी के नीचे पड़े हुए टूटे छाते निकाले लिए थे और उन्हें काका के हाथों में थमाते हुए कहा था "काका यह छतरियां ठीक कर दीजिए, आजकल बच्चों को बारिश में स्कूल जाते हुए बहुत तकलीफ हो रही है" टूटे छातों को देख कर हरिराम जी के चेहरे एक विशेष चमक आ गई थी और वो चाय समाप्त करने के बाद बहुत जोर शोर से छतरी बनाने के काम में जुट गए थे और उन्हें यूं ध्यान मगन होकर काम करता हुआ देख कर आत्माराम के चेहरे पर तृप्ति भरी मुस्कान आ गई थी।

उसके थोड़ी देर के बाद ही, एक नौजवान लड़का और लड़की भी हरिराम जी से छाता ठीक करवाने आ गए थे और वो लड़की बहुत ध्यान से हरिराम जी को काम करते हुए देख रही थी और उसने अपने साथ आए लड़के से धीरे से कहा था "ये बाबा कितने बूढ़े है पर फिर भी वो अपना काम कितने अच्छे तरीके से कर रहे हैं" और यह कहते समय उसकी आंखों में हरिराम जी के लिए प्रशंसा के भाव दिखाई दे रहे थे। उनका छाता ठीक करते हुए हरिराम जी क्षण भर के उनकी ओर भी देख लेते थे और उस क्षण पैसों को लेकर उनके मन में कशमकश चल रही थी और उस पल वो मन ही मन में सोच रहे थे कि वो बच्चों से छाता ठीक करने के लिए कम से कम 35 रुपए ज़रूर ले लेंगे फिर कुछ क्षण सोच विचार करने के बाद उन्होंने मन ही मन में सोचा था शायद 35 रुपए थोड़े अधिक हैं मैं इनसे 30 रुपए ही ले लूंगा और इसी सोच विचार के बीच उनके सधे हुए हाथों ने छाता ठीक कर लिया था और उन्होंने उस छाते को उन बच्चों के हाथों में सौंप दिया था। छाते को एक दम पहले की तरह दुरुस्त देख कर उस लड़की ने हरिराम जी को सम्मान देते हुए कहा था "काका आपके हाथों में तो जादू है आपने बहुत जल्दी इस टूटे

हुए छाते को बना दिया है" हरिराम जी अपनी प्रशंसा सुनकर मन ही मन बहुत खुश हुए थे पर उन्होंने अपना मन पक्का कर लिया था कि वो अपनी मेहनत के पैसों में उन्हें एक रुपया भी कम नहीं करेंगे। उन्होंने थोड़ा झिझकते हुए उनसे कहा था "इस छाते को ठीक करने के 35 रुपए हो गए है" उस लड़की ने जल्दी से अपना पर्स खोलकर सो रुपए निकाले थे और उसे हरिराम जी की ओर बढ़ा दिए थे और उनसे पैसे वापिस लेने की भी कोई चेष्टा नहीं की थी और वो छाता लेकर जब जाने लगे तब हरिराम जी ने उन्हें रोका था और उनसे कहा था "पर मेरे पास सौ रुपयों के छुट्टे नहीं हैं" तब उस लड़की ने बहुत सम्मान के साथ हरिराम जी से कहा था "कोई बात नहीं काका बाकी पैसे भी आप रख लीजिए आपने छाता भी तो कितना मजबूत बना दिया है" उस लड़की की बात सुनकर हरिराम जी ने उनको रोकने की बहुत कोशिश की थी और उनसे कहा था "नहीं नहीं मैं इतने पैसे कैसे रख सकता हूं" तब उस लड़की ने मुस्करा कर कहा था "बाबा यह पैसे हमारे या आपके नहीं है यह पैसे ईश्वर के हैं और यह आपके अच्छे काम का पुरस्कार है" और इतना कह कर वह लड़का और लड़की आगे बढ़ा गए थे पर उनकी बातें सुनकर हरिराम जी की आँखें भर आई थी और क्षण भर के लिए उन्होंने अपना चेहरा उठा कर ऊपर आसमान में देखा था और उन्हें ऐसा करते देख कर कुछ ऐसा लग रहा था जैसे उस पल वो मन ही मन में ईश्वर का शुक्रिया अदा कर रहे थे और उन्होंने नम आंखों से उन रुपयों को अपनी जेब में रख लिया था। इस दृश्य को आत्माराम भी बहुत ध्यान से देख रहा था और यह सब देख कर उसे बहुत खुशी हुई थी और वो मन ही मन में सोच रहा था कि इस दुनिया में अच्छे इंसानों की कोई कमी नहीं है और हर जगह पर ईश्वर के संदेशवाहक मौजूद होते हैं जो वक्त आने पर अच्छे लोगों की मदद करते हैं।

उस दिन हरिराम जी अपने काम में इतने व्यस्त थे कि उन्हें क्षण भर की फुर्सत भी नहीं मिली थी और उनके हाथों को तेज़ी से काम करता हुआ देख कर इस बात का पता चलता था कि आज वो बहुत खुश हैं। उसी पल एक औरत और एक छोटी बच्ची उनके पास आए थे और उस छोटी बच्ची ने अपने हाथों में पकड़ा फूलों का गुलदस्ता हरिराम जी के हाथों में थमा दिया था तब उस औरत ने हरिराम जी से कहा था "काका जब मैं छोटी थी तब मैं अपने पिता जी के साथ आपके पास छाता ठीक करवाने के लिए आती थी और आज मैं अपनी बेटी के साथ छाता ठीक करवाने के लिए आपके पास आई हूं और आपको यूं काम करता हुआ देख कर मुझे बहुत खुशी होती है और मै बहुत वर्षों से

आपको ऐसे ही काम करते हुए देख रही हूं" उस औरत के मीठे बोल सुनकर हरिराम की आँखें नम हो गई थी और उन्होंने उस छोटी बच्ची को अपना आशीर्वाद दिया था और उस औरत की ओर देख कर कहा था "बेटी मैं नहीं काम करता ईश्वर मुझ से काम करवाता है और मैं करता रहता हूं, ईश्वर की बड़ी कृपा है" यह कहते हुए हरिराम जी के चेहरे पर बहुत मधुर मुस्कान आ गई थी और उस बच्ची के हाथों से फूल लेते समय उन्हें कुछ ऐसा अनुभव हुआ था जैसे वह फूल न होकर उनके लिए कोई बहुत बड़ा पुरस्कार था और यह वास्तव में उनके लिए किसी पुरस्कार से कम नहीं था। उन खूबसूरत लम्हों को देख कर कुछ ऐसा लगता था जैसे ईश्वर उनसे बहुत प्रसन्न था और वो अपने दोनों हाथों से उन्हें दे रहा था। शाम को अंधेरा होने से कुछ समय पहले ही, हरिराम जी अपना बक्सा बांध कर खुशी खुशी अपनी साइकिल पर सवार होकर घर की ओर चल दिए थे और वो अपनी साइकिल को बहुत तेज़ी से चला रहे थे और उन्हें यूं साइकिल चलाता हुआ देख कर कोई भी यह नहीं कह सकता था कि हरिराम जी बूढ़े इंसान हैं। हरिराम जी को खुशी खुशी घर जाता हुआ देख कर, आज आत्माराम भी बहुत खुशी का अनुभव हो रहा था वो जानता था कि आज काका को एक क्षण के लिए भी काम से फुर्सत नहीं मिली थी।

बहुत जल्दी ही हरिराम जी अपने घर पहुंच गए थे और उन्होंने दरवाज़े पर दस्तक दी थी और उनकी पत्नी ने पहली दस्तक पर ही दरवाज़ा खोल दिया था और अपने पति की आंखों में चमक देख कर वो समझ गई थी कि आज इन्हें काम से थोड़ी भी फुर्सत नहीं मिली होगी।

घर के भीतर आते ही हरिराम जी ने लड्डुओं का डिब्बा और फूल का गुलदस्ता अपनी पत्नी के हाथों में थमा दिए था और उससे कहा था "आज आत्माराम की पत्नी का जन्मदिन था और यह बेसन के लड्डू मुझे उसी ने दिए हैं" अपने पति को यूं मुस्कुराता हुआ देख कर उसने पूछ ही लिया था "और यह फूल" उस पल हरिराम जी के चेहरे पर बहुत प्यारी मुस्कान आ गई थी और उन्होंने अपनी पत्नी से कहा था "मेरे लिए यह फूल एक छोटी बच्ची लेकर आई थी" और यह कहते हुए हरिराम ने सारे दिन का किस्सा कह सुनाया था और उन्होंने 870/= रुपयों की अपनी दिन भर की कमाई भी अपनी पत्नी के हाथों में रख दी थी और इतने सारे पैसे एक साथ देख कर वो बहुत हैरान हुई थी और उसने उसी पल मंदिर में दीया जलाया था और हाथ जोड़ कर ईश्वर से प्रार्थना की थी। कुछ समय के बाद जब दोनों सुख चैन से भोजन कर रहे थे तब हरिराम जी की पत्नी ने

अपने पति की ओर देखते हुए कहा था "मैं कहती थी न कि कल बारिश जरूर होगी और ईश्वर ने हमारे दिल की बात सुन ली" उस पल हरिराम की आंखों में आंसू थे और उन्होंने अपनी पत्नी की ओर देखते हुए उससे कहा था "सच बताऊं, तो मैं बिल्कुल हिम्मत हार चुका था पिछले दस दिनों से मैंने एक पाई भी नहीं कमाई थी और सच कहूं तो उस पल मैं टूटने के करीब पहुंच चुका था और मुझे पता था कि घर में अनाज के डिब्बे खाली हो चुके हैं" आंखों को नम कर देने वाले उन लम्हों में हरिराम की पत्नी अपनी जगह से उठ कर अपने पति के करीब आ गई थी और अपने पति की आंखों में आंसू देख कर उसने बहुत प्रेम से अपने पति के हाथों को अपने हाथों में थाम लिया था और उस पल अत्यधिक भावुक हो जाने की वजह से उसकी आँखें भी नम हो गई थी, पर बहुत जल्दी ही उसने खुद को संभाल लिया था और अपने पति की ओर मुस्करा कर देखते हुए उसने कहा था "देखना हमारी ज़िंदगी की गाड़ी ईश्वर के आशीर्वाद से सदा ऐसे ही चलती रहेगी" अपनी पत्नी की चेहरे पर मधुर मुस्कान देख कर हरिराम के चेहरे पर भी सुकून भरी मुस्कान आ गई थी और उसके आंसू गालों तक पहुंच कर खुदबखुद वही पर थम गए थे और यह उनके दिन बदलने के ईश्वरीय संकेत थे।

अगले कुछ महीनों तक हरिराम को अपने काम से क्षण भर की भी फुर्सत नहीं मिली थी और अब उनके घर पर अगले 6 महीनों के लिए अनाज का भंडार पड़ा हुआ था और भविष्य की सोच कर अब दोनों निश्चिंत हो गए थे।

एक दिन घर लौटते समय हरिराम ने बाज़ार से दो साड़ियां खरीदी थी और घर पर आते ही उसने वह साड़ी अपनी पत्नी के हाथों में रख दी थी। नई साड़ी को देख कर हरिराम की पत्नी ने अपने पति से थोड़ा गुस्से से कहा था "तुमने अपना चश्मा क्यों नहीं ठीक करवाया, तुम रात को साइकिल पर घर लौटते हो कहीं कुछ हो गया तो" तब उस पल हरिराम ने मुस्कराते हुए अपनी पत्नी से कहा था "मुझे इस चश्में से भी सब कुछ दिखाई देता है और इससे अधिक देख कर मैं क्या करूंगा" और यह कह कर वो अपनी आदत के अनुसार मुस्कराने लगे थे। उस पल दूसरी साड़ी को देखते हुए हरिराम जी की पत्नी ने अपने पति से पूछा था "और यह साड़ी तुम ज़रूर आत्माराम की पत्नी के लिए लेकर आए होगे" और यह कहते समय उसके चेहरे पर भी बहुत मधुर मुस्कान आ गई थी जो इस बात को दर्शाती थी कि वो अपने पति को बहुत अच्छी तरह से जानती थी। हरिराम ने मुस्कराते हुए अपनी पत्नी से कहा था "हां, उसके लिए ही खरीदी है, आखिर

वो हमारी बेटी है और उस समय हमारे पास उसके जन्मदिन पर उसको देने के लिए कुछ भी नहीं था, पर अब तो हम दोनो हाथों से उसे कुछ भी दे सकते है” और यह कह कर हरिराम जी मुस्कराने लगे थे।

जब हरिराम और उसकी पत्नी आत्माराम के घर पहुंचे, तब उन्हें अपने घर पर आया देख कर आत्माराम और उसकी पत्नी बहुत खुश हुए थे और जब हरिराम की पत्नी ने बहुत प्रेम से आत्माराम की पत्नी के हाथों में साड़ी थमाई थी, तब उस पल आत्माराम और उसकी पत्नी दोनो बहुत भावुक हो गए थे और वो दोनो एक दूसरे को देख कर मुस्करा रहे थे और उस पल वो दोनो एक ही बात सोच रहे थे कि उन्होंने जितना पैसा कमाने का अवसर हरिराम जी को दिया था, उससे दो गुना अधिक पैसों की साड़ी उन्होंने उन्हें तोहफे में दे दी थी और आत्माराम और उसकी पत्नी यही बात सोच कर मन ही मन में मुस्करा रहे थे और उन्हें ईश्वर के इस नियम पर यकीन हो गया था कि “एक हाथ दे और एक हाथ ले” और इस सत्य को अब किसी प्रमाण की कोई आवश्यकता नहीं थी और वो इस सत्य को अपनी आंखों से देख रहे थे।

समाप्त

कहानी 9: जब तकदीर दरवाज़े पर दस्तक देती है

देहरादून और मसूरी के बीच बनी मुख्य सड़क पर 40 वर्षीय दयाशंकर अपनी पत्नी राधा के साथ तेज़ तेज़ कदमों से चलते हुए अपने घर की ओर जा रहे थे और मौसम के बिगड़े हुए मिजाज़ को देख कर उन्हें कुछ ऐसा लग रहा था कि कुछ ही समय में बहुत तेज़ तूफानी बारिश होने वाली थी और पहाड़ी क्षेत्र में बारिश के आसार को देखते हुए उस सड़क पर ट्रैफिक बहुत धीमीं रफ्तार से चल रहा था। मौसम के भयानक रूप को देखते हुए दयाशंकर और राधा जल्दी से अपने घर पहुंचना चाहते थे। दयाशंकर और राधा पिछले 20 वर्षों से अपने घर के निकट ही बने एक ढाबे पर खाना बनाने का काम करते थे और उनकी मेहनत मुश्क्त के बदले में ढाबे का मालिक उन दोनों को 16000/= रुपए महीने की तनख्वाह दे दिया करता था जो उनकी जरूरत की मुताबिक बहुत कम थे। दयाशंकर का देहरादून मसूरी रोड पर पुश्तैनी घर था और यह घर उनके पिता जी ने बनवाया था और वो फौज में सूबेदार के पद पर रिटायर्ड हुए थे पर अब दयाशंकर के

माता पिता का देहांत हुए भी बहुत समय बीत चुका था। दयाशंकर और राधा का विवाह भी इसी घर में हुआ था और अब इस बात को भी लगभग 18 वर्ष बीत चुके थे और अब वो पहले की तरह जवान भी नहीं रहे थे कि किसी और शहर में जाकर कोई नया काम ढूंढते और यह भी सच था कि इतने वर्षों से एक ही जगह पर काम करते रहने की वजह से अब दोनों ने ही थोड़े में संतुष्ट रहना भी सीख लिया था पर फिर भी वो दोनो कभी कभी अपने भविष्य के बारे में सोच कर थोड़े चिंतित अवश्य हो जाते थे क्योंकि बुढ़ापे में उनकी देखभाल करने के लिए उनकी कोई औलाद नहीं थी। पर दयाशंकर और राधा की ईश्वर में बहुत आस्था था और वो दोनों नियम के साथ अपने घर में बने छोटे से मंदिर में दीया ज़रूर जलाते थे और ईश्वर का धन्यवाद करते थे। आज भी दोनों बहुत तेज़ कदमों से चलते हुए घर वापिस लौट रहे थे और ढाबे के मालिक ने मौसम के बिगड़े हुए मिजाज़ को देख कर उन्हें ढाबे से जल्दी छुट्टी दे दी थी पर फिर भी वो दोनों ढाबे का अपना सारा काम समाप्त करने के बाद वापिस घर लौट रहे थे और इसी वजह से वो दोनो थोड़े थके हुए से दिखाई दे रहे थे और घर में आते ही उन्होंने अपने लिए सादा सा भोजन बनाया था और खाने से पहले दोनों ने हाथ जोड़ कर ईश्वर से प्रार्थना की थी और फिर बहुत शांति के साथ बैठ कर वो दोनों भोजन करने लगे थे। भोजन करते हुए राधा ने चिंतित स्वर में दयाशंकर से कहा था "महीना आखिर आने को है और सारे पैसे खत्म हो चुके हैं और घर में अनाज के डिब्बे भी लगभग समाप्त होने को हैं" तब दयाशंकर ने अपनी पत्नी की ओर मुस्कराते हुए देखा था और उससे कहा था "देखो राधा हमें खाने के लिए मुट्ठी भर अनाज चाहिए और सोने के लिए एक बिस्तर और इससे अधिक की हमें क्या कामना हो सकती है और तुम इस बात पर विश्वास रखो कि ईश्वर सब कुछ देख रहा है और वो हमारी सब ज़रूरतों को पूरा करेगा तुम इस बात बिल्कुल भी चिंता मत किया करो, आज का देखो और कल का ईश्वर पर छोड़ दो" दयाशंकर जी जो भी बात कह रहे थे उनका उस बात में पूरा यकीन था और इसीलिए वो भविष्य को लेकर पूरी तरह से निश्चिंत थे। पर राधा घर की माली हालत को देख कर कभी कभी थोड़ी चिंतित हो उठती थी और उसका ऐसा सोचना स्वाभाविक भी था। भोजन करने के बाद दोनों सोने की तैयारी करने लगे थे कि तभी उन्होंने देखा कि बाहर जोरों से बारिश होने लगी थी और बहुत तेज़ हवाएं चलने लगी थी जिससे वहां पर ठंड बढ़ गई थी और तेज़ बारिश को देखते हुए उन्होंने अपने घर का दरवाज़ा और खिड़की अच्छी तरह से बंद कर दिए

थे। अभी कुछ ही समय बीता था कि उनके दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी थी और चेहरे पर आश्चर्य के भाव लिए हुए दयाशंकर ने राधा से कहा था "इतनी तूफानी बारिश में बाहर कौन आया होगा" फिर कुछ सोच कर दयाशंकर ने कहा था "क्या पता कोई मुसीबत का मारा न हो" और दोनों का इस बात में बहुत गहरा विश्वास था कि घर आए हुए मेहमान का दिल से स्वागत करना चाहिए और इसी सोच के तहत उन्होंने जैसे ही अपने घर का दरवाज़ा खोला और उन्होंने देखा कि सामने सफेद वर्दी पहने और हाथों में छतरी उठाए एक ड्राइवर खड़ा हुआ था और उसने विनती भरे स्वर में दयाशंकर से कहा था "भाई साहब हमारी कार बीच रास्ते में खराब हो गई है और मेरे साहब और मेम साहब कार में बैठे हुए है, अगर आप थोड़ी देर के लिए उनके रुकने का प्रबंध अपने घर में कर दें तो आपकी बहुत कृपा होगी" ड्राइवर के चेहरे पर विनती भरे भाव थे और उस समय बाहर तूफानी बारिश हो रही थी और मौसम के बिगड़े हुए मिजाज़ को देख कर दयाशंकर ने जल्दी से उस ड्राइवर से कहा था "अरे भाई, आप निश्चिंत हो कर उन्हें यहां ले आइए मेहमान हमारे लिए ईश्वर के समान है और हमसे जो बन पड़ेगा हम उनकी मेहमान नवाज़ी ज़रूर करेंगे" और इतना सुनते ही वह ड्राइवर तेज़ी से वापिस सड़क की ओर जाने लगा था और दयाशंकर और राधा ने देखा कि एक बहुत शानदार कार उनके घर से थोड़ी ही दूरी पर खड़ी हुई थी और ड्राइवर उन दोनों को बारिश से बचाता हुआ घर की ओर लेकर आ रहा था और निकट आने पर राधा और दयाशंकर ने देखा कि बहुत शानदार कपड़े पहने हुए एक आदमी और औरत बहुत तेजी से उनके दरवाज़े की ओर बढ़ रहे थे और दयाशंकर और राधा ने हाथ जोड़ कर उनका अपने छोटे से घर में स्वागत किया था। घर के भीतर आते ही उन्होंने सबसे पहले दयाशंकर और राधा का धन्यवाद अदा किया था और फिर अपना परिचय दिया था "आपका बहुत बहुत शुक्रिया कि आपने इस मुश्किल समय में हमारी मदद की है" फिर बातों के सिलसिलों में उन्होंने बताया "मेरा नाम राजेश्वर है और ये मेरी पत्नी ऋतु है और हम देहरादून से मसूरी जा रहे थे कि बीच सड़क पर हमारी कार खराब हो गई और उस पर हम पर मौसम का कहर भी टूट पड़ा जिस वजह से हमें आपके घर में शरण लेनी पड़ी" तब दयाशंकर ने बहुत नम्रता से उन्हें कहा था "इसमें भी कोई ईश्वर की मर्ज़ी रही होगी" और यह कह कर दयाशंकर बहुत सम्मान के साथ उन्हें भीतर ले आया था और दयाशंकर ने उन दोनों को कुर्सी पर बिठा दिया था। दयाशंकर और राधा को राजेश्वर और ऋतु बहुत विनम्र स्वभाव के इंसान लगे थे और

उनके हसमुख चेहरे को देख कर उन्हें इस बात का अहसास हो गया था कि शायद इन्होंने अपने सारे जीवन में कभी किसी को गुस्सा नहीं किया होगा और उनसे बातचीत करते हुए राधा और दयाशंकर मन ही मन में सोच रहे थे कि शायद इन्होंने भोजन भी नहीं किया होगा और मौसम के मिजाज को देख कर उन्हें ऐसा लग रहा था कि शायद 3 से 4 घंटे तक तेज़ बारिश जारी रहेगी और यह सब सोच कर राधा और दयाशंकर अपने मेहमानों को ठीक से बिठा कर रसोई घर में आ गए थे और दयाशंकर ने बहुत धीरे से राधा से कहा था "हमें इनके भोजन की व्यवस्था करनी होगी और अगर ये पूछें तो तुम इनसे ये ही कह देना कि हमने अभी भोजन नहीं किया है" राधा ने अपने पति की बात सुनकर हामी में अपना सिर हिला दिया था पर साथ ही उसने दयाशंकर को यह कह कर उसे असमझ में भी डाल दिया था "इनके कपड़े तो देखो कितने आलिशान और महंगे दिखाई दे रहे हैं और इन्हें तो शायद बहुत अच्छे पकवान खाने की आदत होगी क्या इन्हें हमारा सादा सा भोजन पसंद आएगा" राधा ने यह बात बहुत सोच समझ कर कही थी। दयाशंकर ने राधा से कहा था "तुम चूल्हा जलाओ तब तक मैं पास के घर से कुछ खाने पीने की चीजें ले कर आता हूं जिससे हम कुछ अच्छा भोजन बना सकें पर तुम इतना ध्यान रखना कि इनकी खातिरदारी में कोई कमी नहीं रहनी चाहिए क्या पता यह तूफान रात भर चलता रहे और इनकी कार भी ठीक न हो फिर हमें इनके सोने की व्यवस्था भी तो करनी होगी, अगर ऐसा हुआ तो हम इन्हें अपने बिस्तर पर सोने देंगे और खुद नीचे बिस्तर लगा कर सो जाएंगे" राधा ने दयाशंकर से जल्दी से कहा था "ठीक है तुम पड़ोस से कुछ खाने पीने का सामान ले आओ, तब तक मैं इन्हें चाय बना कर पिलाती हूं" यह कह कर राधा ने मेहमानों के लिए चाय का पानी चूल्हे पर चढ़ा दिया था और दयाशंकर तूफान की परवाह न करते हुए एक थैला हाथ में पकड़े घर से बाहर निकल गया था और उस पल ऋतु ने राधा से पूछा भी था "इतनी बारिश में आपके पति कहां जा रहे हैं" तब राधा ने उनकी बात को टाल मटोल करते हुए उनसे कहा था "वो यही पास में गए हैं और वो जल्दी ही वापिस आ जाएंगे आप आराम से बैठिए मैं आपके लिए चाय बना कर लाती हूं" इतना कह कर राधा जल्दी से रसोई घर में चली गई थी और उस पल वहां पर बैठे राजेश्वर और ऋतु की नज़रें एक दूसरे से मिली थी और ऋतु ने बहुत धीरे से अपने पति से कहा था "ये कितने अच्छे लोग हैं इनसे बात करते हुए हमें एक पल के लिए भी ऐसा नहीं लगा कि हम इनसे पहली बार मिल रहे हैं" ऋतु की बात सुनकर राजेश्वर ने भी हामी में अपना सिर

हिला दिया था और तब कुछ सोच कर ऋतु ने धीरे से राजेश्वर से कहा था "लगता है कि ये हमारे खाने पीने का इंतज़ाम करने में लगे हुए हैं" तब राजेश्वर ने धीरे से कहा था "हां मुझे भी कुछ ऐसा ही लगता है" तब तक राधा चाय बना कर ले आई थी और उसने बहुत सम्मान के साथ चाय के कप उन दोनों के हाथों में थमा दिए थे। तब ऋतु ने बातचीत करने के लिए राधा से पूछा था "आपके पति क्या काम करते हैं" तब राधा ने थोड़ा सकुचाते हुए उनसे कहा था "जी हम दोनों पास के एक ढाबे पर खाना बनाने का काम करते हैं" ऋतु ने महसूस कर लिया था कि राधा अपने काम के बारे में बताते हुए थोड़ी हिचकिचा रही थी और ऋतु को ऐसा लगा कि छोटा काम होने की वजह से वो हीनभावना का शिकार हो गई थी और यह सोच कर ऋतु ने जल्दी से कहा था "मैंने भी खाना बनाने का कोर्स किया हुआ है और खाना बना कर खिलाना तो वास्तव में बहुत ही शानदार अनुभव होता है" राधा ऋतु की बात सुनकर मुस्कराने लगी थी। उस समय ऋतु और राजेश्वर घर की एक एक वस्तु को बहुत गौर से देख रहे थे और वो दयाशंकर और राधा के छोटे से घर के रखरखाव से बहुत प्रभावित दिखाई दे रहे थे और उनकी निगाह कमरे के कोने में बने मंदिर पर जा कर ठहर गई थी क्योंकि उसमें अभी भी एक दीया जल रहा था, यह देख कर राजेश्वर और ऋतु के चेहरे पर मुस्कान आ गई थी और उस पल उन दोनों को इस बात का यकीन हो गया था कि दयाशंकर और राधा की ईश्वर में बहुत आस्था है।

इतनी देर में दयाशंकर सामान से भरा थैला लेकर घर वापिस लौट आया था और घर में आते ही उसने मुस्करा कर कहा था "बाहर अभी भी बहुत तेज़ बारिश हो रही है" और इतना कह कर वो जल्दी से सामान का भरा थैला लेकर रसोई घर में चला गया था और कुछ समय के बाद ही वो रसोई घर से वापिस लौटा था और उसने बहुत सम्मान के साथ राजेश्वर से पूछा था "क्या आप एक कप चाय और पीना पसंद करेंगे" और दयाशंकर ने यह बात माहौल में ठंड को देखते हुए कही थी और इससे उनको खाना बनाने का समय भी मिल जाना था। राजेश्वर और ऋतु को थोड़ी ठंड का अहसास हो रहा था और इस लिए उन दोनों ने चाय के लिए हां कर दी थी और उसके साथ ही शिष्टाचारवश राजेश्वर ने दयाशंकर से कहा था "आपको हमारी वजह से बहुत तकलीफ उठानी पड़ रही है" तब दयाशंकर ने मुस्कराते हुए राजेश्वर से कहा था "अरे ये आप क्या कह रहे हैं भाई साहब आपके आने से तो हमारा समय भी अच्छा बीत रहा है वरना इस बियांबान में

आता कौन है, हम दोनो तो कई बार बातचीत करने के लिए भी तरस जाते हैं और वैसे भी हमारा मानना है कि मेहमान तो ईश्वर का रूप होते हैं और कृपया आप कोई भी संकोच मत करिए और इसे अपना ही घर समझिए" दयाशंकर बाहर और भीतर से एक जैसा ही था और इस बात को राजेश्वर और ऋतु दोनों देख रहे थे और उन्हें दयाशंकर का बातचीत करने का अंदाज बहुत अच्छा लगा था। राजेश्वर और ऋतु के हाथों में चाय देने के बाद दयाशंकर और राधा रसोई घर में चले गए थे और उस समय उनके हाथ बिजली की गति से चल रहे थे और लगभग एक घंटे में ही उन्होंने तीन चार स्वादिष्ट व्यंजन बना लिए थे जिसकी महक सारे घर में फैल गई थी और व्यंजनों की महक से राजेश्वर और ऋतु की भूख भी जोर पकड़ चुकी थी और वैसे भी अब खाना खाने का समय हो चुका था। इस समय रात के 10 बजने को थे और बाहर अभी भी बहुत तेज़ बारिश हो रही थीं और सड़क पर ट्रैफिक अब लगभग न के बराबर ही था और शायद इसकी वजह मौसम का बिगड़ा हुआ रूप था जिससे सब वाहन चलाने वाले ड्राइवर सुरक्षित स्थान देख कर वहीं ठहर गए थे और जिन्होंने बहुत जरूरी कहीं पहुंचना था सिर्फ उनकी ही गाड़ियां सड़क पर धीमें रफ्तार से चलती हुई दिखाई दे रही थी।

दयाशंकर और राधा भोजन को बहुत अच्छी तरह से ट्रे में सजाने अपने हाथों में ट्रे पकड़े हुए राजेश्वर और ऋतु के पास पहुंचे थे, तब दयाशंकर ने बहुत प्रेम से राजेश्वर और ऋतु की ओर देख कर बहुत विनम्रता से कहा था "भाई साहब हम से जो अच्छा से अच्छा हो सकता था वो हमने बनाया है और कृपया आप यह भोजन ग्रहण करिए" राजेश्वर और ऋतु ने दयाशंकर की ओर देख कर कहा था "खाने की बहुत अच्छी महक आ रही है और सच बताऊं तो हमें भूख भी बहुत जोरों की लगी हुई है" और इतना कह कर उन्होंने दयाशंकर के हाथों से ट्रे ले ली थी और वो दोनों सारी शर्म छोड़ कर भोजन पर टूट पड़े थे और यह देख कर दयाशंकर और राधा के चेहरे पर मुस्कान आ गई थी। राजेश्वर और ऋतु ने भोजन चखते ही दयाशंकर से कहा था "भाई साहब हमने इतना लज़ीज़ खाना कभी भी नहीं खाया है आपके हाथों में जादू है" तब दयाशंकर ने खुश होते हुए कहा था "हमारे लिए यह बहुत खुशी की बात है कि आपको हमारा बनाया हुआ भोजन पसंद आया है" तब ऋतु ने राधा की ओर देखते हुए कहा था "मैंने इतना स्वादिष्ट भोजन कभी नहीं खाया आपने इतना अच्छा खाना बनाना किस से सिखा है" उस पल राधा ने मुस्कराते हुए कहा था "जी मेरी सास और मेरी मां भी इसी तरीके से भोजन बनाती

थी और हमने खाना बनाना उन्हीं से सिखा था और हमें सिर्फ भारतीय खाना बनाना ही आता हैं और बहुत सालों से ऐसा भोजन बनाते रहने की वजह से, शायद हमारे हाथों से अब खाना अच्छा बनना शुरू हो गया है" और राधा ने यह बात इतनी सादगी से कही थी कि राजेश्वर और ऋतु मुस्कराए बिना नहीं रह सके थे। राजेश्वर और ऋतु उनकी सादगी और मेहमान नवाज़ी को देख कर बहुत हैरान थे और उन्हें इस बात का अंदाजा था कि उन्होंने जो भी भोजन की व्यवस्था की थी वो भी उन्होंने अपने पड़ोस से जुटाया था और उनकी हैसियत को देखते हुए यह बड़े दिल वाली बात थी और इस आवभगत से दयाशंकर और राधा ने राजेश्वर और ऋतु का दिल जीत लिया था।

इस बीच दयाशंकर छतरी लेकर कार में बैठे हुए ड्राइवर के पास पहुंचा था और वो बहुत आदर के साथ उन्हें अपने घर में ले आया था और ड्राइवर वहीं जमीन पर चौंकड़ी मार कर बैठ गया था और दयाशंकर ने उन्हें बहुत प्रेम के साथ भोजन परोस दिया था और राजेश्वर और ऋतु ने देखा कि भोजन चखते ही ड्राइवर के चेहरे के भाव बदल गए थे और उस ड्राइवर ने भी दयाशंकर से निसंकोच कह दिया था "साहब जी खाना बहुत लाजवाब बना है और मैंने अपने सारे जीवन में इतना स्वादिष्ट भोजन कभी नहीं खाया" और ड्राइवर के मुंह से यह सुनकर राजेश्वर और ऋतु के चेहरे पर मुस्कान आ गई थी और उन दोनों ने भी एक साथ कहा था "ये ही बात हमने भी भाई साहब से कही थी" और राजेश्वर और ऋतु को एक ही सुर में बोलते हुए देख कर दयाशंकर और राधा के चेहरे पर मुस्कान आ गई थी और उन्होंने उसी पल मंदिर में हाथ जोड़ कर प्रणाम किया था शायद उस पल दोनो मन ही मन में ईश्वर का शुक्रिया अदा कर रहे थे और यह बात सच थी कि दोनो को मेहमान नवाज़ी का शौंक था पर यह भी सच था कि उस समय दयाशंकर और राधा अपने मेहमानों के शानदार कपड़ों को देख कर उन्हें अपने हाथों से बनाया भोजन परोसने में थोड़ा संकोच कर रहे थे। दयाशंकर और राधा को मंदिर में प्रणाम करते देख कर राजेश्वर और ऋतु सब समझ गए थे और उस पल वो दोनों भी अपनी कुर्सी से उठे थे और दयाशंकर और राधा के ठीक पीछे खड़े होकर ईश्वर का धन्यवाद कर रहे थे कि इस मुश्किल घड़ी में उन्हें सिर ढकने की जगह के साथ साथ लज़ीज़ भोजन भी खाने को मिला था और उस मुश्किल समय में उनके लिए यह बहुत बड़ी बात थी। राजेश्वर और ऋतु की ईश्वर में बड़ी आस्था थी और वो दोनों कार खराब होने के इस विचित्र संजोग पर सोचने के लिए मजबूर हो गए थे। उधर ड्राइवर ने भोजन समाप्त किया था और वो खुद

ही अपने बर्तन लेकर रसोई घर में जाने लगा था, पर उस पल राधा ने शिष्टाचारवश उनके हाथों में से प्लेटें लेने की कोशिश की थी पर ड्राइवर ने अपने झूठे बर्तन उनके हाथों में न देकर रसोई घर में रखना अधिक उचित समझा था और रसोई घर में बर्तन रखते समय ड्राइवर ने एक सरसरी नज़र सारे रसोई घर में डाली थी और उसे यह समझते देर नहीं लगी थी कि इन लोगों की माली हालत कोई बहुत अच्छी नहीं है पर ड्राइवर इस बात से आश्चर्यचकित भी था कि फिर भी उन्होंने उनकी मेहमान नवाज़ी में कोई कसर नहीं छोड़ी थी और इस बात को सोच कर ड्राइवर के मन में दयाशंकर और राधा के लिए सम्मान बहुत बढ़ गया था।

भोजन करने के बाद इधर उधर की थोड़ी बातचीत हुई थी और इतने में बाहर तूफान भी थम गया था और ड्राइवर ने घर में आकर सूचना दी थी "साहब मसूरी से कार ठीक करने वाला मैकेनिक कार लेकर आ गया है" ड्राइवर के मुंह से यह सुनकर और राजेश्वर और ऋतु ने दयाशंकर और राधा से जाने की इजाज़त ली थी और जाने से पहले राजेश्वर ने बहुत प्रेम से दयाशंकर को गले से लगा लिया था और उससे कहा था "मैं इस दिन को सारी जिंदगी याद रखूंगा" और उस पल राधा और दयाशंकर ने देखा था कि ऋतु और राजेश्वर की निगाहों में उनके लिए बहुत सम्मान दिखाई दे रहा था। राजेश्वर और ऋतु ड्राइवर को साथ लेकर नई कार से मसूरी रवाना हो गए थे और कुछ समय के बाद ही मैकेनिक ने बिगड़ी हुई कार की भी मरम्मत कर ली थी और वो उस कार को लेकर मसूरी की ओर रवाना हो गया था।

दयाशंकर और राधा ने चैन की सांस ली थी और उस पल दोनो के चेहरे से संतोष झलक रहा था और वो दोनों इस बात से बहुत खुश थे कि उनके दरवाज़े पर आए मेहमान उनकी आवभगत से खुश हो कर गए थे।

जब राजेश्वर और ऋतु कार से मसूरी रवाना हुए तब उनके ड्राइवर ने बातों ही बातों में उन्हें बताया "साहब वो दोनों बहुत भले लोग थे और साहब जब मैं उनके रसोई घर में गया तब मुझे उनके रसोई घर को देख कर कुछ ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उनकी माली हालत कुछ ठीक नहीं है और उन्होंने जो भी हमारी खातिरदारी की थी वो उनके समर्थ से बाहर की बात थी" ड्राइवर की बात सुनकर राजेश्वर और ऋतु दोनों के चेहरे पर मुस्कान आ गई थी और सच तो यह था कि उन्हें ड्राइवर की बातें सुनकर बहुत अच्छा लग रहा था

और उन्हें थोड़ा आश्चर्य भी हुआ था कि उनके ड्राइवर की निगाहें दृश्य को देख कर बहुत कुछ भांप सकती थी और निश्चित तौर पर उस पल दोनों को अपने ड्राइवर की सूक्ष्म दृष्टि पर बहुत फक्र महसूस हो रहा था।

अगले दिन सुबह निश्चित समय पर तैयार होकर दयाशंकर और राधा अपने काम पर रवाना हो गए थे और हर रोज़ की तरह ही वो अपने काम में व्यस्त हो गए थे। अभी सुबह के लगभग 11 ही बजे थे कि उन्होंने देखा कि उनके ढाबे के बाहर एक कार आकर रुकी थी और उसमें से वही ड्राइवर बाहर निकला था जिसने बारिश में उनके घर पर थोड़ी देर के लिए पनाह ली थी। दयाशंकर और राधा उसे बहुत आश्चर्य से देख रहे थे और वो सीधा चल कर उनके पास ही आया था और उसने आते ही सबसे पहले उन्हें प्रणाम किया था और फिर उनसे मुस्कराते हुए कहा था "साहब आप दोनों को मेरा साहब मिलना चाहता है और आपको दोनों को लेने के लिए उन्होंने गाड़ी भेजी है" ड्राइवर की बात सुनकर दोनों को बहुत आश्चर्य हुआ था, पर उस पल वो दोनो यह भी सोच रहे थे कि राजेश्वर को उनसे क्या काम हो सकता है और इसी बात को सोचते सोचते उन्होंने ढाबे के मालिक से कुछ समय की छुट्टी ली थी और ड्राइवर उन दोनों को साथ लेकर मसूरी रवाना हो गया था। ड्राइवर ने जब उन दोनों को सोच में डूबा देखा तब हंसते हुए उनसे कहा था "घबराइए मत, मेरा साहब और मेम साहब बहुत अच्छे लोग हैं और उनको ज़रूर आपसे कोई विशेष काम होगा जिसके लिए उन्होंने आप दोनो को अपने पास बुलाया है" ड्राइवर की बात सुन कर दोनों को थोड़ी तसल्ली हुई थी पर फिर भी वो दोनों कार में थोड़े सकुचाये हुए से बैठे थे और कार बहुत तेज़ी से पहाड़ी रास्तों पर अपनी मंज़िल की ओर बढ़ी जा रही थी और कुछ समय में ही कार मसूरी के एक बहुत शानदार होटल के सामने रुकी थी और उस होटल की पांच मंजिला बहुत सी इमारतें थी। ड्राइवर ने दयाशंकर और राधा को बहुत सम्मान से कहा था "आप मेरे साथ आइए मैं आपको साहब के आफिस तक ले कर चलता हूं" और इतना कह कर वो बहुत बेधड़क उस शानदार होटल के भीतर प्रवेश कर गया था पर दयाशंकर और राधा होटल का भव्य रूप देख कर थोड़े सकुचाये हुए से ड्राइवर के पीछे चल रहे थे और उन्होंने देखा कि ड्राइवर एक बहुत शानदार आफिस के भीतर गया था और फिर कुछ समय के बाद ही उसने आफिस का दरवाज़ा खोला था और दयाशंकर और राधा को भीतर आने के लिए कहा था। जब दयाशंकर और राधा ने उस शानदार आफिस के भीतर प्रवेश किया तो वो बहुत हैरान हुए थे क्योंकि आफिस में

राजेश्वर बैठा हुआ था और ड्राइवर ने राधा और दयाशंकर को बताया “हमारे साहब 90 कमरों के इस होटल के मालिक हैं” और जब दयाशंकर और राधा ने ड्राइवर के मुंह से यह सुना तो वो दोनों बहुत आश्चर्य से राजेश्वर की ओर देख रहे थे और राजेश्वर उन्हें आफिस में आया हुआ देख कर अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ था और उन्हें पूरे सम्मान के साथ सामने पड़ी कुर्सियों पर बिठा दिया था। उस समय दयाशंकर और राधा मन ही मन में यह सोच कर हैरान हो रहे थे कि उनके छोटे से घर में इतने बड़े होटल के मालिक ने खाना खाया था और यह सोच कर ही उनको बहुत घबराहट सी हो गई थी पर राजेश्वर ने उनकी मानसिक स्थिति को बहुत अच्छी तरह से समझ लिया था और उनसे बहुत प्रेम से कहा था “आपके घर का भोजन बहुत स्वादिष्ट था और इतना अच्छा भोजन मैंने अपनी सारी जिंदगी में कभी भी नहीं खाया” और उस पल अपने साहब को दयाशंकर की तारीफ करते देख कर ड्राइवर ने भी दो शब्द बीच में और जोड़ दिए थे “यह बात सच ऐसा भोजन तो मैंने भी अपनी सारी जिंदगी में कभी नहीं खाया था आपके हाथों में जादू है” और उस समय राजेश्वर ने अपने ड्राइवर को बहुत ध्यान से देखा था और उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई थी क्योंकि राजेश्वर जानता था कि उसकी तरह ही उसका ड्राइवर भी दयाशंकर और राधा को होटल में आया देख कर बहुत खुश था। राजेश्वर ने उनके लिए चाय का ऑर्डर कर दिया था और अभी वो चाय पी ही रहे थे कि अचानक ऋतु भी वहां पर आ गई थी और राधा और दयाशंकर को आफिस में आया देख कर वो बहुत खुश हुई थी और उसने राधा को बहुत प्यार से अपने गले से लगा लिया था।

जब चाय समाप्त हुई तब राजेश्वर ने मुद्दे की बात पर आते हुए दयाशंकर से कहा था “दयाशंकर मैं चाहता हूं कि आपके हाथों का लज़ीज़ खाना हम अपने होटल में आने वाले हर ग्राहक को खिलाएं और मैं चाहता हूं कि आप अब हमारे होटल में हेड कुक का काम संभालें और इसके लिए मैं आपको एक लाख रुपए महीने का वेतन देने के लिए तैयार हूं” इतना कह कर राजेश्वर दयाशंकर की ओर देखने लगा था। अब तक राधा और दयाशंकर, राजेश्वर और ऋतु को बहुत हैरानी से देख रहे थे और उन्होंने इस बात की कभी कल्पना भी नहीं की थी कि इतने बड़े होटल का मालिक उनके घर पर सादा सा भोजन करके गया था और ये ही नहीं उसने उस भोजन की बहुत तारीफ भी कर डाली थी और इसी तारीफ की वजह से वो आज राजेश्वर के शानदार आफिस में उसके सामने बैठे हुए थे और सच बात तो यह थी कि अभी तक उन्हें इस बात का यकीन ही नहीं हो रहा था

कि जो हो रहा है वो सपना है, या हकीकत है। उस पल सच्चाई को समझ कर दयाशंकर और राधा की आंखों मे से आंसू बहने लगे थे और वो दोनों बहुत भावुक हो चुके थे। यह देख कर ऋतु ने राधा का हाथ अपने हाथों में पकड़ कर बहुत प्रेम से उससे कहा था "हम आपके रहने की व्यवस्था भी इसी होटल में कर देंगे और यकीन मानिए कि हम आपको कभी भी किसी चीज की कमी नहीं महसूस होने देंगे" इतना प्रेम और सम्मान देख कर दयाशंकर और राधा से रहा नहीं गया और उन्होंने ऋतु और राजेश्वर की ओर देखते हुए कहा "हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि जिस आदमी को हम अपने घर का साधारण से भोजन परोस रहे हैं वो इतने बड़े होटल का मालिक निकलेगा" और यह कह कर वो दोनों अपने हाथ जोड़े उनके सामने खड़े हो गए थे और बहुत भावुक हो जाने की वजह से उनकी आंखों से झर झर आंसू बहने लगे थे। तब राजेश्वर ने ड्राइवर को इशारे से कुछ समझाया था और ड्राइवर दयाशंकर और राधा को साथ लेकर होटल की सबसे ऊंची मंजिल पर ले आया था और उसने होटल के एक शानदार कमरे का दरवाज़ा खोला था और दयाशंकर से कहा था "साहब अब आप इस कमरे में रहेंगे" और वो इतना शानदार कमरा था कि वहां से मसूरी की पहाड़ियों के सबसे सुन्दर दृश्य दिखाई देते थे और उस कमरे की चाबी उनके हवाले करके उसने दयाशंकर से कहा था "साहब आप मेरे साथ आइए अब मैं आपको वो जगह दिखाता हूं जहां पर आप दोनों को खाना बनाना है" और ड्राइवर दयाशंकर और राधा को लेकर होटल के सब निचले हिस्से में ले आया था जहां पर लगभग 1500 स्केयर फीट का हाल था और वहां पर पहले से ही बहुत से कुक काम कर रहे थे और उसमें एक जगह ऐसी थी जहां पर भारतीय खाना बनाया जाता था और वहां पर भी पहले से 5 रसोइए काम कर रहे थे और ड्राइवर ने उन सब नौजवान लड़कों को अपने पास बुलाया था और उनसे कहा था "आज से दयाशंकर और राधा जी आप आप सबकी खाना बनाने में मदद करेंगे और कल से ये भारतीय खाना बनाने वाले महकमें के इंचार्ज होंगे" और अपनी बात को और प्रभावशाली ढंग से कहने के लिए ड्राइवर ने सबसे कहा था "ये साहब के बहुत अच्छे मित्र हैं और अब आप सब इनकी बात मानना और खाना इनके कहे के मुताबिक ही बनाना" दयाशंकर और राधा ड्राइवर की कही सब बातें बहुत ध्यान से सुन रहे थे और उन्होंने सब नौजवान लड़कों से बहुत प्रेम से कहा था "आप मुझे काका कहेंगे तो मुझे अच्छा लगेगा और पहले आप सबसे मुझे रसोई घर के इन उपकरणों के बारे में सीखना पड़ेगा और इस कार्य में मुझे आप

सबकी सहायता चाहिए होगी" दयाशंकर ने यह बात इतनी सादगी से कही थी कि वहां पर उपस्तिथि सब नौजवान खाना बनाने वालों ने एक सुर में उनसे कहा था "काका हम सब आपकी मदद करेंगे" ड्राइवर यह सब देख रहा था और अब उसे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि दयाशंकर और राधा बहुत जल्दी ही भारतीय खाना बनाने के डिपार्टमेंट को अच्छी तरह से संभाल लेंगे।

अगले दिन दयाशंकर और राधा अपना सारा सामान लेकर और अपने घर को ताला लगा कर, होटल के उस शानदार कमरे में शिफ्ट हो गए थे और कुछ ही दिनों में उन्होंने रसोई के सब उपकरणों की अच्छे से जानकारी भी हासिल कर ली थी और अब वो होटल के सब रसोइयों के साथ मिल कर लज़ीज़ खाना बनाने में जुट गए थे। अभी उन्हें खाना बनाते हुए कुछ ही दिन हुए थे कि उनके खाने की महक सब तरफ फैल गई थी और होटल में आया हुआ कस्टमर जब भारतीय खाना खा कर जाता था तो वो होटल की रिसेप्शन पर इस बात का ज़िक्र ज़रूर करता था और लगभग सब लोग एक ही बात कहते थे "भाई खाना बहुत ही स्वादिष्ट था और जिसने भी बनाया है उसे हमारी तरफ से बधाई ज़रूर देना और कुछ कस्टमर तो रसोइयों के लिए टिप तक छोड़ कर जाते थे और कहते थे ये पैसे कृपया आप खाना बनाने वालों तक पहुंचा दीजिएगा" और यह सारी खबरें राजेश्वर और ऋतु के कान में भी पड़ने लगी थी और वो दयाशंकर और राधा की तारीफ के किस्से सुनकर मन ही मन में बहुत खुश थे।

कुछ दिन के बाद रात को लगभग 9 बजे दयाशंकर के होटल के कमरे में दस्तक हुई थी और जब दयाशंकर ने दरवाज़ा खोला तो उसने देखा कि सामने ऋतु और राजेश्वर खड़े हुए हैं और राजेश्वर ने कमरे के भीतर आते ही दयाशंकर से कहा था "हम आपके साथ बैठ कर आपके बनाए हुए भोजन का स्वाद चखने आए हैं" और उन्होंने दयाशंकर और राधा से हंसते हुए कहा था "भाई आपने तो होटल के हर कस्टमर पर अपने खाने का जादू कर दिया है और जो भी होटल में आता है वो भारतीय खाना खा कर आपके गुण गाता हुआ जाता है" और यह कह कर ऋतु और राजेश्वर हंसने लगे थे। उस समय दयाशंकर ने ऋतु और राजेश्वर को बहुत सम्मान के साथ कमरे में बिठाया था और उनकी पसंद के मुताबिक खाने का ऑर्डर भी दे दिया था और सच तो यह था कि राजेश्वर और ऋतु दयाशंकर और राधा के साथ कुछ वक्त बिताने आए थे।

जब वो चले गए तब दयाशंकर ने राधा से कहा था "अभी कुछ ही दिन हुए हैं जब तुमने मुझ से कहा था कि महीना आखिर आ गया और पैसे खत्म हो गए हैं और अनाज के डिब्बे भी खाली हो गए हैं और उस समय तुम बहुत चिंतित थी और मैंने तुमसे कहा था कि ईश्वर सब देख रहा है और वो हमारी मदद ज़रूर करेगा और देखो आज हम ईश्वर की कृपा से कहां से कहां आ गए हैं" और उस पल दोनो मसूरी के सबसे शानदार होटल के सबसे अच्छे कमरे में थे और उनकी बालकनी से मसूरी की पहाड़ियों के शानदार दृश्य दिखाई दे रहे थे। दयाशंकर और राधा, राजेश्वर के होटल में आकर बहुत खुश थे और वो दोनो मन ही मन में ईश्वर का धन्यवाद कर रहे थे।

समाप्त

कहानी 10: भगवान बच्चों की प्रार्थना को बहुत जल्दी सुनते हैं

यह कहानी 1960 के आसपास की है। मीनाक्षी नाम की एक शिक्षिका अपने तीन छोटे बच्चों के साथ रामनगर के रेलवेस्टेशन से थोड़ी दूर, एक छोटे से गांव में रहती थी। मीनाक्षी का पति एक किसान था और लगभग तीन वर्ष पहले उसका एक दुर्घटना में देहांत हो चुका था और अपने पति की आकस्मिक मृत्यु के बाद जैसे मीनाक्षी पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा था। मीनाक्षी ने अपनी जिंदगी में कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उसकी जिंदगी में इतनी कठिनाइयाँ एक साथ आ जाएंगी। मीनाक्षी के तीन बच्चे थे और उसके तीनों बच्चे गांव के उसी स्कूल में पढ़ते थे जिसमें मीनाक्षी खुद पढ़ाती थी और खाली समय में मीनाक्षी अपने घर पर गांव की औरतों के कपड़े सिलने का काम भी करती थी और गांव की औरते भी उसके छोटे बच्चों को देखते हुए उसको सिलाई का कोई न कोई काम दे दिया करती थी पर यह बात भी सच थी कि मीनाक्षी अपने घर की सारी ज़िम्मेदारियों को निभाते निभाते बहुत थक चुकी थी और अब वो थोड़ी बीमार भी

रहने लगी थी। मीनाक्षी का बड़ा बेटा 10 वर्ष का था और वो 5 वीं कक्षा में पढ़ता था और वो घर के कामों में अपनी मां की मदद भी कर दिया करता था और उससे छोटी उसकी बहन थी जो अभी मात्र 7 वर्ष की ही थी और सबसे छोटा उसका भाई था जो अभी मात्र 4 वर्ष का ही था और यह बात सच थी कि इतने छोटे बच्चों की परवरिश अकेले करना मीनाक्षी के लिए बहुत कठिन था पर अब मीनाक्षी के पास इन जिम्मेदारी को अकेले निभाने के सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं था और ज़िम्मेदारियों की इन्हीं चिंताओं की वजह से अब मीनाक्षी थोड़ी बीमार भी रहने लगी थी पर फिर भी उसका अपनी सिलाई मशीन पर दिन रात काम करना जारी था। मीनाक्षी की ईश्वर में बहुत आस्था थी और उसे यकीन था कि जब उसके बच्चे बड़े हो जाएंगे तब उसकी मुश्किलें खुदबखुद थोड़ी कम हो जाएंगी पर फिलहाल उसके लिए ज़िंदगी के रास्ते अभी बहुत लम्बे थे और मंज़िल बहुत दूर थी।

मीनाक्षी का घर रेलवे लाइन के बहुत करीब था और रेलगाड़ी का उनके घर के पास से सीटी बजाते हुए गुज़रना उसके तीनों बच्चों का मनोरंजन का साधन बना हुआ था और जब भी उसके तीनों बच्चे स्कूल से वापिस लौट कर आते थे तब वो सब बच्चे घर के निकट बनी एक छोटी सी पहाड़ी पर कतार में बैठ कर आती जाती हुई रेलगाड़ियों को देखते रहते थे और कभी कभी वो तीनों बच्चे रेलगाड़ी के साथ साथ भागते भी थे और सुबह से शाम तक उनका ये ही खेल चलता रहता था और उन तीनों बच्चों का मनोरंजन करने का ये ही एक मात्र साधन था जिसमें उनका एक भी पैसा खर्च नहीं होता था और वो तीनों बच्चे अपने इस खेल से बहुत खुश रहते थे।

पर कहते हैं कि सब दिन एक समान नहीं रहते और एक दिन अचानक मीनाक्षी ने तेज़ बुखार की वजह से बिस्तर पकड़ लिया था और उसी दिन से मीनाक्षी की मुश्किलें बढ़ गई थी और बड़ी मुश्किल से जैसे तैसे करके वो अपने तीनों बच्चों को खाना परोस देती थी और उसमें भी उसका बड़ा बेटा उसकी सहायता कर दिया करता था पर समय पर दवा न लेने के कारण मीनाक्षी की हालत धीरे धीरे बिगड़ती जा रही थी और बुखार और कमज़ोरी की वजह से मीनाक्षी दिनप्रतिदिन कमज़ोर भी होती जा रही थी और उसके तीनों बच्चे अपनी मां की बिगड़ती हालत को देख कर मन ही मन में थोड़े घबरा गए थे पर उन छोटे बच्चों को यह समझ नहीं आ रही थी कि इन मुश्किल घड़ियों में वो अपनी मां की सहायता कैसे करें और इस बीच बीमारी की हालत की वजह से मीनाक्षी का

सिलाई का काम भी छूट गया था और अब उन्हें खाने पीने के भी लाले पड़ गए थे। मीनाक्षी के लिए जैसे यह आए पल परीक्षा की घड़ियाँ थी। मीनाक्षी बीमारी की हालत में बिस्तर पर पड़े पड़े आंसू बहाती रहती थी और उस पल वो खुद को बहुत बेबस पा रही थी और अपनी मां की बेबस सी हालत को देख कर बच्चों का मनोबल भी टूट गया था और अब तीनों बच्चे बहुत उदास रहने लगे थे और अब तीनों बच्चे रेलवे लाइन के निकट पहाड़ी पर चुपचाप बैठे रहते थे और अब उनका रेलगाड़ी के पीछे भागने का सिलसिला भी छूट सा गया था। सांझ ढलते ही तीनों बच्चे उदासी की हालत में अपने घर पर वापिस लौट आते थे। मीनाक्षी का बड़ा बेटा पांचवीं कक्षा में पढ़ता था और कुछ दिन पहले ही उनकी अध्यापिका ने सब बच्चों को समझाया था कि अगर आप किसी मुसीबत में हैं तो आपको किसी से मदद मांगनी चाहिए और अगर कुछ कहने सुनने में दूरी अधिक है तो आपको अपने हाथों में बोर्ड पकड़ कर उस पर "मदद चाहिए" लिखना चाहिए और निश्चित तौर पर उस बोर्ड को पढ़ने के बाद, कोई न कोई व्यक्ति आपकी सहायता करने के लिए आपके पास ज़रूर चला आएगा और ये ही सोच कर मीनाक्षी के बड़े बेटे ने सोचा कि क्यों न हम भी कुछ ऐसा ही करें, मीनाक्षी के बड़े बेटे की यह बहुत मासूम सी सोचें थी और सब तरफ से मायूस हो जाने के बाद उस बच्चे ने अपने घर पर पड़े एक गत्ते के बोर्ड के ऊपर लिखा था "हमारी मां बहुत बीमार है कृपया हमारी मदद कीजिए" और उस बोर्ड को तीनों बच्चे अपने हाथों में पकड़ कर रेलवे लाइन वाली पहाड़ी पर बैठ गए थे और इस बीच मुश्किल परिस्थितियों को देख कर उनका 4 वर्षीय छोटा भाई रोने भी लगा था। मीनाक्षी का बड़ा बेटा अपने छोटे भाई का हाथ थामें उसे चुप करवाने का प्रयास कर रहा था और वो दृश्य वास्तव में बहुत भावुक कर देने वाला दृश्य था।

कहते हैं कि ईश्वर बच्चों की प्रार्थना बहुत जल्दी सुनता है और उनकी सहायता करने के लिए कोई न कोई इंसान ईश्वर का संदेशवाहक बनकर उनकी मदद को आ जाता है।

उसी पल एक रेलगाड़ी गांव के स्टेशन से सिग्नल न मिलने की वजह से उस पहाड़ी के बिल्कुल निकट जाकर रुक गई थी और उस रेलगाड़ी के एक डिब्बे में एक रिटायर्ड जिलाधिकारी ज्ञानप्रकाश सक्सेना और उनकी पत्नी सुमित्रा सफर कर रहे थे और वो अपनी नाती से मिलने के लिए पास के ही एक शहर में जा रहे थे और उनकी निगाह जब बच्चों के हाथों में पकड़े बोर्ड पर पड़ी तो ज्ञानप्रकाश की पत्नी सुमित्रा ने अपने पति से

कहा था "लगता है कि यह बच्चे किसी मुश्किल में हैं और हमें इनकी मदद करनी चाहिए" जिलाधिकारी साहब बहुत दयालु इंसान थे और रिटायर्ड होने के बावजूद वो अपने कर्तव्य को खूब समझते थे और वो छोटे छोटे बच्चों को यूं उदास देख कर सोच में पड़ गए थे और उन्होंने अपनी पत्नी से कहा था "तुम ठीक कह रही हो शायद वह बच्चे किसी मुश्किल में हैं और इसलिए उन्होंने अपने हाथों में पकड़े बोर्ड पर मदद के लिए लिखा हुआ है" कुछ सोच कर ज्ञानप्रकाश और उनकी पत्नी ने गांव के स्टेशन पर उतरने का फैसला कर लिया था और जल्दी ही उन्हें गांव के पोस्टआफिस से उस घर का पता भी चल गया था और वो कुछ समय में ही उस स्थान पर पहुंच गए थे जहां पर वो तीनों बच्चे एक छोटी सी पहाड़ी पर बैठे हुए थे और उन्होंने देखा कि वो तीनों बच्चे उठ कर अब धीरे धीरे एक ओर चल दिए थे और यह देख कर ज्ञानप्रकाश और उनकी पत्नी चुपके से उन बच्चों का पीछा करने लगे और उस पल उन्हें ऐसा लगा था कि शायद अब वो बच्चे अपने घर की ओर जा रहे हैं और ज्ञानप्रकाश और सुमित्रा उन बच्चों का पीछा करते हुए उन बच्चों के घर तक पहुंच गए थे और जब ज्ञानप्रकाश ने उस छोटे से घर की खिड़की से भीतर झांक कर देखा तो उनका कलेजा मुंह को आ गया था। उन्होंने देखा कि घर के एक कोने में कुछ टूटे फूटे खिलौने पड़े हुए थे और घर की अस्तव्यस्त हालत को देख कर उन्हें इस बात का अंदाज़ा हो गया था कि यह परिवार इस समय मुश्किल में है और उन्होंने देखा कि घर के एक कोने में चेहरे से बीमार सी दिखाई देने वाली एक महिला अपने बिस्तर पर पड़े पड़े आंसू बहा रही थी। उस समय मीनाक्षी को बहुत तेज़ बुखार था और बुखार की वजह से वो अपने बिस्तर से उठ नहीं पा रही थी और शायद इसी बेबसी की वजह से वो धीरे धीरे रो रही थी और उसके तीनों बच्चे गुमसुम से उसके निकट बैठे हुए अपनी मां को आंसू बहाते हुए देख रहे थे और यह दृश्य वास्तव में बहुत भावुक कर देने वाला दृश्य था। कुछ सोच कर ज्ञानप्रकाश और उनकी पत्नी वहां से वापिस लौट आए थे और उन्होंने गांव के पोस्टमैन से आसपास के किसी डॉक्टर का पता पूछा था और ज्ञानप्रकाश ने उस पोस्टमैन को अपना परिचय देते हुए उस पोस्टमैन को समझाया था कि वो बच्चों की मदद करना चाहते है, पर साथ ही उन्होंने उस पोस्टमैन को यह भी हिदायत दे दी थी कि वो उस परिवार के सामने नहीं आना चाहते और उन्होंने गांव के एक डॉक्टर से मिलने के बाद उस डॉक्टर को उन बच्चों के घर पर भिजवा दिया था और साथ ही पोस्टमैन के हाथों से एक मनीआर्डर भी मीनाक्षी के नाम पर पोस्ट कर

दिया था और उस मनीऑर्डर में इतने पैसे थे कि उन पैसों से मीनाक्षी अपने घर का एक महीने का खर्चा बहुत आराम से चला सकती थी। जब डॉक्टर ने मीनाक्षी के घर के दरवाज़े पर दस्तक दी तब मीनाक्षी के बड़े बेटे ने दरवाज़ा खोला था और अपने घर पर डॉक्टर को आया देख कर वो बहुत खुश हुआ था, पर इस बीच मीनाक्षी ने अपने चेहरे पर आश्चर्य लिए हुए डॉक्टर साहब से पूछा था "डॉक्टर साहब आपको हमारे घर पर किसने भेजा है" तब डॉक्टर साहब ने मुस्कराते हुए मीनाक्षी से कहा था "अभी आप अपनी तबियत को संभालिए और इस बारे में कुछ भी मत सोचिए" और डॉक्टर साहब ने मीनाक्षी की जांच पड़ताल करने के बाद उसे कुछ दवाइयां दी थी और डॉक्टर साहब ने मीनाक्षी से कहा "आप चिंता मत कीजिए, आपको फ्लू हो गया था और ये दवाइयां लेने बाद आप दो से तीन दिन में बिल्कुल ठीक हो जाएंगी" पर इस बीच मीनाक्षी ने चिंतित होते हुए डॉक्टर साहब से कहा था "पर डॉक्टर साहब मेरे पास आपकी फीस देने के लिए पैसे नहीं हैं" तब डॉक्टर साहब ने मुस्कराते हुए मीनाक्षी से कहा था "आप मेरी फीस की चिंता मत कीजिए मुझे मेरी फीस मिल चुकी है" और मीनाक्षी को दवाइयां और ताकत का एक इंजेक्शन लगाने के बाद डॉक्टर साहब मुस्कराते हुए वहां से सीधा अपने क्लिनिक में चले आए थे और जहां पर रिटायर्ड जिलाधिकारी ज्ञानप्रकाश और सुमित्रा बहुत बेसब्री से उनका इंतज़ार कर रहे थे और ज्ञानप्रकाश ने डॉक्टर साहब को अपना परिचय दिया और उनसे मीनाक्षी का हालचाल पूछा था तब डॉक्टर साहब ने उनसे कहा था "चिंता की कोई विशेष बात नहीं है वो जल्दी ही थी हो जाएंगी" फिर जिज्ञासावश उस डॉक्टर ने ज्ञानप्रकाश से पूछा था "सर आपको कैसे पता चला कि इस घर में किसी को सहायता की आवश्यकता है" तब ज्ञानप्रकाश ने डॉक्टर साहब को बच्चों का सारा किस्सा कह सुनाया था कि कैसे बच्चे अपने हाथों में बोर्ड पकड़े हुए रेलवे लाइन के निकट वाली पहाड़ी पर बैठे हुए थे और उनके हाथों में पकड़े बोर्ड पर मदद के लिए लिखा हुआ था और ज्ञानप्रकाश ने डॉक्टर साहब को यह भी बताया कि अगर उनकी रेलगाड़ी उस पहाड़ी के निकट न रुकती तो शायद उन्हें भी इस बात की खबर नहीं होनी थी। ज्ञानप्रकाश की बातें सुनकर डॉक्टर साहब बहुत हैरान हुए थे और उन्होंने ज्ञानप्रकाश और सुमित्रा की ओर देखते हुए कहा था "शायद ईश्वर ने आपको बच्चों की मदद करने के लिए ही भेजा है इसीलिए उस पहाड़ी के निकट रेलगाड़ी अचानक रुक गई थी" और इतना कह कर डॉक्टर साहब मुस्कराने लगे थे और जब ज्ञानप्रकाश ने डॉक्टर साहब को

फीस देनी चाही थी, तो उस डॉक्टर ने यह कहते हुए फीस लेने से मना कर दिया था कि यह भगवान का काम था और मैं इस काम के लिए आपसे पैसे कैसे ले सकता हूं और यह कह कर वह डॉक्टर मुस्कराने लगा था। इस बीच जिलाधिकारी साहब ने पोस्टमैन को 200/= रुपयों का एक मनी आर्डर बना कर दिया था जिसे पोस्टमैन ने मीनाक्षी के घर पर पहुंचा दिया था और मीनाक्षी अचानक 200/= रूपये का मनी आर्डर मिलने पर बहुत हैरान हुई थी और उस पल उसे कुछ ऐसा लगा था जैसे ईश्वर खुद उसकी मदद करने के लिए उसके घर पर आए हों और जब मीनाक्षी ने पोस्टमैन से भेजने वाले का नाम पता पूछा था, तब पोस्टमैन ने मुस्कराते हुए मीनाक्षी से बस इतना ही कहा था "पहले आप अच्छे हो जाइए और पैसों के बारे में आप इतना जान लीजिए कि यह पैसे आपको ऊपर वाले ने भेजे हैं" और इतना कह कर वह पोस्टमैन मुस्कराते हुए अपनी राह पर चल दिया था और उस पल मीनाक्षी की आँखें आंसुओं से भीग गई थी और वो पैसों को हाथों में पकड़े हुए अपने घर में बने छोटे से मंदिर के सामने खड़ी होकर ईश्वर का धन्यवाद कर रही थी और उसे मालूम था कि यह सब ईश्वर की कृपा के बिना मुमकिन नहीं हो सकता था।

इस बीच ज्ञानप्रकाश और उनकी पत्नी पोस्टआफिस में बैठ कर पोस्टमैन के वापिस लौटने का इंतज़ार कर रहे थे और जब पोस्टमैन ने ज्ञानप्रकाश को बताया कि उसने वह मनीआर्डर मीनाक्षी के हाथ में दे दिया था और फिर कुछ सोचते हुए उस पोस्टमैन ने ज्ञानप्रकाश की ओर देखते हुए कहा था "सर मुझे नहीं लगता कि मीनाक्षी दो से तीन दिन तक अपनी रसोई घर में कोई भी काम कर पाएगी और इस वजह से शायद वो अपने बच्चों को खाना भी नहीं खिला पाएगी, मुझे वो बेहद कमज़ोर और लाचार दिखाई दे रही थी" यह बहुत सोचने का विषय था, तब कुछ सोच कर सुमित्रा ने अपने पति की ओर देखते हुए कहा था "हमें कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे मीनाक्षी के ठीक होने तक उसके तीनों बच्चे अपने आप कुछ खा पी सकें" पोस्टमैन और ज्ञानप्रकाश भी इसी विषय को लेकर चिंतित थे, तब कुछ सोच कर ज्ञानप्रकाश ने पोस्टमैन से मीनाक्षी के घर के निकट की किसी राशन की दुकान का पता पूछा था और उस दुकानदार को मिलने के बाद सुमित्रा ने उस दुकानदार को खाने पीने के सामान की एक लिस्ट दे दी थी, जिसमें केक, ब्रेड, जैम, मक्खन और खाने पीने का दूसरा बहुत सा सामान था और सुमित्रा ने उस दुकानदार से बच्चों के लिए कुछ खिलौने भी लिए थे और सुमित्रा ने उस दुकानदार

से विनम्र निवेदन किया था कि यह सामान हर रोज़ थोड़ा थोड़ा करके मीनाक्षी के घर पर पहुंचा दीजिएगा और इतना कहते हुए सुमित्रा ने उस दुकानदार के सारे पैसे अदा कर दिए थे। उस पल वो दुकानदार थोड़ा हैरान दिखाई दे रहा था और तब उस दुकानदार ने थोड़ा हिचकिचाते हुए उनसे पूछ ही लिया था "बहन जी आप लोग कौन हैं मैंने इससे पहले आपको कभी इस गांव में नहीं देखा" तब ज्ञानप्रकाश ने अपना परिचय न देते हुए उस दुकानदार से बस इतना ही कहा था "हम आज ही यहां पर आए है" पर इस बीच उस पोस्टमैन ने जिलाधिकारी साहब की उलझन समझते हुए उस दुकानदार से कहा था "यह लोग मेरी पहचान के हैं और यह गांव में घूमने के लिए आए हैं" उस पल ज्ञानप्रकाश और सुमित्रा ने एक दूसरे की ओर देखा था और पोस्टमैन की समझदारी पर वो दोनो एक साथ मुस्कराने दिए थे। पर उस पोस्टमैन को मन ही मन में इस बात का बहुत आश्चर्य था कि जिलाधिकारी साहब को कैसे पता चला कि उस घर में कोई बीमार है और न चाहते हुए भी उसने ज्ञानप्रकाश से पूछ ही लिया था "सर आपको कैसे पता चला कि उस घर में कोई बीमार है" तब ज्ञानप्रकाश जी ने उस पोस्टमैन को बच्चों का सारा किस्सा कह सुनाया था और बच्चों की बुद्धिमानी और उनकी उस मासूम सी हरकत को जानकार वह पोस्टमैन भी बहुत हैरान हुआ था और उसने भी रिटायर्ड जिलाधिकारी महोदय से कहा था "सर शायद आपके हाथों से ईश्वर ने उन बच्चों के घर में मदद भेजनी थी और यह सिर्फ संयोग नहीं हो सकता" तब ज्ञानप्रकाश और पास खड़ी हुई सुमित्रा ने पोस्टमैन से कहा था "आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं ऐसे शुभ काम ईश्वर की मर्ज़ी के बिना नहीं हो सकते शायद इसीलिए हमारी रेलगाड़ी उस छोटी सी पहाड़ी के निकट रुक गई थी जहां पर वह बच्चे अपने हाथों में बोर्ड पकड़े बैठे हुए थे" और उस गांव से जाने से पहले ज्ञानप्रकाश ने उस पोस्टमैन से विनम्र निवेदन किया था कि वो मीनाक्षी के घर पर किसी बहाने से जाते रहें और उनकी खैरियत का समाचार उन्हें भी देते रहें और यह कह कर उन्होंने पोस्टमैन को अपने घर का पता लिख कर दे दिया था। पोस्टमैन ने कुछ दिनों के बाद ज्ञानप्रकाश जी को एक खत लिख कर सूचित किया था कि मीनाक्षी अब बिल्कुल ठीक हो चुकी है और अब वो अपने स्कूल में जाने लगी हैं और इस शुभ समाचार को सुनकर ज्ञानप्रकाश जी और सुमित्रा के चेहरे पर सुकून भरी मुस्कराहट आ गई थी और अब वो दोनो, बच्चों की तरफ से बिल्कुल निश्चिंत हो चुके थे।

कुछ महीनो के बाद जिलाधिकारी महोदय को 300/=रुपयों का एक मनी आर्डर प्राप्त हुआ था और उस पर भेजने वाले का नाम मीनाक्षी लिखा हुआ था और उस मनी आर्डर के साथ मीनाक्षी ने उन्हें एक ख़त लिखा था और उस ख़त में मीनाक्षी ने रिटायर्ड जिलाधिकारी ज्ञानप्रकाश सक्सेना को लिखा था –

सम्माननीय जिलाधिकारी महोदय ज्ञानप्रकाश जी आपकी मदद का बहुत बहुत धन्यवाद, आप ईश्वर का रूप लेकर अचानक हमारी जिंदगी में आए थे और आपकी ईश्वरीय कोशिशों ने हमारे दुखद लम्हों को सुखद पलों में बदल दिया और मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि आप सदा दुखी लोगों की सहायता करते रहिएगा। मैं गांव के एक स्कूल में शिक्षिका की नौकरी करती हूं और अब मेरी तबियत बिल्कुल ठीक हो चुकी हैं और मैं अपने स्कूल जाने लगी हूं। आपके परिवार पर सदा ईश्वर की कृपा बनी रहे। आपके किए अच्छे कर्मों की वजह से, अब हमारा परिवार एक दम सुरक्षित है।

आपकी आभारी

मीनाक्षी

मीनाक्षी का लिखा पत्र पढ़ने के बाद रिटायर्ड जिलाधिकारी महोदय ज्ञानप्रकाश जी को इस बात की समझ आ गई थी कि मीनाक्षी की रग रग में आत्मसम्मान भरा हुआ है इसीलिए उसने जैसे तैसे करके पोस्टमैन से सारी वास्तविकता जान ली होगी और निसंदेह उस पत्र को पढ़ कर जिलाधिकारी महोदय और उनकी पत्नी सुमित्रा ने मन ही मन में मीनाक्षी को बहुत असीस दी थी।

कुछ दिन के बाद ही मीनाक्षी ने अपने घर पर पड़े उस बोर्ड को देख लिया था जिस बोर्ड पर लिखा था "हमारी मां बहुत बीमार है कृपया हमारी मदद कीजिए" और उस बोर्ड पर लिखे शब्द पढ़ कर मीनाक्षी की आँखें भर आई थी और अब मीनाक्षी को सारी कहानी समझ आ चुकी थी और सब कुछ जान समझ कर उसे अपने बच्चों पर बहुत प्यार आ रहा था और उसे इस बात की भी बहुत हैरानी थी कि इतने छोटे से बच्चों की बुद्धि में यह बात कैसे आई थी।

कुछ महीने के बाद जब ज्ञानप्रकाश जी और उनकी पत्नी सुमित्रा रेलगाड़ी से उस गांव के निकट से गुज़र रहे थे तब उन्होंने उन तीनों बच्चों को हंसते खेलते रेलगाड़ी के पीछे भागते हुए देख लिया था और यह देख कर उनके चेहरे पर बहुत मीठी सी मुस्कान आ चुकी थी और वो दोनो इस बात से मन ही मन में बहुत खुश थे कि उनकी थोड़ी सी कोशिश से एक परिवार बिखरने से बच गया था।

समाप्त

कहानी 11: एक चोर

यह कहानी वर्ष 1950 के लगभग की है जब हमारा हिन्दुस्तान नया नया आज़ाद हुआ था और उस समय नौकरी मिलना थोड़ा कठिन कार्य था और लगातार बढ़ती हुई बेरोज़गारी की वजह से देश में जेबकतरों और चोरों की तादाद थोड़ी बढ़ चुकी थी और उसी बेरोज़गारी की वजह से एक दिन एक घटना घटी जब एक मालदार सेठ और अपनी शानदार गाड़ी से उतरकर बैंक में प्रवेश कर रहा था तब एक चोर चुपके से उसके पीछे हो लिया था और वह चोर चाल ढाल से बहुत चुस्त और चालाक दिखाई दे रहा था। जब वह सेठ बैंक अधिकारी से बातचीत करके, अपने पैसे निकलवा रहा था तब वह चोर उस सेठ की तरफ अपनी पीठ करके ठीक उसके पीछे ही खड़ा हुआ था लेकिन उस चोर के कान, पीठ पीछे होती हुई बातचीत पर ही लगे हुए थे। उस चोर ने बैंक अधिकारी और उस सेठ की बातचीत से इतना तो समझ ही लिया था कि वह सेठ बैंक से बहुत बड़ी रकम निकालने के लिए आया था। कुछ समय बाद जब वह सेठ पैसों से भरा हुआ बैग लेकर उस बैंक से बाहर निकल रहा था, तब उस चोर ने उस सेठ के कार में बैठने से पहले ही उस सेठ के बैग पर एक झपट्टा मारा और उस सेठ का पैसों से भरा बैग छीन कर वो

चोर बहुत फुर्ती से वहां से भागा था, पर इतने में बैंक के बाहर तैनात गार्ड भी उस चोर के पीछे भागा था, पर उस चोर ने, चोरी करने से पहले ही अपने भागने का रेखा चित्र खींच रखा था और वो अपने नपे तुले कदमों से इतनी गज़ब की फुर्ती से वहां से भागा था कि उसने कुछ पल में ही उस गार्ड से अपना पीछा छुड़ा लिया था। तब तक बैंक में शोर मच चुका था और बैंक मैनेजर ने जल्दी से पुलिस को इस घटना की जानकारी दे दी थी। पर इस बीच वह चोर भागते भागते झोपड़ी नुमा घरों की छोटी छोटी गलियों में घुस गया था और एक अंधेरे से कोने में क्षण भर के लिए रुककर उसने वह चोरी किया हुआ बैग खोलकर देखा था और उस बैग में पड़ी धनराशि को देख कर, उस चोर का मुंह खुला का खुला रह गया था क्योंकि उस बैग में लाखों रुपए पड़े हुए थे। वह चोर थोड़ा मनमौजी किस्म का था और उन पैसों को देख कर वो मुस्कराया था और उसने मन ही मन में कहा था "वाह सेठ तुमने गरीबों का खून चूस चूस कर बहुत पैसा इकट्ठा किया हुआ था" और यह सोचते सोचते उसके चेहरे पर एक शरारत भरी मुस्कान आ चुकी थी। वह चोर अभी भी उस झोपड़ी नुमा घर की दीवार के साथ सट कर खड़ा हुआ था कि तभी उस चोर को, उस घर के भीतर से कुछ आवाज़ें सुनाई दी और उस बातचीत से चोर ने अंदाज़ा लगाया कि एक बूढ़ा बाप अपनी जवान बेटी के दहेज की वजह से बहुत परेशान था और उसे भय लग रहा था कि अगर सही समय पर दहेज का इंतज़ाम न हुआ तो कहीं लड़के वाले बारात वापिस न ले जाएं और उसकी बेटी अपने पिता से कह रही थी कि "पिता जी अगर उन्होंने ऐसा किया तो मैं यह शादी खुद ही तोड़ दूंगी" पर उसके पिता उसे समझा रहे थे कि "बेटी तुम्हारे ऐसा करने से हमारा नाम बिरादरी में खराब हो जायेगा, फिर तुमसे विवाह कौन करेगा" अभी उनकी यह बातचीत चल ही रही थी कि उस चोर ने सोचा कि मुझ से अधिक पैसों की जरूरत तो इन्हें है और यही सोच कर उसने अपने पैसों से भरा बैग खोला था और उसने उसमें से कुछ धन राशि निकाल कर चुपके से उनके घर में रख दी थी और इतना करके वो चोर मुस्करा कर आगे बढ़ गया था, पर तब तक पुलिस उसको ढूंढती हुई वहां पर आ पहुंची थी, वह चोर फिर अपनी जान बचाकर वहां से उन गलियों में भागा था और वो उन रास्तों से इतना अच्छी तरह से परिचित था कि कुछ मिनटों में ही वो पुलिस की नजरों के सामने से ओझल हो गया था। अब तक वो चोर इस भागा दौड़ी से बहुत थक चुका था और वो एक छोटी सी झोपड़ी के पीछे की दीवार के पास बैठ कर थोड़ा सुस्ताने लगा था। पर तभी उसे उस झोंपड़ी के भीतर से आवाज़ें सुनाई

दी थी और वो चोर कान लगा कर अन्दर की बातचीत को सुनने की कोशिश करने लगा था। उस घर में वृद्ध दंपति रहते थे और वो भविष्य की चिंता करके परेशान थे, वो बूढ़ा इंसान, जो थोड़ा चलने से भी लाचार था, वो अपनी पत्नी से कह रहा था कि हमारी कोई औलाद नहीं है और अनाज के डिब्बे भी अब खाली हो गए हैं, तो तुम इस बात की चिंता क्यों करती है, यह कह कर वो बूढ़ा इंसान, अपनी पत्नी को दिलासा देने की कोशिश कर रहा था, फिर कुछ सोचते हुए उसने अपनी पत्नी से कहा था "सबको देने वाला ईश्वर है और वक्त आने पर वो हमारी भी मदद जरूर करेगा" उनकी बातचीत सुनकर, चोर सोच में पड़ गया था, तब उस चोर ने झोपड़ी के भीतर झाँक कर देखा और उसने देखा कि वो पति पत्नी बहुत बूढ़े और कमजोर थे और उस पल उनके उदास चेहरे से लाचारी साफ टपक रही थी और शायद अधिक उम्र हो जाने के वजह से, उन्हें दिखाई भी थोड़ा कम देता था, यह देख कर उस चोर का दिल भर आया था और जब वो वृद्ध दंपति, गहरी नींद में सो रहे थे, तब उस चोर ने चुपके से उनके झोंपड़े में प्रवेश किया था और उसने अपने बैग में से कुछ पैसे निकाल कर उनके बिस्तर के निकट रख दिए थे और फिर वो चोर वहां से आगे बढ़ गया था। वह चोर अभी चैन की सांस ले ही रहा था कि तभी कुछ पुलिस अधिकारियों ने उसे फिर से देख लिया था और वो उसको पकड़ने के लिए उसके पीछे तेज़ी से भागे थे, पर वह चोर एक बार फिर जान बचाकर तेज़ी से भागा था और बिजली की सी फुर्ती से उसने एक बार फिर से पुलिस कर्मियों को चकमा दे दिया था और जल्द ही वो पुलिस वालों की नज़र के सामने से ओझल हो गया था। अब तक वह चोर बहुत थक चुका था, पर साथ ही उसके चेहरे पर तृप्ति भरी एक हल्की सी मुस्कराहट भी थी। पुलिस को यूं चकमा देना शायद उस चोर का बाएं हाथ का खेल था और उस चोर को अपनी चुस्ती और फुर्ती पर बहुत भरोसा था। अब तक उस चोर का चोरी किया हुआ बैग बहुत हल्का हो चुका था, पर यह देख कर भी उस चोर को कुछ खास अंतर नही पड़ा था। वह चोर पुलिस से बचने के लिए अभी भी उन्हीं गलियों में छुपता फिर रहा था। इसी भागादौड़ी के दौरान वो चोर एक छोटी सी झोंपड़ी के पिछवाड़े में अंधेरी सी जगह को देख कर थोड़ा सुस्ताने लगा था और इस भागा दौड़ी की वजह से वो बहुत थक भी चुका था और वो चोर उस झोपड़ी की पीछे बैठ कर अपनी सांसों को नियंत्रित करने की कोशिश कर रहा था कि तभी उसे उस छोटे से टूटे फूटे झोंपड़े की भीतर से एक छोटी लड़की की आवाज़ सुनाई दी थी और वो चोर उस झोंपड़ी की दीवार से

कान लगाकर भीतर की बातें सुनने की कोशिश करने लगा था। उस चोर को उस झोंपड़े में से दो छोटे बच्चों की बातचीत सुनाई दे रही थी और उसने सुना कि लड़की अपने छोटे भाई को दिलासा देते हुए कह रही थी "तुम चिंता मत करो छोटे, मैं तुम्हारी टांगों का इलाज बड़े से बड़े डॉक्टर से करवाऊंगी और तुम एक दम ठीक हो जाओगे और खुद अपने पैरों से चलने लगोगे" और वो छोटा बच्चा अपनी बहन से कह रहा था "अब तो हमारे माता पिता भी नही रहे, फिर तुम अकेली इतने सारे पैसे कहां से लेकर आओगी, लगता है कि अब मैं जीवन भर अपाहिज ही रहूंगा" यह कह कर वह छोटा बच्चा बिलखने बिलख कर रोने लगा था। पर तभी उसकी बहन ने अपने भाई को चुप कराने का प्रयास करते हुए उससे कहा था "छोटे जिनका कोई नही होता उनकी रक्षा खुद भगवान करते है, तू क्यों चिंता करता है, मैं हूं न और जब तक मैं हूं, तुम्हें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है" वह चोर छोटे बच्चों की बातों को बहुत ध्यान से सुन रहा था और उन बच्चों की भोली और मासूम बातें सुन कर उसका दिल भर आया था और उसी जिज्ञासा के तहत उसने उस टूटी फूटी झोपड़ी के एक झरोंखे में से भीतर झांक कर देखा था और उसने देखा कि दो छोटे बच्चे जो शायद भाई बहन थे, वो आपस में बातचीत कर रहे थे और जिसमें लड़के की उम्र लगभग 7 वर्ष के आसपास की दिखाई दे रही थी और वो बच्चा टांगों से थोड़ा लाचार दिखाई दे रहा था और उसकी बहन उससे कुछ वर्ष बड़ी दिखाई दे रही थी और वो अपने अपाहिज भाई की हिम्मत बढ़ा रही थी। उस चोर ने देखा कि झोपड़े की एक दीवार पर दो तस्वीर लगी हुई थी और उन तस्वीरों के सामने एक दीया जल रहा था। इसी बात से उस चोर ने अंदाज़ा लगाया कि हो न हो, ये तस्वीर उनके मृत माता पिता की तस्वीर ही होगी। दो छोटे बच्चों को इस दयनीय अवस्था में देख कर उस चोर का दिल पिघल गया था और उसी पल उसने अपना चोरी किया हुआ बैग खोला था और उसमें जितने भी धनराशि बाकी बची हुई थी वह सारी धनराशि उन बच्चों के पास रखकर वो चोर आगे बढ़ गया था और उसने वो खाली बैग भी कुछ दूर चलकर एक बहते नाले में फेंक दिया था और वो मुस्कराता हुआ आगे बढ़ गया था। पर उसे पता नही चला था कि पुलिस अभी भी उसकी तलाश कर रही थी और जैसे ही वह चोर पुलिस को फिर से दिखाई दिया, पुलिस ने उस चोर की चारों तरफ से घेराबंदी कर दी थी, चोर अपनी जान बचाकर पास ही की एक बहुत बड़ी हवेली नुमा इमारत में घुस गया था और उस हवेली की छत पर से होते हुए उसने एक परछत्ती पर छलांग लगाई थी

और उस चोर को वहां पर एक गुप्त कमरा दिखाई दिया था और वो चोर छुपकर उस कमरे के रोशनदान से कमरे के भीतर देखने लगा था और वो चोर यह देखकर दंग रह गया था क्योंकि उस गुप्त कमरे में इतनी धन राशि और गहनों की संपत्ति पड़ी हुई थी कि जिसकी उस चोर ने कभी कल्पना भी नही की थी। वह कमरा बहुत सी अलमारियों से भरा हुआ था और उसकी हर अलमारी में ढेरों रूपये पड़े हुए थे। उस कमरे की कुछ अलमारियों में बेशकीमती ज़ेवर पड़े हुए दिखाई दे रहे थे। वो चोर इतनी धन संपति एक ही जगह पर पड़ी हुई देख कर बहुत हैरान हुआ था और उस पल उसके मुंह से निकल ही गया था "इस सेठ ने गरीबों का खून चूस चूस कर ही इतनी धन संपत्ति इकट्ठी की होगी" और अब उस चोर ने निश्चय कर लिया था कि उसका अगला निशाना यही घर होगा और अभी वो कोई यह सोच ही रहा था कि उसे उस घर का सेठ भी नज़र आया, जो अपने साथ लाए ज़ेवर एक अलमारी में संभालकर रख रहा था और वो चोर यह देख कर हैरान रह गया था कि यह वही सेठ था जिस सेठ से उसने बैंक के बाहर बैग छीना था। उस पल वह चोर मन ही मन बुदबुदाया था "अब तो इस घर में आना ही पड़ेगा" और यह कह कर वह खुद ही मुस्कराने लगा था। उस गुप्त कमरे की बनावट ऐसी थी कि अच्छे अच्छे चालाक लोग भी शायद उस गुप्त कमरे को खोज न पाते, पर उस चोर के छत से उस घर में प्रवेश करने की वजह से, उसे दो दीवारों के बीच में बने उस गुप्त कमरे का पता चल गया था। शायद उस सेठ ने अपनी धन सम्पत्ति की सुरक्षा के लिहाज से उस हवेली का नक्शा कुछ ऐसे बनवाया था, पर वो सेठ नही जानता था कि किसी चोर की निगाहों से कोई भी गुप्त खजाना अधिक देर तक छुपा नहीं रह सकता था। पर अब तक पुलिस ने उस हवेली की और आसपास के इलाकों की घेरा बंदी कर दी थी और अब उस चोर का वहां से बच कर निकलना असंभव सा हो गया था। पुलिस अपना घेरा धीरे धीरे छोटा करती जा रही थी और पुलिस ने उस चोर सेठ की हवेली से कुछ ही कदम की दूरी पर पकड़ा धर दबोचा था।

पुलिस उस चोर को हथकड़ी पहना कर पुलिस स्टेशन ले आई थी और शिनाख्त के लिए बैंक के गार्ड को और उस सेठ को पुलिस स्टेशन बुलाया गया। गार्ड ने उस चोर को देखते ही पहचान लिया था और उसने पुलिस अधिकारी से कहा था मैंने इस चोर को पीछे से देखा था और मैं उस चोर की एक ही झलक देख पाया था और मुझे यकीन है कि यह वो ही चोर है जिसने बैंक के बाहर सेठ जी का बैग चुराया था। तब तक वह सेठ

भी पुलिस स्टेशन में पहुंच चुका था और वो चोर को पहचानने की कोशिश कर रहा था कि वह चोर उस सेठ के बहुत करीब आ गया था और उसने सेठ के कान में बस इतना ही कहा था "सेठ जी क्या आपके घर में बने गुप्त कमरे के जानकारी मैं पुलिस को दे दूं" बस फिर क्या था यह सुनकर उस सेठ के चेहरे का रंग उड़ गया था। पुलिस अधिकारी ने उस सेठ से पूछा था कि "क्या यह वही चोर है जिसने बैंक के बाहर आपका बैग छीना था" अब सेठ जी उस चोर के चेहरे की ओर बहुत ध्यान से देख रहे थे और वो चोर भी मुस्कराता हुआ उनकी ओर ही देख रहा था और वो चोर उस पल मन ही मन में सोच रहा था "अब बता मोटे सेठ, अब मैं तेरे काले धन का भांडा, सिर्फ पल भर में फोड़ दूंगा" अब तक वह सेठ मौके की नज़ाकत को समझ चुका था और उसने चुप रहने में ही अपनी भलाई समझी थी और उस सेठ ने जल्दी से उस पुलिस अधिकारी से कहा था "नही, नही, ये वो आदमी नही है, वो थोड़ा मोटा सा था और उसका रंग थोड़ा काला था, मैंने उसे बहुत ध्यान से देखा था" उस सेठ की बातें सुनकर, पुलिस स्टेशन में खड़ा बैंक का गार्ड बहुत हैरान हुआ था और वो बहुत आश्चर्य से सेठ की ओर देख रहा था। चोर को तो उसने भी देखा था पर जो हुलिया वह सेठ बयान कर रहा था, वो उस चोर से बिल्कुल उलटा लग रहा था। पर वह गार्ड चुपचाप एक कोने में खड़ा रहा और आश्चर्य से पुलिस की सारी कार्यवाही को होते हुए देखता रहा।

सबूतों के अभाव से, पुलिस ने उस चोर को छोड़ दिया था क्योंकि पुलिस को उस चोर के पास से चोरी का एक भी पैसा बरामद नही हुआ था।

जब वह चोर और सेठ उस पुलिस स्टेशन से बाहर निकले, तब सेठ ने चोर को हाथ जोड़ते हुए विनती भरे अंदाज़ से उस चोर से कहा था कि "कृपया तुम उस गुप्त कमरे की जानकारी किसी को मत देना" और यह कहते हुए उस सेठ ने अपनी जेब से 5000 रुपए निकाले और उस चोर की तरफ बढ़ा दिए थे और चोर ने मुस्कराते हुए वह पैसे अपनी जेब में रख लिए थे और सेठ को हक्का बक्का वहीं पर छोड़ कर वह चोर अपनी राह पर आगे बढ़ गया था। पर अब तक वह सेठ समझ चुका था कि उसके घर पर पड़ा हुआ वह गुप्त खजाना अब सुरक्षित नहीं रहा था और उस पल वह चोर भी मन ही मन में यह फैसला कर चुका था कि उसका अगला निशाना उस सेठ का घर ही होगा और यह सोचता हुआ वह चोर मुस्कराता हुआ अपनी राह पर आगे बढ़ गया था।

अगली सुबह जब उन तीनो परिवारों के लोगों की आंख खुली और जब उन्होंने इतने सारे पैसों को एक साथ अपना घर पर पड़ा हुआ देखा तो वो सब बहुत हैरान हुए थे और उस पल उन सबने हाथ जोड़ कर ईश्वर का धन्यवाद किया था क्योंकि उन सबको कुछ ऐसा अनुभव हुआ था कि ईश्वर ने अपने किसी बंदे के हाथों से, उन्हें मदद भेजी थी। उन सब के लिए यह किसी चमत्कार से कम नहीं था और यह बात सत्य प्रतीत होती है कि "ईश्वर की मर्ज़ी के बिना कहीं पर एक पत्ता भी नही हिलता" ईश्वर महान है और वो कभी भी, कहीं भी, कुछ भी कर सकता है।

समाप्त

कहानी 12: एक किस्सा किताबों का

यह कहानी मसूरी की मॉल रोड से थोड़ी हट कर बनी एक किताबों की दुकान से शुरू होती है और उस किताबों की दुकान के बोर्ड पर सिर्फ "Books" लिखा हुआ था और यह दुकान लगभग 700 स्केयर फीट की जगह में बनी हुई थी और इस दुकान में दुनिया के लगभग सारे जाने माने लेखकों की किताबें पड़ी हुई थी और इसी दुकान के ऊपर ही 700 स्केयर फीट का एक छोटा सा घर भी बना हुआ था जिसकी सीढ़ियाँ दुकान के बाहर से हो कर जाती थी और उस दुकान के बाहर ही बहुत अच्छे तरीके से पार्किंग की व्यवस्था भी की हुई थी और उस दुकान के एक तरफ एक छोटा सा आंगन बना हुआ था जिसमें किताबें पढ़ने वालों के लिए कुछ कुर्सियाँ और टेबल रखे हुए थे और किताबों की दुकान के मालिक ने किताबें पढ़ने वालों के लिए अपनी दुकान में कॉफी पीने की व्यवस्था भी की हुई थी और उस दुकान के भीतर ही एक कोने में एक बहुत बड़ा लकड़ी का बाक्स रखा हुआ था जिस बॉक्स के ऊपर एक बोर्ड लगा हुआ था और उस पर लिखा हुआ था "आप अपनी पुरानी किताबे इस बॉक्स में दान कर सकते हैं" और मसूरी के शांत वातावरण में बनी उस किताबों की दुकान में लोग अक्सर किताबें पढ़ने आते थे

और लोग किताबे पढ़ने के साथ साथ, वहां की गर्म कॉफी का आनंद भी उठाते थे और उनमें से कुछ लोग अपनी पुरानी किताबे उस लकड़ी के बाक्स में रख जाते थे और दान स्वरूप दी हुई उन किताबों को उस दुकान का मालिक बाद में अनाथ बच्चों के पढ़ने के लिए एक अनाथालय में दे देता था और उसका यह नियम था कि वो हफ्ते में एक बार अनाथ बच्चों से मिलने के लिए अनाथालय जरूर जाता था और वहां पर बिना माता पिता के रह रहे बच्चों के साथ वो अपना समय व्यतीत करता था और वो उन सब बच्चों को किताबे पढ़ने के लिए उत्साहित करता था और उसका मानना था कि सब बच्चों को किताबें जरूर पढ़नी चाहिए और वो वहां पर रह रहे बच्चों से अक्सर यह कहता था जीवन में किताबें ज़रूर पढ़नी चाहिए इससे ज्ञान में वृद्धि तो होती ही है पर साथ ही किताबें पढ़ने से मिले ज्ञान की वजह से हमें आत्मसम्मान से जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है और अच्छी और ज्ञानवर्धक किताबें पढ़ने से सबको अपने पैरों पर खुद खड़े होने की प्रेरणा भी मिलती है।

किताबों की इस अदभुत दुकान का मालिक 30 वर्षीय आदित्य श्रीवास्तव था और अपने व्यक्तित्व से और चेहरे के सभ्य हावभाव से वो बहुत ही सीधा सादा सा इंसान लगता था और आंखों पर लगा बिना फ्रेम का चश्मा और उसके हल्के रंग के वस्त्रों का पहनावा उसे बहुत विशेष बना देता था। किताबों की दुकान के ऊपर बने उस फ्लैट में आदित्य अकेला ही रहता था और परिवार के नाम पर उसकी एक बड़ी बहन भी थी जिसका नाम मधु था और वो विवाहित थी। मधु अंग्रेज़ी साहित्य की प्रोफेसर थी और निकट के ही एक कालेज में पढ़ाती थी और उसका पति डॉक्टर था और दोनो अपनी ज़िंदगी से बहुत संतुष्ट थे। माता पिता का अचानक देहांत हो जाने की बाद, मधु ने घर की सारी ज़िम्मेदारी निभाते हुए आदित्य को पढ़ने में मदद की थी और आदित्य खुद भी बहुत धीर गंभीर और समझदार लड़का था और वो एक डॉक्टर बनना चाहता था, पर प्री मेडिकल टेस्ट में कुछ प्रतिशत अंक कम आने की वजह से वो अपने सपने को पूरा नहीं कर पाया था। पर जल्दी ही उसने अपने सोचने की दिशा बदल दी थी और फिर उसने भी अपनी बहन मधु की तरह ही अंग्रेजी साहित्य की शिक्षा ली थी और उसके बाद उसने अपने पढ़ने के शौक की वजह से एक किताबों की दुकान खोली थी। दोनो भाई बहन को पैसों की कोई कमी नहीं थी क्योंकि उनके माता पिता के देहांत के बाद उन्हें इतनी संपति मिल गई थी कि उन पैसों से उनका जीवन भर निर्वाह हो सकता था। पर उन भाई बहन

में एक विशेषता थी कि वो दोनो बिलकुल भी लालची नही थे और किताबें पढ़ कर ज्ञान अर्जित करने का शौक दोनो का एक समान ही था। हफ्ते में एक बार उन तीनो का मिलना होता था और तीनों में आपसी समझ का एक शानदार रिश्ता था।

आदित्य की किताबों की दुकान में उसका एक बचपन का दोस्त भी काम करता था जिसका नाम चंपक था और चंपक की शिक्षा सिर्फ स्कूल तक ही सीमित रह गई थी और वो बहुत ही हसमुख प्रकृति का इंसान था और आदित्य उसे अपने परिवार का हिस्सा ही समझता था। चंपक दिखने में एक कामिक कैरेक्टर की तरह दिखाई देता था और वो आदित्य का एक अच्छा दोस्त था।

आज सुबह आदित्य ने चाय पीते पीते अचानक अपने फ्लैट की खिड़की से देखा कि उसकी दुकान के निकट लगे एक वृक्ष पर एक चिड़ियों का घोंसला था जो तेज़ हवाओं की वजह से बस गिरने के करीब ही था। यह देख कर आदित्य एक सीढ़ी की मदद से उस वृक्ष के ऊपर चढ़ा था और उसने चिड़ियों के उस घोंसले को कुछ डालियों के बीच में फिर से सुरक्षित स्थापित कर दिया था और जब वो इस बात से संतुष्ट हो गया था कि अब यह घोंसला किसी भी हालत में नीचे नहीं गिरेगा तब वो सीढ़ी से नीचे उतर आया था। इस सारी घटना को एक बहुत सुंदर लड़की बहुत ध्यान से देख रही थी और उस पल उसके चेहरे एक कोमल सी मुस्कराहट आ चुकी थी। वो दुकान पर अपने लिए कुछ किताबें खरीदने के लिए आई थी और जब तक आदित्य सीढ़ी से नीचे उतरता वो किताबों की दुकान के भीतर प्रवेश कर चुकी थी और वो लड़की दुकान की साफ सफाई और किताबों को व्यवस्थित ढंग से रखा हुआ देखकर किताबों की दुकान से बहुत प्रभावित दिखाई दे रही थी। बहुत सी किताबों को देखने के बाद उस लड़की ने अपने लिए एक किताब चुन कर बाहर निकाली थी और बीच बीच में उसकी निगाहें आदित्य की तरफ भी उठ जाती थी जो अपने काउंटर पर बैठा हुआ किसी किताब को पढ़ने में ध्यान मग्न था। उस लड़की ने बातचीत करने की कोशिश करते हुए आदित्य से पूछा था "क्या आपने इस किताब को पढ़ा है" तब आदित्य ने पहली बार अपनी नज़र उठाकर उस लड़की की ओर देखा था और बिना उसकी खूबसूरती से प्रभावित हुए उसने किताब को देखते हुए उस लड़की से कहा था "अगर आप इस विषय में कोई किताब पढ़ना चाह रही हैं, तो मैं आपको इससे बेहतर एक किताब का सुझाव दूंगा" और यह कहते हुए आदित्य ने अपनी बुक शेल्फ में से एक किताब निकाली थी और उसे उस लड़की के

हाथों में थमा दिया था। उस लड़की ने उस किताब के कुछ पन्ने पढ़े थे और फिर उस लड़की ने बहुत ध्यान से आदित्य की ओर देखा था और उस पल उसके चेहरे पर बहुत मीठी सी मुस्कान उभर आई थी और उसने जल्दी से उस किताब की कीमत अदा कर दी थी और आदित्य को धन्यवाद भी कहा था। इस बीच चंपक उस खूबसूरत लड़की को बहुत ध्यान से देख रहा था। उस लड़की ने किताबों की दुकान से बाहर निकलने से पहले आदित्य से पूछा था कि कोने में पड़े उस लकड़ी के बाक्स का क्या किस्सा है तब आदित्य ने मुस्कराते हुए उस लड़की को सब कुछ कह सुनाया था कि उसने वह लकड़ी का बाक्स क्यों रखा है और आदित्य की बातें सुनकर वो लड़की बहुत प्रभावित दिखाई दे रही थी और वो मुस्कराती सी दुकान से बाहर निकल गई थी और इस बीच पहली बार आदित्य को उस लड़की के खूबसूरत होने का अहसास हुआ था और वो उसको तब तक देखता रहा था जब तक कि वो उसकी आंखों के सामने से ओझल नहीं हो गई थी। तब उसके पीछे खड़े चंपक ने आदित्य से कहा था "उस्ताद ये लड़की तुम्हें बहुत ध्यान से देख रही थी, जब तुम अपनी किताब पढ़ने में खोए हुए थे" पर आदित्य अपने दोस्त की बात सुनकर सिर्फ मुस्कराया था और वो फिर से अपनी किताब के पन्ने पलटने लगा था। तब चंपक ने झुंझला कर उससे कहा था कि "यार कभी तो तुम किताबों की दुनिया से बाहर निकला करो" पर आदित्य ने अपने दोस्त की बात को बिलकुल अनसुना कर दिया था।

अगले ही दिन वह लड़की अपनी कार पर दो बड़े बाक्स भर कर पुरानी किताबे के लेकर दुकान पर आई थी और उसने आदित्य से मदद मांगी थी कि वो किताबों के उन भारी बाक्स को उठने में उसकी मदद करे और यह बात सच थी कि आदित्य को जितनी खुशी पुरानी दान की हुई किताबों को देख कर होती थी उतनी खुशी उसे अपनी किताबें बेच कर मुनाफा कमाने पर भी नही होती थी।

उस लड़की के दिल को आदित्य की यह बात छू गई थी, जब कल आदित्य ने उससे यह कहा था, कि "अनाथ बच्चों को पैसे से अधिक, उन लोगों की जरूरत हैं जो उनसे मिलें और उनसे बातचीत करें" और उसे आदित्य की यह बात भी बहुत अच्छी लगी थी कि "जब बच्चे किताबें पढ़ेंगे तब उन्हें ज्ञान के साथ साथ आत्मसम्मान की परिभाषा भी समझ आएगी और किताबों के ज्ञान से उनको खुद अपने पैरों पर खड़े होने की प्रेरणा मिलेगी" और उस पल वह लड़की मन ही मन में सोच रही थी कि यह वास्तव में आदित्य की बहुत कमाल की सोच थी।

आदित्य और उस लड़की ने मिल कर किताबों से भरे उन दो भारी बक्सों को, दुकान के भीतर एक कोने में रख दिया था और उस लड़की ने आदित्य से कहा था कि "जब आप बच्चों के उस अनाथालय में जायेंगे, तो मुझे भी बताइएगा, मैं भी आपके साथ वहां पर जाना चाहूंगी" आदित्य उन किताबों को देख कर बहुत खुश था और उसने उस लड़की की ओर देखा था और उससे कहा था "जी जरूर, मैं हर रविवार वहां पर जाता हूं और अगर आप भी वहां जाना चाहती हैं, तो यह बच्चों के लिए बहुत अच्छी बात होगी, हम अगले रविवार को एक साथ चले चलेंगे" इस बीच वो लड़की बहुत ध्यान से आदित्य को देख रही थी और उस पल आदित्य का सारा ध्यान उन पुरानी किताबों पर ही लगा हुआ था और यह देख कर मिथिला मुस्कराए बिना नहीं रह सकी थी। उसे उसी पल इस बात का अहसास हो गया था कि आदित्य साधारण लडको की तरह बिलकुल भी नहीं है। रविवार को जब दुकान से बहुत सी पुरानी किताबें लेकर वो अनाथालय जाने के लिए निकले थे तब आदित्य के साथ उस खूबसूरत लड़की को जाते देख कर चंपक ने साथ जाने से मना कर दिया था और उसने बहाना बना दिया था कि उसे घर पर कुछ काम है और जब वो दोनो वहां से निकले थे तब चंपक ने मन ही मन में कहा था "कम से कम आज तो उस्ताद जी को इस लड़की की ओर देखना ही पड़ेगा, नहीं तो ये जीवन भर कुंवारा ही रह जायेगा" चंपक अपने दोस्त को बहुत अच्छी तरह से जानता था कि उसके दोस्त की तरह अच्छी सोचें रखने वाला इस दुनिया में बहुत कम इंसान है। चंपक मन ही मन में आदित्य का बहुत सम्मान करता था।

उस लड़की ने आदित्य को अपना नाम मिथिला बताया था और मिथिला के मिलनसार व्यवहार की वजह से जल्दी ही उन दोनो में दोस्ती हो गई थी और उस पल मिथिला ने मुस्कराते हुए आदित्य को यह भी बताया था कि उसके माता पिता USA में रहते हैं और वो हिन्दुस्तान घूमने के लिए आई हुई है और मिथिला ने आदित्य को यह भी बताया कि उसके माता पिता उसे प्यार से मीठी कहते हैं तब कार चलाते चलाते मुस्करा कर आदित्य ने मिथिला की ओर देखा था और उस पल दोनो ही मुस्करा दिए थे।

मिथिला यह देख कर हैरान रह गई थी कि उस अनाथालय में छोटे बड़े लगभग 400 बच्चे थे और वहां पर एक हिंदी मीडियम स्कूल भी था जिस स्कूल में 12वीं कक्षा तक की शिक्षा की व्यवस्था थी। उस पल मिथिला आदित्य को बहुत ध्यान से देख रही थी

जो बच्चों को किताबें दिखाने में और उन्हें उन किताबों की उपयोगिता के बारे में बताने में व्यस्त था और मिथिला को आदित्य का ऐसा करना बहुत अच्छा लगा था और उस पल उस अनाथालय और स्कूल के स्वच्छ वातावरण को देख कर मिथिला ने मन ही मन में यह फैसला कर लिया था कि वो हर रविवार को यहां पर बच्चों के साथ अपना समय व्यतीत किया करेगी। मिथिला देख रही थी कि आदित्य वहां पर उपस्थित सब बच्चों को एक शिक्षक की भांति समझा रहा था और उसके समझाने का अंदाज़ बहुत ही शानदार था और सब छोटे बड़े बच्चे उसकी बातों को बहुत ध्यान से सुन रहे थे और उस पल वहां पर अनाथालय के स्कूल के बहुत से शिक्षकगण भी उपस्थित थे। आदित्य सब बच्चों को किताबें पढ़ते रहने के लिए उत्साहित कर रहा था और आदित्य का यह रूप देख कर मिथिला को बहुत अच्छा लगा था। उस समय मिथिला अपने साथ एक कैमरा भी लेकर आई थी और उसने आदित्य और वहां पर उपस्थित शिक्षकों की अनुमति से, उन खूबसूरत लम्हों की बहुत सी तस्वीरें खींच ली थी। अनाथालय से जब वो दोनो वापिस लौट रहे थे तब मिथिला ने आदित्य को कॉफी पीने की इच्छा ज़ाहिर की थी और आदित्य ने एक प्राकृतिक सौंदर्य से घिरी जगह को देख कर अपनी कार वहीं पर रोक दी थी। तब मिथिला ने कॉफी पीते पीते जिज्ञासावश आदित्य से उसके बारे में पूछताछ आरंभ कर दी थी कि "आप किस कालेज में पढ़ते थे और आपका बचपन कहां पर बीता था और आपके घर पर और कौन कौन हैं" पहले आदित्य उसके इस तरह के सवाल जवाब पूछने से थोड़ा हैरान हुआ था पर वो बहुत भोला भाला और मासूम इंसान था और उसने मिथिला को अपने बारे में सब कुछ बता दिया था, पर साथ ही उसने मिथिला की आंखों में बहुत गहराई से देखते हुए उससे कहा था "आज आप अचानक मुझसे बहुत से व्यक्तिगत सवाल पूछ रही हैं, मामला क्या है" और यह कह कर वो खुद भी मुस्कराने लगा था।

तब मिथिला ने भी हंसते हुए आदित्य से कहा था "क्या अपको मुझ से डर लग रहा है" तब आदित्य ने मिथिला से कहा था "नही, पर आपके यूं पूछताछ करने से मैं थोड़ा हैरान जरूर हुआ हूं" तब मिथिला ने बात बदलते हुए आदित्य से कहा था "क्या तुम मुझे अपना कालेज दिखाओगे, मैं देखना चाहती हूं कि भई वो कौन सा कालेज है जहां से स्कॉलर आदित्य ने पढ़ाई की हैं" और यह कह कर मिथिला खुद ही हंसने लगी थी।

मिथिला की ज़िद पर आदित्य ने उसे मसूरी में स्थित अपना पुराना घर दिखाया था जहां पर उसका बचपन बीता था और उसने उसे मसूरी का वो स्कूल भी दिखाया था जहां पर उसने पढ़ाई की थी और मिथिला अपने कैमरे से उन सब स्थानों की तस्वीरें लेती जा रही थी और इस बीच उसने अपने कैमरे से आदित्य की भी बहुत सी तस्वीरें खींच ली थी। एक साथ बच्चों के अनाथालय जाने की वजह से उन दोनो के बीच मुलाकातें होने लगी थी और आदित्य के दोस्त चंपक को लगा कि उसके दोस्त का रिश्ता इसी लड़की के साथ जुड़ने वाला है और चंपक अपने दोस्त के लिए बहुत खुश था और उसने इन मुलाकातों की जानकारी आदित्य की बड़ी बहन मधु को भी दे दी थी और उनसे कहा था "दीदी आदित्य के विवाह की तैयारी शुरू कर दीजिए, आदित्य को विवाह करके के लिए एक योग्य लड़की मिल गई है जिससे उसकी हर रोज़ मुलाकात हो रही है" तब मधु ने आदित्य को फोन करके उससे पूछा था "आदित्य ये मैं क्या सुन रही हूं तुम किसी लड़की को डेट कर रहे हो और हमें इसकी जानकारी बाहर से मिल रही है" यह मधु की अपने छोटे भाई को मीठी सी झिड़की थी। तब आदित्य समझ गया था कि हो न हो इस बात की जानकारी जरूर चंपक ने उसकी बहन को दी होगी तब आदित्य ने अपनी बहन से कहा था "मैं जल्दी ही उसे आप से मिलवाने के लिए लेकर आऊंगा" और इस बीच आदित्य ने मिथिला से बातचीत करके उसे इस बात की जानकारी दी थी कि "मेरी बड़ी बहन तुमसे मिलना चाहती है" यह जानकर मिथिला बहुत खुश हुई थी और एक दिन अपनी बहन के निमंत्रण पर आदित्य मिथिला को साथ लेकर अपनी बड़ी बहन के घर पर पहुंचा था और मिथिला से मिल कर आदित्य की बहन बहुत खुश हुई थी। वही मिथिला को भी मधु से मिलने पर यह समझ आ गया था कि आदित्य के परिवार में सब लोग बहुत अधिक पढ़े लिखे और स्कॉलर हैं। मधु ने डिनर में बहुत से पकवान बनाए थे और हल्की फुल्की बातचीत करते करते रात के 11 बज गए थे, तब आदित्य की बहन ने आदित्य से कहा था कि "तुम मिथिला को इनके घर पर छोड़ कर आओ" और आदित्य की बहन ने इस बीच आदित्य के निकट जा कर उसके कान में यह कह दिया था कि "मिथिला बहुत प्यारी लड़की है और उन्हें वो बहुत पसंद आई है" यह सुन कर आदित्य मुस्कराने लगा था और जब मिथिला और आदित्य ने अपनी बहन और जीजा जी से, अपने घर जाने के लिए इजाज़त ली, तब उसकी बहन और जीजा जी ने उन दोनो से कहा "हम जल्दी ही फिर मिलेंगे और फिर बहुत सी बातें करेंगे" और थोड़ी सी

बातचीत के बाद आदित्य और मिथिला ने वहां से विदा ली थी और कुछ दूर तक वो दोनों बातें करते करते पैदल ही निकल गए थे और रास्ते में आदित्य ने मिथिला से कहा था कि "मेरी बहन को तुम बहुत अच्छी लगी हो" तब मिथिला ने मुस्कराते हुए आदित्य से कहा था कि "तुम्हारी बहन और जीजा जी भी बहुत अदब वाले बहुत शानदार इंसान हैं" और उसने मुस्कराते हुए आदित्य से कहा था कि मैंने इतने अधिक पढ़े लिखे और प्यारे परिवार की कभी कल्पना भी नही की थी। पर इस बीच आदित्य और उसकी बहन की अनुमति से मिथिला ने उस रात्रि भोज की बहुत सी तस्वीरें भी ले ली थी जो उसकी ज़िंदगी के यादगार पल थे और इस बीच मिथिला की आदित्य की बहन से दो तीन और मुलाकातें भी हुई थी और मिथिला के बार बार पूछने पर मधु ने उसे अपने परिवार की बहुत सी तस्वीरें दिखाई थी जिसमें आदित्य की बचपन की तस्वीरें भी थी और मिथिला ने मधु की आज्ञा लेकर उस अलबम में से कुछ तस्वीरों को अपने कैमरे में कैद कर लिया थी। अब तक मधु और मिथिला एक दूसरे से बहुत हिल मिल गए थे और मधु ने उसे आदित्य के बारे में बताया था कि उसके भाई को किताबे पढ़ना कितना अच्छा लगता है। तब मिथिला ने मधु से गले मिलते हुए उससे कहा था "दीदी हम जल्दी ही फिर मिलेंगे" और यह कहते समय उसके चेहरे पर बहुत प्यारी सी मुस्कान आ गई थी।

अगले ही दिन मिथिला ने आदित्य को फोन करके बताया कि उसने एक फिल्म की टिकटें बुक की हैं और उसने फोन पर ही आदित्य से कहा था "तुम उस सिनेमा घर में पहुंच जाओ, मैं वहीं आ रही हूं" आदित्य को फिल्मे देखना कोई इतना भी पसंद नही था पर मिथिला के कहने पर वो वहां पहुंच गया था और उसने देखा कि उस पल मिथिला बहुत खूबसूरत लग रही थी। मिथिला ने सिनेमाघर में आते ही आदित्य की बाहों में बाहें डाल कर सिनेमा घर में प्रवेश किया था और भीतर जाने से पहले, उन्होंने पापकार्न भी खरीदे थे और उस पल मिथिला बहुत खुश दिखाई दे रही थी। वो एक अंग्रेज़ी फिल्म थी और उस पल आदित्य का सारा ध्यान फिल्म पर ही लगा हुआ था पर मिथिला का सारा ध्यान उस पल आदित्य पर था, जो बहुत गंभीरता से फिल्म देख रहा था और यह देख कर मिथिला के चेहरे पर मुस्कान आ गई थी और इस बीच उसने अपना एक हाथ आदित्य के हाथ पर रख दिया था और अपना सिर आदित्य के कंधे पर रख दिया था और मिथिला का सारा ध्यान उस पल आदित्य की ओर ही था, जो उस पल बहुत गंभीरता से फिल्म के डायलॉग सुन रहा था। फिल्म समाप्त होने के बाद दोनो ने मसूरी के

एक शानदार होटल में डिनर किया था और उस समय रात के 10 बजने को थे और चारों तरफ धुंध दिखाई दे रही थी और थोड़ी सर्दी भी बढ़ चुकी थी। जब आदित्य ने मिथिला को उसके घर के बाहर छोड़ा तब मिथिला ने पता नही क्यों कुछ भावुक होकर आदित्य को अपने गले से लगा लिया था और आदित्य को उस पल मिथिला की आंखों में नमकीन पानी की कुछ बूंदें दिखाई दी थी जिसे मिथिला ने बहुत सफाई से छिपा लिया था और उस पल आदित्य से विदा लेते समय मिथिला ने बहुत भावुक होकर आदित्य से कहा था "हम जल्दी ही फिर मिलेंगे" और यह कह कर वो बहुत तेज़ी से अपने घर के भीतर चली गई थी।

आदित्य कुछ हैरान सा अपने घर वापिस लौट आया था और उस पल उसका दोस्त चंपक भी वही था। जब चंपक ने आदित्य को सोचता सा देखा, तब उसने आदित्य से पूछा था "क्या बात है तुम कुछ परेशान लग रहे हो" तब आदित्य ने कुछ सोचते हुए अपने दोस्त से कहा था "नही कुछ खास बात नही है" तब बहुत पूछने पर आदित्य ने चंपक को बताया कि मिथिला थोड़ी परेशान सी लग रही थी पता नही इस बात की क्या वजह होगी तब चंपक ने आदित्य को दिलासा देते हुए कहा था "शायद उसके घर की कोई घरेलू समस्या रही होगी जिसकी वजह से वो तुम्हें परेशान दिखाई दी होगी" पर आदित्य का मन यह मानने को तैयार नहीं था और सारी रात वो यह ही सोचता रहा कि आखिर ऐसी क्या बात थी कि जिससे मिथिला उसे थोड़ी परेशान दिखाई दी थी और यह सोचते सोचते मालूम नही कब उसकी आंख लग गई थी।

अगले दिन जब आदित्य ने मिथिला को फोन किया तब फोन पर जवाब नदारद था, फोन किसी ने भी नहीं उठाया था और उस पल जिज्ञासावश आदित्य उस घर में गया तो उसे पता चला कि मिथिला वहां पर पेइंग गेस्ट थी और वो आज सुबह अपना सारा सामान लेकर वहां से जा चुकी थी। यह सुनकर आदित्य को बहुत गहरा सदमा लगा था और वो अपने घर पर निराश लौट आया था। तब चंपक ने अपने दोस्त को हिम्मत देते हुए कहा था "यार मैंने उसकी आंखों में तेरे लिए बहुत प्यार देखा था वो किसी को धोखा नहीं दे सकती" तब तक आदित्य की बहन और जीजा जी भी आदित्य के घर पर आ गए थे और वो भी इस बात से बहुत हैरान थे और आदित्य की बहन ने भी यही कहा था कि मिथिला कभी भी किसी को धोखा नहीं दे सकती शायद उसकी कोई मजबूरी रही होगी। घर के सब सदस्य उस पल बहुत हैरान परेशान थे कि तभी फोन की घंटी बजी और

यह मिथिला का ही फोन था और उसने फोन पर सबसे पहले सब लोगों से माफी मांगी थी और उसने कहा था कि वो लगभग एक महीने के बाद वापिस मसूरी आयेगी और उन्हें अपने यूं अचानक चले आने की वजह भी बताएगी। फोन पर मिथिला की आवाज़ सुनकर आदित्य की जान में जान आई थी और उस पल उसने मिथिला से सिर्फ इतना ही कहा था "तुम अपना ध्यान रखना और जल्दी वापिस लौट कर आना, मैं तुम्हारा बहुत बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं" तब कुछ पल उस तरफ खामोशी छाई रही थी और फिर उसने आदित्य से पूछा था "तुम मुझ से नाराज़ तो नही हो" और आदित्य को मिथिला की रुआंसी सी आवाज़ सुनकर इस बात का अहसास हो गया था कि मिथिला इस समय बहुत भावुक हो चुकी है और आदित्य ने जल्दी से उससे कहा था "मैं तुमसे बिलकुल भी नाराज़ नहीं हूं" फोन पर मिथिला और आदित्य की बातचीत को सुनकर, चंपक, मधु और जीजा जी के चेहरे पर मुस्कराहट आ चुकी थी और वो समझ गए थे कि उलझन सुलझ चुकी है और अब आदित्य खुश है।

इस तरह मिथिला का इंतज़ार करते करते लगभग एक महीना बीत गया था और एक दिन जब आदित्य अपनी दुकान पर रैक के भीतर कुछ नई किताबे रख रहा था तब अचानक मिथिला ने दुकान के भीतर प्रवेश किया था और उसने आदित्य को अपने गले से लगा लिया था। उस पल आदित्य सब गिले शिकवे भूल गया था और उसने एक बार भी मिथिला से यह पूछने की कोशिश नही की थी कि मिथिला को ऐसी कौन सी मजबूरी आन पड़ी थी कि वो सब को हक्का बक्का छोड़ कर चली गई थी। मिथिला ने आते ही आदित्य से माफी मांगी थी और दीदी से मिलने की इच्छा ज़ाहिर की थी, आदित्य ने उसी पल अपनी बहन मधु को फोन करके बता दिया था कि मिथिला आ चुकी है और वो आप सब से मिल कर माफी मांगना चाह रही है, तब दूसरी तरफ से मधु ने हंसते हुए आदित्य से कहा था कि "मिथिला से कहो कि माफी छोड़े और सीधा घर पर डिनर पर चली आए और अब हम सब वहीं बैठ कर बातें करेंगे" मिथिला के वापिस आ जाने से घर का माहौल बदल गया था और चंपक ने जल्दी से दुकान बंद कर दी थी और वो भी उनके साथ ही दीदी के घर पर डिनर करने के लिए रवाना हो गया था।

मिथिला ने सबसे पहले मधु से गले मिल कर माफी मांगी थी और उस पल मधु के चेहरे पर खुशी के भाव थे और उसके चेहरे की खुशी को देख कर इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता था कि उसे मिथिला से कोई गिला शिकवा नहीं था।

डिनर टेबल सज गया था, तब मिथिला ने अपने पर्स में से गिफ्टपैक किया हुआ एक तोहफा निकला था और उसने वह तोहफा आदित्य के हाथों पर रख दिया था।

उस पल आदित्य के साथ साथ सब हैरान हुए थे कि उस गिफ्ट पैक में ऐसा क्या होगा और उस समय मिथिला की मुस्कराहट कुछ और अधिक गहरी हो चुकी थी। जब आदित्य ने बहुत सावधानी से उस गिफ्ट पैक का पेपर निकाला तो उसने देखा कि उसमें एक किताब थी और वो किताब अंग्रेज़ी भाषा में लिखी हुई थी, जिसके मुख्य पृष्ट पर उसकी एक खूबसूरत सी तस्वीर छपी हुई थी और उस किताब के नीचे लिखा था "A Very Special person Aditya Srivastav" और यह किताब आदित्य की विचारधारा के ऊपर लिखी गई थी और उस किताब में आदित्य की बहुत सी तस्वीरें भी थी और उस किताब के नीचे लेखिका के तौर पर मिथिला का नाम लिखा हुआ था। सब बहुत हैरानी से उस किताब को देख रहे थे तब मिथिला ने उन सब को बताया कि इस किताब को हिन्दी में भी प्रकाशित किया गया है और तब मिथिला ने सब को यह बताया कर हैरान कर दिया कि वो एक लेखिका है और अपनी किताबों की जानकारी लेने के लिए ही वो आदित्य की दुकान पर गई थी और आदित्य ने मुझे मेरी ही लिखी किताब बेच दी थी और यह कह कर मुस्कराते हुए उसने वह किताब निकाली थी और सबके सामने रख दी थी। सब मिथिला की बातें सुनकर मुस्करा रहे थे और आदित्य उस पल झेंप सा गया था, तब आदित्य ने उस किताब को ध्यान से देखा था जिस पर मिथिला की तस्वीर के साथ साथ उसका नाम भी लिखा हुआ था तब आदित्य ने मिथिला से कहा था "पर तुम्हें मुझे उसी पल बताना चाहिए था कि यह किताब तुम्हारी लिखी हुई है" उस पल मिथिला ने मुस्कराते हुए आदित्य की ओर देख कर कहा था, "अगर मैं तुम्हें उस पल यह बता देती कि मैं एक लेखिका हूं, तब मुझे इतनी खूबसूरत कहानी नहीं मिलती" सब मिथिला की बातें सुनकर मुस्करा रहे थे, तब मिथिला ने उन्हें बताया कि "इस नई किताब का पहला संस्करण हाथों हाथ बिक चुका है और लोग उसे फोन करके आदित्य के बारे में पूछ ताछ कर रहे हैं कि आदित्य कौन है और आपको कहां मिला" और मिथिला ने मुस्कराते हुए सबको बताया कि "बहुत से लोगों ने मुझे फोन करके यह भी कहा है कि अब वो भी आदित्य की विचार धारा को अपनाएंगे और उसकी तरह ही अपनी दुकान के बाहर एक लकड़ी का बाक्स रखेंगे और लोगों की दान में दी हुई किताबें इकट्ठी करेंगे और फिर उन किताबों को अनाथालय और दूर दराज के स्कूलों में भेजेंगे

और बच्चों को किताबें पढ़ने के लिए उत्साहित करेंगे" तब उस पल पास बैठे हुए चंपक ने सबकी ओर देखते हुए बहुत गर्व से कहा था "मुझे पहले से ही पता था कि एक दिन मेरा दोस्त सारे हिंदुस्तान में प्रसिद्ध हो जाएगा" चंपक की बात सुनकर सब मुस्करा रहे थे और भीतर से सब इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानते थे कि आदित्य को प्रसिद्ध होने की कोई खास तमन्ना नहीं थी। उन्हीं खूबसूरत लम्हों में आदित्य की बहन ने अपने पर्स में पड़ी दो अंगूठियाँ निकाली थी और उन्हें आदित्य और मिथिला के सामने रख दिया था और उन सुनहरी लम्हों में आदित्य और मिथिला ने एक दूसरे की ओर मुस्करा कर देखा था और फिर उन्होंने वह अंगूठियाँ एक दूसरे की उंगलियों में पहना दी थी और यह देख कर सब खड़े होकर तालियाँ बजाने लगे थे और उन खूबसूरत लम्हों में अपनी खुशी को प्रकट करने के लिए,सब लोग आपस में जूस के गिलास एक दूसरे के गिलासों के साथ टकराने लगे थे और बेशक यह आदित्य, मिथिला, मधु और उसके पति की जिंदगी के सबसे हसीन पल थे और उन खुशी भरे लम्हों में चंपक तालियां बजा कर अपनी खुशी का इज़हार कर रहा था।

समाप्त

कहानी 13: खंडहर बोल उठे

यह एक पुराने किले की कहानी थी जिस किले की दीवारें सदियाँ बीत जाने की वजह से जगह जगह से टूट चुकी थी और उस वर्षों पुराने किले की सुंदरता अभी भी कम नही हुई थी। वह पुराना सा खंडहर नुमा किला अभी भी बेहद खूबसूरत दिखाई देता था और अभी भी उस खंडहर नुमा किले को देखने वालों की भीड़ लगी रहती थी और आज भी वह खंडहर नुमा किला पर्यटकों के आकषर्ण का मुख्य केंद्र था और आज भी लोग उस खंडहर की तस्वीरें खींच रहे थे और सब लोग यह सोच कर थोड़े हैरान थे कि वर्षों पहले इतनी ऊंचाई पर इस किले का निर्माण कार्य कैसे हुआ होगा। आज भी यहां पर लोगों का मेला सा लगा हुआ था और देश विदेश से आए लोग उस खंडहर नुमा किले की चारों तरफ से तस्वीरें खींच रहे थे।

पर उसी खंडहर नुमा किले के एक कोने में, खंडहर की दीवार से सट कर, एक गरीब परिवार ने अपने कुछ फटे पुराने कपड़ों को जोड़ कर एक छोटा सा घर बनाया हुआ था, जिस घर की छत से बारिश का पानी बूंद बूंद करके नीचे गिरता रहता था और उस किले

के बहुत ऊंचाई पर होने की वजह से, वहां की सर्द हवाओं में बदन को ठिठुरा देने वाली ठंड भी थी और यह बहुत दुख की बात थी कि उस ठंड से बचने के लिए उस गरीब परिवार के पास कोई विशेष साधन नहीं थे। उस घर के एक कोने में एक टूटी सी चारपाई पर एक बूढ़ी औरत सोई हुई थी और उस बूढ़ी औरत का लगभग आठ वर्षीय पोता लालसा भरी निगाहों से वहां पर आते जाते लोगों की ओर देख रहा था पर किसी का भी उसकी ओर ध्यान नही गया था। वहां पर उपस्थित सब लोग मौज मस्ती कर रहे थे और खा पी रहे थे और अपने परिवार के साथ तस्वीरें खींचने में व्यस्त थे।

उस गरीब बालक के माता पिता का कुछ महीने पहले ही एक दुखद दुर्घटना में देहांत हो गया था और अब उसकी दादी भी बहुत बीमार रहने लगी थी और यह बहुत दुख की बात थी कि अकाल पड़ने की वजह से अब यह किसान परिवार पूरी तरह से उस पर्यटक स्थल पर आने वाले लोगों के रहमोकर्म पर पड़ा हुआ था और अब शायद यह परिवार समाप्त होने की कागार पर खड़ा था। जहां पर एक तरफ, उस स्थान की अदभुत सुंदरता दिखाई दे रही थी वहीं पर दूसरी तरफ मायूसी और दरिद्रता की एक दुखद तस्वीर भी दिखाई दे रही थी और यह बहुत दुख की बात थी कि किसी का भी उस परिवार की ओर ध्यान नही था। वह बालक फटेपुराने कपड़े पहने हुए आते जाते लोगों को खामोश निगाहों से देख रहा था और उसकी मासूम आंखों को देख कर कुछ ऐसा लगता था जैसे उस बालक में बचपन की ख्वाहिशें जन्म लेने से पहले ही दम तोड़ चुकी थी।

शायद वह बालक अब तक अपनी परिस्थितियों को बहुत भली भांति समझ चुका था और इस समय वो अकेला बैठा हुआ वहां पर आए हुए बच्चों को हंसते खेलते देख रहा था और उस पल वो बहुत मायूस दिखाई दे रहा था।

तभी वहां पर एक आवाज़ गूंजी थी "क्या हुआ दोस्त, तुम यूं चुपचाप से क्यों बैठे हुए हो, क्या तुम खुद को अकेला महसूस कर रहे हो" इस आवाज़ को सुनकर वह बालक चौंक गया था और उसने अपने चारों ओर आश्चर्य से देखा था और फिर उस आवाज़ से पूछा था "कौन हो तुम, तुम मुझे दिखाई क्यों नहीं दे रहे" पर भीतर से वह बालक खुद को दोस्त कहे जाने की वजह से बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहा था।

वह आवाज़ फिर गूंजी और उस आवाज़ ने उस बालक से कहा "मैं किला हूं जो वक्त की वजह से अब खंडहर में बदल चुका हूं" उस आवाज़ में अब थोड़ी उदासी झलक रही थी।

उस बालक ने अपने चेहरे पर आश्चर्य के भाव लिए हुए उस खंडहर से कहा था "तुमने मुझे दोस्त कहा" कुछ पल खामोश रहने के बाद वह आवाज़ फिर गूंजी थी और उस आवाज़ ने कहा "हां दोस्त, आज से तुम मेरे मित्र हो और तुम्हारी स्थिति भी ठीक मेरी तरह ही है तुम भी मेरे जैसी परिस्थितियों में से गुज़र रहे हो और मैं कुछ महीनों से तुम्हारे परिवार के दुखद हालत देखता आ रहा हूं" फिर क्षण भर रुक कर उस खंडहर की आवाज़ फिर गूंजी थी "तुम वास्तव में बहुत बहादुर हो दोस्त" इतना कह कर वह खंडहर खामोश हो गया था पर उसकी बातों से कुछ ऐसा अहसास होता था जैसे वो उस गरीब बालक का उत्साह बढ़ाने की कोशिश कर रहा था।

उस बालक ने अपने चेहरे पर आश्चर्य के भाव लिए उस खंडहर से पूछा था "तुम्हारी और मेरी परिस्थिति एक जैसी कैसे है" तब उस खंडहर ने उस बालक से कहा था "मेरी दीवारें जगह जगह से टूट चुकी हैं और अब मैं एक आलीशान किले से एक खंडहर में बदल चुका हूं, पर लोग मेरी तस्वीरें लेने आते हैं और अपना मनोरंजन करके वापिस लौट जाते हैं पर मेरे इन हालातों की ओर कभी भी किसी का ध्यान नही जाता और सब मेरी टूटी दीवारों में सुंदरता देखते हैं और मेरी टूटी हुई दीवारों को कला का एक नमूना समझते है और वही लोग, तुम्हारी भी तस्वीरें खींचते है और तुम्हारे घर के टूटे फूटे बर्तनों में, तुम्हारी टूटी हुई चारपाई में और तुम्हारे मिट्टी के चूल्हे में, कला को खोजते हैं और उन तस्वीरों को कलाकृति के तौर पर अपने आलीशान घरों की दीवारों पर सजाते हैं और बहुत दुख की बात है कि उन लोगों में से कभी भी किसी का ध्यान हमारे हालातों की ओर नही जाता" इतना कह कर वह खंडहर खामोश हो गया था और वह बालक भी चुपचाप बैठा उसकी सब बातें सुन रहा था और उस पर विचार कर रहा था और उसे खंडहर की कही बातों में सच्चाई दिखाई दे रही थी।

कुछ सोच कर उस बालक ने खंडहर से कहा था "हां यह तो सच है दोस्त पर क्या हमारी परिस्थिति कभी बदलेंगी" और इतना कह कर वह बालक उस ऊंचे खंडहर से बहुत दूर नीचे देखने लगा था जहां पर जगमगाती लाइटें दिखाई दे रही थी और लाखों

लोग आतिश बाज़ी कर रहे थे और त्यौहार मना रहे थे और जैसे वह दृश्य उन दोनो की भावनाओ पर बहुत गहरा मानसिक आघात था जिस आघात की सच्चाई को समझने के लिए किसी की आंखों में प्रेम का होना बहुत आवश्यक था, पर यह इस मशीनी युग की एक कड़वी सच्चाई थी कि इस मशीनी युग में इतना सोचने समझने का किसी के पास भी वक्त नहीं था।

वह खंडहर भी यही दृश्य देख रहा था और वह उस छोटे बालक को नई ऊर्जा देने का प्रयास कर रहा था, तब उस खंडहर ने कुछ सोचते हुए उस बालक से कहा था "दोस्त, समय एक समान कभी नही रहता, हमारा समय भी कभी न कभी बदलेगा, जब किसी परोपकारी की निगाह हम पर पड़ेगी, जब हमें देख कर किसी की आंखों में प्रेम जगेगा, जब कोई हमारी तरफ दया से देखेगा और जब लोगों के दृष्टिकोण बदलेंगे तब निश्चित तौर पर हमारा समय भी बदलेगा" फिर कुछ सोच कर, उस खंडहर ने बालक से कहा था "पर दोस्त, मैं तुम्हें अपने दोस्त के रूप में पा कर बहुत खुश हूं क्या तुम मुझ से दोस्ती करके प्रसन्न हो" उस खंडहर को उस छोटे बच्चे से बहुत सहानुभूति हो गई थी और उसे उस छोटे बालक पर बहुत प्रेम आ रहा था।

अब तक दूर अनंत में देखते हुए उस बालक का ध्यान भी टूटा था और उसने उस खंडहर से कहा था "हां, मैं तुम्हारी मित्रता पाकर बहुत गर्व का अनुभव कर रहा हूं, कहां तो लोग तुम्हें देखने के लिए इतनी दूर चल कर आते हैं और तुम्हें निकट से देखना चाहते हैं और तुम मुझे अपना मित्र समझते हो, यह तो मेरे लिए बहुत गर्व की बात है, मैं तुम्हें अपने मित्र के तौर पर पाकर बहुत खुश हूं" वह छोटा बालक अपनी गरीबी की वजह से और जीवन के कड़वे अनुभवों की वजह से अब तक जीवन के बहुत से रहस्यों से परिचित हो चुका था और उसके उन अनुभवो ने उसे सबका सम्मान करना सिखाया था।

तभी उस बालक को अपनी दादी के कराहने की आवाज़ सुनाई दी थी और वह बालक उस खंडहर से बोला था "दोस्त मैं अभी वापिस लौटकर आता हूं, शायद मेरी दादी को कुछ चाहिए होगा" यह कह कर वह बालक एक ओर जाने लगा था। तब उस खंडहर ने उस बालक से कहा था "क्या तुम्हारी दादी बहुत अधिक बीमार है" उस पल खंडहर के स्वरों में बहुत सहानुभूति झलक रही थी।

"हां बीमार तो है" उस बालक ने बहुत उदास होकर उस खंडहर से कहा था।

तब खंडहर ने उस बालक से कहा था "मेरे ऊपर एक छोटा सा कुआं है और उस कुएं में बहुत मीठा पानी है, तुम अपनी दादी के लिए वह पानी ले जाओ, शायद कुएं का शीतल और मीठा जल पीने से उन्हें कुछ आराम का अनुभव हो"

खंडहर ने उस बालक से यह बात बहुत सहानुभूति के साथ कही थी। उस बालक ने ठीक वैसा ही किया था और उसने उस कुएं में से एक टूटे हुए नारियल के खोल में पानी भरा था और वह उस पानी को वो अपनी दादी के पीने के लिए ले गया था। तब खंडहर ने उस बालक से कहा था "दोस्त मैं तुम्हारा यही इंतज़ार करूंगा" यह उस छोटे से बालक के लिए बहुत उत्साह देने वाली बात थी और उसने तेज़ कदमों से जाते हुए उस खंडहर से बहुत मासूमियत से कहा था "दोस्त तुम कहीं मत जाना, मैं जल्दी ही वापिस लौट कर आता हूं" वह छोटा बालक खंडहर को अपना मित्र बना कर बहुत खुश था।

कुछ समय बाद वह बालक वापिस लौट आया था और उसने आते ही उस खंडहर से कहा था "दोस्त क्या तुम अभी भी यहीं हो" तब उस खंडहर ने बहुत प्यार से उस बालक से कहा था "हां दोस्त मैं यहीं हूं" फिर कुछ पल रूककर उस खंडहर ने छोटे बालक से पूछा था "क्या तुम्हारी दादी की तबियत ठीक नहीं है दोस्त" तब उस बालक ने बहुत मायूस होकर उस खंडहर से कहा था "हां दोस्त, दादी की तबियत ठीक नहीं है और उसे भूख भी बहुत लगती है" फिर उस बालक ने उदास होकर खंडहर से कहा था "पता नही हर इंसान को इतनी भूख क्यों लगती है" और यह कहते समय उस बालक की भोली और मासूम आंखों में दुनिया भर की निराशा दिखाई दे रही थी।

खंडहर बालक की परिस्थिति समझ रहा था तब उसने उस बालक को उत्साह देते हुए कहा था "जाओ जाओ दोस्त, देर मत करो, तुम्हें अपनी दादी के लिए भोजन की व्यवस्था भी करनी है और सुनो, मेरी उत्तर दिशा में नदी के किनारे से कुछ कदम दूर कुछ फलदार वृक्ष लगे हुए हैं और उनके फल बहुत मीठे और स्वादिष्ट हैं, तुम वह फल अपनी दादी के लिए ले जाओ, उसे खाकर उनकी भूख कुछ कम हो जायेगी" तब उस बालक ने जल्दी से कहा था "ठीक है मैं वह फल लेकर जल्दी ही वापिस लौटता हूं" और वह बालक बहुत तेज़ी से उत्तर दिशा की ओर बढ़ गया था और क्षण भर में ही, वह बालक खंडहर की आंखों के सामने से ओझल हो गया था।

वह बालक जल्दी ही अपने छोटे छोटे हाथों में बहुत से फल लेकर वापिस लौटा था और उसने वह फल अपनी दादी को खाने के लिए दिए थे। उस पल उसकी बीमार दादी की आंखों से झर झर आंसू बह रहे थे और उसकी दादी इस बात को जानती थी कि अब उसका अंतिम समय निकट आ चुका है और वो इस बात से बहुत निराश थी कि वो अपने पोते के लिए कुछ भी नही कर पाई थी और वो यह सोच कर बहुत परेशान हो रही थी कि अगर उसका पोता इस दुनिया में अकेला रह गया तो वो अकेला कैसे अपना निर्वाह करेगा, वो कैसे अपनी ज़िंदगी जीयेगा, कौन उसको सहारा देगा, नन्हा सा बालक कैसे इस कठोर दुनिया का सामना कर पाएगा और मन ही मन में यह सब सोच कर वो बहुत दुखी थी और वो दिन रात ईश्वर से अपने पोते की कुशलता के लिए प्रार्थना करती थी।

पर उसका पोता इन सब बातों से बिलकुल बेखबर था और वो बहुत मासूम और भोला था और उसकी बाल बुद्धि, आने वाले कठिन समय की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। उस बालक ने अपनी दादी से कहा था "दादी मैं जल्दी ही वापिस लौटता हूं, मेरा मित्र मेरी राह देख रहा होगा" और इतना कह कर वह बालक बहुत तेज़ी से अपनी दादी की नज़रों के सामने से ओझल हो गया था और उसकी दादी यह सोच कर थोड़ी हैरान हुई थी कि इस निर्जन खंडहर में मेरे पोते का यह नया दोस्त कौन है।

पर समय के साथ साथ खंडहर और उस गरीब बालक की दोस्ती और भी गहरी होती गई और वो दोनो अपने सब दुख दर्द भूल कर प्रकृति के खूबसूरत नज़ारों का आनंद लेने लगे थे। कभी वो दोनो पानी में तैरते हुए परिंदों को देखकर खिलखिलाते, तो कभी शीतल जल की बहती धारा को देख कर वो आनंदित होते थे और उस बालक के चेहरे पर आई मुस्कराहट का सारा श्रेय उस खंडहर को जाता था, जिसे सब लोग सिर्फ एक बेजान सी पत्थर की इमारत ही समझते थे। खंडहर ने अपनी मीठी बातों से उस बालक का ज़िंदगी को देखने का दृष्टिकोण बदल दिया था। और अब उस पर्यटक स्थल पर आते जाते लोग उस बालक को खुश देखकर थोड़े हैरान होते थे क्योंकि उस बालक के तन के वस्त्र भी बहुत पुराने और जगह जगह से फटे हुए थे। पर उस बालक के चेहरे की खुशी और उसके चेहरे पर आए चंचलता के भावों ने उसे असाधारण बना दिया था और लोग उस बालक के चेहरे पर अदभुत भाव देखकर सोच में पड़ जाते थे और उस पल वो मन ही मन में सोचते थे कि इतनी गरीबी में कोई इतना खुश कैसे रह सकता है।

पर एक दिन वह बालक खंडहर के पास आया और उसे मायूस होकर बोला "दोस्त क्या तुम सुन रहे हो, आज मेरी दादी भी चल बसी" और यह कह कर वो बालक सुबकने लगा था।

उस पल खंडहर ने बहुत मायूस होकर उस बालक से कहा था "दोस्त मैं तुम्हारे लिए बहुत दुखी हूं" कुछ पल वहीं बैठ कर रोने के बाद वह बालक उठ कर एक ओर जाने लगा था तब उस खंडहर ने उस बालक से पूछा था "कहां चले दोस्त" तब उस बालक ने बहुत निराशा से कहा था "मुझे दादी की चिता के लिए अब सूखी लकड़ियों का इंतज़ाम करना होगा" और इतना कह कर वह बालक खंडहर की आंखों के सामने से ओझल हो गया था।

जब वह बालक अपनी दादी की चिता के लिए जंगल से कुछ सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करके वापिस लौट रहा था, तब उस खंडहर में आए कुछ पर्यटक उस बालक की तस्वीरें खींच रहे थे और क्षण भर के लिए उस बालक ने रुक कर उनकी ओर देखा था, तब अच्छा पोज़ जानकर, एक साथ बहुत से लोगों ने उस बालक की तस्वीरें खींची थी जिन तस्वीरों ने शायद आगे चल कर कुछ पत्रिकाओं के पहले पन्ने की शोभा बढ़ानी थी और कुछ तस्वीरों ने लोगों के आलीशान घरों की सजावट का सामान बन जाना था। वह सब लोग उस बालक की मानसिक अवस्था से बिलकुल अनभिज्ञ थे और उन्हें सिर्फ अपनी तस्वीरों से ही मतलब था और यह इस दुनिया की एक निष्ठुर और वास्तविक तस्वीर थी और बेशक यह बेहद दुखद और अमानवीय घटना थी जिस घटना को वह खंडहर और बालक खामोशी से देख रहे थे और जैसे उस पल सारे शब्द उस बालक की उदासी को देख कर कहीं खो से गए थे और उस बालक के साथ साथ अब वह खंडहर भी बहुत उदास हो गया था और बालक के साथ अब खंडहर भी धीरे धीरे सुबकने लगा था और रोते रोते कब उस अबोध बालक की आंख लग गई थी उसे इस बात का पता तक नहीं चला था।

पर इस बीच वह खंडहर अपने दोस्त उस छोटे से बालक के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि "हे ईश्वर आप इस छोटे बालक के सब दुख हर लीजिए और इसे सुख और समृद्धि से तृप्त कर दीजिए" और शायद ईश्वर ने उस खंडहर की प्रार्थना सुन ली थी।

अगले ही दिन उस खंडहर पर बहुत से पर्यटकों का आगमन हुआ और उन पर्यटकों में एक पति पत्नी भी अपनी एक पांच वर्षीय बेटी के साथ आए थे। वह नन्हीं सी लड़की सुंदरता में किसी परी से कम नहीं थी और वो बहुत बुद्धिमान भी थी और उसकी निगाह जैसे ही उस गरीब बालक पर पड़ी, जिसका चेहरा उस पल अत्यधिक दुख की वजह से थोड़ा मुरझाया हुआ सा दिखाई देने लगा था और उस बालक की आंखों में एक अजीब सी खामोशी को देख कर उस नन्हीं सी लड़की के पांव वहीं थम गए थे और वो उस बालक को बहुत सहानुभूति से देख रही थी। कुछ पल सोचने के बाद उस नन्हीं लड़की ने अपनी मां से कहा था "मां, इस बच्चे के कपड़े तो देखो, वो जगह जगह से फटे हुए हैं यह बच्चा इतना गरीब क्यों है मां, क्या हम इस बच्चे के लिए कुछ कर सकते हैं" उस छोटी लड़की की मां बहुत दयालु थी वो जानती थी कि छोटे बच्चे बहुत जिज्ञासु होते हैं और अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए वो बहुत से प्रश्न पूछते हैं, इसीलिए उसने कुछ सोच कर अपनी बेटी से कहा था "उसकी परिस्थिति अच्छी नहीं है, इसलिए वो गरीब है" पर वो छोटी बच्ची अपनी मां की कही इस बात से शांत नही हुई थी और उसने अपनी मां से पूछा था "मां इसकी परिस्थिति का ज़िम्मेदार कौन है, वो गरीब क्यों है" उस लड़की की मां अपनी बेटी के इस प्रश्न से चौंक गई थी तब उसने कुछ सोच कर अपनी नन्हीं सी बेटी से कहा था "परिस्थितियाँ कभी कभी खुदबखुद बन जाती हैं, पर अधिकतर लोग अपनी इस अवस्था के खुद ज़िम्मेदार होते हैं" फिर कुछ पल रूककर उसने मुस्कराते हुए अपनी बेटी की जिज्ञासा को शांत करने की कोशिश करते हुए उससे कहा था "पर बेटी अगर ईश्वर चाहे तो वो हर हाल में किसी को खुश रख सकता है इस दुनिया में किसी के पास बहुत सी धन संपत्ति है, पर फिर भी वो खुश नही है, पर किसी के पास सिर्फ दो वक्त की रोटी खाने के पैसे हैं और वो इसी में बहुत खुश है" उस बच्ची की मां ने अपनी बच्ची को समझाते हुए कहा था "बेटी खुशी तो भीतर की रोशनी है इसका किसी गरीब और अमीर होने से कोई ताल्लुक नहीं है" उस नन्हीं सी बच्ची की मां का उत्तर बहुत सुंदर था, जिससे वह छोटी बच्ची थोड़ी संतुष्ट दिखाई दे रही थी। तब उस पल उस बच्ची ने अपनी मां से कहा था "मां क्या मैं उस बच्चे को यह शाल और कुछ खाने पीने का सामान दे आऊं" तब उस बच्ची की मां ने बहुत प्यार से अपनी बेटी की ओर देखा था और उससे कहा था "हां बेटी, तुम यह सामान उस बच्चे को दे सकती हो" वह लड़की अपने नन्हें नन्हें कदमों से चलती हुई उस बालक के पास गई थी और उसने उस बालक

को बहुत सा खाने पीने का सामान दिया था और उसे एक शाल भी दी थी और उस बालक को शाल देते हुए उसने बहुत प्यार से उस बालक से कहा था "यह शाल तुम रख लो इससे तुम्हें ठंड नही लगेगी" उस पल वह बालक बहुत आश्चर्य से उस गुड़िया जैसी बच्ची को देख रहा था और उसके हाथ यंत्रवत से उस शाल को लेने के लिए आगे बढ़ गए थे और उस बच्ची के चेहरे पर कोमल सी मुस्कान देख कर उस बालक के चेहरे पर भी मुस्कान आ चुकी थी। उस पल उस बालक का दोस्त वह खंडहर भी चुपचाप सा मूक दर्शक बना उस दृश्य को देख रहा था और उस पल उसने मन ही मन में ईश्वर को धन्यवाद किया था।

वह नन्हीं सी लड़की और उसके माता पिता जब वहां से जाने लगे थे, तब उस बच्ची की निगाहें उस बालक को ही देख रही थी और जैसे जैसे वो उससे दूर जा रही थी वो नन्हीं सी बच्ची बहुत उदास दिखाई देने लगी थी और अचानक ही उस बच्ची के पांव थम गए थे और उसने अपने माता पिता की ओर देख कर उनसे कहा था "मां क्या हम इस बच्चे को अपने साथ नही लेकर जा सकते, इसको यहां पर कौन देखेगा, कौन इसकी देखभाल करेगा, कौन इसे खाना खिलाएगा" उस बच्ची ने यह बात इतनी मासूमियत से कही थी कि उसके माता पिता एक दूसरे की तरफ देखने लगे थे और उस पल उनकी आंखों में एक प्रश्नचिन्ह था। तब उस पल अपनी बच्ची की मनोदशा को समझते हुए उसकी मां ने बहुत प्यार से कहा था "हां, इसे हम अपने साथ अपने घर पर ले जायेंगे" और इस बीच उस छोटी बच्ची ने बहुत प्रेम से उस बालक का हाथ पकड़ कर उससे कहा था "तुम हमारे साथ हमारे घर चल रहे हो और अब तुम हमारे साथ ही रहोगे" वह बालक बहुत आश्चर्य से उस छोटी बच्ची को देख रहा था तब तक उस बच्ची की मां ने उस बच्चे के सिर पर बहुत प्रेम से हाथ रखा था और उसका हाथ पकड़ कर उससे कहा था "चलो अब हम सब घर चलते हैं और अब तुम हमारे साथ ही रहोगे" इतने मीठे बोलों को सुनकर उस गरीब बालक की आंखों से आंसू बहने लगे थे और उसने उस नन्हीं सी बच्ची की मां से कहा था "आप यही रुकिए, मैं अभी वापिस लौट कर आता हूं" और वह बालक भागता हुआ खंडहर के पास गया था और उसने खंडहर से कहा था "दोस्त यह मुझे अपने साथ अपने घर ले जा रहे हैं, पर मैं जल्दी ही तुमसे मिलने वापिस आऊंगा" तब उस पल उस खंडहर ने बहुत भावुक होकर और लगभग रोते हुए अपने छोटे से उस मित्र से कहा था "आज मैं तुम्हारे लिए बहुत खुश हूं, लगता है ईश्वर ने मेरी प्रार्थना

स्वीकार कर ली है" फिर क्षण भर चुप रहने के बाद उस खंडहर ने उस बालक से कहा था "मुझे तुम्हारी मित्रता पर नाज़ है, जाओ दोस्त खुशियाँ तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं" और वो बालक भागता हुआ वापिस लौट आया था और उस नन्हीं सी बच्ची ने बहुत प्रेम से उसका हाथ अपने हाथों में पकड़ कर उसे अपने साथ अपनी कार में बिठा लिया था और वो कार तेज़ी से अपनी मंज़िल की ओर रवाना हो गई थी।

समाप्त

कहानी 14: एक किस्सा घर पर चोरों के आने का

शहर से बहुत दूर एक छोटा सा गांव था और उस गांव के सबसे अंतिम छोर पर थोड़ी सुनसान सी जगह पर सोमनाथ नाम के एक किसान का घर था और वो अपनी पत्नी सुषमा और दो छोटे बच्चों के साथ उस घर में सुखपूर्वक रहता था। सोमनाथ ने अपनी पुश्तैनी ज़मीन पर दो कमरों का एक पक्का घर बनाया हुआ था और अपना खेती बाड़ी का सामान रखने के लिए सोमनाथ ने अपने घर के साथ ही लग कर ही एक छोटा सा मिट्टी का घर भी बनाया हुआ था और उसके घर के पीछे ही उसकी 5 एकड़ की ज़मीन थी जिसमें से कुछ एकड़ ज़मीन पर सोमनाथ ने फलदार वृक्ष लगाए हुए थे और बाकी बची ज़मीन पर वो हरी सब्जियों की खेती करता था और सुनसान जगह को देखते हुए सोमनाथ के परिवार के सब सदस्य सूरज ढलते ही अपने घर के किवाड़ बंद कर लेते थे और लालटेन के मद्धम से प्रकाश में घर के सब लोग शांति पूर्वक भोजन कर लेते थे।

पर एक दिन जब घर के सब सदस्य रात्रि का भोजन शांतिपूर्वक करने के बाद सो रहे थे तब आधी रात को सोमनाथ की पत्नी को अपने घर के बाहर हल्की सी आहट सुनाई दी थी जिससे उसकी नींद खुल गई थी और जब उसने कान लगा कर उन आहटों को ध्यान से सुना तो उसे इस बात का यकीन हो गया कि उनके घर के बाहर कुछ चोर खड़े हैं जो धीमें धीमें से आपस में बातचीत कर रहे हैं। वक्त की गंभीरता को देखते हुए सुषमा ने जल्दी से अपने पति सोमनाथ को जगाया था और उसके कान में धीमें से कहा था कि घर के बाहर उसे कुछ आहटें सुनाई दे रही है और उसने अपने पति से इस बात की शंका भी जाहिर कर दी थी कि हो न हो उनके घर के बाहर ज़रूर कुछ चोर खड़े हैं जो घर के भीतर सेंध मारने की ताक में बैठे हैं अपनी पत्नी की बात सुनकर सोमनाथ अब तक पूरी तरह से जाग चुका था और उस समय घड़ी पर रात के 12 बज रहे थे। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए वो दोनों बहुत सावधान हो गए थे और इस बीच उन्होंने अपने दोनों बच्चों को भी जगा दिया था, जो अभी मात्र 7 और 10 वर्ष के ही थे और अपने माता पिता से सब किस्सा सुनकर वो दोनों बच्चे थोड़े सहम गए थे और उनकी आंखों में भय साफ दिखाई देने लगा था। उस पल उनके पिता ने अपने दोनों बच्चों से बहुत धीमी आवाज़ से कहा था "तुम दोनों चिंता मत करो, जब तक मैं हूं, मैं उन्हें घर के भीतर नहीं आने दूंगा" और इस बात को सोमनाथ ने अपने बच्चों से इतने विश्वास से कहा था जिससे बच्चों का भय थोड़ा कम हो गया था पर इस बीच सोमनाथ और सुषमा बहुत तेज़ी से स्थिति का जायजा लेने लगे थे और वो घर के भीतर से दीवारों को कान लगा कर यह जानने की कोशिश कर रहे थे कि उनके घर के बाहर सही मायनों में कितने चोर हैं। उनके घर के पीछे भी एक दरवाज़ा था और उनके घर के पीछे एक छोटा सा आंगन भी था। इस बीच सोमनाथ ने घर के दोनों दरवाजों को भीतर से बहुत मजबूती से बंद करके उन पर ताला लगा दिया था और घर के भीतर जल रही लाल टेन का प्रकाश भी थोड़ा मद्धम कर दिया था, जिससे उन चोरों के घर के भीतर देखने पर, उन्हें अंधकार के सिवा और कुछ भी दिखाई न दे। अब सोमनाथ और उसकी पत्नी बहुत गंभीरता से इस सारी समस्या पर विचार कर रहे थे और उन्हें भय था कि कहीं अगर वह चोर उनके घर के भीतर आ गए तो चोर उनकी अलमारी में पड़े कुछ रुपए पैसे और सोने के जेवर अपने साथ ले जाएंगे और उन दोनों को रुपए पैसों और गहनों की भी इतनी अधिक चिंता नहीं थी, पर उन्हें इस बात की चिंता ज़रूर थी कि अगर उनके पास हथियार हुए तो वो उनके परिवार

को कोई गंभीर नुकसान भी पहुंचा सकते थे। अब कुछ भी सोचने समझने का अधिक वक्त नहीं था और कुछ सोच विचार करने के बाद सोमनाथ ने अपनी पत्नी सुषमा और बच्चों के कान में कुछ कहा था और जवाब में सुषमा और उसके बच्चों ने सिर हिला दिया था और अपने पति की योजना को सुनकर उन गंभीर लम्हों में भी सुषमा और उसके बच्चों के चेहरे पर मुस्कान आ गई थी। योजना के मुताबिक सोमनाथ अपने बिस्तर से पानी पीने के लिए उठा था और उसने रसोई घर में बर्तनों को टोटलते हुए अपनी पत्नी से ऊंची आवाज़ में पूछा था "सुषमा मैंने एक डिब्बे में कुछ रुपए रखे थे, वो मुझ मिल नहीं रहे" तब सोमनाथ की पत्नी ने भी थोड़ी ऊंची आवाज़ में अपने पति से कहा था "वो रुपए तो मैंने बनिए को दे दिए हैं" तब सोमनाथ ने गुस्से से एक दो बर्तन ज़मीन पर पटक दिए थे और उसने बहुत गुस्से से अपनी पत्नी से कहा था "वो रुपए मैंने खाद और बीजों के लिए रखे थे तुमने वो रुपए बनिए को क्यों दे दिए" इस पर सुषमा ने थोड़ी और ऊंची आवाज़ करके अपने पति से कहा था "घर का राशन खत्म हो गया था और उस बनिए को हमने पहले से ही बहुत रुपए देने थे तो मैं क्या करती" कुछ पल खामोशी छाई रही और उस समय दोनों बच्चे अपना मुंह चादर में छिपा कर हंस रहे थे क्योंकि उन्होंने अपने माता पिता को कभी भी झगड़ते हुए नहीं देखा था। तब सुषमा ने कुछ और अधिक ऊंची आवाज़ करके कहा था "जब में खाना बनाती हूं तब तो तुम बहुत ठूस ठूस कर खाना खाते हो, राशन के लिए पैसे लगते हैं समझे और वो तो मैं ही हूं जो बनिए से उधार ले आती हूं, नहीं तो आज सबको भूखे पेट ही सोना पड़ता" तब रसोई घर से सोमनाथ की ऊंची आवाज़ आई थी "हां हां सारा राशन मै अकेला ही खा जाता हूं, अब तुम मुझे बताओ कि मैं बीज और खाद कैसे खरीदूंगा" तब कमरे में से चिढ़ कर सुषमा ने थोड़ी और ऊंची आवाज़ में अपने पति से कहा था "जैसे मैं उधार ले कर आती हूं तुम भी उधार ले आओ" तब सोमनाथ ने थोड़ा और चिढ़ कर और थोड़ा गुस्से से अपनी पत्नी से कहा था "तुम्हें पता भी है कि हमने उसका पिछला बकाया रुपए भी देना हैं" अब सुषमा जोर जोर से रोने लगी थी और उसने रोते हुए ही कहा था "हां हां इसमें सारा दोष मेरा ही है, तुम तो दूध के धुले हो" और योजना के मुताबिक अब दोनों बच्चे भी जोर जोर से रोने लगे थे और पूरे घर में रोने धोने की आवाज़ों से सारे घर का माहौल बिगड़ गया था और उस पर बर्तनों की गिरने की आवाज ने सोने पर सुहागे का काम किया था और अब सोमनाथ ने बहुत क्रोध से अपनी पत्नी से कहा था "मुझ से ज़ुबान चलाती हो ठहरो मैं

तुम्हारी अभी खबर लेता हूं" और उसी पल सारे घर में कोहराम मच गया था और घर में सुषमा के चिल्लाने की आवाजें आने लगी थी और उसकी आवाज़ सुनकर ऐसा लग रहा था जैसे कोई उसे ज़ोर ज़ोर से मार रहा है और वो दोनों बच्चे भी अब विलाप करते हुए अपने पिता से कह रहे थे "पिता जी हमारी मां को मत मारिए" और इस बीच घर के भीतर सारा परिवार, इस नाटक पर मन ही मन में मुस्करा रहा था और उस नाटक से उत्पन्न हुई हास्य की बन आई परिस्थितियों की वजह से, अब सारे परिवार में चोरों का भय भी थोड़ा कम हो चुका था। सारी रात उन सब का रोने पीटने का अभिनय चलता रहा और इतने में सोमनाथ की निगाहें घर की दीवार के इकलौता रोशनदान पर पड़ी जिसमें उसे एक व्यक्ति की परछाई सी दिखाई दी थी और उसे लगा था कि हो न हो, यह भी उन चोरों का ही कोई साथी होगा, जो घर के भीतर के माहौल को परखने की कोशिश कर रहा होगा, यह देख कर सोमनाथ ने अपनी पत्नी के कान में कुछ कहा और उसे बालों से पकड़ कर ज़ोर ज़ोर से मारने का अभिनय करने लगा और वह अभिनय इतना प्रभावशाली था कि एक बार तो बच्चे भी धोखा खा गए थे कि अभिनय करते करते उनके पिता जी को यह क्या हो गया है, उस पल बच्चे आश्चर्य से अपने पिता की ओर देखने लगे थे, पर झूठ मूठ की मार खाते हुए बच्चों की मां ने अपने बच्चों के कान में सब कुछ समझा दिया था कि ऊपर रोशदान से एक चोर उनके घर के भीतर झांक कर देख रहा है, यह सुनकर बच्चे क्षण भर के लिए भयभीत हो गए थे, पर यह भी सच था कि अब उन्हें अपने पिता की बुद्धि पर पूरा यकीन हो गया था और उन्हें लग रहा था कि उनके पिता जी जो भी कर रहे थे वह मौके को देखते हुए एकदम सही कदम है। धीरे धीरे समय बीतने लगा और उनकी निगाहें अपने घर के दोनों दरवाजों पर लगी रही और अब तक बच्चे भी थक कर भयभीत अवस्था में ही सो चुके थे और उनके माता पिता उन्हें बहुत प्यार से देख रहे थे। अब घर पर बिल्कुल खामोशी छा चुकी थी, पर उन पति पत्नी की आंखों में अब नींद का नामोनिशान तक नहीं था और वो दोनों चोरों के प्रति बहुत सावधान थे और इस बीच सुषमा और सोमनाथ ने पीसी हुई मिर्चों का आधा पतीला भी अपने बिस्तर के नीचे रख लिया था और उन्हें लगा था कि इस स्थिति को देखते हुए मिर्चें एक अच्छा खासा हथियार साबित हो सकता था और साथ ही वो दोनों दीवार के साथ कान लगा कर घर से बाहर की आहट लेने की कोशिश कर रहे थे, पर फिर उन्हें बाहर से कोई आहट नहीं सुनाई दी थी, जिससे अब वो दोनों थोड़े आश्वस्त हो गए थे।

इसी तरह आंखों ही आंखों में रात का अंधकार छट गया और सुबह हो गई। सुबह सोमनाथ ने और सुषमा ने ध्यान से एक दूसरे की आंखों में देखा और जब सुषमा को अपने पति की आंखों में विश्वास दिखाई दिया, तब वो भी सामान्य होने का प्रयास करने लगी थी और इस बीच सोमनाथ ने धीरे से अपने घर का दरवाज़ा खोल दिया था और वो सावधानी पूर्वक अपने घर के आसपास सब तरफ देखने लगा था और उसे अपने घर के निकट कुछ कदमों के निशान के सिवा और कुछ भी दिखाई नहीं दिया था और यह देख कर पति पत्नी के चेहरे पर विजयी मुस्कान आ गई थी और इस बीच उनके बच्चे भी उठ गए थे और वो बहुत प्रेम से अपने माता पिता से लिपट गए थे और उस पल उनके चेहरे पर बहुत ही नटखट मुस्कान दिखाई दे रही थी और पता नहीं क्या सोच कर उन्होंने अपने पिता से कहा था "पिता जी मां को मत मारिए" और यह कह कर दोनों बच्चे खुद ही हंसने लगे थे और उनकी इस नटखट शरारत पर सोमनाथ और सुषमा भी मुस्कराए बिना नहीं रह सके थे और उस पल सुषमा ने सोमनाथ की ओर देखते हुए बहुत प्यार से उससे कहा था "तुम्हारे रहते हुए कोई हमारे परिवार का बाल भी बांका नहीं कर सकता" और यह कह कर वो बहुत प्रेम से अपने पति और बच्चों से लिपट गई थी। शायद चोरों ने घर के भीतर मियां बीबी की बातचीत सुन ली थी और उन्हें इस बात का यकीन हो गया था कि इस घर में उन्हें चोरी करने लायक कुछ भी नहीं मिलेगा और इसीलिए वो चोर बिना चोरी किए ही वापिस लौट गए थे।

मैंने सुना था कि जिस घर में मियां बीबी का झगड़ा होता हो, वहां पर मेहमान अधिक समय तक नहीं रुकते, पर मियां बीबी की लड़ाई को देख कर चोर भाग खड़े हों, इसे पहली बार देखा और अनुभव किया था।

समाप्त

कहानी 15: कुछ सुनहरी पल

कई बार ज़िन्दगी के कुछ हसीन पल गहरे अंधेरों में खो जाते हैं और किसी को इस बात की कानोकान खबर भी नहीं होती और यह कहानी भी कुछ इसी तरह की घटना पर आधारित है। यह वर्ष 1970 के आसपास की घटना है। उस पल रात का समय था और सब तरफ गहरा अंधकार छाया हुआ था और ऐसा लग रहा था कि जैसे कभी भी तूफानी बारिश शुरू हो सकती है। काले स्याह बादलों में रह रह कर बिजलियाँ कौंध रही थी और जैसे तूफान आने की आशंका सी बनी हुई थी। यह घटना एक छोटे से रेलवे स्टेशन की है और यह रेलवे स्टेशन जंगल को लग कर एक छोटे से गाँव में बना हुआ था जहाँ पर मुश्किल से कुछ ही घर थे और उस गांव की आबादी न के बराबर ही थी। शायद जंगल में बना हुआ यह छोटा सा रेलवे स्टेशन रेलगाड़ियों की आवा जावी को सुविधाजनक बनाने के लिए बनाया गया था। उस समय रात के लगभग 12 बजने को थे और उसी अंतिम पलों में उस रेलवे स्टेशन पर धड़धड़ाती शोर मचाती एक रेलगाड़ी ने प्रवेश किया था और वो रेलगाड़ी वहीं उस स्टेशन पर रुक गई थी, शायद वो सिग्नल मिलने का इंतज़ार कर रही थी कि तभी उस रेलगाड़ी के एक डिब्बे में से एक अंग्रेज़

लड़की नीचे उतरी थी और उसे शायद पीने के पानी की तलाश थी। उस रेलवे स्टेशन पर उस समय सिवाय एक आदमी के और कोई भी नही था और वो आदमी चुपचाप खामोश सा ज़मीन पर ही चौकड़ी मार कर बैठा हुआ था और अपने ही विचारों में खोया हुआ था कि उस आदमी ने देखा कि जब वह अंग्रेज़ लड़की अपनी बोतल में पानी भर रही थी कि उसी पल रेलगाड़ी ने धीरे धीरे आगे सरकना शुरू कर दिया था और वह अंग्रेज़ महिला इससे पूरी तरह से अनजान थी। रेलवेस्टेशन पर बैठे उस आदमी ने उस अंग्रेज़ महिला को सचेत करने की कोशिश भी की थी पर वो अंग्रेज़ महिला उस आदमी का इशारा नही समझ पाई थी और यह सब कुछ इतनी तेज़ी से और पलक झपकते ही हुआ था और देखते ही देखते वह रेलगाड़ी रेलवे प्लेटफार्म को पीछे छोड़ते हुए बहुत तेज़ी से आगे बढ़ चुकी थी और जल्दी ही उस रेलगाड़ी ने बहुत तीव्र गति पकड़ ली थी। गांव के उस रेलवे स्टेशन पर एक छोटी सी दुकान के सिवा और कुछ भी नही था और रात के इस अंतिम पहर में वो दुकान भी अब बंद हो चुकी थी और अब वो अंग्रेज़ लड़की रात के स्याह अंधकार में उस रेलवे प्लेटफार्म पर डरी डरी और सहमी सी स्टेशन की दीवार को लग कर खड़ी हो गई थी और उसकी आंखों से भय साफ दिखाई दे रहा था। यह एक सुनसान रेलवे स्टेशन था और वो अंग्रेज़ लड़की बहुत सुन्दर थी। खुद को उस रेलवेस्टेशन पर अकेला पा कर वो बहुत भयभीत हो चुकी थी और इसी भय की वजह से वो स्टेशन की दीवार से लग कर डर से कांप रही थी। उस सुनसान रेलवे स्टेशन पर यह विचित्र पल थे। उस समय उस रेलवे स्टेशन पर केवल दो ही इंसान थे और वो अंग्रेज़ महिला उस दूसरे इंसान से बहुत भयभीत सी दिखाई दे रही थी। पर उस आदमी की आँखों में उस अंग्रेज़ महिला के लिये सहानुभूति थी। पर वह अंग्रेज़ लड़की उस पल इतनी डरी हुई थी कि उसे उस ग़मगीन से बैठे हुए इंसान की आँखों में अपने लिए सहानुभूति नहीं दिखाई दी थी। उस इंसान ने जब ये देखा कि वो अंग्रेज़ लड़की उससे डर रही है तो वो धीरे से अपनी जगह से उठा था और स्टेशन पर एक ओर जाने लगा था। पर यह देख कर वह अंग्रेज़ लड़की जैसे सोते से जागी थी और उसने चिल्ला कर अंग्रेज़ी में कहा था "ऐ ऐ मिस्टर" और उसकी आँखों में उस पल डर और लाचारी के मिलेजुले भाव दिखाई दे रहे थे। पर उस अंग्रेज़ महिला ने जब यह देखा कि वह आदमी उसे भयभीत देख कर थोडा हैरान परेशान सा था और शायद इसी वजह से वो उठ कर जाने लगा था। पर उस अंग्रेज़ महिला के चिल्लाने की वजह से वह आदमी वहीं पर रुक गया था। उस आदमी ने देखा

कि उस अंग्रेज़ महिला की आंखों में आग्रह के भाव थे जैसे उस पल वो उसको आंखों ही आंखों में वही पर रुके रहना का आग्रह कर रही थी। यह देख कर वह आदमी उस अंग्रेज़ लड़की से थोड़ी ही दूरी पर चौकड़ी मार कर ज़मीन पर ही बैठ गया था। यह देख कर उस अंग्रेज़ लड़की की जान में जान आई थी। वह अंग्रेज़ लड़की अब तक यह बात जान चुकी थी कि स्टेशन पर बैठा हुआ वह आदमी उसे खुद से भयभीत देख कर ही वहां से उठ कर जाने लगा था।

वह अंग्रेज़ लड़की बहुत सुंदर व्यक्तित्व की मालिक थी। उसका ऊँचा लंबा कद और नीली आंखों वाला खूबसूरत चेहरा किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर सकता था। उसने हलके नीले रंग की पोशाक पहन रखी थी जो उसके गोरे रंग पर बहुत फब रही थी। उस समय रात के 12 बजने को थे और उस बियांबान जंगल में बने रेलवे स्टेशन पर बहुत सन्नाटा था। दोनो चुपचाप बैठे हुए थे और कभी कभी उनकी आंखें एक दूसरे से मिलती थी और वह आदमी शिष्टाचार के नाते बहुत जल्दी से अपनी नज़रें नीचे झुका लेता था। अब उन दोनों में वार्तालाप एक समस्या थी। वह अंग्रेज़ लड़की सिर्फ अंग्रेजी जानती थी और रेलवेस्टेशन पर गमगीन सा बैठा हुआ वह आदमी सिर्फ हिन्दी जानता था। जब उस अंग्रेज़ लड़की का डर कुछ कम हुआ तब उस अंग्रेज़ लड़की ने उस आदमी को बहुत ध्यान से देखा, जो थोडा सकुचाया हुआ सा ज़मीन पर बैठा था और इसकी वजह शायद यह भी हो सकती थी कि उसने बहुत साधारण से कपड़े पहने हुए थे। उस अंग्रेज़ लड़की को रेलवे स्टेशन पर बैठे हुए उस आदमी के चेहरे पर हीन भावना के भाव दिखाई दे रहे थे।

स्टेशन पर बैठा हुआ वह आदमी भी दिखने में कुछ कम खूबसूरत नहीं था, उसकी बड़ी बड़ी आंखों में इंसानियत के भाव साफ दिखाई दे रहे थे और उसके सिर पर घुंघराले बाल और चेहरे पर मायूसी के भाव थे जो कुल मिला कर उसे एक अच्छा इंसान साबित कर रहे थे। वह आदमी कभी कभी छुपी निगाहों से उस अंग्रेज़ लड़की को देख लेता था, पर जब वो उस अंग्रेज़ लड़की को अपनी ओर ही देखता पाता था तो झेंप कर जल्दी से अपनी नज़रें झुका लेता था। अब तक उस अंग्रेज़ लड़की का डर समाप्त हो चुका था और वो बहुत ध्यान से उस इंसान को देख रही थी और उसे वह इंसान एक भला आदमी जान पड़ा था। पहली बार एक भरी पूरी नज़र से उस महिला ने उस मायूस से इंसान को देखा था जो कुछ सकुचाया हुआ सा ज़मीन पर बैठा था। उस समय उस रेलवे स्टेशन पर बहुत

ठंड थी क्योंकि आसपास सब तरफ जंगल जैसा माहौल था और उस पर बारिश और तूफान कहर बरपा रहे थे जिससे ठंड बहुत बढ़ चुकी थी। वह अंग्रेज़ लड़की ठंड से ठिठुर रही थी और शायद उसके कपड़े भी थोड़े भीगे हुए थे।

यह देख कर स्टेशन पर बैठे उस आदमी ने सोचा कि क्यों न वो अपने घर से एक कप गर्म चाय बना कर ले आए और ठंड में ठिठुरती इस लड़की को दे दे, शायद चाय पीने से उस अंग्रेज़ लड़की को ठंड से कुछ राहत का अहसास हो। यह सोचते ही वह आदमी अपने स्थान से उठा था और अपने घर की ओर जाने लगा था और स्टेशन से कुछ कदम की दूरी पर ही उसका एक छोटा सा घर था। जब उस अंग्रेज़ महिला ने उस आदमी को उठ कर जाते हुए देखा तो वो अंग्रेज़ लड़की थोड़ी भयभीत सी हो गई थी। वो उस बियाबान रेलवे स्टेशन पर खुद को अकेला देख कर घबरा गई थी। उस अंग्रेज़ लड़की ने उस आदमी को रोकने की बहुत कोशिश की थी और इशारे से उसे वहीं पर बैठे रहने का आग्रह भी किया था "ऐ ऐ मिस्टर प्लीज़ स्टॉप, डोंट गो" और घबराहट से वो बोले ही चली जा रही थी और अत्याधिक डर की वजह से उसकी बड़ी बड़ी नीली आँखें और भी सुन्दर लगने लगी थी। पर वो आदमी उस अंग्रेज़ लड़की की आवाज़ को अनसुना करके आगे बढ़ चुका था, पर जाने से पहले उसने उस अंग्रेज़ लड़की को शांत रहने का इशारा भी किया था और इशारे से उस अंग्रेज़ लड़की को यह बताने की कोशिश की थी कि वो जल्दी ही वापिस आ रहा है और वो मुस्कराता हुआ उस रेलवे स्टेशन से बाहर निकल आया था और क्षण भर में ही उस अंग्रेज़ लड़की की आंखों के सामने से ओझल हो गया था। पर इस बीच वह अंग्रेज़ लड़की डर कर स्टेशन की दीवार के साथ सट कर खड़ी हो गई थी और वो उस पल को कोसने लगी थी जब वो पानी लेने के लिये उस स्टेशन पर नीचे उतरी थी। उसके चेहरे पर आए यह भाव उसके भोलेपन को उजागर कर रहे थे। उस पल वो खुद से बहुत नाराज़ दिखाई दे रही थी और खुद से खुद ही अकेले में बातें करती जा रही थी और ऐसा करके शायद वो अपने भीतर के भय को भागने की कोशिश कर रही थी। कुछ ही समय के बाद वह आदमी स्टेशन पर वापिस लौट आया था पर अब उस के हाथों में दो कप चाय थी। पर उस अंग्रेज़ लड़की को चाय का कप देने से पहले वो आदमी अपने साधारण से वस्त्रों को देख रहा था और फिर उसने बहुत डरते डरते वह चाय का कप उस अंग्रेज़ लड़की की ओर बढ़ा दिया था। उस पल जैसे उस अंग्रेज़ लड़की ने राहत की सांस ली थी। उस अंग्रेज़ लड़की ने वह चाय का कप अपने

हाथों में थाम लिया था और अब उस अंग्रेज लड़की की आँखों में कहीं पर भी भय का नामोनिशान नहीं था और वो चाय पीते हुए बहुत ध्यान से उस इंसान को देख रही थी जिसने उस सुनसान जगह पर फरिश्ता बन कर उसकी मदद की थी।

उस पल वह आदमी बहुत खुश दिखाई दे रहा था और उसे इस बात की बहुत ख़ुशी हुई थी कि उस अंग्रेज़ लड़की ने उसके हाथ से चाय पीने में कोई आना कानी नही की थी। अब उस आदमी के चेहरे पर सुकून भरे अहसास दिखाई देने लगे थे और उसके चेहरे से उदासी के भाव फुर्र से कही उड़ चुके थे और अब वो बहुत खुश दिखाई दे रहा था और वो अभी भी ज़मीन पर चौंकड़ी मार कर बैठा हुआ था। रात के उन गुपचुप से पलों में उस सुनसान रेलवे स्टेशन पर अब तक ठंड बहुत अधिक हो चुकी थी। चाय पीने के बाद वह अंग्रेज़ लड़की थोड़ी राहत का अनुभव करने लगी थी और अब उस अंग्रेज़ लड़की को इस बात का भरोसा हो चुका था कि इस भले इंसान से उसे कोई नुकसान नहीं हो सकता था। अब उस अंग्रेज़ लड़की में लेश मात्र भी भय नहीं रहा था और अब वो अंग्रेज़ लड़की अपनी पूरी लय में आ चुकी थी और अब उस अंग्रेज़ लड़की के चेहरे से बदहवासी और भय के भावों की जगह सुकून भरे अहसास दिखाई दे रहे थे। अब वो अंग्रेज़ लड़की खुश दिखाई दे रही थी और अब वो अंग्रेज़ी भाषा में उस अजनबी आदमी को अपने बचपन की कहानी सुनाने लगी थी और वो उसे अंग्रेज़ी में बता रही थी कि बचपन में वो अपनी साइकिल पर स्कूल जाती थी और स्कूल के उस रास्ते पर दोनो तरफ फलदार वृक्ष लगे होते थे और सब तरफ रंगबिरंगी तितलियाँ उड़ रही होती थी और कभी कभी उसके परिवार के सब लोग उसे ऊंचे पहाड़ों पर पिकनिक मनाने के लिए जाते थे और कुछ इस तरह से वह अंग्रेज़ लड़की बोले ही चली जा रही थी। वो अंग्रेज़ लड़की उस पल उस आदमी को अपने दिल की सब बातें बता रही थी जैसे उन एकांत लम्हों में उस अंग्रेज़ लड़की को अपना बचपन याद आ गया था और ज़मीन पर बैठा हुआ वो आदमी उसकी कोई भी बात समझ नही पा रहा था, पर फिर भी वो मुस्कराते हुए बार बार अपना सिर हिला रहा था और उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कराहट थी और उसे देख कर ऐसा लग रहा था जैसे उसे सारी बात समझ में आ गई थी। पर सच बात तो यह थी कि वो आदमी उस अंग्रेज़ लड़की को खुश देख कर खुश था और इसीलिए वो उस अंग्रेज़ लड़की की बातें ऐसे सुन रहा था जैसे उसे सब बातें समझ आ रही हों। यह बहुत विचित्र पल थे। दो इंसान जो एक दूसरे की भाषा से बिलकुल अनजान थे वो आपस में

बातें कर रहे थे और इस तरह से धीरे धीरे समय बीतने लगा था और जो निगाहें डर से घड़ी पर लगी हुई थी अब उन निगाहों को समय का बिलकुल भी ध्यान नही रहा था।

उस अंग्रेज़ महिला ने उस इंसान की आँखों में बड़ी गहराई से देखा था और उसकी मायूसी को समझा था और बातें करते करते ही वह अंग्रेज़ लड़की अपने बेंच से उठी थी और वो उस आदमी के करीब गई थी और उसने बहुत सम्मान के साथ उस आदमी की बाँह पकड़ कर उसे भी अपने साथ ऊपर बेंच पर बिठा लिया था और उस पल उस अंग्रेज़ लड़की ने बहुत आत्मीयता से उस आदमी को कहा था "यू आर अ वैरी नाइस मैन मिस्टर" और यह कहते समय उसकी आंखों में बहुत विनम्रता थी और उस आदमी के लिए बहुत सम्मान था। वह आदमी अभी भी बहुत सकुचाया सा उस अंग्रेज़ लड़की के साथ उस बेंच पर बैठा हुआ था और उस पल उसकी नज़रें शिष्टाचारवश नीचे झुकी हुई थी। उस अंग्रेज़ लड़की का उसे ज़मीन से उठा कर यूं अपने करीब बिठाना, यह बात उस आदमी के दिल को छू गई थी और उसके चेहरे पर एक सादी सी मुस्कान चली आई थी और उसके चेहरे यह मुस्कान कुछ ऐसी थी जैसे वो सदियों के बाद मुस्कराया था । वह कुछ ऐसे पल थे जैसे अंधेरे में किसी ने एक चिराग जला दिया हो जिससे सब तरफ रोशनी हो गई हो।

उस अंग्रेज़ लड़की ने उस आदमी की आँखों में मायूसी और इंसानियत के भावों को बहुत करीब से देखा और परखा था। उस अंग्रेज़ लड़की के लिये भी यह ज़िन्दगी के अनमोल पल थे क्योंकि उसने उन एकांत लम्हों में अपने बचपन को एक बार फिर से याद किया था जिन बेशकीमती लम्हों को वो ज़िंदगी की गहमागहमी की वजह से भूल चुकी थी। अब वो अंग्रेज़ लड़की बहुत गहराई से उस इंसान को देख रही थी जिसे कुछ पल पहले वो जानती तक नही थी।

उन बेमिसाल लम्हों को महसूस करके वो आदमी भीतर से भर चुका था और बहुत खुश था। इतना सम्मान और प्रेम उसे किसी से नहीं मिला था और उस पल उसकी झुकी हुई आँखों में जैसे ज़िन्दगी के बहुत सारे रहस्य छुपे हुए थे। यह उन दोनो की आपस में आत्मीयता के बहुत सुन्दर पल थे और घटना के अहसास अब कब के काफ़ूर हो चुके थे और उन अहसासों की जगह पर अब मानसिक तृप्ति के अदभुत भावों ने ले ली थी। रेलवे स्टेशन पर मायूस से बैठे उस इंसान को उस खूबसूरत अंग्रेज़ लड़की से बहुत सम्मान

मिला था और उस अंग्रेज़ लड़की को उस इंसान की आंखों में इंसानियत को बहुत करीब से देखने का एक सुनहरा मौका मिला था और कहने सुनने की बातों के उन दिलफरेब सिलसिलों से उन दोनो को वक्त का कुछ पता तक नही चला था कि सुबह कब की हो चुकी थी और अब बाहर तूफान भी थम चुका था। तभी एक रेलगाड़ी ने धड़धड़ाते हुए रेलवे प्लेटफार्म पर प्रवेश किया था। अब सुबह के 6 बज चुके थे और उस छोटे से रेलवे स्टेशन पर एक बार फिर से लोगों की गहमागहमी शुरू हो चुकी थी। रेलगाड़ी के अचानक हुए आगमन से उन दोनों का ध्यान टूटा था और उस अंग्रेज़ लड़की ने बहुत अपनेपन से उस आदमी को बेंच से उठाया था और बहुत गहराई से उसकी आँखों में भीतर तक देखा था और उससे कहा था "थैंक यू वेरी मच फार एवरी थिंग" और यह कहते समय उस अंग्रेज़ लड़की को कुछ ऐसा अनुभव हुआ था जैसे उसकी आंखों से आंसू बहने को ही थे। उस आदमी ने देखा कि उस अंग्रेज़ महिला की आँखें आँसुओं से भरी हुई थी। शायद वो इस बात को जानती थी कि अब उस आदमी से उसका फिर कभी भी मिलना नहीं होगा। वो अंग्रेज़ लड़की इस बात को समझ गई थी कि कुछ पल की ख़ुशी मिलने के बाद उस परोपकारी आदमी के जीवन में एक बार फिर से वही ज़िन्दगी होगी जो इस भावुक इंसान के लिये थोड़ी कठोर होगी। उस सुनहरी मुलाकात के उन अंतिम लम्हों में उस आदमी के चेहरे पर भी एक फीकी सी मुस्कान चली आई थी और शायद वो भी इस बात को अच्छी तरह से समझ गया था कि यह विदाई के पल थे और अब जीवन में फिर उसे ऐसे सुनहरे पल कभी नसीब नहीं होंगे।

विदाई के उन लम्हों में उस अंग्रेज़ लड़की की आँखों में आंसू थे और वह भागती सी रेलगाड़ी में सवार हो गई थी और उसने पलट कर पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा था और जब तक वह रेलगाड़ी नज़रों के सामने से ओंझल नही हो गई थी, उन दोनों के हाथ हिलते रहे थे। अब तक सारा रेलवे स्टेशन लोगों की आवाजावी से भर चुका था पर कोई नहीं जानता था कि यहाँ कुछ पल पहले जीवन के दीये की लौ चमकी थी जिसकी रौशनी अब मद्धम पड़ते पड़ते बुझ सी चुकी थी। वह मायूस सा आदमी अभी भी हाथ हिला रहा था जबकि वह रेलगाड़ी कब की उसकी नज़रों के सामने से ओझल हो चुकी थी। शायद उस आदमी के अन्तर मन में उस अंग्रेज़ महिला की तस्वीर इतनी गहरी हो चुकी थी कि अब उसे उस तस्वीर को भूलने में वर्षों लगने थे।

समाप्त

कहानी 16: माहतो और बेला

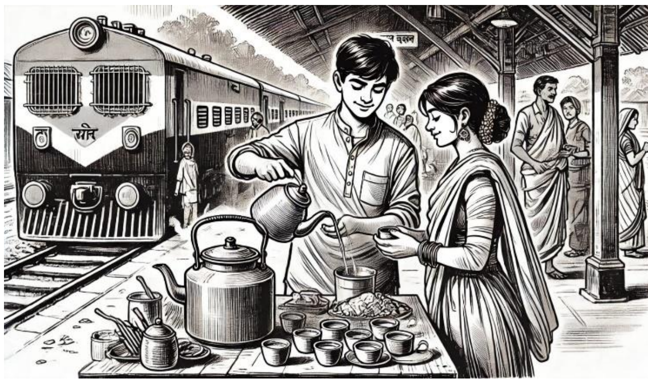

उस समय माहतो और बेला शायद 20 वर्ष के थे जब वो खेतों में काम करने की मजदूरी छोड़ कर अपनी नई दुनिया बसाने के लिए घर से निकले थे और यह किस्सा 1975 के आसपास का है। माहतो और बेला की नई नई शादी हुई थी और उन्होंने अपने मुश्किल हालातों को देखते हुए एक निर्णय लिया था कि अब वो खेतों में मेहनत मजदूरी का काम छोड़ कर कोई अपना काम शुरू करेंगे और इसी सोच के रहते उन्होंने गांव के रेलवे स्टेशन से सिर्फ पचास कदम की दूरी पर बना हुआ एक टीन पत्रे का घर किराए पर ले लिया था। उस समय वो दोनो एक ही बात सोच रहे थे कि वो दोनो रेलवे स्टेशन पर चाय बेचने का काम करेंगे और रेलवे स्टेशन पर चाय बेचने की एक वजह यह भी थी कि इस व्यवसाय को करने के लिए अधिक पैसों की जरूरत नही थी और ये ही सब सोच कर सबसे पहले उन्होंने अपने किराए के घर में पूजा की थी और फिर उन्होंने अपने उस छोटे से घर को बहुत अच्छी तरह से सजाया था। गांव के उस छोटे से रेलवे स्टेशन पर 5 से 7 मिनट के लिए 10 से 12 रेलगाड़ियाँ आकर रुकती थी और कुछ रेलगाड़ियों के इस रेलवे स्टेशन पर रुकने की वजह यह भी थी कि उस गांव से आगे गाड़ी जाने के लिए सिर्फ एक ही लाइन थी और जब वह लाइन अधिक व्यस्त हो जाती थी तब कुछ रेलगाड़ियाँ गांव के उस छोटे से स्टेशन पर कुछ अधिक देर तक रुक जाती थी। गांव के उस छोटे से रेलवे स्टेशन पर खाने पीने की कोई व्यवस्था नहीं थी, क्योंकि उस गांव से कभी कभार ही लोग रेलवे स्टेशन पर आते थे, इसलिए रेलवे स्टेशन पर 24 घंटे सन्नाटा

छाया रहता था। पर एकांत में बने उस रेलवे स्टेशन को देख कर माहतो और बेला को लगा था कि वो स्टेशन पर रुकने वाली गाड़ियों के यात्रियों को आसानी से चाय बेच लेंगे और उनका यह छोटा प्रयोग सफल रहा था और वो अपनी पहली ही कोशिश में कामयाब हो गए थे और उस दिन उनके अधिक उत्साहित होने की वजह से उन्होंने चाय बेच कर पैसे भी बहुत कमाए थे और जिंदगी में मिली इस छोटी सी सफलता से माहतो और बेला बहुत खुश थे।

माहतो और बेला दोनो ही बिल्कुल छोटे बच्चों जैसे थे और वो रेलवे स्टेशन की ओर आती हुई रेलगाड़ी को देख कर, उस रेलगाड़ी के पीछे छोटे बच्चों की तरह भागते थे और पूरे उत्साह के साथ रेलगाड़ी के डिब्बे में जाकर यात्रियों को इलाइची की महक से महकती चाय पिलाते थे और इस काम में दोनो का मन लग गया था और उस रेलवे स्टेशन का स्टेशन मास्टर भी उन्हें बच्चों की तरह रेलगाड़ी के पीछे भागता हुआ देख कर मुस्कराता था, शायद उस पल स्टेशन मास्टर को अपना बचपन याद आ जाता था। माहतो और बेला बहुत भोलेभाले इंसान थे और बहुत मेहनती थे और उन दोनो का एक ही सपना था कि कैसे भी करके वो एक बार रेलवे स्टेशन के निकट अपना एक छोटा सा घर बना लें जो वास्तव में उनकी बहुत मासूम सी सोचें थी और इसी सोच के रहते उन्होंने पहले दिन से ही पैसे जोड़ने शुरू कर दिए थे और उनके हाथ की बनी चाय इतनी अच्छी होती थी कि जो भी यात्री उनके हाथ की बनी हुई चाय पीते थे उनके चेहरे पर मुस्कान आ जाती थी।

दो दो पैसे जोड़ने की अपनी इस आदत की वजह से माहतो और बेला रेलवे स्टेशन के निकट ही बने पोस्ट आफिस में अपना खाता खोलने के लिए गए थे पर वो दोनो लिखा पढ़ी के मामले में बिल्कुल अंगूठा छाप थे और यह देख कर गांव के पोस्ट मैन शिवराम ने उनकी मदद की थी। शिवराम भी माहतो की उम्र का ही था और उसने कुछ समय पहले ही उस गांव में पोस्ट मैन का पद संभाला था और वो गांव के लोगों के लिए चिट्ठी पत्री लिखने और उन्हें पढ़ने का परोपकारी काम भी कर दिया करता था और इसलिए गांव के सब लोग उसका बहुत सम्मान करने लगे थे। माहतो और बेला के सरल व्यवहार की वजह से शिवराम पोस्टमैन जल्दी ही उनका बहुत अच्छा मित्र बन गया था और लिखा पढ़ी के कई मामलों में वो उनकी सहायता कर दिया करता था और बातों ही बातों में माहतो और बेला ने शिवराम को यह बताया था कि उनका सपना है कि वो एक

दिन रेलवे स्टेशन के निकट अपना एक छोटा सा घर बनायेंगे और शिवराम उनकी भोली और मासूम बातें सुनकर मुस्कराता था और उनसे कहता था "देखना एक दिन तुम्हारा यह सपना सच होगा" शिवराम की बातें दोनो को बहुत भा गई थी और अब वो दोनो शिवराम को अपना बड़ा भाई समझने लगे थे। कुछ महीने इसी तरह शांतिपूर्वक बीत गए थे और एक दिन बेला ने माहतो को शरमाते हुए एक अच्छी खबर सुनाई थी कि वो पिता बनने वाला है और माहतो यह खबर सुनकर इतना खुश हुआ था कि उसने अगले ही दिन शिवराम और उसकी पत्नी को अपने घर पर दावत पर बुला लिया था और उस पल माहतो ने खुश होकर शिवराम से कहा था "आप मामा बनने वाले हैं शिवराम भईया" और यह कहते समय माहतो की आंखों से अत्यधिक खुशी की वजह से आंसू बहने लगे थे और माहतो को अधिक भावुक होता हुआ देख कर शिवराम ने माहतो को अपने गले से लगा लिया था। वह दिन माहतो और बेला के लिए सबसे अच्छा दिन था और रात भर वो दोनो सुख के मीठे सपने देखते देखते गहरी नींद में सो गए थे पर नींद में भी उन दोनो के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान झलक रही थी जो इस बात का प्रमाण थी कि इससे अधिक खुशी की उन्हें कभी कल्पना भी नहीं की थी।

अगले ही दिन हर रोज़ की तरह ही माहतो और बेला स्टेशन पर चाय बेचने के लिए पहुंचे थे और क्षण भर पहले ही गांव के स्टेशन पर एक रेलगाड़ी आकर रूकी थी और माहतो और बेला अपना चाय बेचने के का सारा सामान लेकर, अलग अलग डिब्बों पर चढ़ गए थे और वो दोनो जल्दी जल्दी डिब्बे में बैठे यात्रियों को चाय बेचने लगे थे पर इतने में रेलगाड़ी धीरे धीरे आगे सरकने लगी थी और यह देख कर माहतो तो अपने डिब्बे से बहुत तेज़ी से नीचे उतर गया था, पर बेला चलती गाड़ी से नीचे नहीं कूद पाई थी और इस वजह से वो डिब्बे में ही नीचे बैठ कर जोर जोर से रोने लगी थी। दूसरी तरफ माहतो ने रेलगाड़ी के डिब्बे से नीचे उतरने पर जब बेला को स्टेशन पर नही देखा तो उसे यह समझते देर नहीं लगी थी कि बेला अभी भी रेलगाड़ी के डिब्बे में ही है और शायद अब तक वो बहुत घबरा गई होगी और यह सब सोच कर माहतो ने अपना चाय बेचना का सारा सामान वहीं रेलवे स्टेशन पर रखा था और वो अपनी पूरी ताकत लगाकर रेलगाड़ी के अंतिम डिब्बे की ओर भागा था और प्लेटफार्म से नीचे उतरते उतरते उसने रेलगाड़ी का अंतिम डिब्बा पकड़ लिया था और जैसे तैसे करके वो उसमे सवार हो गया था और उस समय अधिक तेज़ भागने की वजह से उसका अपनी सांसों पर नियंत्रण नहीं रहा था

और उस पल भी माहतो बेला के बारे में ही सोच कर चिंतित हो रहा था और वो इस बात को अच्छी तरह से जानता था कि उसकी तरह ही बेला भी कभी किसी शहर में नही गई थी और यह सब सोच कर वो थोड़ा घबरा गया था और रेलगाड़ी के डिब्बे के दरवाजे पर खड़े होकर उसकी निगाहें आगे के डिब्बों की ओर बहुत ध्यान से देख रही थी, पर अभी रेलगाड़ी तीन से चार किलोमीटर ही आगे बढ़ी थी कि किसी ने रेलगाड़ी की चेन खींच दी थी, जिससे रेलगाड़ी वही रुक गई थी और रेलगाड़ी पर सवार कुछ अच्छे यात्रियों ने बेला को रेलगाड़ी से सुरक्षित नीचे उतार दिया था और फिर रेलगाड़ी बहुत तेज़ी से अपनी मंज़िल की ओर रवाना हो गई थी। बेला रेलगाड़ी को जाते हुए देख रही थी और उस पल वो अपने आपको वहां पर अकेला पा कर, नीचे जमीन पर बैठ कर रोने लगी थी, पर कुछ समय बाद ही जब उसने अपनी निगाहें उठा कर देखा तो उसे दूर से माहतो आता हुआ दिखाई दिया था और बेला अपना चाय का सारा सामान वहीं छोड़ कर रोते हुए माहतो की ओर भागी थी और माहतो के गले से लग कर वो बहुत देर तक रोती रही थी। उस कठिन समय में माहतो ने बेला को बहुत मुश्किल से संभाला था और इस बीच उसने बेला का चाय बेचने का सारा सामान अपने कंधे पर रख लिया था और अब वो दोनो धीरे धीरे अपने घर की ओर वापिस लौटने लगे थे, पर इस भागा दौड़ी में बेला का होने वाला बच्चा गिर गया था और यह उन दोनो के जीवन की सबसे दुखद घटना बन गई थी। देर रात तक उनके घर पर मातम छाया रहा था और बेला सारी रात रोती रही थी और सुबह होते ही माहतो सबसे पहले बेला को निकट के अस्पताल में ले गया था और डॉक्टर ने बेला की जांच करने के बाद माहतो को बताया कि बेला अब कभी भी मां नही बन पायेगी और इस दुखद खबर ने दोनो को बिलकुल तोड़ कर रख दिया था। कुछ दिन तक घर पर अंधेरा छाया रहा था और जब शिवराज और उसकी पत्नी को इस दुखद समाचार का पता चला तो वो दोनो माहतो के घर पर आए और उन्होंने बेला और माहतो को समझाया कि किसी एक दुखद घटना की वजह से ज़िंदगी थम नही जाती और उन्हें अपने काम पर फिर से वापिस लौट जाना चाहिए, शिवराम और उसकी परोपकारी पत्नी की यह कोशिश थी कि वो दोनो पहले की तरह ही फिर से काम करने लग जाएं और कुछ दिन अपने घर पर मातम मानने के बाद दोनों अपने काम पर वापिस लौट आए थे और उन्हें काम करता हुआ देख कर शिवराम और उसकी पत्नी बहुत खुश हुए थे। शिवराम और उसकी पत्नी ने माहतो को समझाया था कि वो बेला

को खुश रखने की कोशिश करे और उसे तोहफे लेकर दे शायद ऐसा करने से धीरे धीरे उसका मन बदल जायेगा और अगर ईश्वर की कृपा रही तो एक बार फिर से सब कुछ पहले जैसा ही हो जाएगा।

शिवराम की कही बातें माहतो के मस्तिष्क में बैठ गई थी और अब वो बेला का पहले से भी अधिक ध्यान रखने लगा था और उसे खुश करने के लिए आए दिन उसके लिए नए कपड़े और दूसरे तोहफे ले आता था। उस समय बेला ने माहतो से कहा था "शिवराम भईया और उनकी पत्नी कितने अच्छे हैं वो हमें अपने परिवार का सदस्य जैसा समझते हैं और अब अगर तुम बाजार जाओगे, तो उन दोनो के लिए भी कुछ नए कपड़े ज़रूर ले आना" माहतो को बेला की बात ठीक लगी थी और वो यह सोच कर बहुत खुश था कि बेला अब फिर से सबके लिए सोचने लगी थी और यह आने वाले समय के लिए एक शुभ संकेत था। अब बेला भी माहतो की छोटी छोटी खुशियों का ध्यान रखने लगी थी और उसे इस बात का अंदाज़ा था कि माहतो उसको खुश रखने के लिए जी जान से कोशिश करता रहता है और यह सोच कर बेला को माहतो के ऊपर बहुत प्यार आ रहा था। कुछ दिन की उदासी के बाद उनकी जिंदगी एक बार फिर वापिस पटरी पर लौट आई थी और शिवराम और उसकी पत्नी माहतो और बेला में आए इस सकारात्मक बदलाव को देख कर बहुत खुश थे।

अब माहतो और बेला एक बार फिर से स्टेशन पर चाय बेचने के काम में जुट गए थे और वो दोनो अब दिल खोलकर एक दूसरे पर खर्चा भी कर देते थे जिसकी वजह से धीरे धीरे उनके पैसे जुड़ने बंद हो गए थे पर शायद वक्त की गंभीरता को देखते हुए, उनका ऐसा करना जरूरी भी हो गया था। उस समय माहतो और बेला दोनो जवान थे और वो सोचते थे कि वो थोड़ी और अधिक मेहनत करेंगे और पाई पाई जोड़ कर फिर से पोस्ट आफिस में पैसे जमा करवा देंगे जिससे वो आसानी से घर खरीद सकेंगे और इस कोशिश में उन दोनो की रातों की नींद हराम हो गई थी और वो जैसे ही स्टेशन की ओर आती हुई रेलगाड़ी की आवाज़ सुनते थे वो दोनो आधी रात को उठ कर भी चाय बेचने का सारा सामान साथ लेकर स्टेशन की ओर भागते थे और इस तरह उन्हें मेहनत मुशक्त करते हुए 25 साल बीत गए थे और अब वक्त के साथ साथ उन पर उम्र का रंग चढ़ने लगा था और अब उनमें भागने दौड़ने की ताकत भी धीरे धीरे कम होने लगी थी और उस पर एक मुश्किल यह बात यह भी थी कि अब बहुत सी रेलगाड़ियां वातानुकूलित हो चुकी थी

और उन वातानुकूलित गाड़ियों की खिड़कियाँ बंद होने की वजह से वो उन रेलगाड़ियों में अपनी चाय नहीं बेच पाते थे और यह वास्तव में बहुत दुख की बात थी। इस नए आए परिवर्तन की वजह से अब उनकी कमाई भी थोड़ी कम हो चुकी थी और उस पर मुसीबत की बात यह थी कि अब उन दोनो पर उम्र का रंग चढ़ने लगा था और अब वो दोनो बहुत जल्दी ही थक कर स्टेशन पर पड़े बेंच पर बैठ जाते थे और उस मायूस कर देने वाली घड़ियों में उन्हें अपना घर बनाने का सपना टूटता सा दिखाई देने लगा था और इस वजह से उन दोनो में पहले जैसी ऊर्जा और बच्चों जैसा उत्साह भी नही रहा था और अब उनके चलने के थके हुए अंदाज से निराशा झलकने लगी थी। पर इस बीच माहतो और बेला ने कड़ी मेहनत करके दो दो आने जोड़ कर पोस्ट आफिस में 1,50, 000/= रुपए जमा कर लिए थे, पर यह उन दोनो के लिए बहुत दुख की बात थी कि जिस टीन पत्रे के घर में वो रह रहे थे, अब उसकी कीमत पहले की कीमत की तुलना में 5 गुना अधिक हो चुकी थी और उनके लिए अब उस घर को खरीद पाना लगभग नामुमकिन हो चुका था।

जब कभी माहतो और बेला स्टेशन पर फुरसत में बैठे होते थे तब शिवराम अपनी पत्नी के साथ खाने का डिब्बा लेकर स्टेशन पर आ जाते थे और चारों एक साथ स्टेशन पर बैठ कर भोजन कर लेते थे और सच बात तो यह थी कि शिवराम और उसकी पत्नी माहतो और बेला के लिए मन ही मन में बहुत दुखी थे और उनके साथ कुछ वक्त बिता कर वो उनको खुश करने की कोशिश किया करते थे पर वो इस बात की हकीकत को जानते थे कि माहतो और बेला जिस मानसिक स्थिति से गुज़र रहे थे उसमें उनके सामान्य होने के आसार बहुत कम हो चुके थे। अब माहतो और बेला में रात रात भर जाग कर चाय बेचने की ऊर्जा नही रही थी और इसकी मुख्य वजह उनके भीतर छाई हुई उदासी थी। अब रात को स्टेशन पर आती रेलगाड़ी की आवाज़ सुनकर उनसे उठा नही जाता था और इस वजह से वो दोनो थोड़े उदास हो जाते थे और उस पल बेला बिस्तर पर अपनी करवट बदल लेती थी और उस पल उसकी आंखों में से आंसू बह रहे होते थे, पर बेला की यह कोशिश रहती थी कि उन आंसुओं को माहतो कभी भी न देख पाए और वो जब भी बहुत उदास हो जाती थी तब उसकी कोशिश होती थी कि वो माहतो के सामने न जाए। बेला माहतो से बहुत प्यार करती थी और उसे उदास नही देख सकती थी। पर बेला परिस्थितियों की वजह से धीरे धीरे निराशा में डूबती जा रही और इस वजह से अब वो थोड़ी बीमार भी रहने लगी थी और कुछ माह में ही उसने चारपाई पकड़ ली थी।

अब माहतो उदास कदमों से अकेला ही रेलवे स्टेशन पर चाय बेचने जाता था और उसके उत्साह पर वक्त का ग्रहण लग चुका था। स्टेशन मास्टर साहब जब भी माहतो को स्टेशन पर अकेला चाय बेचते देखते थे उस पल उन्हें बहुत दुख होता था और कुछ क्षण के लिए उनकी आंखों के सामने वह दृश्य लहराऐ थे जब माहतो और बेला नौजवान थे और वो स्टेशन पर चाय बेचने के लिए रेलगाड़ियों के पीछे भागते थे और उन लम्हों को याद करके क्षण भर के लिए उनकी आंखें नम हो जाती थी क्योंकि पोस्टमैन शिवराम से उन्होंने माहतो की सारी कहानी सुन रखी थी और वो मन ही मन में माहतो और बेला के लिए बहुत दुखी थे। जब माहतो स्टेशन पर चाय बेच रहा होता था उस पल भी उसे बेला की बहुत चिंता हो रही होती थी और इसी वजह से वो घर पर जल्दी लौट आता था। माहतो ने बेला का बहुत इलाज करवाया था पर बेला की बीमारी दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी और माहतो भीतर से इस बात को जानता था कि बेला की बीमारी की वास्तविक वजह उनके बच्चे न होना और उनका घर बनाने का सपना टूट जाना था और माहतो के पास बेला की इस ज़हनी समस्या का कोई हल नहीं था। बेला भीतर ही भीतर घुलती जा रही थी और एक दिन ऐसा भी आया जब उसने रात के अंतिम पहर में अपनी जिंदगी की अंतिम सांसे ली थी और वो उस दिन दुनिया से सदा सदा के लिए विदा हो गई थी। बेला की हुई आकस्मिक मृत्यु ने माहतो को झिंझोड़ कर दिया था और शिवराम और उसकी पत्नी ने उसे संभालने की बहुत कोशिश की थी पर सब व्यर्थ रहा था क्योंकि शिवराम और उसकी पत्नी जानते थे कि माहतो बेला से जी जान से मोहब्बत करता था और अब उसके बिना वो जिंदगी की कल्पना भी नहीं कर पा रहा था और धीरे धीरे उसने भी बिस्तर पकड़ लिया था और उन दुख भरे लम्हों में शिवराम और उसकी पत्नी ने माहतो की बहुत सेवा की थी पर इससे माहतो के स्वस्थ पर कोई विशेष अंतर नही पड़ा था और इसकी वजह यह थी कि अब माहतो में जिंदा रहने की तमन्ना लगभग समाप्त हो चुकी थी और उसकी जीवन रहित आंखों को देख कर कुछ ऐसा आभास होने लगा था जैसे अब उसे सिर्फ अपनी मौत का इंतजार था और बीमारी के उन लम्हों में उसने शिवराम से एक वादा लिया था कि उसकी मृत्यु के बाद वो पोस्ट आफिस में पड़े उसके पैसों में से, वो आधे पैसे उसके माता पिता को भेज देगा और आधे पैसे उनको दे देगा जो अब इसी रेलवे स्टेशन पर चाय बेचने आयेंगे और माहतों ने यह निर्णय इसलिए लिया था कि उसके बाद जो भी उस रेलवेस्टेशन पर चाय बेचने आएगा उसके पास पहले से ही थोड़ी जमा पूंजी

होगी, जिससे शायद उनका घर खरीदने का सपना सच हो सकेगा और माहतो की यह बहुत मासूम सी सोचें थी जिन्हें सुनकर शिवराम और उसकी पत्नी की आंखों में आंसू आ गए थे और वो मन ही मन में माहतो के लिए बहुत दुखी थे।

बिस्तर पर पड़े पड़े माहतो को अभी कुछ दिन हुए थे कि एक रात बीमारी की वजह से माहतो की सांसें अटक अटक चल रही थी और उस पल क्षण भर के लिए उसकी आंखों के आगे बरसों पुराने वह दृश्य घूमने लगे थे जब बेला और वो जवान थे और वो भागते दौड़ते रेलवे स्टेशन पर चाय बेचते थे और बेला की भोली हंसी को अपने ख्यालों में देख कर माहतो की आंखों से दो आंसू टपके थे और उस पल उसके मुंह से सिर्फ एक शब्द "बेला" निकला था और उसी पल उसने अपने प्राण त्याग दिए थे। सुबह जब इस दुखद समाचार का शिवराम और उसकी पत्नी को पता चला तो उन्होंने बहुत आंसू बहाए और उस पल शिवराम की आंखों में बरसों पुराने वह दृश्य लहराए थे जब पहली बार माहतो उसके पास आया था और उससे बहुत मासूमियत से कहा था "भइया हम पढ़े लिखे नही है आप ही हमारी मदद कर दीजिए" और शिवराम को वह पल याद आ रहे थे जब गांव के भोले भाले माहतो और बेला रेलवे स्टेशन पर बच्चों की दौड़ दौड़ कर चाय बेचते थे और उस पल उन दोनो के चेहरे पर बहुत मासूम सी मुस्कान खिली रहती थी और उन सब लम्हों को याद करके शिवराम की आंखें भीग गई थी और उसके मुंह से निकला था "माहतो तूने ये अच्छा नही किया" और यह कह कर वो फूट फूट कर रोने लगा था। माहतो की मृत्यु के पश्चात उस टीन पत्रे के घर को मकान मालिक ने ताला लगा दिया था। इस तरह कुछ महीने बीत गए थे और इस बीच शिवराम अपनी साइकिल पर उस घर के सामने से हर रोज़ निकलता था, पर घर पर ताला लगा देख कर वो निराश हो जाता था। पर एक दिन शिवराम ने देखा कि वह घर फिर से आबाद हो गया था और शिवराम घर के उन नए लोगों से मिलने चला आया था और उसने देखा कि वो बहुत छोटी सी उम्र के पति पत्नी थे और उनकी अभी नई नई ही शादी हुई थी और वो खेतों में मेहनत मजदूरी का काम छोड़ कर कोई अपना काम करने की सोच कर उस घर में रहने के लिए आए थे। कुछ दिन तक शिवराम उनको आते जाते देखता रहा और एक दिन शिवराम ने देखा कि वो लड़का और लड़की बिल्कुल माहतो और बेला की तरह ही रेलवेस्टेशन की ओर भागे जा रहे थे और उस समय उन दोनो के हाथों में चाय बेचने का सामान था और इस दृश्य को देख कर क्षण भर के लिए शिवराम को ऐसा अनुभव हुआ

था जैसे वो लड़का और लड़की माहतो और बेला थे और उन्होंने उस समय वस्त्र भी कुछ ऐसे ही पहने हुए थे जिन वस्त्रों से उनमें माहतो और बेला की झलक दिखाई देती थी। शिवराम उनके पीछे ही स्टेशन पर चला आया था और उन दोनो को बहुत गौर से देख रहा था और उसे लगा कि यह दोनो बच्चे बिल्कुल माहतो और बेला जैसे ही भोले भाले और मासूम दिखाई देते हैं और कुछ सोच कर शिवराम उनके पास गया था और उनसे कहा था "बिल्कुल आपकी तरह ही मेरा एक मित्र और उसकी पत्नी यहां पर चाय बेचते थे और नाम माहतो और बेला था" और इतना कह कर शिवराम ने अपने पर्स में से उनकी कुछ तस्वीरें निकाली थी और उन्हें दिखाई थी और उन तस्वीरों को देख कर वो दोनो आश्चर्य से शिवराम की ओर देख रहे थे, तब शिवराम ने उनसे कहा था "जिस घर को आपने किराए पर लिया है वो दोनो भी इसी घर में रहते थे" और इतना कह कर शिवराम की आंखें भर आई थी और उस पल दोनो पति पत्नी बहुत ध्यान से शिवराम की ओर देख रहे थे। तब शिवराम ने उनसे कहा था "मेरे दोस्त का एक सपना अधूरा रह गया था, वो अपना एक छोटा सा घर खरीदना चाहते थे और अपनी जिंदगी के अंतिम लम्हों में माहतो ने मुझे अपनी जिंदगी भर की पूंजी देते हुए मुझ से एक वादा लिया था कि अब इस घर में अगर कोई स्टेशन पर चाय बेचने वाला आएगा, तो आप उसे यह पैसे दे देना और उससे कहना कि वो अपनी जिंदगी में जीते जी घर जरूर खरीदें" और यह कहते हुए शिवराम की आंखें आंसुओं से भर गई थी और उसने अपनी जेब में से 75000/= रुपयों के पोस्ट आफिस के वो पेपर निकाले थे, जिन पर अब उन दोनो बच्चों का नाम लिखा हुआ था। चाय बेचने वाले वह नौजवान पति पत्नी, शिवराम के मुंह से माहतो की दुख भरी कहानी को सुनकर बहुत भावुक हो उठे थे और उन्होंने शिवराम के सामने प्रण किया था "हम दोनो वादा करते हैं कि हम माहतो का सपना ज़रूर पूरा करेंगे" और उस नौजवान पति पत्नी के मुंह से, यह शब्द सुनकर शिवराम को बहुत संतोष हुआ था और वो पोस्ट आफिस के पेपर उनके हाथों में सौंप कर अपनी ज़िम्मेदारी से मुक्त हो गया था। कुछ समय तक शिवराम स्टेशन के एक बैंच पर खामोश सा बैठा रहा था और उस पल उसकी आंखों के सामने माहतो और बेला के बरसों पुराने दृश्य घूम रहे थे और फिर उदास कदमों से वो अपने घर की ओर चल पड़ा था। उस नौजवान पति पत्नी को बच्चों की तरह रेलगाड़ी के पीछे भागते देख कर स्टेशन मास्टर को भी बरसों पहले के

माहतो और बेला के किस्से याद आ गए थे और क्षण भर के लिए माहतो और बेला को याद करके उनकी आंखें भी नम हो गई थी।

समाप्त

कहानी 17: ज़िंदगी एक रंगमंच है

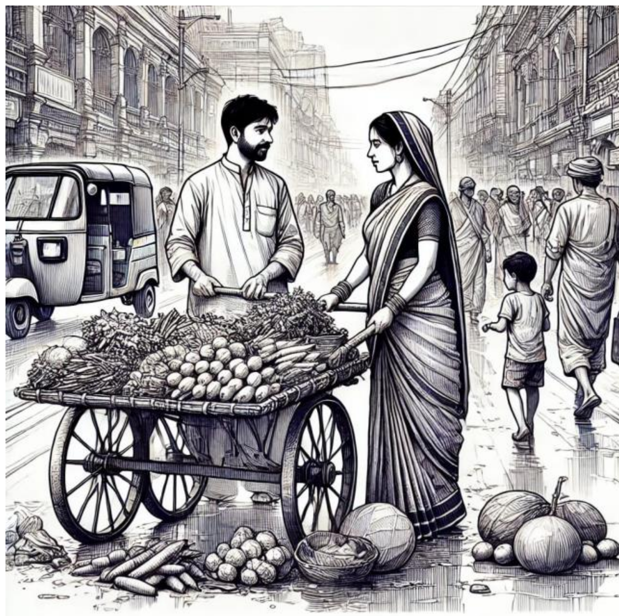

रामदीन और विमला की अभी हाल ही में शादी हुई थी और वो दोनो गांव में मेहनत मजदूरी का काम करते थे। पर उन दोनो का सपना था कि कैसे भी करके वो सिर्फ एक बार शहर पहुंच जाएं तो वहां पर जाकर वो कोई छोटा मोटा सा कारोबार शुरू कर लेंगे और इसी सपने को मन में सजाये हुए एक दिन वो दोनो गांव से शहर में आ गए थे और उन्होंने अपनी एक जान पहचान वाले की मदद से शहर में एक छोटा सा टीन पत्रे का बना हुआ कमरा किराए पर ले लिए था, पर पहले ही दिन वो उस भीड़ भरे शहर को देख कर थोड़े घबरा से गए थे और अपने टीन पत्रे के घर और शहर के अजनबी माहौल में सोना उन दोनो को बहुत अखर रहा था और भविष्य की चिंता और अकेलेपन के अहसासों की वजह से वो रात भर करवट बदलते रहे थे और उस पल नींद उनसे कोसों दूर थी और तन्हाई के उन लम्हों में वो दोनो सिर्फ एक ही बात सोच रहे थे कि कहीं उन्होंने शहर में आकर कोई गलती तो नहीं कर दी, पर जैसे तैसे करके उनकी रात कट गई थी और दिन निकल आया था और सुबह होने पर उन दोनो की सोच भी बदल गई

थी। सुबह उन्होंने अपने आसपास के लोगों से मिलना जुलना शुरू किया था और उन्हीं लोगों में से एक थोड़े वृद्ध इंसान थे जिनका जूते ठीक करने का काम था और वो शहर में वर्षों से मोची का काम करते हुए आ रहे थे और आसपास के सब लोग उन्हें मनोहर काका कहते थे और उन से रामदीन और विमला की दोस्ती हो गई थी और उन्होंने रामदीन को एक सुझाव दिया था और उससे कहा था "रामदीन तुम रेहड़ी पर सब्ज़ी और फल बेचने का काम क्यों नहीं कर लेते, इस काम में बहुत फायदा है" मनोहर काका बहुत ईमानदार और भले इंसान थे और आसपास के सब लोग उनका बहुत आदर करते थे और रामदीन और विमला को भी मनोहर काका की कही बात भा गई थी और मनोहर काका ने रामदीन को रेहड़ी दिलाने में मदद भी की थी और एक दिन रामदीन और विमला ने घर में पूजा करने के बाद, सब्जी बेचने का कारोबार शुरू कर दिया था और उनके मधुर व्यवहार और ईमानदारी की वजह से उनका सब्ज़ी बेचने का कारोबार चल निकला था और अब विमला घर का सारा काम समाप्त करने के बाद रामदीन के साथ सब्जी बेचने में उसकी सहायता करने लगी थी और सब्ज़ी बेचने के कारोबार में उनकी सारी जमा पूंजी लग गई थी और अनुभवहीन होने की वजह से शुरू शुरू में उन्हें इस कारोबार में थोड़ा नुकसान भी उठाना पड़ा था पर कुछ दिन में ही वो इस कारोबार को समझ गए थे और उनकी ज़िंदगी की गाड़ी एक बार फिर से पटरी पर लौट आई थी क्योंकि उनका सब्ज़ी बेचने का कारोबार सफलता पूर्वक चल निकला था। वो दोनो अपनी कमाई से बहुत खुश थे और यह बात सच थी कि वो गांव में मेहनत मजदूरी करने वाले मजदूर थे और उन्होंने इतने पैसे एक साथ कभी भी नहीं देखे थे। वह दोनों बहुत सीधे सादे इंसान थे और उनका चालाकियों से दूर दूर तक कोई नाता नहीं था। अभी रामदीन और विमला को शहर में आए हुए कुछ दिन ही बीते थे और उन्होंने अच्छी कमाई को देखते हुए अपने दोनों हाथों से दिल खोल कर खर्चा करना शुरू कर दिया था और उन्होंने पीतल के नए बर्तनो के साथ घर का दूसरा ज़रूरी सामान भी खरीद लिया था और अब वो अपनी मेहनतों से अपने घर को सजाने संवारने लगे थे। रात को अपने टीन पत्रे के घर के सामने अपनी रेहड़ी लगा कर, वो सब्जी का सारा सामान अपने घर में व्यवस्थित जगह पर रख देते थे और सारा काम करने के बाद वो दोनो थक कर चूर हो जाते थे पर थके होने पर भी वो दोनो बहुत खुश थे और खाना खाने के बाद वो दोनों मीठे सपने देखते हुए गहरी नींद में सो जाते थे और अब यह उनका हर रोज़ का नियम बन गया था।

रामदीन और विमला सुबह सुबह ही अपने घर के सब काम समाप्त करने के बाद खुशी खुशी अपने सब्ज़ी बेचने के काम पर निकल जाते थे और खाली समय में वो दोनो रेहड़ी पर रखे पैसों के बक्से में छोटे बच्चों की तरह पैसे गिनने लगते थे और अच्छी कमाई हो जाने पर, वो हंसी खुशी घर लौट आते थे और उन्होंने गांव के रीतिरिवाज़ के मुताबिक ही अपने घर में एक छोटे से मंदिर की स्थापना भी की हुई थी और वो दोनो उसमें दीया जलाना कभी नहीं भूलते थे। एक दो महीने में ही उन्होंने अपने टीन पत्रे के घर को बहुत से साजो सामान के साथ सजा दिया था और अनुभवहीन होने की वजह से अब उन्हें पैसे जोड़ने की भी कोई आवश्यकता महसूस नहीं हो रही थी, क्योंकि अब उन्हें लगने लगा था कि वो अपनी रेहड़ी पर सब्ज़ी बेचने के काम से, जल्दी ही और पैसे भी कमा लेंगे।

पर कहते हैं कि सब दिन एक समान नहीं होते और एक दिन उनकी फल और सब्ज़ी से भरी रेहड़ी को शहर की कार्पोरेशन की गाड़ी ने उठा लिया था और यह देख कर रामदीन और विमला ने उस अफसर के पांव पर गिरकर रहम की भीख मांगी थी और वो बहुत चीखे चिल्लाए भी थे पर उनके रोने धोने का उस अफसर पर कोई असर नहीं पड़ा था। उस पल रामदीन ने उस अफसर के पांव में गिर कर उससे कहा था "भाई साहब हमारी सारी जिंदगी की जमापूंजी इस रेहड़ी में लगी हुई है कृपया आप इसे छोड़ दें" पर कार्पोरेशन के उस अधिकारी ने उनकी एक बात नहीं सुनी थी और देखते ही देखते कार्पोरेशन की वह गाड़ी उन्हें अपने पीछे रोता बिलखता हुआ छोड़ कर उनका सारा सामान और रेहड़ी लेकर उनकी नज़रों के सामने से ओझल हो गई थी और शहर में किसी से कोई जान पहचान न होने की वजह से, किसी ने भी उनकी कोई मदद नहीं की थी और यह वास्तव में बहुत दुख बात थी। पर उन दुखद लम्हों को कोई दूर खड़ा हुआ बहुत बारीकी से देख रहा था। यह प्रोफेसर देवधर और उनकी प्रिंसिपल पत्नी थे जो उस हृदय को हिला देने वाले दृश्य को देख रहे थे और वो जल्दी से चलकर रामदीन और विमला के करीब आए थे और उन्होंने आगे बढ़ कर उन्हें अपने हाथों का सहारा देकर सड़क से उठा कर उन्हें फुटपाथ पर बिठा दिया था और उस बूढ़े इंसान ने बहुत सहानुभूति भरे अंदाज़ से रामदीन से कहा था "हमने सब कुछ देखा है और आपके साथ जो भी हुआ है वह वास्तव में बहुत दुख की बात है" और यह कहते हुए उन्होंने अपनी जेब से 500/=रुपए निकाले थे और रामदीन की ओर बढ़ा दिए थे पर उन दुखद हालातों में भी

रामदीन और विमला ने पैसों से की ऐसी सहायता स्वीकार नहीं थी और उन्होंने बहुत विनम्रता के साथ वह पैसे उस वृद्ध दंपति को वापिस लौटा दिए थे। उस पल प्रोफेसर देवधर और उनकी पत्नी की आँखें एक दूसरे से मिली थी और उनकी आंखों में रामदीन और विमला के लिए प्रशंसा के भाव दिखाई दे रहे थे और उस पल उन्होंने कुछ सोच कर रामदीन की ओर देखते हुए उससे कहा था "भाई तुम तो बहुत कमाल के इंसान हो इतना सब कुछ होने पर भी तुम हमें पैसे वापिस लौटा रहे हो" तब रामदीन ने लगभग रोते हुए ही उनसे कहा था "साहब दुख के समय में आपने हमसे बात की है और हमें हमदर्दी के दो शब्द कहे और वो प्रेम से कहे गए आपके शब्द ही हमारे लिए बहुत बड़ी बात है, हम कुछ महीने पहले ही गांव से शहर में आए हैं और हमें यहां पर कोई भी नहीं जानता" उनकी तकलीफ को समझते हुए प्रोफेसर देवधर ने रामदीन की ओर देखते हुए उससे कहा था "हम यही पास में ही रहते हैं और अगर तुम्हें कभी भी किसी प्रकार की मदद चाहिए हो या कोई उलझन हो, तो तुम हमसे ज़रूर मिलना" और यह कहते हुए उन्होंने इशारे से रामदीन और विमला को अपना घर दिखा दिया था जो वास्तव में रामदीन के टीन पत्रे के घर से, कुछ कदम की दूरी पर ही था। रामदीन और विमला ने अपने हाथ जोड़ कर उनका धन्यवाद किया था और प्रोफेसर देवधर उनके कंधे थपथपा कर अपने घर की ओर चल दिए थे। पर एक बात निश्चित थी कि रामदीन और विमला को उनका यूं रुक कर उनसे सहानुभूति दिखाना उन्हें बहुत अच्छा लगा था और अब तक उनके आंसू भी थम चुके थे।

प्रोफेसर देवधर जब अपने घर पहुंचे, तब उनकी पत्नी ने जल्दी से चाय बना ली थी और तब प्रोफेसर साहब ने अपनी पत्नी की ओर देखते हुए उससे कहा था "भाई मैं तो उस सब्ज़ी बेचने वाले की हिम्मत और ईमानदारी का कायल हो गया हूं, जिन परिस्थितियों में उन्होंने हमसे पैसे लेने से मना कर दिया था इससे मुझे बहुत आश्चर्य हुआ था" तब उनकी पत्नी ने, जो एक विद्यालय की प्रिंसिपल थी, उन्होंने ने भी कहा "हां आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं, इन परिस्थितियों में कोई भी होता तो शायद हमसे पैसे लेने से मना नहीं करता पर वो बहुत खुद्दार लोग हैं और अब ऐसे लोगो का मिलना बहुत मुश्किल हो गया है" इतनी बातचीत करने के बाद वो दोनो अपने घर के काम में व्यस्त हो गए थे पर एक बात निश्चित थी कि रामदीन और विमला ने उन दोनो के हृदय पर बहुत गहरी छाप छोड़ी थी।

उस दुख भरे दिन की वजह से रामदीन और विमला का गांव का अल्हड़पन और चंचलता शहर की भूल भलाइया में कहीं खो कर रह गई थी और वो दोनो रोते बिलखते घर वापिस लौट आए थे और उनके अड़ोस पड़ोस में किसी ने भी उनकी खोज खबर नहीं ली थी और शहर का यह रंग देख कर वो दोनो घोर निराशा में डूब गए थे। उस दिन न तो उन्होंने चूल्हा जलाने का प्रयास किया था और न ही एक दूसरे से कोई बातचीत ही की थी बस वो दोनों गुमसुस से बिस्तर पर लेट गए थे और रोते रोते ही न जाने कब उनकी आंख लग गई थी।

अगले दिन जैसे तैसे करके वो सो कर उठे थे और उसी समय उनके गांव का एक आदमी घर आन पहुंचा था और रामदीन ने उस व्यक्ति को सारा किस्सा कह सुनाया था, तब उसने उन्हें दिलासा देते हुए कहा था "शहर में रेहड़ी उठा कर ले जाना बहुत आम बात है, अब जब भी तुम रेहड़ी पर कोई काम करोगे, तुम्हें कार्पोरेशन की गाड़ी का भी ध्यान रखना पड़ेगा, यहां पर यह सब बहुत आम बात है" तब गांव के उस आदमी ने उन्हें दिलासा दी थी और उन्हें रेहड़ी पर चाय बना कर बेचने का काम सुझाया था और इस काम में पूंजी भी बहुत कम लगनी थी जैसे तैसे करके रामदीन और विमला ने घर के कुछ पीतल के बर्तन बेचे, जो बर्तन उन्होंने हाल ही में खरीदे थे और उन्हें बेच कर और कुछ लागत पल्ले से डाल कर उन्होंने रेहड़ी पर चाय बेचने का कारोबार शुरू कर दिया था और उनकी सरल बातों से और मधुर व्यवहार से उनका चाय बेचने का कारोबार चल निकला था और कुछ दिन में ही उनके चेहरे की रंगत वापिस लौट आई थी और अब उन्होंने अपने खराब अनुभव को ध्यान में रखते हुए पाई पाई जोड़नी शुरू कर दी थी और उनके दिन सुख शांति से बीतने लगे थे और अपने अच्छे व्यवहार की वजह से उनके आसपास रहने वाले कुछ लोगों से उनकी अच्छी जान पहचान हो गई थी। उसमें जूते ठीक करने वाला एक मोची मनोहर का काका भी थे और उनकी चाय की रेहड़ी के पास ही बैठ कर अखबार बेचना वाला एक भला इंसान मोहन भी था। मनोहर काका और मोहन भी उनकी तरह ही गांव से शहर अपने सपने पूरे करने के इरादे से शहर में आए थे और वो दोनो भी रामदीन की तरह ही शहर की विषम परिस्थितियों से जूंझ रहे थे।

पर रामदीन और विमला की यह विशेषता थी कि वो बहुत जल्दी ही दुखद लम्हों को भूल जाते थे और आसपास के लोगों से हिलमिल जाते थे और उनसे वो अपने सुख दुख की बातें करके अपना जी हल्का कर लेते थे और दो घड़ी यूं किसी के साथ बैठ कर

बातचीत करने से ही उनका मनोरंजन भी हो जाता था और वो इत्ती छोटी सी बात से ही संतुष्ट हो जाते थे। इसी तरह हंसते खेलते उनके दिन बीतने लगे थे और अब कभी कभी मनोहर काका अपनी पत्नी के साथ उनके घर पर चाय पीने के लिए आ जाते थे और वो सब मिल बैठ कर आपस में सुख दुख की बातें सांझा कर लेते थे और इससे उन सबका मन थोड़ा हल्का हो जाता था और इस सकारात्मक माहौल की वजह से उनकी जिंदगी में अपनेपन की एक शीतल हवा चलने लगी थी, जिससे उनके भीतर से शहर के अजनबीपन का खौफ समाप्त हो गया था और उसकी जगह अब भाई चारे और अपनेपन ने ली थी और अब वो उस माहौल में खुद को थोड़ा सुरक्षित महसूस करने लगे थे और इसी तरह कुछ महीने सुख शांति से बीत गए थे और इस बीच विमला ने एक पुत्र को जन्म दिया था और प्यार से उन्होंने अपने बेटे का नाम आलोक रखा था और घर में छोटे बच्चे के आ जाने की वजह से घर का माहौल बदल गया था और बेटे के जन्म की बधाई देने के लिए, उनके आसपास रहने वाले सब लोग धीरे धीरे उनके घर पर आने लगे थे और इतने सारे लोगों को अपने घर पर आया देख कर, रामदीन और विमला बहुत खुश हुए थे। अब रामदीन और विमला का अधिकतर समय अपने बच्चे की देखभाल करते हुए बीतता था और अब वो अपने घर पर ताला लगा कर अपने नन्हें से बच्चे को अपनी गोद में उठाए अपनी चाय बेचने की टपरी पर चले जाते थे और उन्होंने अपने छोटे बच्चे के लिए एक पेड़ की शाखा पर कुछ कपड़े बांध कर एक झूला बना लिया था और वो नन्हा सा बच्चा, सारा दिन उस झूले में झूला झूलता रहता था और आते जाते लोगों को देख कर मुस्कराता रहता था। इस बीच रामदीन और विमला लोगों को चाय पिलाने के काम के साथ साथ अपने बेटे की देखभाल भी करते रहते थे और अब उन दोनो ने अपने बच्चे के अच्छे भविष्य के बारे में सोचते हुए अपने टीन पत्रे की खोली में एक बक्से में कुछ पैसे भी जोड़ने शुरू कर दिए थे और इस तरह जैसे समय को पंख लगाए थे और बच्चे की देख भाल करते हुए उन्हें समय का पता ही नहीं चलता था और यह कुछ ऐसी बात थी जैसे किसी गरीब के घर में ईश्वर ने खुद जन्म लिया था।

उनके दिन सुख शांति से बीतने लगे थे और वो दोनो सारा दिन अपनी चाय की टपरी पर जी जान से मेहनत करते थे और देर रात को घर वापिस लौटते थे, पर छोटे बच्चे की वजह से उन्हें थकान का कभी कोई अनुभव नहीं होता था और यह बात भी किसी करिश्में से कम नहीं थी।

पर जब मौसम ने अपना मिजाज़ बदला और बारिशें शुरू हो गई, तब उनका चाय का कारोबार तो जोर पकड़ गया था, पर उसके साथ ही उन्हें बारिश को वजह से टीन पत्रे के अपने घर में बहुत सी दिक्कतों का सामना करना पड़ गया था। उनके घर की छत से पानी टपकने लगा था और उनके घर में और उनके घर के आसपास बहुत पानी जमा हो गया था, जिसकी वजह से उन्हें अपना सारा सामान अपने घर पर थोड़ा ऊंचाई पर रखना पड़ गया था, पर ऐसा करने के बावजूद उनका बहुत सा सामान बारिश के पानी में भीगने की वजह से खराब हो गया था। जब उन्होंने उस टीन पत्रे के घर के मालिक से घर में पानी गिरने की शिकायत की थी तो पहले तो उसने उन से सीधे मुंह से बात भी नहीं की थी और फिर थोड़ा गुस्से से उनसे कहा था, घर की छत को आप खुद ठीक करवा लीजिए और अगर आप उस घर में नहीं रह सकते तो घर को खाली कर दीजिए और अब रामदीन और विमला के पास कोई चारा नहीं था, इसलिए उन दोनो ने मिल कर तेज़ बारिश में अपने घर की छत पर चढ़ कर उसे ठीक करने की कोशिश की थी और उस कोशिश में उन्होंने एक बहुत बड़ी ताड़पत्री (बरसाती प्लास्टिक का जाड़ा पेपर) छत पर डाल दिया था, जिससे उनके घर की छत से बारिश का पानी टपकना बंद हो गया था, पर फिर भी उनके घर के आसपास के सब घरों में, बारिश का पानी घुस गया था और जब तक बारिश रही,उन्हें इस विकट समस्या का सामना करना पड़ा था। इसी तरह मुश्किलों से जूझते हुए जैसे तैसे करके तीन वर्ष बीत गए थे और अब रामदीन का बेटा आलोक लगभग 4 वर्ष का हो गया था।

पर एक दिन जब देर रात को रामदीन और विमला अपनी चाय की टपरी बंद करके घर लौटे तो उन्होंने देखा कि उनके घर का ताला टूटा हुआ था और यह देख कर वो हक्के बक्के रह गए थे और उन्होंने अपने घर के भीतर जाकर देखा कि चोर उनके घर का दरवाज़ा तोड़ कर उनके घर से सारा सामान ले कर रफूचक्कर हो गए थे और अब उनके घर पर सिवा मंदिर के और कुछ भी नहीं बचा था। चोर उस बक्से को भी अपने साथ ले गए थे, जिस बक्से में रामदीन और विमला ने पाई पाई जोड़ कर 75000/ रुपए जमा किए थे। यह सब देख कर रामदीन और बिमला अपना सिर पकड़ कर वहीं जमीन पर बैठ गए थे और उन्होंने चीखना चिल्लाना शुरू कर दिया था, जिसे सुनकर आसपास के सब लोग उनके घर पर इकट्ठे हो गए थे और सारी बात जानकार सब लोग दुखी हो गए थे। घर के आसपास के लोगों ने उन्हें दिलासा देते हुए कहा था “अब जो होना था, वो तो हो गया

है, पर आगे से आपको इस बात का ध्यान रखना होगा" और दो शब्द सहानुभूति के बोल कर, सब लोग अपने घर वापिस लौट गए थे। पर मनोहर काका और उनकी पत्नी दुख के उन लम्हों में उनके साथ उनके घर पर ही बैठ गए थे और जब रामदीन और विमला का मन थोड़ा हल्का हुआ था, तब मनोहर काका रामदीन का हाथ पकड़ कर उन्हें अपने साथ अपने घर पर ले आए थे और उन्होंने उन दोनो को बहुत प्यार से अपनी चारपाई पर बिठा दिया था और उन्हें रात का खाना खिलाया था और उन्होंने दिलासा देते हुए रामदीन से कहा था "रामदीन तुम्हारी सबसे बड़ी दौलत अब भी तुम्हारे पास है" फिर कुछ पल सोचते हुए उन्होंने रामदीन से कहा था "तुम्हारी हिम्मत ही तुम्हारी सच्ची दौलत है और यह बहुत अच्छी बात है कि तुम्हारी पत्नी और बेटा एक दम सही सलामत तुम्हारे सामने बैठे हुए हैं और अब तुम्हें इनकी देखभाल का सोचना चाहिए और फिर से एक नई शुरुआत करनी चाहिए, पुरानी बातों को जितना जल्दी हो सके उन्हें भूला देना चाहिए" भीतर से मनोहर काका इस बात को जानते थे कि रामदीन और विमला को बहुत गहरा सदमा लगा है और अब उनके लिए फिर से नई शुरुआत करना इतना आसान नहीं होगा। पर यह बात निश्चित थी कि वो रामदीन और विमला से सच्ची हमदर्दी रखते थे। तब तक मनोहर काका की पत्नी ने 3000/रुपए विमला के हाथों में रख दिए थे और उससे कहा था "दुख सुख आते रहते हैं बेटी, पर तुम्हें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए" फिर उन्होंने बहुत प्रेम से रामदीन के बेटे को अपनी गोद में उठाते हुए उनकी ओर देखते हुए कहा था "अपने बेटे को तो देखो, वो कितना प्यारा है, यकीन मानों की जब यह बड़ा हो जाएगा, वो तुम्हारे सब दुख दूर कर देगा, तुम दोनों इसकी अच्छी तरह से परवरिश करो और ईश्वर पर विश्वास रखो, एक दिन वो सब कुछ ठीक कर देगा" और उन्हें प्यार से समझाते हुए मनोहर काका और उनकी पत्नी, रामदीन और विमला को उनके घर पर वापिस छोड़ आए थे और अपने घर वापिस आने से पहले उन्होंने रामदीन के घर में एक दीया जला दिया था और उन्होंने रामदीन और विमला को सोने के लिए दो बिस्तर भी दे दिए थे।

अपने घर की हालत देख कर रामदीन और विमला को रोना आ रहा था और जैसे तैसे करके रोते रोते उनकी रात कट गई थी और सुबह होते हो विमला ने रामदीन से कहा था "अब हम इस शहर में नहीं रहेंगे और अपने गांव वापिस लौट जाएंगे" रामदीन भी यही सब सोच रहा था और बहुत मायूस था। उन्होंने कुछ सोचते हुए अपना बचा खुचा

सामान एक बक्से में डाला था और भारी मन से अपने घर के दरवाज़े पर ताला लगाया था और उसकी चाबी घर मालिक के हाथों में सौंप दी थी और फिर वो दोनो अपने सिर पर बिस्तर उठा कर मनोहर काका के घर पर गए थे और रामदीन ने मनोहर काका के दिए 3000/= रुपए उन्हें वापिस लौटाते हुए उनसे कहा था "काका आपका बहुत बहुत धन्यवाद कि आपने हमारी मदद की और हम जानते है कि आप हमें बेहद चाहते हैं" फिर कुछ पल रुक कर रामदीन ने रूंधे गले से उन से कहा था "पर क्या करूं काका, अब इस शहर से मेरा मन भर गया है और अब हम गांव वापिस जा रहे हैं" और यह शब्द रामदीन ने इतनी मुश्किल से कहे थे, क्योंकि वो जानता था कि उनके गांव वापिस जाने की बात सुनकर मनोहर काका और उनकी पत्नी भी बहुत दुखी हो जाएंगे, पर अब उसके पास इसके सिवा और कोई रास्ता नहीं था।

मनोहर काका भी उन्हें रोता हुआ देख कर भीतर से बहुत उदास हो गए थे पर फिर उन्होंने अपने भावों को नियंत्रित करते हुए रामदीन और विमला से कहा था "दिल छोटा नहीं करते रामदीन, ईश्वर ने तुम्हारा दाना पानी जहां पर लिखा होगा वो तुम्हें वहीं पर ले जाएगा और मैं और मेरी पत्नी सदा तुम्हारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करेंगे कि तुम जहां पर भी रहो, सदा सुखी रहो" और यह बात मनोहर काका ने मुस्कराते हुए कही थी पर रामदीन, विमला और मनोहर की पत्नी जानते थे कि उस पल मनोहर काका भीतर से रो रहे थे।

जाने से पहले रामदीन ने मनोहर काका और उनकी पत्नी के पांव छू कर उनका आशीर्वाद लिया था और फिर भरी आंखों वो दोनो वहां से विदा हुए थे।

पर कहते हैं कि ईश्वर की अपने प्यारे बंदों पर हर पल निगाह रहती हैं और वो किसी न किसी रूप में आकर अपने बंदों की मदद ज़रूर करते है और रामदीन और विमला के साथ भी कुछ वैसा ही हुआ। जब रामदीन और विमला अपने घर का बचा खुचा समान सर पर उठाए रोते हुए अपने गांव की ओर जा रहे थे, तब प्रोफेसर देवधर और उनकी पत्नी सुबह की सैर करने के बाद अपने घर वापिस लौट रहे थे और जब उन्होंने रामदीन और विमला की दयनीय हालत देखी तो वो उनका हाथ थाम कर उन्हें अपने घर ले आए थे और सबसे पहले उन्होंने उन्हें बहुत आदर के साथ, अपने सोफे के ऊपर बिठाया था और उन्हें चाय पिलाई थी और फिर उनसे उनके रोने की वजह पूछी थी और रामदीन ने

रोते रोते ही उन्हें सारा किस्सा कह सुनाया था, जिसे सुनकर प्रोफेसर देवधर और उनकी पत्नी भी दुखी हो गए थे, पर फिर उन्होंने रामदीन और विमला को दिलासा देते हुए कहा था कि अगर वो दोनो उनके घर में बने आउट हाउस में रह कर, उनके घर का काम करना चाहें, तो उन्हें बहुत खुशी होगी और उन्होंने रामदीन की ओर देखते हुए उससे कहा था "मैं तुम्हारे बेटे की शिक्षा की सारी जिम्मेदारी अपने सिर पर लेता हूं और तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि उसकी शिक्षा का सब पैसा हम देंगे" और उन्होंने साथ ही रामदीन को एक और भी सुझाव दे दिया था कि "अगर तुम चाहो, तो तुम हमारे घर के बाहर एक टेबल लगा कर लोगों के कपड़े प्रेस करने का काम भी कर सकते हो" रामदीन और विमला अब सिर्फ अपने बेटे के भविष्य के बारे में ही सोच रहे थे और उन्हें प्रोफेसर साहब और उनकी पत्नी का सुझाव बहुत अच्छा लगा था और उन्हें प्रोफेसर साहब और प्रिंसिपल महोदया का स्वभाव बहुत अच्छा लगा था और कुछ सोच कर उन्होंने वहीं रुकने का फैसला कर लिया था। प्रोफेसर देवधर और प्रिंसिपल महोदया ने उनके बेटे आलोक को पास के एक स्कूल में दाखिल कर दिया था और उन्होंने देखा कि रामदीन का बेटा आलोक बहुत बुद्धिमान था और उन्होंने रामदीन के बेटे को लेकर रामदीन से उसी पल एक भविष्यवाणी कर दी थी कि एक दिन बड़ा होकर आलोक आपका नाम रोशन करेगा और एक दिन वो एक काबिल अफसर बनेगा और वही हुआ। रामदीन और विमला के कितने ही वर्ष संघर्ष करते हुए बीत गए थे, पर अब ईश्वर ने रामदीन और विमला की झोली में सुख के पल डाले थे और यह सब देख कर रामदीन और विमला ने प्रोफेसर देवधर और उनकी पत्नी के पांव छू कर उनको धन्यवाद किया था और उस पल प्रोफेसर देवधर और प्रिंसिपल महोदया बहुत खुश थे। अब रामदीन का बेटा आलोक प्रोफेसर देवधर के कालेज में ही उनकी सिफारिश से लेक्चरर के पद पर कार्य करने लगा था और कॉलेज के मैनेजमेंट ने आलोक को उस कालेज के हॉस्टल में रहने के लिए एक कमरा भी उपलब्ध करवा दिया था। यह वास्तव में सबके लिए बहुत खुशी की बात थी।

रामदीन ने लोगों के कपड़े प्रेस करते हुए दो पैसे जोड़ लिए थे और उन्हें प्रोफेसर साहब के घर पर बहुत कुछ सीखा था। प्रोफेसर देवधर और प्रिंसिपल महोदया अपने घर पर अपने कुछ सहयोगियों की मदद से आसपास की जरूरतमंद महिलाओं को पापड़ और आचार बनाने जैसी उपयोगी जानकारियां देते थे और उन्होंने कई जरूरतमंद महिलाओं को सिलाई मशीन और उनकी जरूरत की दूसरी चीजें भी उपलब्ध करवाई

थी और लोगों की मदद करना उन्हें बहुत अच्छा लगता था और उनके जैसी सुलझी हुई शख्सियतों की छात्र छाया में रहना रामदीन और विमला के लिए बहुत सौभाग्य की बात बन गई थी। इस बीच रामदीन और विमला कभी कभी मनोहर काका से मिलने के लिए उनके घर भी चले जाते थे और उन्हें अपनी जिंदगी की हर घटना की जानकारी देते रहते थे और जब तक मनोहर काका और उनकी पत्नी जीवित रहे उनका उनके साथ गंगा यमुना का साथ रहा था, पर कुछ वर्ष पहले वृद्धावस्था की वजह से दोनों चल बसे थे और उनकी मृत्यु के साथ ही उनके इस खूबसूरत और निस्वार्थ रिश्ते का अंत हुआ था।

प्रोफेसर देवधर और प्रिंसिपल महोदया के सामाजिक कार्यों की वजह से उनके घर पर बहुत से लोगों का आना जाना होता था और इस वजह से रामदीन और विमला का भी दिल लगा हुआ था और अब वो प्रोफेसर साहब और प्रिंसिपल महोदया के सहायक बनकर उनके समाज सेवा के कार्यों में उनकी मदद करने लगे थे और अब रामदीन और विमला, प्रोफेसर साहब के घर को अपना ही घर समझते थे और रामदीन और विमला को खुश देख कर प्रोफेसर देवधर और प्रिंसिपल महोदया भी बहुत खुश थे।

पर कहते हैं न कि सब दिन एक समान नहीं रहते और एक दिन प्रोफेसर देवधर की 83 वर्ष की उम्र में रात को सोते समय दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई और उसके एक दो वर्षों के बाद ही प्रिंसिपल महोदया का भी देहांत हो गया था। तब दुखी मन से रामदीन और विमला ने उस घर को प्रणाम करते हुए उस घर से हमेशा हमेशा के लिए विदा ली थी और अपने बेटे आलोक को सुखी जीवन का आशीर्वाद देकर वो दोनो अपने गांव की ओर रवाना हो गए थे।

अपने गांव के रेलवे स्टेशन पर उतरते ही रामदीन और विमला ने सुख की सांस ली थी और उस पल उन्हें कुछ ऐसा अनुभव हुआ था जैसे वो कोई बहुत लम्बी यात्रा करने बाद अपने घर वापिस लौटे थे और जब उन्होंने अपने घर का दरवाज़ा खोला था, तब क्षण भर के लिए दोनों की नज़र एक दूसरे से मिली थी और उस पल दोनो के चेहरे संतुष्टि भरी मुस्कान आ गई थी और फिर दोनो एक साथ पूरे जोश के साथ अपने घर की साफ सफाई में जुट गए थे और साफ सफाई करने के बाद, सबसे पहले उन्होंने अपने घर के मंदिर में दीया जलाया था। रामदीन और विमला ने प्रोफेसर देवधर के साथ रहते हुए ज़िंदगी जीने की बेशकीमती कला सीख ली थी और उन दोनो ने फैसला किया था कि

जैसे प्रोफेसर देवधर और प्रिंसिपल महोदया ने अपने जीने की शैली बनाई थी अब वो भी उनका अनुकरण करेंगे और आसपास की महिलाओं को, आत्मनिर्भर बनाने के प्रयासों में जुट जाएंगे और उनके इस अच्छे काम की वजह से वो आसपास के बहुत से गांव में "विमला बहनजी" के नाम से प्रसिद्ध हो गए थे और उनके अच्छे काम की वजह से उन्हें घर बैठे दो पैसे कमाने का मौका भी मिल गया था। इस बीच आलोक शहर से छुट्टी लेकर गांव आता जाता रहता था और वो अपने माता पिता की बहुत इज़्ज़त करता था और उन्हें ईश्वर के समान समझता था। कुछ समय के बाद रामदीन और विमला ने शहर में एक अच्छी लड़की देख कर आलोक का विवाह कर दिया था और वो लड़की आलोक की तरह ही एक शिक्षिका थी और विवाह हो जाने के बाद गांव के अच्छे माहौल को देखते हुए उसने शहर के स्कूल की नौकरी छोड़ दी थी और उसने गांव के एक स्कूल में शिक्षिका की नौकरी कर स्वीकार कर ली थी और अब वो अपने सास ससुर के साथ सामाजिक कार्यों में उनकी मदद करने लगी थी और वो खुद को बहुत भाग्यशाली समझती थी कि उसे इतना अच्छा परिवार मिला था और वो सच्चे मन से अपने सास ससुर की सेवा करने लगी थी और उनकी कही हर बात मानती थी। वर्षों के बाद रामदीन और विमला सुख चैन से अपने घर पर बैठे चाय पी रहे थे और वो दोनो उस पल बरसों पहले के किस्से याद कर रहे थे और क्षण भर के लिए उनकी आंखों के सामने प्रोफेसर देवधर, प्रिंसिपल महोदया और मनोहर काका का ईश्वरीय चेहरा लहराया था और उन्हें याद करके क्षण भर के लिए उनकी आंखें नम हो गई थी।

समाप्त

कहानी 18: ट्रेन लेट होने के यादगार सिलसिले

आज बरसों बाद मैं उन लम्हों को याद करता हूँ जब मैं साईबेरिया के निकट एक शहर में ट्रेन से सफर कर रहा था और उस समय बहुत कड़ाके की ठंड थी और जगह जगह पर रेलवे ट्रेक पर बर्फ पड़ी होने की वजह से ट्रेन थोड़ी रुक रुक कर चल रही थी। मैं साईबेरिया के एक कालेज में प्रोफेसर था और 3 दिन के लिये निकट के एक शहर में लेक्चर देने के लिए जा रहा था और उस कालेज के संयोजकों ने मेरे रहने की व्यवस्था एक होटल में कर रखी थी। पर मौसम ने सारे कार्यक्रम पर जैसे पानी फेर दिया था। वह जगह एक बहुत छोटा सा शहर था जिसकी आबादी मुश्किल से 2 लाख लोगों की भी नही रही होगी। जब रात के लगभग 1 बजे मैं उस शहर के रेलवे स्टेशन पर उतरा तो उस पल उस रेलवेस्टेशन पर उतरने वाला मैं एक मात्र यात्री था। शायद छोटा शहर होने की वजह से और या अचानक यूँ मौसम बिगड़ने से स्टेशन पर कोई गहमागहमी दिखाई नही दे रही थी और उस रेलवेस्टेशन पर एकमात्र कॉफी शाप थी, जो एक महिला बन्द करने की फिराक में थी, क्योंकि शायद इस रेलवेस्टेशन पर आने वाली यह अंतिम ट्रेन थी। मैं अपना सामान लेकर उस कॉफी शाप के सामने रुक गया था और उस महिला से मैंने

गुज़ारिश की कि अगर हो सके तो वो अपने रेस्ट्रोरेंट को बंद करने से पहले, मुझे एक कप गर्म कॉफी और खाने के लिए एक बर्गर दे दे। उस समय ठंड इतनी अधिक थी कि रेलवेस्टेशन पर कोई भी सवारी मिलना मुमकिन नही लग रहा था और मुझे अपने होटल पर पहुँचने के लिये एक टैक्सी की ज़रूरत थी, जो मुझे उस मौसम में मिलना लगभग नामुमकिन लग रहा था। रेलवे स्टेशन पर बने उस छोटे से रेस्टोरेंट में, शायद वो महिला अकेली ही काम करने वाली थी और उसकी वेशभूषा देख कर मुझे ऐसा लग रहा था कि उस छोटे से रेस्टोरेंट की वो खुद ही मालिक थी। उसने बहुत ध्यान से मेरी ओर देखा था। मैंने उस महिला को अपना परिचय दिया और उसे बताया कि मैं एक प्रोफेसर हूँ और यहाँ के कॉलेज में लेक्चर देने के लिये आया हूँ।

वह महिला मेरी विवशता समझ गई थी और उसने मेरे लिए एक कप गर्म कॉफी बनाई थी और खाने के लिये एक बर्गर भी दिया।

मैं उसका बहुत शुक्रगुज़ार था। मैं जानता था कि वो बस रेस्टोरेंट बन्द करके अपने घर पर निकलने ही वाली थी। वो समझ गई थी कि अब इस मौसम में मुझे कोई भी टैक्सी नही मिलेगी। बातों ही बातों में उस महिला ने मुझे बताया कि वो स्टेशन के पास ही एक अपार्टमेंट में रहती है और उस महिला ने मुझे एक भलामानस जान कर, मुझे एक ऑफर दी कि अगर मैं चाहूँ तो रात उसके अपार्टमेंट पर गुज़ार सकता हूँ। उसने मुझे बताया कि वह अपने अपार्टमेंट में अकेली ही रहती है। मेरे पास उसकी इस पेशकश को मान लेने के सिवा और कोई चारा नही था और मैं भीतर से उस महिला का बहुत शुक्रगुज़ार था। शायद वो महिला भी जानती थी कि अगर मैं इस रेलवेस्टेशन पर रात भर रहा तो बीमार पड़ जाऊँगा।रेलवेस्टेशन के बाहर ही उसकी कार खड़ी हुई थी। हम उसके अपार्टमेंट में पहुँचने तक एक दूसरे से बातचीत करते रहे और उसने मुझे बातों के सिलसिलों में बताया कि वो एक तलाकशुदा महिला है और अब लगभग 5 वर्षों से अकेली ही रहती है। अपने अपार्टमेंट पर पहुँचने के बाद उसने मेरे सोने की व्यवस्था कर दी थी। मैंने उसे कहा भी था कि आपको अधिक ज़हमत उठाने की ज़रूरत नही है, मैं एक सोफे पर बैठ कर रात गुज़ार लूँगा। पर वो महिला बहुत शिष्टाचार वाली थी और उसने मुझे आराम से सोने के लायक एक बिस्तरा दे दिया था और सोने से पहले उसने मेरे लिये और अपने लिये गर्म खाना परोसा और फिर साथ साथ एक कप गर्म कॉफी पीने का दौर भी हुआ था। उस महिला के बातचीत करने के अंदाज़ से मुझे पता चला कि वो महिला बहुत ईमानदार,

साहसी और मेहनती औरत है। पर शायद अकेले रहते रहते और बातचीत के आभाव से और अकेलेपन से वो थोड़ी बोर हो चुकी है।

पता नही उस महिला में ऐसा कौन सा आकर्षण था कि सोने से पहले मैं रात भर उस महिला के बारे में सोचता रहा।

सुबह जब मेरी आँख खुली, तब मैंने देखा कि मेरे पास एक टेबल पर गर्मा गर्म कॉफी का एक मग पड़ा हुआ था और वो महिला अपने किचन में शायद खाना बनाने में व्यस्त थी। मैं जल्दी से मुंह हाथ धोकर तैयार हो गया था और मैं जानता था कि शायद अब उस महिला ने अपने रेस्टोरेंट पर जाना होगा। घर से निकलने से पहले उसने बहुत सम्मान से मुझे नाश्ता परोसा और खाने के लिये कुछ ताज़े फल भी दिये। जब हम कार पर स्टेशन की तरफ निकल रहे थे, तब उस महिला ने मेरी तरफ देखे बिना मुझ से कहा था ‘‘शायद अब आपका आना नही होगा’’ और उस महिला के इस अंदाज से प्रशन पूछने पर, मुझे कुछ यूँ लगा जैसे वो महिला थोड़ी उदास सी हो गई थी।

‘‘जी हाँ शायद’’ मैंने भी बातों के बहाव में आकर कह तो दिया था, पर फिर अपनी कही हुई बात पर, सोचने भी लगा था।

बातों के इन्हीं सिलसिलों के बीच रेलवेस्टेशन पता नही कब आ गया था और इस बात का मुझे पता तक नही चला था। पर अब मैं देख रहा था कि मुझे अब कहीं भी पहुँचने की जल्दी नही थी। मैंने महसूस किया कि जब मैं उस महिला से विदा ले रहा था, तब उस पल मुझे अपने भीतर कुछ अजीब सी हलचल सी महसूस हुई थी।

उस शहर में अपना काम समाप्त कर लेने के बाद, जब मैं वापिस रेलवे स्टेशन पर पहुँचा, तब मैंने उस महिला को मिल कर धन्यवाद कहना उचित समझा और इसी इरादे से, मैं उस महिला के रेस्टोरेंट पर पहुँचा और मेरा इरादा उसे सिर्फ धन्यवाद कहने के सिवा और कुछ भी नही था। कॉफी पीते पीते बातचीत के दौरान में, हम दोनो ने उस दिन के तूफानी मौसम को याद किया और उस महिला से विदा लेने से पहले, मैंने उसका शुक्रिया अदा किया था। पर पता नही क्यों उस महिला से दूर जाने के ख्याल भर से, मेरा मन थोड़ा भारी हो चुका था और मैंने भारी मन से उससे विदा ली थी। पर अभी जब मैं कुछ कदम ही आगे बढ़ा था कि तब अचानक मैंने पीछे मुड़ कर देखा और मैंने देखा कि वह महिला अभी तक मुझे ही देख रही थी और उसकी आँखों में मुझे एक अजीब सी

उदासी का अनुभव हुआ था और उस महिला की आँखों में अपने लिए अपनत्व का अजीब से आकर्षण को देख कर, मेरे आगे बढ़ते कदम वहीं के वहीं थम से गये थे और मैं उलटे पाँव उस महिला के पास वापिस लौट आया था और उसके पास आकर, मैंने उस महिला की खूबसूरत आँखों में देखते हुए, सिर्फ एक बात पूछी थी कि "क्या तुम मुझ से शादी करना चाहोगी" और वह पल मेरी ज़िंदगी के यादगार पल बन गये थे। मेरा उस महिला से विवाह हुआ और अब इस बात को 25 वर्ष बीत चुके थे और आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हमारा रिश्ता आज भी बिल्कुल वैसा ही है, जैसे हम पहली बार एक दूसरे से मिले थे।

आज भी बहुत ठंड है और मैं अपने घर की खिड़की पर बैठा हुआ हूँ और मेरी पत्नी गर्म कॉफी बना रही है। मैं अपनी ज़िन्दगी के बीते किस्सों पर सोच रहा था कि अगर उस दिन मेरी ट्रेन लेट न हुई होती और अचानक मौसम ने अपना कहर न ढाया होता, तो शायद आज मेरी पत्नी कोई और होती। शायद किसी इंसान का, किसी इंसान से मिलना, सब ईश्वर की रज़ा के मुताबिक होता है। ईश्वर सब जानता है और जो लोग अपनी ज़िंदगी की हर घटना का बहुत गहराई से अध्ययन करते हैं, वो ईश्वर की रज़ा को समझते हैं और फिर समय आने पर जैसे तैसे करके, वो अपनी मंज़िल पर पहुँच ही जाते हैं। पुराने किस्सों को याद करके मेरे चेहरे पर एक मीठी सी मुस्कान आ चुकी थी और मेरी पत्नी मेरे हाथ में कॉफी का मग पकड़ा कर मेरे निकट ही एक कुर्सी पर बैठ गई थी और मुझ से मेरे यूँ मुस्कराने की वजह पूछ रही थी। अब मैं उसको क्या कहता... मैंने उसके हाथों को अपने हाथों में थाम लिया था और उससे सिर्फ इतना ही कहा था "तुम कॉफी बहुत अच्छी बनाती हो" और मेरी बात सुनकर, मेरी पत्नी मुस्कराने लगी थी, शायद कॉफी के इस किस्से को वो भी बहुत अच्छी तरह से जानती थी।

समाप्त

कहानी 19: जन्मदिन मुबारक हो

अब मैं 70 वर्ष का हो चला था और रिटायर्ड था और अब मुझे कुछ वर्षों से अकेले रहने की आदत भी हो चुकी थी। मेरे वीरान घर में मेरे परिवार की अब चन्द यादें ही, तस्वीरों के रूप में दीवार पर टंगी थी और अब बस ये ही मेरी ज़िन्दगी का सरमाया था।

मेरी पत्नी को गुज़रे हुए एक अरसा बीत चुका था और मेरे बच्चे विदेश में रहते थे और वो अपने जीवन की भागादौड़ी और गहमागहमी में उलझे हुए थे और यह हम सबकी ज़िन्दगी की एक कड़वी सच्चाई थी कि "अब मिलने मिलाने का किसी के पास भी समय नही था" मेरे घर के बाहर लटका लैटर बाक्स भी अब कुछ मेरी तरह ही एक कील पर लटका हुआ था और यह हर किसी की ज़िन्दगी का खामोश सा किस्सा था। मैं इस बात को बहुत अच्छी तरह से समझता था कि जब हम ज़िन्दगी के एक खास पड़ाव को पार कर जाते हैं तब हमारी जैसी उम्र के अधिकतर लोग बेकार से हो जाते हैं। बस तब फिर एक आराम कुर्सी जीवन भर हमारे जैसे लोगों का साथ निभाती है और जब तलक हम ज़िंदा रहते हैं उस आराम कुर्सी पर पड़े पड़े घड़ी की सुइयों को देखते रहते है, जैसे उस पल हमारे भीतर की सब उमंगें समाप्त सी हो चुकी होती है और ज़िन्दगी की

सच्चाई से पर्दा उठ चुका होता है और उन बेचैनी भरे लम्हों में, घड़ी की सुइयों की रफ्तार इतनी धीमीं पड़ चुकी होती है कि समय काटे नही कटता और हम आराम कुर्सी पर बैठे बैठे शून्य में देखते रहते हैं, जैसे उन बेचैनी भरे लम्हों में हम खुद की मौत का इंतज़ार कर रहे होते हैं और यह हम सबकी ज़िंदगी का किस्सा था।

आज सुबह तड़के ही मेरी आँख खुल गई थी और ये कहना भी कुछ ठीक नही था क्योंकि शायद उम्र के इस पड़ाव पर पहुंच कर नींद बहुत कम आती है। बहुत मुश्किल से उठ कर मैंने खुद के लिए एक कप चाय बनाई थी और उस टेबल पर बैठ कर मैं चाय पीने लगा था जिस टेबल पर 6 कुर्सियाँ सजी हुई थी, पर अब सब की सब कुर्सियाँ खाली पड़ी थी और अब मैं उस टेबल के पास बिल्कुल अकेला बैठा हुआ था।

चाय पीते पीते मैंने खिड़की से बाहर देखा था और बाहर अभी तक अंधेरा था और अभी सुबह होने के लिए थोड़ा वक्त बाकी था और उस शांत वातावरण में मेरे ज़हन में एक पल के लिये यह आया था कि "सुबह इतनी देर से क्यों होती है" समय गुज़ारने के लिये मैं अपने घर के भीतर ही चहलकदमी करने लगा था और अचानक ही मेरे कदम अपने घर की उस दीवार के निकट आकर थम गये थे, जिस दीवार पर मेरी ज़िन्दगी की सब यादें तस्वीरों के रूप में दीवार पर टंगी हुई थी। जिन तस्वीरों को देख कर मैं अपनी ज़िन्दगी की किताब के कुछ पन्ने पलट लेता था और उन लम्हों को याद करके कभी मेरी आँखें मुस्कराती थी और कभी कुछ लम्हों को याद करके मेरी आँखें नम भी हो जाती थी।

मेरे बच्चों की तस्वीरें भी उसी दीवार पर लगी हुई थी और अब तो मेरे बच्चों के बच्चे भी बहुत बड़े हो चुके थे। उन सब तस्वीरों को मैं एक कपड़े से साफ कर रहा था और न जाने क्यों मुझे कभी कभी कुछ ऐसा लगता था जैसे वो सब अभी इसी पल उन तस्वीरों से बाहर निकल कर आयेंगे और मुझ से कहेंगे नानू, दादू आप कैसे हो, पर ऐसा कभी भी नही हुआ था, मैं जानता था यह सब मेरे ख्याल भर ही थे, सिर्फ मेरी खुशफहमियाँ थी और कुछ भी नही था, कुछ नही, बस कुछ भी नही था।

आज मेरी बेटी का जन्मदिन था। कुछ सोच कर मैंने कुछ मीठा बनाने का निर्णय लिया था और बहुत खोज खबर करने के बाद मुझे एक डिब्बे में कुछ सूजी मिली थी और मुझे याद आया कि मेरी बेटी अक्सर अपनी माँ से कहा करती थी कि "आज मेरा

जन्मदिन है माँ तुम कुछ मीठा बनाओ न" और मेरी पत्नी बहुत प्रेम से उसके लिये सूजी का हलवा बनाती थी। यही सोच कर मैंने चूल्हा जलाया था और सूजी का हलवा बनाने की कोशिश करने लगा था। पर शायद यह उम्र के तकाज़े थे या अब मेरी समझ जवाब दे चुकी थी, क्योंकि बहुत कोशिश करने के बाद भी मैं कुछ भी नही बना पाया था और मैंने निराश हो कर चूल्हा बन्द कर दिया था और भीतर कुछ बेचैनी सी लिए मैं अपने वीरान से घर में टहलने लगा था और फिर थक हार कर एक आराम कुर्सी पर बैठ गया था और मुझे इस बात का पता भी नही चला था कि कब मेरी आँख लग गई थी।

सुबह जब मेरी आँख खुली, तब सुबह के 9 बजने को थे और मैंने देखा कि किसी ने मेरे बदन पर एक शाल ओढ़ दी थी और मैंने देखा कि रसोईघर से कुछ आवाज़ें आ रही थी। यह शांति थी। 65 वर्षीय शांति जो मेरे सुख दुख की इकलौती साथी थी और शांति से मेरी जान पहचान पिछले कुछ वर्षों से ही हुई थी। वो मेरे घर के करीब ही रहती थी और बिल्कुल अकेली थी। जब तब हम साथ बैठ कर कभी कभी एक कप चाय पी लेते थे और दो घड़ी सुख दुख की बातें सांझा कर लेते थे।

जब मैं किचन में गया तो शांति मुझे देख कर मुस्कराई और बोली "आप घर को खुला छोड़ कर ही सो गये थे" मैंने उसकी ओर देखा और उसे बुझे मन से कहा था "हाँ अब इस घर में ऐसा क्या है जो कोई चुरा कर ले जायेगा" मैंने यह बात बहुत हाताश होकर कही थी। उसने मेरी उदासी भांप ली थी और वो मेरी तरफ बहुत गहरी नज़रों से देख रही थी और फिर उसने मुझ से पूछा था "अभी तक चाय तो नही पी होगी आपने" उसने चाय का पानी चूल्हे पर रखा हुआ था। मैंने अपनी नज़रें नीची किये हुए ही उससे कहा था "पी थी, आज सुबह आँख जल्दी खुल गई थी, तो सोचा चाय ही बना लूँ"

"और जो चूल्हे के आसपास इतने बर्तन बिखरे पड़े हैं उसका क्या, शायद आप कुछ बनाने की सोच रहे थे" उसने प्रश्नचिन्ह वाली निगाहों से मेरी ओर देखा था और उस पल वो थोड़ी मुस्करा रही थी।

"हाँ बनाने की सोच रहा था पर बना नही पाया था" मैंने कहा था।

मेरी बात सुन कर वो मुस्करा दी थी। अब तक चाय बन चुकी थी उसने बहुत प्रेम से एक कप चाय की प्याली मेरी तरफ बढ़ा दी थी और हम उसी 6 कुर्सियों वाले टेबल पर बैठ गए थे, पर अब मैं वहां उस वीरान घर में अकेला नही था।

"आज निकी का जन्मदिन है न" उसने मुस्कराते हुए मुझ से कहा था।

"हाँ तुम्हें याद था" मैं थोड़ा हैरान था।

"हाँ मुझे याद था" फिर उसने अपने साथ लाया हुआ एक स्टील का डिब्बा खोला था, जिसमें सूजी का हलवा था।

उसने वह डिब्बा मेरी तरफ बढ़ा दिया था और मुझ से बहुत प्रेम से कहा था "बेटी का जन्मदिन मुबारक हो"

मैंने वह डिब्बा अपने हाथों में थाम लिया था, पर अब मेरे हाथ कंपकपा रहे थे और आँखों से झर झर आंसू बहने लगे थे।

वो मेरे करीब आ गई थी और चुलबुला कर बोली थी "लो तुम्हारी बेटी का जन्मदिन है और तुम रो रहे हो, वो क्या सोचेगी कि पापा ने मेरा जन्मदिन रोते रोते मनाया था" और इतना कह कर वो उठ कर मेरे करीब आ गई थी। फिर उसने कहा "ज़रा चख कर तो देखो कि हलवा कैसा बना है" वो अपनी तरफ से माहौल को सामान्य करने कोशिश कर रही थी।

मैंने हलवे को चखा और कहा "तुम सब कुछ बहुत अच्छा बनाती हो" पर अभी भी मेरी आँखें नम थी। फिर मैंने उससे कहा था "तुम बैठो मैं तुम्हें कुछ दिखाता हूँ" और यह कह कर मैं अपनी अलमारी में से अपनी पुरानी अलबम खोजने लगा था और कुछ ही देर खोजबीन करने के बाद मुझे वो अलबम मिल गई थी, जिसमें तस्वीरों के रूप में मेरी ज़िंदगी भर की कहानी लिखी थी।

हम साथ बैठ कर बहुत देर तक उन तस्वीरों को देखते रहे थे और उन तस्वीरों को देख कर, कभी हम हंसते थे और कभी उदास हो जाते थे और बातों ही बातों में हमें समय का कुछ पता तक नही चला था। मैं अचानक उठ कर दीवार के उस कोने के पास आ खड़ा हो गया था, जहाँ पर मेरे परिवार के सब सदस्यों की तस्वीरें लगी हुई थी। मैंने बहुत प्रेम से उन तस्वीरों को स्पर्श करते हुए कहा था "शायद वो आज अपना जन्मदिन मना रही होगी" और यह कहते कहते मेरी आँखें फिर से नम हो गई थी।

"हाँ शायद वो आज अपना जन्मदिन मना रहे होंगे" मेरे ठीक पीछे खड़ी हुई शांति ने भी मेरे पीछे उन शब्दों को दोहराया था पर इतना कहते कहते उसकी आँखें भी नम हो

चुकी थी, पर बहुत खूबसूरती से उसने अपने आँसुओं को छुपा लिया था। शायद वो मुझे और अधिक कमज़ोर नही करना चाहती थी। कुछ पल बाद मुझे अपने पीछे से आवाज़ सुनाई दी थी "अच्छा चलती हूँ, तुम अपना ध्यान रखना" और जब तक मैं पीछे मुड़ कर उसकी ओर देखता, वो धीमें धीमें चलती हुई मेरी नज़रों के सामने से ओझल हो गई थी।

मैं कुछ पल उस दीवार के निकट खड़ा रहा था, जिस दीवार पर मेरे सारे परिवार की यादगार तस्वीरें लगी थी और फिर थक हार कर धम से उसी टेबल के पास बिछी एक कुर्सी पर बैठ गया था, जिसकी पाँच कुर्सियाँ खाली पड़ी हुई थी।

समाप्त

कहानी 20: मदारी

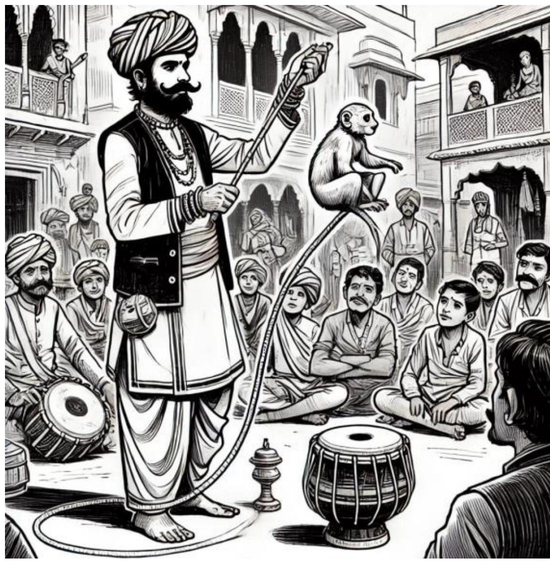

यह कथा उस मदारी खानदान की है जिन्होंने अपना सारा जीवन सिवा मदारी गिरी के और कुछ भी नही किया था, पुश्त दर पुश्त राजा महाराजाओं के ज़माने से उनका बेमिसाल मदारी परिवार अपने कलात्मक खेल दिखाकर लोगों का मनोरंजन करते आ रहे थे। पर अब मदारी गिरी की कला और उसका सारा कारोबार और उस कलात्मक व्यवसाय से जुड़े सब लोगों के लिए जैसे यह आया समय अकाल जैसा समय था। मदारी गिरी की कला समाज में से धीरे धीरे लुप्त सी होने लगी थी और मदारी गिरी के कलात्मक व्यवसाय से जुड़े लोगों के खानदान के खानदान अपनी बेमिसाल कला को छोड़ कर अब सड़क बनाने वाले मज़दूर बन चुके थे और बेशक यह बहुत दुख की बात थी।

अब परिस्थितियाँ बदल चुकी थी और अब जैसे एक दूसरी ही सदी की शुरुआत हो चुकी थी और समय जैसे बहुत तेज़ी से बदल रहा था। अब कंपीयूटर के युग की शुरुआत हो चुकी थी, जिसकी गति इंसान की साधारण सी सोचों से कहीं अधिक गतिवान थी और मंगल एक ऐसे ही मदारी खानदान का शायद अंतिम चिराग था जिसके घर में 9 सदस्य थे। दादा दादी, माता पिता उसकी पत्नी और उसके तीन छोटे छोटे बच्चे

और सब एक ही छत के नीचे रहते थे। उनके मिट्टी के घर में एक मद्धम सा चिराग सदा जलता रहता था जिसकी हल्की सी रोशनी में सब भोजन कर लेते थे और उसमें में भी मंगल और उसकी पत्नी सबसे अंत में भोजन करते थे। मंगल और उसकी पत्नी पहले वृद्धों और बच्चों को भोजन परोसते थे और फिर जो कुछ बचाखुचा उनके नसीब में होता था वो उसे खा कर संतोष कर लेते थे और यह इस मदारी खानदान की खूबसूरत और गौरवशाली परंपरा थी। मंगल मदारी का घर दूरदराज के गाँव में था जो शहर से मीलों दूर था और उस गाँव की अधिकतर ज़मीने बंजर और कठोर थी इसलिए उस बंजर जगह पर अधिक आय की उम्मीद भी बहुत कम थी। मंगल को अब यह समझते देर नही लगी थी कि अब इस गाँव में इतने बड़े परिवार की गुज़र बसर होना बहुत कठिन कार्य था और शायद नामुमकिन था। मंगल ने एक दिन अपनी पत्नी को सब समझाया और परिवार की देखभाल अच्छी तरह करने को कह कर, उसने अपने मदारी गिरी के सारे साज़ोसामान के साथ शहर की तरफ का रुख किया था और इस पाँव पाँव की लंबी यात्रा में मंगल मदारी का बड़ा पुत्र भी उसके साथ था। बंजर जमीन पर और तपती धूप में पांव पांव चलने की यह एक कठिन यात्रा थी और उस कठिन यात्रा में परिवार से बिछड़ने के गम को साथ लेकर चलना था, तो दूसरी तरफ उस कठोर और बंजर धरती पर चुपचाप से चलते रहने की एक मानसिक परेशानी भी थी। मंगल मदारी इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानता था कि अजनबी शहर में भी जीवन निर्वाह के रास्ते बहुत कठिन होंने वाले थे।

2 दिन की कठोर यात्रा करने के बाद मंगल मदारी अपने पुत्र के साथ शहर पहुँचा था और उस शहर की चहलपहल को देख कर मंगल को उम्मीदें बंधी थी। उस शहर में मंगल और उसका पुत्र अपनी मदारीगिरी की कलाकौशल के खूब खेल दिखाते थे और यह उनका पुशतैनी पेशा जो था और इस कार्य में पिता और पुत्र दोनो निपुण थे, सब कुछ बहुत अच्छे से चलने लगा था। मंगल एक महीने में थोड़ा बहुत पैसे कमाकर गाँव वापिस आया था और अपनी पत्नी को रोज़मर्रा की ज़रूरत का सामान और डिब्बे भर अनाज दे गया था और साथ ही अपनी पत्नी को एक मोबाईल फ़ोन भी दे कर गया था ताकि वक्त पड़ने पर उसकी पत्नी गाँव से उसे सन्देश भेज सके। एक दिन मंगल खेल दिखा रहा था और खूब मजमा लगा हुआ था। मंगल को इस खेल में बहुत से पैसे मिलने की उम्मीद बंधी थी कि तभी उसके मोबाईल फोन की घन्टी बजने लगी थी और मंगल की पत्नी ने

मंगल को उसके दादा के देहाँत की दुखद खबर सुनाई थी। उस दुखद समाचार को सुनकर मंगल की आँखों में कुछ पल के लिये आंसू लहराए थे जो कुछ क्षण के बाद खुदबखुद ही सूख भी गए थे। मंगल मदारी कुछ पल बाद ही ज़िन्दगी में वापिस लौट आया था और अपनी सारी भावनाओं को एक तरफ रख कर, मन को मार कर, फिर से मदारी का खेल दिखाने लगा था। पर भीतर से मंगल का मन रो रहा था और मंगल इस बात को जानता था कि मदारी की ज़िन्दगी बहुत कठोर होती है। अपने मन की भावनाओं पर काबू पाते हुए, वह वहां तमाशा देख रहे लोगों से कह रहा था "हाँ तो साहिबान अब देखिये यह बंदरिया कैसे कलाबाजियाँ खाती है" और भीतर से मंगल का मन अपने दादा को याद कर के रो रहा था। मंगल ने न जाने कितनी बार अपने दादा के कंधे पर बैठ कर मेला देखा था और उसके दादा ने उसके माथे को बहुत प्रेम से चूमा था और उन दुखद लम्हों में मंगल मदारी को सब कुछ याद आ रहा था। पर मंगल मदारी एक पक्का मांझा हुआ कलाकार था, जिसके दिल के भीतर के सब खेत न जाने कब के सूख चुके थे। शहर की धूप छाँव को झेलते हुए बहुत कठिन परिस्थतियों में भी मंगल का मदारी का खेल दिखाना जारी था क्योंकि मदारी गिरी का यह खेल मंगल के परिवार का जीवन मरण का प्रश्न बन चुका था। मंगल के फोंन की घंटियाँ भी बजती रही, बजती रही और मंगल को गाँव से दुःख भरी खबरें आती रही और यहाँ तक कि उसके माता पिता का भी देहांत हो गया और मंगल को अंतिम समय में अपने माँ बाप से बात तक करना भी नसीब नहीं हुआ था। अब मंगल की पत्नी गाँव में अपने दो बच्चों के साथ बिल्कुल अकेली थी और उस बंजर जमीन पर वो अपने घर में अपने पति और बच्चे की वापिस आने की राह देखती थी और मंगल की पत्नी की नग़हें हर पल उन पगडंडियों को देखती रहती थी जिन पगडंडियों से चल कर उसका पति और उसका बड़ा पुत्र शहर रवाना हुए थे। यह मंगल मदारी के परिवार के लिये वास्तव में बहुत कठिन समय था। अँधेरी रातों में अपनो से दूर रह कर समय व्यतीत करना, जैसे यह वक्त सारे मदारी परिवार के लिए परीक्षा की घड़ियाँ थी। जहाँ मंगल अपने बड़े बेटे के साथ शहर में जी तोड़ मेहनत कर रहा था, वहीं गाँव में मंगल की पत्नी हर छोटी सी आहट पर डर कर अपने बच्चों को अपनी छाती से लगा लेती थी और एक दिन जब मंगल मदारी की पत्नी का रोते रोते फोंन आया कि उसका बेटा जो तेज़ बुखार से तप रहा था आज उसका भी देहाँत हो गया है, तब मंगल मदारी ने खेल को वहीं बीच में ही रोक दिया था, जो कि मदारी प्रथा के खिलाफ था। धीरे धीरे

वहाँ पर जमा हुई भीड़ छटने लगी थी पर कुछ लोग अभी भी मंगल मदारी के बंदर से खेल रहे थे। पर उनमें से किसी को भी मंगल मदारी के दिल का हाल पता नहीं था और मंगल चुपचाप एक दीवार का सहारा लिये खामोश सा खड़ा था और खामोशी की उसी अवस्था में, वो निराश होकर ज़मीन पर बैठ गया था और मंगल मदारी का पुत्र कुछ भी नहीं जानता था कि उसके पिता को अचानक क्या हुआ है, वो अपने पिता के इस व्यवहार से बहुत हैरान हुआ था। "क्या हुआ पिता जी" मंगल के पुत्र ने मंगल से पूछा था। "कुछ नहीं, पर आज से मदारी का खेल बंद करना होगा" पिता ने बहुत उदास हो कर अपने पुत्र से कहा था।

"पर पिता जी फिर हम क्या करेंगे, पैसे कैसे कमाएँगे" मंगल मदारी का बड़ा पुत्र बहुत समझदार था। मंगल मदारी का पुत्र उस गौरवशाली मदारी खानदान का आखिरी वंशज था, जो मात्र 10 वर्ष की छोटी सी उम्र में ही अपने परिवार की माली हालत पर सोचने लगा था और अब वो छोटी सी उम्र में ही घर का एक ज़िम्मेंदार सदस्य बन चुका था और शायद यह उस गर्वीले मदारी खानदान की परम्परा का अंतिम चिराग था। मंगल ने रोते हुए अपने पुत्र से कहा था "बेटा अब मदारी की इस परम्परा का बोझ मुझ से न उठेगा, सारा परिवार इस मदारीगिरी की भेंट चढ़ चुका है, अब हम गाँव में ही मेहनत मजदूरी कर लेंगे, पर अब अपने परिवार के साथ ही रहेंगे" मंगल ने उसी पल अपना मदारी गिरी का सारा सामान वहीं छोड़ दिया था और इस खूबसूरत कला को अंतिम बार अपनी भरी हुई आँखों से देखा था जिस परम्परा ने वर्षों से उनके खानदान को व्यवसाय दिया था और खाने की रोटी दी थी। इस कलात्मक परम्परा को जीवित रखने के लिए मालूम नहीं कितने ही गौरवशाली परिवार मदारी गिरी की भेंट चढ़ चुके थे। मंगल मदारी को अब इस नये युग में मदारी गिरी की कला के कारोबार का अंत होता दिखाई दे रहा था और यह मदारी लोगों की तकदीर का बेहद दुखद किस्सा था। यह बहुत दुखद बात थी कि दूर दराज के कस्बों में जहाँ मदरीगिरी की बेमिसाल कला का जन्म हुआ था, वहाँ पर धन नहीं था और जहाँ से धन कमाया जा सकता था, उस शहर में अपने सारे परिवार को रख पाना उन जैसे गरीब लोगों के लिए लगभग नामुमकिन था। मंगल अपने गाँव में वापिस लौट आया था और उसका सारा परिवार अब सड़क बनाने वाला एक मामूली सा मजदूर परिवार बन चुका था।

एक दिन मंगल कठिन परिश्रम करने के बाद, कड़कती धूप में, एक पेड़ की छाँव में बैठ कर अपने परिवार के साथ भोजन कर रहा था कि उसने देखा एक नौजवान लड़का मदारी का बहुत सा साज़ोसामान लिए शहर के रास्ते पर जा रहा था। मंगल ने उस नौजवान को आवाज़ दी "ओ भाया खाना खाओगे" उस नौजवान को देख कर मंगल को अपने दिन याद आ गये थे। मंगल मदारी जानता था कि रेतीली ज़मीन पर पाँव पाँव चलना एक लम्बी और थका देने वाली यात्रा थी।

वह नौजवान अपना मदारी गिरी का सारा साज़ोसामान जमीन पर रख कर वहीं मंगल के पास बैठ गया था और उसके माथे पर आये पसीने को देखकर ऐसा लग रहा था कि जैसे वो बहुत थक चुका था। मंगल की पत्नी ने अपनी रुखीसूखी रोटी में से कुछ कोर उसके सामने भी परोस दिये थे और तब मंगल ने उस नौजवान मदारी से पूछा था "कहाँ जा रहे हो भाया" वो नौजवान उत्साहित होकर बोला था "मैं मदारी हूँ भाया शहर जा रहा हूँ, शहर जाऊँगा कुछ पैसे कमाऊँगा और अपने परिवार को भेजूँगा" उस नौजवान मदारी के चेहरे पर बहुत उत्साह था। उस मदारी ने मंगल से कहा था "मेरे परिवार में मेरे माता पिता हैं मेरी पत्नी और छोटे छोटे दो बच्चे हैं"

मंगल ने उस मदारी के उत्साह को देखा और मदारी गिरी के उस साजोसामान को भी देखा जिस सामान का मंगल दिल से बहुत सम्मान करता था और मदारी गिरी की कला को मंगल दिल से प्रेम करता था। उस नौजवान के उत्साह को देख कर मंगल के भीतर एक उम्मीद की किरण जगी थी कि शायद फिर से मदारी गिरी का कोई नया दौर शुरू हो जाये और उनकी इस खूबसूरत खानदानी कला के चिराग फिर से जगमगाने लगें। भोजन करने के पश्चात जब वह नौजवान चलने को हुआ, तो मंगल ने उसे रोका और उसे अपने हिस्से की बचीखुची रोटी भी एक पोटली में बांध कर उस मदारी के हाथ में थमा दी और कहा "भाया सफर बहुत लम्बा है इसे साथ में रख लो, भूख लगेगी तो खा लेना" वह मदारी बहुत ध्यान से मंगल की आँखों में देख रहा था और उस नौजवान को मंगल की आँखों में अपने लिए बहुत सहानुभूति दिखाई दी थी। फिर उत्सुकता वश उस मदारी ने मंगल से पूछ था "भाया तुम सड़क बनाने का काम ही करते हो क्या, मेहनत मजदूरी या तुम्हारी खेती भी है"

तब मंगल कुछ पल सोचता रहा था और वो सच बता कर उस मदारी को निरुत्साहित नहीं करना चाहता था इसलिए उसने कुछ भी कहने से पहले, अपने पुत्र और पत्नी की आँखों में देखा था और फिर उस मदारी से कहा था ‘‘नही भाया हम मेहनत मजदूरी करते हैं और वर्षों से सड़क बनाने का काम ही करते आ रहे हैं’’ मंगल का बड़ा पुत्र अपने पिता के इस उत्तर से थोड़ा हैरान हुआ था और मंगल की पत्नी भी मंगल के उत्तर से आश्चर्यचकित थी,पर मंगल की पत्नी खामोश ही रही क्योंकि मंगल मदारी की पत्नी भीतर से मदारी गिरी के दुखद सत्य को जानती थी कि इस खूबसूरत कला को ज़िंदा रखने के लिए, न जाने कितने ही परिवार मदारी गिरी की कला की भेंट चढ़ चुके थे। जाने से पहले उस नौजवान मदारी ने मंगल का शुक्रिया अदा किया था और फिर वो अपनी राह पर आगे बढ़ गया था।

मंगल मदारी का परिवार ख़ामोशी से उस मदारी को जाते हुए देखता रहा था, देखता रहा था जब तक की वो मदारी उनकी नज़रों के सामने से पूरी तरह से ओझंल नहीं हो गया था।

मंगल के दिल में बस अब केवल एक ही कामना थी कि यह नवयुवक कभी भी असफल होकर गांव न लौटे और मदारी गिरी की इस बेमिसाल कला को फिर से कोई नई मंज़िल मिल जाये और इस लुप्त होती कला का सम्मान फिर से वापिस लौट आये और उस पल मंगल मदारी मन ही मन में बुदबुदाया था ‘‘ईश्वर करे कि ऐसा ही हो’’

समाप्त

कहानी 21: घर ने कहा

अब मैं 60 वर्ष का हो गया था और बरसों से अपने परिवार की अच्छी तरह से देखभाल करने में व्यस्त रहा था पर अब मेरे बच्चे बड़े हो गए थे और वो सब अपने कामों में व्यस्त हो गए थे और मैं अकेला अपनी आराम कुर्सी पर बैठा हुआ ज़िंदगी के बीते लम्हों को पल पल करके याद कर रहा था। तभी मेरी पत्नी ने मुझ से पूछा था "अगर कहो तो, तुम्हारे लिए एक कप चाय और बना दूं" तब मैंने उसकी ओर बहुत ध्यान से देखा था और मुझे अहसास हुआ था कि ज़िंदगी की दौड़ धूप को झेलते झेलते अब वो भी मुझे कुछ थकी थकी सी दिखाई देने लगी थी। तभी अचानक मुझे अपने गांव के घर का ध्यान आ गया और साथ ही क्षण भर में ही मेरी आंखों के सामने मां का चेहरा आ गया, जो मुझ से अक्सर कहती थी "तुम्हारी तबियत तो ठीक हैं न सत्य, तुम्हारे लिए गर्म रोटी बना दूं" और मां की याद आते ही मेरा मन कुछ भारी हो गया था और मेरी आंखों में क्षण भर के लिए नमकीन पानी लहराया था और उस पल मैं अपने घर की खिड़की से बाहर देख रहा था और उस समय बाहर हल्की हल्की बारिश हो रही थी और मैंने उसी पल फैसला किया था कि मैं आज ही अपने गांव वाले घर को देखने जाऊंगा। अपने

परिवार की जरूरतों को देखते हुए हम शहर के भीड़ भाड़ वाले स्थान पर रह रहे थे जहां पर आसपास गहमागहमी से भरी छोटी छोटी गलियाँ थी और उन गलियों में लोगों की भीड़ थी, पर कोई भी किसी को नमस्ते कहने से अधिक नहीं जानता था और शायद यह हर शहर की एक कड़वी सच्चाई थी। गांव जाने का ख्याल आते ही मैंने बहुत जल्दी से अपने कपड़े बदले थे और बारिश को देखते हुए अपने साथ एक छाता भी ले लिया था और मुझे यूं जल्दी से तैयार होता देख कर मेरी पत्नी ने मुझ से हैरान होकर पूछा था "आप इतना जल्दी जल्दी तैयार होकर कहां जा रहे हैं बाहर बारिश हो रही है" तब मैंने अपनी पत्नी की ओर ध्यान से देखा था और उसको बहुत प्यार से कहा था "एक काम याद आ गया है, तुम्हें वापिस आने पर बताऊंगा" और अपनी पत्नी को सोचता छोड़ कर मैं बहुत तेज़ी से घर से निकला था और अब मुझे गांव जाने वाली बस में बैठना था। बस का इंतजार करते हुए जहां पर मैं खड़ा हुआ था, उस बस स्टाप से हर आधे घंटे के अंतराल पर गांव के लिए बस निकलती थी और मेरा गांव शहर से लगभग 150 किलोमीटर की दूरी पर ही था।

बस में बैठते ही मैंने अपना छाता बंद कर लिया था, पर बाहर अभी भी हल्की हल्की बारिश हो रही थी और उस समय बस में बस चलने से पहले लोगों के आने जाने की वजह से बहुत शोर हो रहा था। पर उस पल मैं अपने ख्यालों में अपने घर पहुंच चुका था और उस पल मेरे चेहरे पर मुस्कराहट आ चुकी थी और मेरे लिए वह पल सुख चैन के पल थे और उन खूबसूरत लम्हों में मुझे कहीं पर भी पहुंचने की कोई जल्दी नही थी और शायद मैं भीतर से इस बात से बहुत खुश था कि मैं बरसों बाद अपने घर वापिस लौट रहा था। उस पल मेरे पास फुरसत ही फुरसत थी और रिटायर्ड होने के बाद मुझे बहुत आराम था पर उस समय किसी के पास भी दो घड़ी की फुरसत भी नहीं थी कि कोई मुझ से प्यार से पूछे कि "भाई तुम कैसे हो" और इन्हीं ख्यालों में खोए हुए, मुझे पता ही नही चला कि वक्त कैसे बीत गया था और बस के कंडेक्टर की आवाज़ सुनकर मेरा ध्यान टूटा था "साहब आपका स्टाप आ गया है" और उस पल मैं अपने हाथों में छाता पकड़े बस से नीचे उतर गया था। जहां पर बस ने मुझे छोड़ा था उस पक्की सड़क से 15 मिनट की दूरी पर मेरा घर था। मेरे पिता जी एक किसान थे और उन्होंने जी तोड़ मेहनत करके उस घर को बनाया था। हमारे परिवार में हम तीन बहन भाई थे। सबसे बड़ी मेरी बहन नीलम थी जो अब एक बैंक अधिकारी थी और उससे छोटे मेरे बड़े भाई सुकेश थे जो

कलकत्ता के एक कालेज में प्रोफेसर थे और मैं उस घर में सबसे छोटा सदस्य ''सत्य'' था और मैं एक केंद्रीय विद्यालय में रिटायर्ड होने से प्रिंसिपल था और अपने घर में सबसे छोटा होने की वजह से, मां सबसे अधिक लाड प्यार मुझ से ही करती थी। अब इस बात को 40 वर्ष बीत चुके थे। मेरी बहन नीलम शादी होने के बाद इस गांव के घर से बहुत दूर चली गई थी और भाई सुकेश कलकत्ता में एक कालेज में प्रोफेसर थे और सब अपने परिवार में सुख से थे। हम सब भाई बहन किसी विवाह समारोह में या किसी त्यौहार के अवसर पर ही एक दूसरे से मिल पाते थे और अपने परिवार के सुख दुख की बातें सांझा कर लेते थे। हम तीनो बहन भाइयों में आपस में बहुत प्रेम था और उस पल मैं मन ही मन में अपने घर के सब सदस्यों को याद कर रहा था और परिवार के सब सदस्यों का चेहरा बार बार मेरी आंखों के सामने आ रहा था और इन्हीं सुखद विचारों के बीच में पता नहीं कब मैं अपने घर पर पहुंच गया था और इस बात का मुझे पता तक नहीं चला था।

गांव के उस छोटे से घर के आंगन में, अब भी वृक्ष ज्यूं के त्यूं ही खड़े थे जो मुझे मेरे बचपन की याद दिला रहे थे। मैंने देखा कि हमारे गांव के घर के पास ही, अब एक नया घर बन रहा था और उसमे कुछ मजदूर काम कर रहे थे।

मैंने कुछ सोचते हुए अपने घर के दरवाज़े का ताला खोला था और फिर घर के भीतर प्रवेश किया था और मैंने देखा कि घर के भीतर अभी भी बिलकुल वैसा ही माहौल था जैसे मैंने बरसों पहले देखा था, पर घर बंद रहने की वजह से घर की दीवारों पर जगह जगह पर थोड़ी धूल जमा हो गई थी और दीवारों की हालत भी थोड़ी खस्ता हो चुकी थी। जबकि शहर में बहुत व्यस्तता के बावजूद भी मैं कभी कभी गांव के घर की साफ सफाई करवाने आ जाया करता था, पर गांव के उस घर को मैं उस दृष्टि से कभी भी नही देख पाया था, जिस दृष्टि से मैं अब उसे देख रहा था और महसूस कर रहा था।

मैंने अपना छाता वहीं पर घर के एक कोने में रख दिया था और घर की खिड़की पर खड़ा हो गया था जहां से मुझे घर का सारा आंगन दिखाई दे रहा था। उसी पल उस खाली घर में एक आवाज़ गूंजी थी, जिस आवाज़ ने मुझे चौंका दिया था और मैं अपने आसपास सब तरफ देखने लगा था और मुझे लगा कि शायद यह मेरा सिर्फ भ्रम था। पर इस बीच एक बार फिर वही आवाज़ गूंजी थी और उस आवाज़ ने मुझ से कहा था ''तुम बहुत बरसों बाद आए हो सत्य, तुम कैसे हो'' मैंने बहुत हैरानी से अपने आसपास देखा था

और पूछा था “आप कौन हैं और मैं आपको क्यों नही देख पा रहा हूं” उस पल मुझे किसी के हंसने की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी थी और वह आवाज़ एक बार फिर से गूंजी थी “तुम मेरे पास आकर भी, मुझी से पूछ रहे हो कि मैं कौन हूं, मैं तुम्हारा घर हूं” मैंने आश्चर्य से देखते हुए उस आवाज़ से पूछा था “मेरा घर” और उस पल फिर वही आवाज़ गूंजी थी “हां तुम सबका घर, सत्य तुमने मुझे बरसों का इंतज़ार करवाया है और तुम अब आए हो, मुझे तुम्हारा आना बहुत अच्छा लगा है” उस पल मुझे उस आवाज में बहुत भावुकता महसूस हो रही थी और उस घर ने भराई हुई आवाज़ में मुझ से कहा था “मुझे याद है वो पल जब तुम सब भाई बहन मेरे आंगन में खेलते थे और मां आंगन में बने चूल्हे पर तुम सबके के लिए रोटी सेक रही होती थी” उस घर में गूंजती आवाज़ से अब तक मैं खुद भी बहुत भावुक हो गया था और मैंने लगभग बिलखते हुए उस घर से कहा था “आज मुझे मां याद गई थी और फिर मैं खुद को यहां पर आने से रोक नही पाया था” मुझे रोता देख कर वह आवाज़ एक बार फिर से गूंजी थी और उसने मुझ से कहा था “मैं अक्सर तुम सब बच्चों को बहुत याद करता हूं और तुम्हें इस घर में आया देख कर, मैं खुद को रोक नही पाया” उस समय मुझे कुछ ऐसा अनुभव हुआ था जैसे वह घर मेरी तरह ही रो रहा था। अब तक मैंने खुद को थोड़ा संभाल लिया था और मैंने उस घर से पूछा था “क्या तुम्हें मां याद है, क्या वो भी कभी यहां पर आई थी” तब उस घर ने मुझ से कहा था “हां, मां भी तुम सब बच्चों को इस घर में फिर से देखना चाहती है और वो तुम सब बच्चों को बहुत याद करती है” यह सुनकर मैं खुद को रोक नही पाया था और बिलखते हुए मैंने उस घर से कहा था “मैं खुद को बहुत अकेला अनुभव कर रहा हूं, मां तुम कहां हो” उस पल उस घर ने मुझ से कहा था “चुप हो जाओ सत्य, देखो तुमसे मिलने कौन आया है” तब तक मैं संभाल चुका था और मैं अपने आसपास देखने की कोशिश करने लगा था और मैंने चेहरे पर आश्चर्य के भाव लिए उस घर से पूछा था “मुझ से मिलने कौन आया है और वो मुझे दिखाई क्यों नही देता” उस पल मुझे मेरी मां की आवाज़ सुनाई दी थी, जो मुझ से कह रही थी “चुप हो जाओ सत्य” और उस पल मैं अपनी मां के हाथों के स्पर्श को अपने मस्तक पर अनुभव कर रहा था और उस पल मुझे मेरी मां की आवाज़ फिर से सुनाई दी थी “यूं रोने से कुछ भी नही होगा सत्य और तुम्हारे पास तो सब कुछ है, तुम्हारी पत्नी और बच्चे बहुत अच्छे हैं, मैं उन सबको देख सकती हूं और मैं हर पल तुम्हारे पास ही रहती हूं” मैंने बरसों बाद अपनी मां की आवाज़ सुनी

थी और उस पल मैं अपनी मां की आवाज़ सुनकर बहुत भावुक हो गया था और मैंने रोते हुए ही मां से कहा था ‘‘मां तुम मुझे दिखाई क्यों नही दे रही, मैं तुम्हें बस एक बार देखना चाहता हूं’’ और उस पल फिर मेरी मां की आवाज़ गूंजी थी और मुझे कुछ ऐसा अनुभव हुआ था जैसे किसी ने बहुत प्यार से मुझे स्पर्श किया था, तब उस पल मुझे अपने करीब से ही वह आवाज़ सुनाई दी थी ‘‘चुप हो जाओ सत्य, सच को पहचानो और वर्तमान में रहो’’ और कुछ क्षण की चुप्पी के बाद वह आवाज़ फिर से गूंजी थी ‘‘तुम यहीं रुको, मैं तुम्हारे लिए चाय बना कर लाती हूं’’ और उसके बाद सब तरफ खामोशी छा गई थी और जब इन सब बातों से मेरा ध्यान टूटा, तो मैंने देखा कि एक छोटी लड़की मेरे सामने खड़ी थी और वो मुझे बहुत ध्यान से देख रही थी और उसने बहुत सम्मान से मेरी ओर एक चाय का कप बढ़ा दिया था और मुझ से कहा था ‘‘साहब चाय पी लीजिए’’ और मैं हैरान सा उसकी ओर देख रहा था और वो मेरे हाथों में चाय का कप थमा कर चली गई थी, यह लड़की घर के पास काम कर रहे मजदूरों में से किसी एक की बेटी थी और मैंने देखा कि वो सब मजदूर मिल जुल कर मिट्टी के चूल्हे पर खाना बना रहे थे और मस्ती में वो सब कोई लोकगीत गुनगुना रहे थे। फिर उन मजदूरों में से एक वृद्ध मजदूर मेरे पास आया था और उसने मुझ से पूछा था "साहब आप ठीक तो हैं", उस पल मैंने सोचा कि शायद मेरे रोने की आवाज़ उन लोगों ने सुन ली होगी और इसी वजह से वो मेरी खेर खबर पूछने चले आए थे। मैंने उनको चाय का खाली कप वापिस देते हुए उनसे धन्यवाद कहा था और बहुत विनम्रता से उनसे कहा था ‘‘मैं बिलकुल ठीक हूं’’ तब उस वृद्ध मजदूर ने मेरी ओर देखते हुए मुझ से कहा था ‘‘शुक्र है’’ और वो सब मजदूर फिर से वापिस अपने काम में लग गए थे। घर के दरवाज़े को ताला लगाते हुए उस पल मैंने मन ही मन में यह फैसला कर लिया था कि इस घर को रहने लायक बनाने के बाद हम सब भाई बहन कुछ दिन तक इस घर में साथ रहेंगे और इसी बात को ध्यान में रखते हुए, मैंने अपने घर की मरम्मत करवानी ठीक समझी थी और ये ही सोच कर मैंने पास में काम कर रहे मजदूरों को कुछ पैसे देते हुए उनके हाथ में अपने घर की चाबी थमा दी थी और उन्हें घर को ठीक करने के लिए क्या क्या काम करना है, वह ठीक से उन्हें समझा दिया था और मैं अपने इस निर्णय से बहुत खुश था और उस समय धीरे धीरे शाम ढलने लगी थी और अब तक बारिश भी थम चुकी थी और घर लौटने से पहले मैंने अपने घर को नज़र भर के देखा था और फिर तेज़ कदमों से अपने घर की ओर लौट पड़ा था।

मेरी पत्नी बहुत बैचेनी से मेरी राह देख रही थी और शायद उसने मेरी आंखें देख कर मेरी मानसिक अवस्था को भांप लिया था और मेरे कुछ भी कहने से पहले ही उसने मुझे अपने गले से लगा लिया था। फिर मैंने अपनी पत्नी को सब किस्सा कह सुनाया था और लगभग रोते रोते ही उससे कहा था "सुधा आज मेरी मां से बातचीत हुई थी" और मेरा एक भी शब्द बोलने से पहले मेरी पत्नी मेरी मनोस्थिति समझ गई थी और उसने बहुत प्यार से मुझे अपने गले से लगा कर बस इतना ही कहा था "बस अब आपको और कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है मैं सब समझ गई हूं" और उस पल मैंने लगभग रोते रोते ही अपनी पत्नी से कहा था "सुधा अब हम उस घर में रहेंगे और भाई साहब और बहन जी को भी इस बात की खबर दे देंगे" इस बीच मेरी पत्नी मेरे लिए पानी ले आई थी और उसने मुझ से बहुत प्यार से कहा था "आप जो भी कह रहे हैं हम वैसा ही करेंगे" और मेरा हाथ अपने हाथों में थाम कर वो मेरे करीब ही बैठ गई थी। शायद उस पल उसने मन ही मन में उस दृश्य की कल्पना कर ली थी कि गांव के उस घर में उस पल क्या हुआ होगा और यह सब सोच कर वो भी बहुत भावुक हो गई थी और वैसे भी पुरुषों के मुकाबले में औरतें कही अधिक संवेदनशील होती हैं।

अभी कुछ ही समय बीता था कि मेरी बड़ी बहन का फोन आया और उसने बहुत प्यार से मुझ से कहा था "छोटे कैसा है तू" और अपनी बहन की आवाज़ सुनकर मेरा रोना निकल गया था और उसी पल मेरी पत्नी ने मेरे हाथों से फोन अपने हाथों में ले लिया था और मेरी बड़ी बहन को गांव के घर का सारा वाक्या कह सुनाया था।

जल्दी ही हम तीनों भाई बहन गांव के घर में रहने चले गए थे और अब तक मजदूरों ने घर की हालत में बहुत सुधार कर दिया था और घर वापसी के उन यादगार लम्हों में हम सब भाई बहन अपने बचपन के दिनों को याद कर रहे थे और मुझे मालूम था कि उस पल हमारी मां अपने अदृश्य रूप में हमारे आसपास ही कहीं मौजूद थी और मैं इस बात की कल्पना कर रहा था कि मां अपने सारे परिवार को एक साथ देख कर बहुत खुश होगी और हम सब बच्चों को अपना आशीर्वाद दे रही होगी।

समाप्त

कहानी 22: जीने की राह

यह दिसंबर का महीना था और आज बहुत अधिक ठंड थी और रामचरण और कमला ने ठंड से बचने के लिए अपने एक कमरे के घर में अंगीठी सुलगाई हुई थी पर फिर भी वो दोनों ठंड से ठिठुर रहे थे। रामचरण पिछले लगभग 55 वर्षों से रेलवे स्टेशन के करीब बैठ कर लोगों के जूते पॉलिश करने का काम करता आ रहा था और अब वो 72 वर्ष का हो गया था। पर बहुत दुख की बात थी कि इतने वर्ष कड़ी मेहनत करने के बावजूद भी वो अभी भी गरीब के गरीब ही थे। उनके घर की इकलौती खिड़की टूटी हुई थी और घर का छप्पर भी मरम्मत करवाने लायक हो चुका था पर पैसे की कमी की वजह से उनके घर के सारे काम अधूरे पड़े हुए थे और रामचरण और कमला के इस छोटे से घर में सिवा कुछ ज़रूरी सामान के और कुछ भी नहीं था। यहां तक कि उन दोनों के पास ठंड से बचने के लिए गर्म कपड़े तक नहीं थे और उन्होंने अपने फटे हुए कंबल की भी बहुत सी जगह से सिलाई कर रखी थी। आज भी बहुत अधिक ठंड थी और दोनो रुखा सुखा खा कर अपने फटे हुए कंबल में दुबके हुए थे और उनके छोटे से कमरे में एक अंगीठी सुलग रही थी जो बस कुछ ही समय के बाद बुझने वाली थी। उस पल अपने कंबल में दुबके हुए ही कमला ने रामचरण से कहा था "न जाने हमारे दिन कब बदलेंगे" और यह

कहते हुए उसके चेहरे से मायूसी साफ झलक रही थी। तब रामचरण ने अपनी पत्नी को दिलासा देते हुए कहा था "हमारे पास सिर ढकने के लिए छत है और खाने को रोटी है और इससे अधिक तुम्हें क्या चाहिए" तब रामचरण की बात सुनकर थोड़ा मुंह बनाते हुए कमला ने कहा था "सारी जिंदगी तुम सिर्फ ये ही बात बोलते आए हो पर सच तो तुम भी जानते हो, बात बदलने से परिस्थिति नहीं बदल जाती" कमला की नाराज़गी जायज़ थी पर रामचरण भी बहुत बेबस था क्योंकि अब ज़माना बदल गया था और अब उसके पास जूते पॉलिश करवाने के लिए बहुत कम लोग आते थे बस जैसे तैसे करके उनका निर्वाह हो जाता था। भीतर से रामचरण इस बात को जानता था कि अफसोस करने से कुछ भी नहीं बदलेगा इसलिए वो अपनी पत्नी कमला की कही कड़वी बातों का कभी भी बुरा नहीं मानता था और बात बदलने के लिए वो अपनी पत्नी को सिर्फ ये ही एक उदाहरण देता था। रामचरण बहुत मेहनती और ईमानदार इंसान था और उसकी पत्नी कमला कहने को तो कुछ भी कह देती थी पर भीतर से वो अपने पति का दिल से बहुत आदर करती थी और इसी कहा सुनी में करवट बदलते बदलते न जाने कब सुबह हो जाती थी और उन्हें इस बात का पता तक नहीं चलता था और यह उनकी जिंदगी का बरसों का किस्सा था। कमला सुबह सबसे पहले उठती थी और अपने घर में बने मंदिर में ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद वो चूल्हे पर चाय का पानी चढ़ा देती थी और तब तक रामचरण नहा धो कर पगड़ी पहनकर तैयार हो जाता था। इस बीच कमला रामचरण को कुछ खाने पीने के लिए देने के बाद रामचरण को साथ ले जाने के लिए एक डिब्बा भी बांध देती थी और यह उनका वर्षों का नियम था। रामचरण अपने बूट पॉलिश का सामान लेकर अपनी साइकिल पर सवार होकर, धीरे धीरे रेलवे स्टेशन के करीब अपने बैठने की जगह पर पहुंच जाता था और फिर वो लोगों को आता जाता हुआ देखता रहता था और वहां अकेले बैठे बैठे हुए उसकी मायूसी का दौर शुरू हो जाता था। रामचरण को आजकल अधिकतर लोग खेलने कूदने वाले जूते पहने ही दिखाई देते थे और उसे चमड़े के जूते पहने हुए बहुत कम लोग दिखाई देते थे और यह देख कर रामचरण थोड़ा निराश हो जाता था क्योंकि उन जूतों को पॉलिश नहीं किया जा सकता था। रामचरण को सारा दिन बैठने के बाद जो थोड़ी बहुत कमाई होती थी उसी से उनका घर चलता था।

एक दिन सुबह जब रामचरण अपनी साइकिल पर सवार होकर जा रहा था, तब थक जाने की वजह से वो एक जगह पर बैठकर थोड़ा आराम करने लगा था और तभी

रामचरण ने देखा कि एक आदमी बहुत सारे उपकरणों की सहायता से कार को साफ कर रहा था और यह देखकर उत्सुकतावश रामचरण उस कार साफ करने वाले के तौर तरीकों को बहुत ध्यान से देखने लगा था। रामचरण ने देखा कि कार साफ करने वाले ने पहले कार को भीतर से वेक्यूम क्लीनर की मदद साफ किया था और फिर उसने कार की सीटों के कवर खोल कर उन्हें भी भीगे हुए ब्रश से अच्छी तरह से पोंछ दिया था। यह देख कर रामचरण से रहा नहीं गया था और उसने बहुत भोलेपन से उस कार साफ करने वाले नौजवान लड़के से पूछ ही लिया था "भाई कार का यह कपड़ा तो थोड़ा भीग गया है, अब आप इसे सुखाएंगे कैसे इसे सूखने में तो अब तीन से चार घंटे लग जाएंगे" तब उस नौजवान लड़के ने रामचरण की ओर देख कर मुस्कराते हुए उससे कहा था "बाबा मेरे पास हर मुश्किल का हल है" और इतना कह कर कार साफ करने वाले उस नौजवान लड़के ने अपनी औजारों की पेटी में से हेयर ड्रायर बाहर निकाला था और उसकी मदद से उसने कार के सारे सीट कवरों को कुछ मिनट में ही सूखा दिया था। यह देख कर रामचरण बहुत हैरान हुआ था और कुछ सोचकर उसने लगते हाथ ही उस नौजवान लड़के से पूछ लिया था "बेटे क्या यह उपकरण बैटरी से चलने वाला भी मिल जाता है" तब उस नौजवान लड़के ने मुस्कराते हुए कहा था "हां बाबा यह बैटरी से चलने वाला भी मिल जाता है और इसे हेयर ड्रायर कहते हैं" उस लड़के की बात सुनकर रामचरण के चेहरे पर मुस्कान आ गई थी और उस पल रामचरण मन ही मन में हेयर ड्रायर की उपयोगिता को अपने बूट पॉलिश के काम में उपयोग करने की सोच रहा था। उस पल रामचरण के दिमाग में इस बात को लेकर कशमकश चल रही थी कि अगर वो खेलने कूदने वाले जूते को भीगे ब्रश से साफ करने के बाद हेयर ड्रायर की मदद से सूखा देगा तो शायद उसके पास बूट पॉलिश करवाने के लिए अधिक लोग आने लगेंगे और इससे उसकी आमदनी बढ़ जाएगी। पर फिलहाल रामचरण का यह ख्याल भर ही था और सारा दिन रामचरण अपनी जगह पर बैठा हुआ आते जाते लोगों को देखता रहा था और उसने देखा कि खेलने कूदने वाले जूते भी धूल मिट्टी लगने से मैले हो जाते हैं और उन्हें साबुन वाले पानी और ब्रश की सहायता से साफ किया जा सकता था और फिर उन्हें हेयर ड्रायर की सहायता से आसानी से सुखाया भी जा सकता था। सारा दिन रामचरण इन्हीं सोचों में उलझा रहा था और घर लौटने से पहले वो अपने बूट पॉलिश का सामान अपने एक दोस्त के पास रखकर बिजली के उपकरण बेचने वाली एक दुकान पर गया था और उसने

उस दुकानदार से बैटरी से चलने वाले हेयर ड्रायर का दाम पूछा था और रामचरण ने उसी पल अपने मन में ठान लिया था कि वो जल्दी ही इस हेयर ड्रायर को खरीद लेगा और लोगों के खेलने कूदने वाले जूतों को इस नए उपकरण की सहायता से साफ करने की कोशिश करेगा और रामचरण जानता था कि इस प्रयोग में वो सफल भी हो सकता था और असफल भी हो सकता था। पर अब रामचरण के पास अपनी आमदनी को बढ़ाने के लिए इसके सिवा अब दूसरा कोई रास्ता नहीं था और ये ही सब सोच कर एक सप्ताह में कुछ पैसे जोड़ कर रामचरण ने बैटरी से चलने वाला एक हेयर ड्रायर खरीद लिया था और सबसे पहले रामचरण ने उसका उपयोग अपने घर के कुछ छोटे कपड़ों को सुखाने के लिए किया था और उसे यह जानकार बहुत प्रसन्नता हुई थी कि लगभग 5 मिनट में ही वो गीले कपड़े सूख गए थे। दूसरी तरफ कमला अपने पति की इन अजीबोगरीब हरकतों को देख कर थोड़ी हैरान परेशान हो गई थी और उस पल वो मन ही मन में यह सोचकर थोड़ी चिंतित हो उठी थी कि शायद अधिक चिंता करने की वजह से रामचरण कुछ सठिया गया है। कमला बेचारी अनपढ़ औरत थी और उसे इन सब बातों की कोई खास समझ नहीं थी।

हेयर ड्रायर खरीदने के बाद सारी रात रामचरण खेलने कूदने के बूटों को चमकाने के सपने देखता रहा और उसने अपने सपने में देखा कि वो लोगों के खेलने कूदने वाले जूतों को साबुन वाले पानी और छोटे ब्रश की सहायता से साफ कर रहा है और फिर उन जूतों को हेयर ड्रायर की मदद से सूखा रहा है और उसके पास आए सब लोग खुश होकर वापिस जा रहे हैं और अपने सपने में रामचरण ने खूब पैसे कमाए थे और उसी खुशी में वो नींद में ही मुस्कराने लगा था और उसने नींद में ही भगवान का शुक्रिया अदा कर दिया था और आधी रात को जब अचानक कमला की आंख खुली तो अपने पति को नींद मुस्कराते हुए देख कर उसे मन ही मन में अपने पति की चिंता होने लगी थी और उस पल उसे लगा था कि शायद अधिक ठंड लगने की वजह से ठंड रामचरण के दिमाग में चढ़ गई है जिसकी वजह से वो नींद में ही मुस्करा रहा है।

अगले दिन सुबह कमला नियमानुसार पहले उठ गई थी और उसने सबसे पहले अपने घर में बने मंदिर में रामचरण की सेहत को लेकर ईश्वर से प्रार्थना की थी और उसके बाद उसने चूल्हे पर चाय का पानी चढ़ा दिया था और इतने में कमला ने देखा कि रामचरण बहुत जल्दी जल्दी से अपनी पगड़ी पहन कर तैयार हो रहा था और वो अपने

बूट पॉलिश के सामान की पेटी में, कुछ नया सामान भी रखने लगा था और उसने हेयर ड्रायर के साथ एक स्प्रे और गीले जूतों को पोंछने के लिए एक छोटा तौलिया भी साथ रख लिया था और अधिक उत्साहित होने की वजह से रामचरण अपनी साइकिल पर सवार होकर आज कुछ जल्दी ही अपने घर से काम पर निकल गया था। अपने पति को इतनी जल्दी काम पर जाते हुए देख कर कमला रामचरण के लिए थोड़ी चिंतित हो उठी थी और उसे अपने पति का व्यवहार कुछ सामान्य नहीं लग रहा था।

रामचरण अपना बूट पॉलिश का सारा सामान ठीक से रख कर आते जाते लोगों को देखने लगा था और तभी उसके पास एक आदमी आया था और उसने अपने काले रंग के जूते रामचरण को पॉलिश करने के लिए दे दिए थे। रामचरण बहुत तेज़ हाथों से काले रंग के उन जूतों को पॉलिश कर रहा था पर साथ ही उसकी आँखें उस आदमी के साथ आए आदमी के जूतों पर भी लगी हुई थी क्योंकि उस आदमी ने खेलने कूदने वाले जूते पहने हुए थे जो थोड़े मैले दिखाई दे रहे थे और यह देख कर रामचरण ने मन ही मन में पहले ईश्वर का नाम लिया था और फिर डरते डरते उस आदमी से पूछा था “साहब क्या आपके जूते भी चमका दूं, मेरे पास इन जूतों को साफ करने के लिए विशेष उपकरण हैं” वो आदमी दिल का बहुत दयालु था और पिता तुल्य इंसान को इतनी नम्रता से बोलता देखकर उसने जल्दी से अपने जूते उतार कर रामचरण के सामने रख दिए थे और उसने रामचरण से बस इतना ही कहा था “बाबा ज़रा जल्दी कर देना” तब रामचरण ने बहुत नम्रता के साथ उस आदमी से कहा था “बस 10 मिनट लगेंगे साहब और आपके जूते चमक जाएंगे” रामचरण की आंखों में आत्मविश्वास देख कर उस आदमी के चेहरे पर कोमल सी मुस्कान आ गई थी और उसने रामचरण से कहा था “तो फिर अपने हाथों का जादू इन जूतों पर भी दिखा दीजिए बाबा” इतना सुनना था कि रामचरण ने सबसे पहले उन जूतों पर साबुन वाले पानी का थोड़ा स्प्रे लगाया था और फिर हल्के ब्रश से जूतों को बहुत मेहनत से साफ करने लगा था और जब जूते सब तरफ से अच्छी तरह से साफ हो गए थे तब रामचरण ने अपने पेटी में से हेयर ड्रायर निकाला था और जूतों को सुखाने लगा था और चंद मिनटों में जूतों को सूखता देख कर रामचरण की आंखों में चमक आ गई थी और वो आदमी भी रामचरण की मेहनत और जूते साफ करने के इस नए अंदाज़ को देखकर, थोड़ा हैरान दिखाई दे रहा था। कुछ समय की मेहनत से ही वह जूते चमकने लगे थे और अपने जूतों को चमकते देखकर वह आदमी बहुत खुश हो गया था और

उसने रामचरण से पूछा था "बाबा आपने जूतों को साफ करने का यह तरीका किससे सीखा है" तब रामचरण ने उस आदमी को सारा किस्सा कह सुनाया था और वो आदमी मुस्कराते हुए रामचरण से बोला था "बाबा आप कमाल के इंसान हैं और आप कभी भी बूढ़े नहीं हो सकते" और इतना कह कर उस आदमी ने 100 रुपए रामचरण को दिए थे और रामचरण ने 30 रुपए उसे वापिस दे दिए थे उस आदमी ने रामचरण से कहा था "रख लीजिए बाबा" तब रामचरण ने मुस्कराते हुए उस आदमी से कहा था "आपने मुझे मेरी मेहनत के पैसे दे दिए हैं और मैं उससे बहुत संतुष्ट हूं" और इतना कह कर रामचरण ने 30 रुपए उस आदमी को वापिस लौटा दिए थे।

दूसरी तरफ रामचरण के लिए चिंतित होने की वजह से कमला रामचरण के पीछे ही रेलवे स्टेशन पर चली आई थी और वो छुप कर उस दृश्य को देख रही थी और अपने पति को यूं ध्यान मग्न होकर मेहनत से काम करता हुआ देख कर उसकी आंखों से झर झर आंसू बहने लगे थे। कमला ने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसका 72 वर्षीय पति बुढ़ापे के दौर में पहुंचने के बाद बूट पॉलिश करने का कोई नया रास्ता निकाल लेगा और सब कुछ देख समझ कर उसे अपने पति के व्यवहार की समझ आ गई थी और उस पल वो मन ही मन में ईश्वर का धन्यवाद कर रही थी।

देर रात जब रामचरण खुशी खुशी अपने घर पहुंचा तो कमला हाथों में पूजा का थाल उठाए उसका इंतजार कर रही थी और उसने सबसे पहले रामचरण के माथे पर एक टीका लगाया था और यह देख कर रामचरण बहुत हैरान हुआ था और उसने हंसते हुए कमला से कहा था "क्या हुआ कमला" और उस पल कमला बहुत भावुक हो गई थी और वो रामचरण की मुस्कराती हुई ईश्वरीय आंखों में देख रही थी और उस पल उसकी आंखों से झर झर आंसू बहने लगे थे और रामचरण अपनी पत्नी को यूं रोता हुआ देख कर खुद भी थोड़ा भावुक हो गया था और उसी भावुकता में उसने कमला के हाथों में एक नया स्वेटर थमा दिया था और अपनी जेब से बहुत सारे पैसे निकाल कर कमला के हाथों पर रख दिए थे, यह देखकर कमला ने हैरान होते हुए अपने पति से कहा था "इतने सारे पैसे, यह कहां से आए हैं" तब रामचरण ने मुस्कराते हुए कमला से कहा था "कमला रात को ही सपने में मुझे इस नए काम का ईश्वर से आशीर्वाद मिल गया था, इसलिए आज मेरी मेहनत पर ईश्वर ने पैसों की बारिश कर दी थी और आज सारा दिन मैं जूते चमकाने के इस नए काम से व्यस्त रहा और लोगों ने भी मेरी मेहनत से खुश होकर मुझे

मुंह मांगे पैसे दिए, पर मैंने उनसे सिर्फ अपनी मेहनत के पैसे ही लिए हैं" कुछ सोच कर कमला ने रोते हुए ही अपने पति से कहा था "आपने अपने लिए कुछ नहीं लिया" उस पल रामचरण की बूढ़ी आंखों में आंसू थे और उसने भराई हुई आवाज़ में अपनी पत्नी से कहा था "तुम में और मुझ में कोई फर्क थोड़े ही है, हम दोनो तो एक ही हैं" और इतना कह कर रामचरण ने कमला को अपने गले से लगा लिया था और उसने लगभग रोते हुए ही अपनी पत्नी से कहा था "अब हम जल्दी ही घर की मरम्मत भी करवा लेंगे और ठंड से बचने के लिए, दो नए कंबल भी खरीद लेंगे" उस दिन के बाद रामचरण और कमला को पैसों की कभी भी कोई कमी नहीं हुई और यह बात सच थी कि जब कोई इंसान सच्चे मन से, ईश्वर को याद करते हुए ज़िंदगी में कोई नई राह खोज रहा होता है, तब ईश्वर की कृपा से उसे नई राह ज़रूर मिलती है और यह बात पत्थर पर पड़ी लकीर की भांति सत्य है।

समाप्त

कहानी 23: बन्नो की शादी

यह सन 1968 की बात है। शहर से बहुत दूर पहाड़ों में भद्री नाम का एक गाँव था। भद्री गाँव के आसपास के 10 से 12 गाँव पहाड़ी रास्ते पर बनी पगडंडियों की वजह से एक दूसरे से जुड़े हुए थे और हर गाँव की आबादी 50 से 60 घरों के आसपास की थी और वह सब गाँव पहाड़ों में ऐसी जगह पर स्थित थे कि गाँव के हर इंसान को एक गाँव से दूसरे गाँव में जाने के लिये पहाड़ी रास्तों पर 2 से 3 किलोमीटर तक पैदल चलना पड़ता था। गाँव की उन कच्ची पगडंडियों पर साइकिल तक चलाना भी मुमकिन नहीं था और सब गाँव आपस में पहाड़ों पर बनी छोटी छोटी पगडंडियों की वजह से एक दूसरे से जुड़े हुए थे। भद्री गांव के आसपास के सब गांव वालों ने अपने घरों पर मवेशी पाल रखे थे और गांव के अधिकतर लोग दूध बेचने का कारोबार करते थे। उस गांवों में एक या दो दुकानें ही थी जिन दुकानों पर आटा, दाल, चावल, नमक जैसा जरूरत का सामान ही मिलता था। भद्री गांव के लोगों को शहर की पक्की सड़क पर जाने के लिए लगभग 5 किलोमीटर तक पैदल चलना पड़ता था और फिर उस पक्की सड़क से शहर तक की यात्रा करने के लिए उन्हें किसी जीप गाड़ी या दूसरी छोटी गाड़ियों की व्यवस्था करनी

पड़ती थी और वो गाड़ी गाँव की सब सवारियों को उनके सामान के साथ 25 किलोमीटर दूर शहर तक पहुंचा देती थी।

भद्री गांव थोड़ा ऊंचाई पर था और उस गांवों में चारों तरफ हरियाली ही हरियाली थी और भद्री गांव के बारे में एक बहुत विचित्र बात थी कि उस गांव की धरती पर सब तरफ छोटे बड़े गोल पत्थर बिखरे पड़े थे और गोल पत्थरों की वजह से भद्री गांव की सुंदरता पर चार चांद लग जाते थे। भद्री गांवों के सब लोगों ने मिल जुल कर आसपास बिखरे उन गोल पत्थरों की मदद से अपने कच्चे से घर बना रखे थे और उस गांव में एक से दूसरे घर की दूरी थोड़ी अधिक थी।

सुबह सवेरे सूर्य निकलते ही भद्री गाँव के लगभग सब लोग सिर पर दूध के बर्तन उठाए हुए पहले पैदल चलते दिखाई देते थे और फिर सब गांव वाले जीप गाड़ियों से दूध को शहर तक ले जाते थे और शाम होते होते घर का जरूरी सामान लेकर वो गांव वापिस लौट आते थे। यह सब इतना आसान काम नहीं था। भद्री गांव और उसके आसपास के गांव के सब लोगों को मुख्य सड़क तक पहुंचने के लिए अपने सिर पर वजनदार सामान लादे हुए बहुत समय तक पैदल चलना पड़ता था और गाँव के हर इंसान को पैदल चले की आदत सी हो चुकी थी। पर इस बात में कोई संदेह नही था कि कठिनाइयाँ झेलते झेलते गाँव के सब लोग बहुत मजबूत हो चुके थे। पर शहर के लोगों के लिए यह सब इतना आसान काम नही था।

भद्री गाँव में मुश्किल से 60 से 70 घर ही थे और उस गांव में बिजली की व्यवस्था सिर्फ दो से चार घरों में ही थी। भद्री गाँव में अधिकतर घर मिट्टी और बड़े गोल पत्थरों की मदद से बने हुए थे और उन छोटे घरों को झोंपड़ा कहना अधिक उचित होगा क्योंकि पत्थरों को जोड़ कर बने उन घरों में छोटी छोटी सी झिरियाँ थी जिनमें से हवा और रोशनी उनके घरों के भीतर तक आती थी और बारिश के दिनों में सब गांव वालों की कठिनाइयाँ थोड़ी बढ़ जाती थी। सर्दियों में जब पहाडों पर ठंडी हवाएँ चलती थी तब भद्री गांवों के पत्थरों से बने घर बहुत अधिक ठंडे हो जाते थे और तब गांवों के सब लोग अपने घरों में ठंड से ठिठुर रहे होते थे।

भद्री गाँव का लगभग हर घर पहाड़ों की चोटियों को लग कर बना हुआ था और उस घर से निकलता कच्चा पहाड़ी रास्ता हर घर को छू कर जाता था और हर घर के

आगे बड़े बड़े पत्थरों को जोड़ कर एक छोटा सा आँगन बना हुआ था और हर घर के आंगन में उनके मवेशी बंधे रहते थे और सुबह उठते ही गांव की गृहणियाँ मिट्टी के चूल्हे पर खाना बनाती थी और उनके पति अपने मवेशियों का दूध दोहते थे।

भद्री गाँव के अधिकतर लोग सुबह शाम आँगन में पड़े बड़े पत्थरों पर चढ़ कर बैठ जाते थे और एक दूसरे से बातचीत करते हुए अपने अपने मवेशियों को देखते रहते थे।

भद्री गांव में ऐसा ही एक घर गौरीशंकर का भी था। गौरीशंकर लगभग 40 वर्षों के थे और वो अपनी पत्नी पार्वती और अपने दो बच्चों के साथ एक कच्चे से घर में रहते थे और उनकी लड़की का नाम बन्नो था जो अभी 15 वर्ष की थी और उनका पुत्र भानु अभी मात्र 6 वर्ष का था। भद्री गांव में जब तक दिन का उजाला रहता था गांव का हर आँगन चहकता था, पर रात होते होते सब लोग अपने अपने घरों में दुबक जाते थे, क्योंकि भद्री गांव में अंधेरा बहुत जल्दी हो जाता था और बिजली की व्यवस्था सिर्फ कुछेक घरों में ही थी।

गौरीशंकर के घर पर अक्सर आस पड़ोस के कुछ लोग गप्प बाज़ी करने चले आते थे, जिनमें गौरीशंकर के दूर के रिश्तेदारों में जमना मौसी भी थी। जमना मौसी का अपना कोई भी जीवित नहीं था और वो गौरीशंकर के परिवार को ही अपना परिवार समझती थी और गौरीशंकर के परिवार का भी जमना मौसी से बहुत प्रेम था। जमना मौसी जब भी घर आती थी वो बच्चों को कोई न कोई कहानी जरूर सुनाती थी और वो दोनो बच्चों की चहेती थी। जमना मौसी कहानी सुनाते सुनाते अक्सर बन्नो के बिखरे बाल संवारती थी और बन्नो भी जमना मौसी से बहुत लाड प्यार करती थी। बन्नो के बारे में एक बात सच थी कि आसपास के सब गांव में बन्नो जैसी खूबसूरत लडकी कोई भी नही थी। कई बार जमना मौसी रात हो जाने की वजह से गौरीशंकर के घर पर ही रुक जाती थी और यह सच था कि जमना मौसी उस घर को अपना घर ही समझती थी। जमना मौसी गौरीशंकर के दोनों बच्चों से नाती पोतों की तरह ही प्रेम करती थी। रात के अंधेरे में पत्थरों और मिट्टी से बने उस घर में एक कांदिल जलती रहती थी और उस कांदिल की मद्धम सी रोशनी में सारा परिवार सुख चैन की मीठी नींद सो जाता था।

पत्थरों को जोड़ कर बना हुआ झरोखों वाला वह घर रात भर ठंड से ठिठुरता था क्योंकि पत्थर रात को बहुत ठंडे हो जाते थे और जब पहाड़ों की सर्द हवाएँ उस घर के

पास से गुज़रती थी तो उस घर की छत पर पड़े पत्रे बहुत भयानक संगीत उत्पन्न करते थे और उस भयानक संगीत को सुनकर गौरीशंकर रात भर सो नहीं पाते थे क्योंकि उस पल गौरीशंकर को घर के आंगन में बंधे अपने मवेशियों की भी चिंता हो रही होती थी जो छोटे से 1छप्पर के नीचे बंधे ठंड लगने से रात भर मिमियाते रहते थे।

भद्री गांव में जब पहाड़ों की चोटियों के पीछे से सूर्य निकलता था तब परिवार के सब सदस्य घर के आँगन में पड़े बड़े पत्थरों पर बैठ जाते थे और सुबह की गुनगुनी धूप का आनन्द लेते थे और उस पल गौरीशंकर की पत्नी सूखी लकड़ियों की मदद से पहले चूल्हा जलाती थी और जब चूल्हे में जलती लकड़ियों का धुआँ आसमान को जा छूता था तब वह दृश्य बहुत मनोरम दिखाई देता था। पार्वती सबसे पहले सुबह की चाय बनाती थी और फिर गर्म रोटियाँ सेकती थी और उस पल गौरीशंकर मवेशियों का दूध दोह लेते थे और सुबह 7 बजने से पहले ही वो अपने मवेशियों का दूध एक बड़े से अल्मुनियम के बर्तन में लेकर गांवों की कच्ची पगड़ाडियों पर पैदल चलते हुए लम्बे सफर पर रवाना हो जाते थे और गौरीशंकर के घर से निकलने से पहले उनके पत्नी गौरीशंकर के हाथों में एक खाने की एक पोटली थमा देती थी जिसमें गुड़ चने रखे होते थे। जिसे पोटली को गौरीशंकर घर वापिस लौटते समय खोलते थे और गुड़ चने खा कर वो अपनी भूख शांत कर लेते थे और पिछले कुछ वर्षों से गौरीशंकर और पार्वती की ये ही दिनचर्या थी।

जब घर का सब काम समाप्त हो जाता था तब दोनो बच्चे जमना मौसी के पास बैठ जाते थे और उन से कहानियाँ सुनते थे और जमना मौसी से अठखेलियाँ करते थे। गौरीशंकर का दूध से भरे दो अलमुनियम के बर्तनों को अपने सिर पर रखकर 5 किलोमीटर तक पैदल चलना कोई बच्चों का खेल नही था। पहाड़ी रास्तों से गौरीशंकर को नीचे उतरना होता था और यह वास्तव में बहुत कठिन कार्य होता था। उधर आये दिन पार्वती गौरीशंकर को बन्नो के बारे में कहती रहती थी कि बन्नो के ब्याह की चिंता करो। बन्नो अब बड़ी हो गई है। पार्वती का कहना ठीक भी था भद्री गांव में अधिकतर लोग बेटियों की शादी बहुत जल्दी कर देते थे और पार्वती की बातों ने गौरीशंकर को भी चिंता में डाल दिया था।

जमना मौसी अक्सर गौरीशंकर की हिम्मत बढ़ाती रहती थी और अक्सर एक ही बात कहती थी "हमारी बन्नो को तो कोई राजकुमार ब्याह कर ले जाएगा, तुम इस बात

की चिंता मत किया करो" पर वास्तव में बन्नो की शादी का विषय एक चिंताजनक विषय था। इसी चिंता के रहते गौरीशंकर भागादौड़ी में लगे रहते थे और उन्होंने कुछ पैसे बचा कर बन्नो के दहेज के लिए कुछ कपड़े भी इकट्ठे कर रखे थे। भद्री गांव के आस पास के सब गाँव में एक विचित्र किस्म का रिवाज़ था कि अगर किसी एक की शादी में किसी भी वजह से विघ्न पड़ा जाता था तो उस गाँव को अशुभ मान कर उस गाँव में कोई भी विवाह करना उचित नहीं समझता था और शादी विवाह के सब रिश्ते गाँव के सरपंच की देखरेख में ही होते थे।

भद्री गाँव का सरपंच एक नेकदिल और दयालु इंसान था। एक दिन गौरीशंकर और भद्री गाँव के सरपंच ने पास के गांव में एक अच्छा लड़का देख कर बन्नो का रिश्ता पक्का कर दिया था और इस खुशखबरी से सारे गाँव में ख़ुशी की लहर दौड़ गई थी। पर उनमें कुछ नाकमुँह सिकोड़ने वाली औरतें भी थी। जो आये दिन बैठती तो गौरीशंकर के आँगन में थी पर भीतर ही भीतर वो जलन से भरी हुई थी। वह औरतें अक्सर आपस में कानाफूसी करती रहती थी। पर पार्वती, जमना मौसी और गौरीशंकर इन सब बातों से बेखबर थे। गौरीशंकर ने हाल ही में कुछ नये मवेशी भी खरीदे थे और अधिक दूध ढोने के लिये गौरीशंकर ने एक खच्चर भी खरीदा लिया था और उस खच्चर की पीठ पर दोनों तरफ दूध से भरे एलमुनियम के बड़े बर्तन लटका कर वो पक्की सड़क तक पहुंचने की कठिन यात्रा को बहुत तेज़ी से तय कर लेता था और इस कमाई से गौरीशंकर को जो भी रूपए पैसे बचते थे उससे वो शहर से सुन्दर सुन्दर रेशमी धागे और सुन्दर कपड़े ले आता था और घर के सब काम समाप्त करने के बाद बन्नो की माँ और जमना मौसी मिलजुल कर और बड़े चाव से बन्नो के विवाह के कपड़े सिलने का काम करने लगते थे और इस बात में कोई शक नहीं था कि उन दोनो के ममतामई हाथों ने दुल्हन के कपड़ों को बनाने में अपना सारा प्यार उड़ेल दिया था। बन्नो के विवाह के सब कपड़े हस्तकला के बेमिसाल नमूने थे। बन्नो अपने विवाह के कपड़े बनते देख कर मन ही मन में मुस्कराती थी और उस पल कुछ ऐसा लगता था जैसे चाँद निकल आया हो। बन्नो बेहद खूबसूरत और मासूम थी और विवाह होने की खुशी की वजह से उसकी गुलाबी रंगत और भी खिल गई थी और बन्नो की सुंदरता को देखकर जमना मौसी हर समय बन्नो की बलायें लेती थी और उसकी नज़र उतारती थी। उस टूटे फूटे से पत्थरों के घर में प्रेम के चिराग जलने लगे थे और जैसे गाँव में विवाह होने की खुशी में हवाओं की रंगत भी बदलने लगी थी

और इस बीच 6 वर्षीय छोटा भानु बार बार जमना मौसी से सिर्फ एक ही सवाल पूछता था कि शादी हो जाने के बाद क्या बन्नो इस घर से चली जाएगी ? तब जमना मौसी मुस्करा कर छोटे भानु से कहती थी "अरे नहीं रे पगले यह एक और घर बनाएगी" जमना मौसी बच्चों का दिल रखना जानती थी और छोटा भानु जमना मौसी की बातें सुनकर थोड़ा हैरान होता था और जमना मौसी भानु को हैरान देख कर मुस्करा भर देती थी। दूसरी तरफ बन्नो के कपड़े बनते देख कर गाँव की कुछ औरतों में कानाफूसी होने लगी थी। कुछ जलन की मारी औरतें बन्नो की सुन्दरता से भी बहुत चिढ़ती थी और वो औरतें गौरीशंकर की तरक्की को देख कर दिल ही दिल में जलती थी। गौरीशंकर और पार्वती बहुत सीधेसादे और भले मानस थे उन्हें इन सब बातों की बिल्कुल भी खबर नहीं थी। कुछ दिनों के बाद दूसरे गाँव में जा कर गौरीशंकर और सरपंच ने शादी का दिन भी तय कर दिया था। अब विवाह में कुल 4 दिन का समय ही बाकी था। एक एक कौड़ी जोड़ कर गौरीशंकर और पार्वती ने यह सुन्दर सपना सजाया था और उस परिवार की ख़ुशी में जमना मौसी भी शामिल थी।

एक दिन गौरीशंकर दूध देने के बाद जब घर वापिस लौट रहा था और उनके साथ उनका खच्चर भी चल रहा था तब गौरीशंकर ने देखा कि एक नौजवान लड़का लकड़ी की एक बहुत भारी भरकम सी पेटी को सिर पर उठाये हुए पहाड़ी रास्ते से चला जा रहा था। पर इतना अधिक बोझ सिर पर उठाकर पहाड़ी रास्तों पर चलना एक टेढ़ी खीर थी। जब गौरीशंकर को वह नौजवान बहुत थका हुआ लगा तब गौरीशंकर ने उस नौजवान से जिज्ञासा वश पूछ ही लिया था "कौन से गाँव के हो भाई" तब उस नौजवान ने गौरीशंकर को बताया कि वो भद्री गाँव का ही रहने वाला है और शहर से काम सीख कर गांव वापिस लौट रहा है। गौरीशंकर ने उसका वह भारी भरकम लकड़ी का बक्सा देख कर उस नवयुवक से पूछा था "इस भारी से बक्से में क्या है भाई" तब उस नौजवान ने गौरीशंकर को बस इतना ही कहा था "काका इस लकड़ी के बक्से में बहुत काम की चीज़ है" गौरीशंकर बहुत दयालु इंसान था उसने उस नौजवान लड़के से कहा था कि "इस भारी बक्से को तुम मेरे खच्चर पर रख दो" यह सुनकर वह नौजवान लड़का बहुत खुश हुआ था और उस पल जैसे उसे मन मांगी मुराद मिल गई थी और वैसे भी वो पहाड़ी रास्तों पर पैदल चल कर बहुत थक चुका था।

गौरीशंकर एक वृक्ष की छाँव में कुछ देर विश्राम करने के लिए बैठ गया था और गौरीशंकर ने अपनी खाने की पोटली भी खोली ली थी, जिसमें गुड़ चना रखा हुआ था। गौरीशंकर ने खाने की वह पोटली दोनों के बीच में रख दी थी और उस नौजवान लड़के को भी गुड़ चना खाने का निमंत्रण दिया था। यह वास्तव में बहुत सुन्दर पल थे। इंसान का इंसान के प्रति प्रेम था कोई छलकपट नहीं था कोई स्वार्थ नहीं था। जब दोनो चलते चलते गाँव पहुंचे तो गौरीशंकर ने उस नौजवान लड़के को भी विवाह पर आने का निमंत्रण दे दिया था और उससे कहा था "तुम भी मेरी लड़की बन्नो की शादी में जरूर आना" उस नौजवान लड़के ने गौरीशंकर को दिल से धन्यवाद किया था और उसने अपनी वह भरी भरकम लकड़ी की पेटी उस खच्चर से उतार ली थी और वो अपनी राह पर चल पड़ा था। अब बन्नो के विवाह में कुल 2 ही दिन रह गए थे और अब घर में आस पड़ोस की औरतों का जमघट लगने लगा था।

पहाड़ पर एक छोटे से टीले पर एक कांदिल की रोशनी में चारों तरफ खुशियाँ बिखरी हुई थी और शादी की खुशी में बन्नो की गुलाबी रंगत दिनप्रतिदिन निखरती ही जा रही थी। पर खुशियों से भरी वह रात, उस घर के लिए एक काली रात बन गई थी और सब कुछ पलक झपकते ही अचानक हुआ था। उस पल बन्नो के सुन्दर कपड़ों के पास ही छोटा भानु खेल रहा था और उसने कुछ ही दिन पहले पाठशाला जाना शुरू किया था और वो अपनी लकड़ी की तख्ती पर कलम से कुछ लिख रहा था कि अचानक उसकी काली स्याही की दवात बन्नो के विवाह के कपड़ों पर आ गिरी थी और देखते ही देखते विवाह के सारे कपड़े काली स्याही के धब्बों से खराब हो गये थे। जैसे उस पल पार्वती और जमना मौसी की बरसों की मेहनत पर पानी फिर गया था और विवाह के वह सुंदर वस्त्र काली स्याही के धब्बों से बहुत खराब लगने लगे थे। यह पल जैसे सारे परिवार के लिए कयामत भरे पल थे। यह सब देख कर छोटा भानु डर कर जमना मौसी के पीछे छिप गया था और कुछ पल के लिए गौरीशंकर का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया था।

पार्वती घबरा कर सिर पकड़ कर बैठ गई थी पर इस बीच जमना मौसी ने अपना आपा नही खोया था, वरना इस दुखद घटना से पूरा घर तितरबितर हो जाना था। देखते ही देखते उस घर की खुशियाँ उदासियों में बदल गई थी। धीरे धीरे औरतें वहां से उठ कर जाने लगी थी और उन में से कुछ औरतों को बन्नो के परिवार के साथ सहानुभूति थी तो कुछ इस घटना से खुश भी थी। जिनमें जलन थी वह औरतें भी इस बात को जानती थी

कि इस घटना से सारे गाँव का नाम मिटटी में मिल जाना था और सब जानते थे कि फिर कोई भी उनके गांव से रिश्ता नही जोड़ेगा और यह बात शतप्रतिशत सच थी और यह सारे गांव के लिए बहुत चिंताजनक बात थी। गौरीशंकर के घर पर उस दुखद घटना के बाद फिर वह रात कांदिल की हल्की रोशनी में कुछ ऐसे कटी थी जैसे वह वर्ष की सबसे लम्बी रात थी।

सुबह सवेरे ही पार्वती और गौरीशंकर सीधा सरपंच के पास भागे थे और उन्होंने गांव के सरपंच को सब किस्सा कह सुनाया था गांव के सरपंच ने जब यह सब सुना और वह विवाह के जोड़े देखे तो वो भी सकते की सी हालत में आ गया था। अब क्या होगा का उलझन से भरा प्रश्न सारे गाँव के सामने खड़ा था और इस दुखद घटना से बन्नो का फूल सा चेहरा मुरझा चुका था। इस दुखद घटना से बन्नो बहुत उदास हो चुकी थी।

सरपंच, पार्वती और गौरीशंकर इधर उधर भागादौड़ी करने लगे थे। अब क्या करें की बातें धीरे धीरे सारे गांव में फैलने लगी थी और इससे गाँव की बदनामी होने का डर भी बना हुआ था इसीलिए चुगली करने वाली औरतों ने भी, इस समस्या का समाधान सोचने पर मजबूर हो चुकी थी क्योंकि यह गांवों की सब बच्चियों के भविष्य का सवाल बन चुका था और यह बात भी सच थी कि गौरीशंकर के साथ घटी दुखद घटना अब भद्री गांव के सब लोगों की मान मर्यादा का प्रश्न बन चुकी थी।

गाँव के धोबी ने भी वह कपड़े देखे और वो अपने सिर पर हाथ रख कर बैठ गया था। अब सबके सामने सिर्फ एक ही प्रश्न था कि अब गाँव का क्या होगा, क्योंकि यह गांव की सब बच्चियों के भविष्य का प्रश्न था और गांवों के सब लोग बड़े बड़े पत्थरों पर बैठे हुए, सिर्फ इसी विषय पर विचार विमर्श कर रहे थे। उधर जमना मौसी भी ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी कि "हे ईश्वर इस हँसते खेलते परिवार की रक्षा करना और सब गांवों वालों की लाज रखना" और साथ ही जमना मौसी डरे हुए भानु और सहमी हुई बन्नो को भी संभाल रही थी। जमना मौसी उन बच्चों से कह रही थी कि "घबराओ मत बच्चों ईश्वर सब ठीक कर देगा" पर यह बात भी सच थी कि जमना मौसी मन ही मन में इस दुखद घटना से खुद भी बहुत परेशान हो चुकी थी। अगले ही दिन, दोपहर को गांवों में बारात आने वाली थी। अब क्या होगा। बबन धोबी भी गांवों के सब लोगों के साथ सिर से सिर जोड़ कर बैठा गया था कि तभी वहाँ पर वह नौजवान लड़का आया जो वास्तव

में बबन धोबी का लड़का था और यह वो ही नौजवान लड़का था जिसकी गौरीशंकर ने बीच रास्ते में सहायता की थी। उसने जब गांवों के सब लोगों को यूं बैठे हुए देखा तो उसने जिज्ञावश उन से पूछ ही लिया था कि आखिर "क्या बात है, आप सब लोग इतने उदास क्यों बैठे हुए हैं" तब गौरी शंकर ने उस नौजवान लड़के को सब किस्सा कह सुनाया था।

उस नौजवान लड़के ने कहा कि वह कपड़े मुझे दिखाइए। गौरीशंकर ने विवाह के कपड़ों की वह पोटली उस नौजवान लड़के के सामने रख दी थी। सब गांवों वालों की शक्लें देख कर कुछ ऐसा आभास हो रहा था जैसे किसी ने उन सब के प्राण निकाल लिए हों। उस नौजवान लड़के ने स्याही से भीगे वह कपड़े देखे और कुछ सोच कर गौरीशंकर से कहा था "अरे काका जाओ मैं सब ठीक कर दूँगा"

"पर कैसे" गांवों के सब लोगों के मुंह से एक साथ निकला था।

बस आप सब चिंता मत कीजिए और मुझ पर भरोसा रखिए। उस नौजवान लड़के ने सबको बस इतना ही कहा था।

उस नौजवान लड़के के पिता बबन ने गौरीशंकर और सरपंच जी से कहा था "मुझे भरोसा नही है इस छोकरे पर, बाकि आप सब की मर्जी" वास्तव में यह इतना गम्भीर मामला था कि बबन अपने सिर पर इतनी बड़ी जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार नही था क्योंकि यह उसकी और सारे गाँव की प्रतिष्ठा का प्रश्न था।

अब मरता क्या न करता। अब क्या होगा वाला उलझन से भरा प्रश्न, अब भी जैसे का तैसा ही सबके सामने खड़ा था। सरपंच, गौरीशंकर और पार्वती ने विवाह के वह सब कपड़े उस नौजवान लड़के के हाथों में थमा दिए थे और सब मन ही मन में ईश्वर से प्रार्थना करते हुए अपने घर वापिस लौट गए थे। यह वही कपड़े थे जो पार्वती और जमना मौसी ने बड़े नाज़ों से महीनों की मेहनत करके बनाए थे और यह पार्वती और जमना मौसी के लिए कुछ ऐसे पल थे जैसे उनके सुन्दर सपनो पर किसी ने ग्रहण लगा दिया हो।

उधर बबन के लड़के ने अपने पिता जी से पूछा था कि यहाँ पर किसके घर में बिजली होगी। बबन अपने बेटे को उस घर में ले गया था, जिस घर में बिजली की व्यवस्था थी और उस समय वह कपड़ों की पोटली और वह लकड़ी का बड़ा सा बॉक्स भी उस नौजवान लड़के ने अपने कंधे पर उठा रखा हुआ था। यह सारे गाँव की साख का प्रश्न बन

चुका था इसलिए जिसके घर में बिजली की व्यवस्था थी उस व्यक्ति ने इस गंभीर समस्या में गांव के लोगों को अपना पूरा सहयोग दिया था।

वह नौजवान लड़का अपने लकड़ी के बक्से और कपड़ों की पोटली के साथ सारी रात कमरे को बंद करके काम करता रहा और शायद उसने उस कमरे को बंद इसलिए किया हुआ था क्योंकि वो पूरी एकाग्र के साथ अपना कार्य करना चाहता था, पर इस बीच उसके पिता जी उस घर के बाहर गहरी चिंता लिए हुए यहां से वहां और वहां से यहां, सारी रात चक्कर ही काटते रहे और उस बंद कमरे के भीतर से सारी रात मशीन चलने की आवाज़ें आती रही और वह नौजवान लड़का सारी रात कपड़ों को ठीक करने के काम में लीन रहा। उधर गांवों का सरपंच, गौरीशंकर, पार्वती और जमना मौसी परेशानी की हालत में सारी रात बिस्तर पर करवटें बदलते रहे और भीतर गहरी चिंता की वजह से, नींद उन सबसे कोसों दूर थी। उस पल कांदिल की मद्धम सी रोशनी और तेज़ चलती हवाएँ जैसे उस घर की निराशा को बयान कर रही थी और उधर बन्नो अपने बिस्तर पर पड़ी आंसू बहा रही थी। उसके जीवन में यह पहला मौका था, जब उसने अपने माता पिता को इतना परेशान देखा था और विचारों की इसी गहमागहमी के बीच में न जाने कब सुबह हो गई थी। गौरीशंकर और पार्वती बहुत भारी मन से तैयार हो कर सरपंच को साथ लेकर, बबन के घर की ओर चल दिए थे और उन्होंने देखा कि बबन के घर पर, गांवों के बहुत से लोग पहले से ही मौजूद थे। पर उनमें से किसी की भी इतनी हिम्मत नहीं थी कि कोई द्वार खटखटा कर बबन से यह पूछे कि काम हुआ या नहीं हुआ और यह बात भी आंशिक तौर पर सच थी कि उन में से किसी को भी कोई उम्मीद नही थी, पर फिर कुछ हिम्मत जूटा कर, गौरीशंकर ने द्वार खटखटाया और कुछ क्षण बाद उस बंद कमरे का द्वार खुला और गौरीशंकर ने देखा वह नौजवान लड़का उबासियाँ लेता हुआ द्वार पर आ खड़ा हुआ था और उस नौजवान लड़के को यूं उबासियाँ लेते देख कर गौरीशंकर की रही सही हिम्मत भी जवाब दे गई थी और उसकी आँखें निराशा से झुक गई थी पर फिर भी उसके भीतर उम्मीद की एक किरण जीवित थी और उसी उम्मीद की किरण के तहत बहुत हिम्मत जुटा कर गौरीशंकर ने उस नौजवान लड़के से पूछा था "बेटे वह कपड़े ठीक हुए क्या" और उस नौजवान लड़के ने सब की ओर देख कर गौरीशंकर से कहा था "अरे काका मैंने तो आपको कल ही कह दिया था कि आप सब लोग चिन्ता मत करो, मैं सब कपड़े ठीक कर दूँगा"

"तो क्या सब कपड़े ठीक हो गये हैं" गौरीशंकर ने बहुत आश्चर्यचकित हो कर उस नौजवान लड़के से पूछा था।

"अरे हां काका सब कपड़े ठीक हो गये हैं" उस नौजवान लड़के के इन मीठे बोलों ने जैसे गांव के सब लोगों को चिंतामुक्त कर दिया था। इतना कहते ही वह नौजवान लड़का कमरे के भीतर से कपड़ों की पोटली उठा कर ले आया था और उसने वह सब कपड़े गांवों वालों के सामने रख दिए थे।

उस नौजवान ने अपनी सिलाई मशीन की मदद से काली स्याही गिरे कपड़ों पर, बहुत सुन्दर फूल और पत्तियां बना दी थी, जिससे सब दाग धब्बे फूल पत्तियों की सुंदर कारीगरी के पीछे छिप गये थे और शादी के वह वस्त्र अब पहले से भी अधिक खूबसूरत दिखाई देने लगे थे।

उस नौजवान लड़के ने गांवों के सब लोगों को बताया कि वह शहर में पिछले 7 वर्षों से मशीन से सिलाई कढ़ाई का काम सीख रहा था और उसके मालिक ने खुश होकर वह मशीन उसे इनाम में दे दी थी।

शादी के वह वस्त्र अब अदभुत कला के नमूने लग रहे थे। यह सब देख कर पार्वती और गौरीशंकर उस नौजवान लड़के के पाँव में गिर पड़े थे और उस पल उनकी आंखों से झर झर आंसू बहने लगे थे। यह वास्तव में सब को हैरान का देने वाला वाक्या था। बबन धोबी अपने बेटे की इस अदभुत कला को देख कर बहुत खुश था और उसे इस बात की बहुत खुशी थी कि वो गांवों वालों के किसी काम आ सका था। यह सब देख कर गांव के सरपंच का हृदय गद गद हो गया था क्योंकि उस नौजवान लड़के की अदभुत कला की वजह से गाँव के ऊपर आई बला टल चुकी थी। इस बीच उस नौजवान लड़के ने गौरीशंकर को बहुत प्रेम से उठाया था और अपने गले से लगा लिया था और गौरीशंकर से बहुत प्रेम और आदर से कहा था "आपने भी तो मेरी सहायता की थी और प्रेम से खिलाए हुए वह गुड़ चने मैं कैसे भूल सकता हूँ" यह सुनकर गौरीशंकर ने उस नौजवान लड़के को अपने गले से लगा लिया था और उस पल उनकी आंखों से खुशी के आंसू बहने लगे थे और यह गांवों के सब लोगों के लिए बहुत संवेदनशील पल थे। उस पल सरपंच ने बबन धोबी से कहा था "आज तेरे बेटे ने पूरे गाँव की लाज रख ली" सरपंच वास्तव में चिंतित था और उन्हें एक बन्नो की चिंता नहीं थी, उन्हें गांव की सब बच्चियों

के भविष्य की चिंता सता रही थी और वो इस बात की गंभीरता को समझ रहे थे कि अगर किसी वजह से बन्नो का विवाह न हुआ तो गाँव की बाकी बच्चियों के भविष्य पर भी प्रश्न चिन्ह लग जाना था। जब जमना मौसी तक यह बात पहुंची तो वो आंखें बंद करके हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने लगी थी और वो मन ही मन में ईश्वर का धन्यवाद करने लगी थी और वो अपने पास खड़ी बन्नो की बलाएं लेने लगी थी और उसने बलाएं लेते लेते बन्नो से बहुत प्रेम से कहा था "कभी नज़र न लगे मेरी बच्ची को" और यह सुन कर बन्नो के चेहरे की गुलाबी रंगत वापिस लौट आई थी।

भद्री गांव में ठीक वक्त पर बन्नो का विवाह बहुत धूमधाम से हुआ और जिसने भी बन्नो के विवाह के उन खूबसूरत वस्त्रों को देखा, वह उन खूबसूरत कपड़ों का कायल हो गया था। सब दुलहन के कपड़ों की तारीफ कर रहे थे और सब पूछ रहे थे कि यह कपड़े किसने बनाए हैं। गौरीशंकर और सरपंच एक ओर खामोश से खड़े थे और एक दिन पहले की घटनाओं के बारे में सोच रहे थे और मन ही मन में ईश्वर का धन्यवाद कर रहे थे। पार्वती अपनी बेटी बन्नो की बारात को देख रही थी और उसकी आँखों से खुशी के आंसू बह रहे थे। जमना मौसी बार बार उस घर की बलायें ले रही थी और इस बीच सब लड़कियाँ और औरतें उस नौजवान लड़के को घेरे खड़ी थी जिस नौजवान लड़के ने अपनी अदभुत कला से बन्नो के विवाह के कपड़े ठीक किए थे और विवाह के अगले ही दिन उस नौजवान लड़के के घर के बाहर विवाह के कपड़े बनाने वालों की लाइन लग गई थी। यह देख कर बबन धोबी मन ही मन में बहुत खुश हुआ था और वो अपने घर के बाहर बैठा शान से हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। अब आसपास के गाँव में से कभी भी किसी की बारात वापिस नहीं गई थी और आगे चल कर भद्री गाँव सिलाई कढ़ाई के मशीनी काम के लिए बहुत प्रसिद्ध हो गया था। अब भद्री गांव की बहुत सी औरते सिलाई कढ़ाई का कलात्मक काम करने लगी थी और आसपास के सब शहरों में उस अदभुत कढ़ाई की कला का नाम फुलकारी के नाम से प्रसिद्ध हो चुका था। कर भला तो हो भला। यह ईश्वर का नियम था।

समाप्त

कहानी 24: पड़ोसी

पड़ोसी की यह कहानी कुछ रिटायर्ड किरदारों के आसपास घूमती है। यह सन 1968 की बात है जब हिन्दुस्तान में लोगों का TV देखने का सिलसिला शुरू हुआ था और लगभग उसी वर्ष या उससे एक वर्ष पहले दिल्ली दूरदर्शन केंद्र की स्थापना भी हुई थी और उस समय शहरों में आज की तरह भीड़ भाड़ नहीं होती थी और उस समय किसी के पास मोबाइल फोन भी नही होते थे और लोगों का अड़ोस पड़ोस में आना जाना लगा रहता था और इसी बहाने लोग एक साथ बैठ कर सुख दुख की बातें सांझा कर लेते थे और किसी पड़ोसी की मुश्किल घड़ियों में आसपास के सब लोग बहुत जल्दी इकट्ठे भी हो जाते थे और इस बात में कोई संदेह नहीं था कि अड़ोस पड़ोस के रिश्तों को लेकर 1968 का वह दौर एक यादगार दौर था।

1968 के उसी दौर में नई दिल्ली की एक कालोनी में लोगों ने ज़मीन लेकर अपना घर बनाया था और उसी सिलसिले में कुछ रिटायर्ड अधिकारी एक दूसरे के पड़ोसी बन गए थे।

उनमें से 62 वर्षीय एक रिटायर्ड सरकारी अधिकारी पोस्ट मास्टर श्रीकांत श्रीवास्तव और उनकी पत्नी आशा भी थे और वो दोनो बहुत ही सुलझे हुए सहनशील और सच्चे इंसान थे और उन दोनो की जिंदगी का एक ही मूलमंत्र था कि वो खुद से पहले अपने जान पहचान वाले लोगों के बारे में सोचते थे और उनकी इसी सोच की वजह से उनके बहुत से मित्र बन गए थे और उनका घर हर पल मित्रों और रिश्तेदारों से भरा रहता था और वो दोनो अपनी इस व्यस्त जिंदगी से बहुत खुश थे और उनकी एक विशेषता भी थी कि वो बहुत जल्दी ही लोगों की गलतियों को माफ कर देते थे और मुस्कराते हुए जिंदगी में आगे बढ़ जाते थे। श्रीकांत श्रीवास्तव रिटायर्ड हो जाने के बाद अपना वक्त गुजारने के लिए कुछ पत्र पत्रिकाओं में किस्से कहानियाँ लिख लेते थे और उनकी लिखी कहानियाँ लोगों को बहुत पसंद आती थी और इसी सिलसिले में उनके कुछ प्रशंसक उनसे मिलने के लिए उनके घर भी चले आते थे और श्रीकांत और उनकी पत्नी आशा उनका दिल खोल कर स्वागत करते थे। रिटायर्ड पोस्टमास्टर श्रीकांत श्रीवास्तव ने बहुत मेहनत से अपना एक छोटा सा तीन कमरों का घर बनाया था और उन्होंने अपने घर के आंगन में बहुत सुन्दर बगीचा बनाया हुआ था और उस बगीचे में फूलों के साथ साथ कुछ फलदार वृक्ष भी लगे हुए थे और उनके वृक्षों की डालियाँ उनके एक पड़ोसी कृष्णराव के घर में भी जाती थी जिस वजह से उनके आंगन में पत्तों के साथ साथ फल भी गिरते रहते थे और इस बात को लेकर 70 वर्षीय रिटायर्ड बैंक अधिकारी कृष्णराव थोड़े परेशान रहते थे पर फिर भी उन्होंने कभी भी श्रीकांत से इस बारे में कोई शिकायत नही की थी, पर यह भी सच था कि उनके घर के आंगन में वृक्षों से गिरते पत्तों को लेकर कृष्णराव को श्रीकांत से थोड़ी नाराजगी रहती थी। वैसे कृष्णराव और उनकी पत्नी कावेरी बहुत अच्छे और लोगों की मदद करने वाले इंसान थे पर शायद जिंदगी की कुछ दुखद घटनाओं की वजह से कृष्णराव के स्वभाव में थोड़ा उतावलापन और चिड़चिड़ाहट आ गया था और उनके चिड़चिड़ेपन की एक मुख्य वजह यह भी थी कि उनकी 28 वर्षीय बेटी अनुराधा के पति का कुछ वर्ष पहले ही एक सड़क दुर्घटना में देहांत हो गया था और अब अनुराधा उनके साथ ही रहती थी और वो निकट के एक स्कूल में शिक्षिका की नौकरी कर रही थी और कृष्णराव की चिंता का मुख्य कारण उनकी बेटी अनुराधा का हर पल उदास रहना था और इन्हीं चिंताओं की वजह से वो कई बार किसी की कही छोटी सी बात को लेकर भी नाराज़ हो जाते थे। पर कृष्णराव की पत्नी कावेरी ऐसी बिल्कुल भी नहीं थी और वो

इस बात को भी जानती थी कि उनके पति को कई बार क्षणिक तौर पर गुस्सा आ जाता है और वो उन कमज़ोर लम्हों में किसी से भी नाराज़ हो सकते थे, पर वैसे देखा जाए तो कृष्णराव दिल के बहुत अच्छे इंसान थे और वर्षों उनके साथ रहने की वजह से कावेरी उनके इस स्वभाव को बहुत अच्छी तरह से समझती थी और अब जब भी कभी कृष्णराव किसी से नाराज़ होकर अपना मुंह फूला लेते थे तब कावेरी चुपके से मुंह छुपा कर मुस्कराने लगती थी क्योंकि वो इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानती थी कि उनके पति की ऐसी नाराज़गी सिर्फ थोड़े समय के लिए ही होती है और जल्दी ही वो फिर से सामान्य भी हो जाते हैं और उनके ऐसे व्यवहार की एक वजह यह भी थी कि जब वो बैंक की नौकरी कर रहे थे तब हजारों लोगों से पैसे के लेन देन के व्यवहार की वजह से कई बार उन्हें किसी से बेवजह उलझना भी पड़ जाता था और फिर उस छोटी सी घटना से उनका सारा दिन नाराज़गी और कड़वाहट में गुज़र जाता था और अब कावेरी को वर्षों से यह सब देखने की आदत सी पड़ चुकी थी और वो जानती थी कि पक्की उम्र में आकर किसी का स्वभाव नहीं बदला जा सकता था, पर यह भी सच था कि कृष्णराव की तरह ही वो भी अपनी बेटी अनुराधा को लेकर परेशान रहती थी पर वो अपनी परेशानी बता कर अपने पति को और अधिक परेशान नहीं करना चाहती थी।

एक दिन कृष्णराव कुछ मजदूरों से अपने घर की मरम्मत करवा रहे थे और किसी बात को लेकर कृष्णराव की लेबर कंट्रेक्टर से थोड़ी बहस हो गई थी और उनके बीच बात इतनी बड़ गई थी कि लेबर कांट्रेक्टर ने बातों ही बातों में कृष्णराव को धमकी दे दी थी और कृष्णराव के घर पर शोरशराबा सुनकर श्रीकांत और आसपास के दूसरे पड़ोसी कृष्णराव के घर पर आ गए थे और श्रीकांत ने शांत मन से कांट्रेक्टर को समझाया था "भाई साहब आप इनसे ऐसे बात नही कर सकते आपको इनकी उम्र का लिहाज करना चाहिए" और श्रीकांत के बात करने के सलीके को देख कर वो कांट्रेक्टर थोड़ा शांत हो गया था और थोड़ी सी बातचीत करने के बाद कृष्णराव और उस लेबर कांट्रेक्टर के बीच सुलहा हो गई थी और कृष्णराव की पत्नी कावेरी श्रीकांत और दूसरे पड़ोसियों का शुक्रिया अदा कर रही थी कि सब लोगों ने ठीक वक्त पर आकर मामला सुलझा दिया था और वो इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानती थी कि ऐसे मामले कई बार उलझ भी जाते हैं और फिर उनके परिणाम बहुत गंभीर होते हैं।

जब सब लोग वापिस लौट गए थे तब कावेरी ने कृष्णराव की ओर देखते हुए उनसे कहा था "शुक्र है कि अड़ोस पड़ोस के सब लोग ठीक वक्त पर आ गए थे नहीं तो बात बढ़ भी सकती थी" तब कृष्णराव ने अपनी आदत के मुताबिक अपनी पत्नी की ओर देखते हुए उससे कहा था "अरे ऐसा कुछ भी नही होना था तुम तो बेवजह ही घबरा जाती हो" तब अपने पति की आदत को समझ कर कावेरी ने उन्हें थोड़ा शांत करते हुए कहा था "आपके लिए चाय बना दूं" कावेरी नही चाहती थी की फालतू की बहसबाजी में अब बात का बतंगड़ बन जाए। तब कृष्णराव ने सोफे पर बैठते हुए अपनी पत्नी से कहा था "तुम अपने लिए अगर चाय बना रही हो तो मेरे लिए भी बना देना" वैसे कृष्णराव बहुत अच्छे और सुलझे हुए इंसान थे पर कई बार जब वो किसी बात से थोड़ा नाराज हो जाते थे तब उस पल उनके व्यवहार में थोड़ी कड़वाहट आ जाती थी और किसी कारण वश अगर वो उस इंसान से कुछ कह नहीं पाते थे तब उनका सारा दिन भीतर ही भीतर से सुलगते हुए बीतता था और आज भी वो श्रीकांत के अचानक वहां पर आ जाने से वो भीतर से श्रीकांत से थोड़ा नाराज़ हो गए थे और उन्हें ऐसा लग रहा था कि उस मामले को वो खुद भी सुलझा सकते थे।

उन्हीं सोचों में उलझे हुए उन्होंने अपनी पत्नी से कहा था "तुम्हें श्रीकांत की पत्नी से बात करनी चाहिए कि वो अपने वृक्षों की उन डालियों को थोड़ा कटवा दें, जो डालियाँ हमारे घर के भीतर आ रही हैं, तुम देखती हो न कि उन वृक्षों से हमारे घर में कितने पत्ते गिरते है और हमारा सारा आंगन गंदा हो जाता है" कावेरी जानती थी कि इस समय उसका पति थोड़ा उखड़ा हुआ है और इसीलिए वो दकियानूसी बातें सोच रहें है पर अपने पति का मन रखने के लिए और वक्त की नज़ाकत को समझते हुए उसने अपने पति से कह दिया था "अच्छा मैं वक्त देख कर उनसे इस विषय में बात ज़रूर करूंगी पर तुम्हें नहीं लगता कि हमारे ऐसे शिकायत करने से उन्हें थोड़ा बुरा लगेगा" तब कृष्णराव ने अखबार के पन्ने पलटते हुए बिना उसकी ओर देखे उससे कहा था "अगर उन्हें हमारी बात बुरी लगती है तो इसमें हम क्या कर सकते है इससे सच्चाई थोड़ी ही बदल जायेगी उनके वृक्ष के पत्तों से हमारा सारा घर गंदा हो जाता है इस बात को तो वो भी बहुत अच्छी तरह से जानते हैं फिर इसमें नाराजगी की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती" कावेरी जानती थी कि इस समय उसका पति का मिजाज़ थोड़ा बिगड़ा हुआ था इसलिए उसने उनकी हां में हां मिलना ही उचित समझा था, पर सच्चाई तो यह थी कि कावेरी की अपने सब

पड़ोसियों से बहुत बनती थी और वो सब एक दूसरे के घर पर आते जाते रहते थे और सब एक दूसरे का दिल से सम्मान करते थे। दूसरी तरफ अपने घर वापिस आने पर श्रीकांत और आशा कृष्णराव और उस लेबर कांट्रेक्टर के बीच हुए झगड़े पर आपस में बातचीत कर रहे थे और श्रीकांत ने अपनी पत्नी से कहा था "उस मूर्ख कांट्रेक्टर को भाई साहब की उम्र का लिहाज करना चाहिए था और उनसे अदब से बातचीत करनी चाहिए थी", यह कहते समय श्रीकांत का पारा थोड़ा चढ़ गया था और उसने थोड़ा गुस्से से अपनी पत्नी की ओर देखते हुए कहा था "मुझे तो उस कांट्रेक्टर पर इतना गुस्सा आया था कि अगर मैं थोड़ा संयम न रखता तो शायद मेरा उससे झगड़ा हो जाता" श्रीकांत ने तैश में आकर यह कह तो दिया था पर सच तो यह था कि श्रीकांत ने अपने सारे जीवन में कभी किसी से कोई झगड़ा नहीं किया था और आशा इस बार को बहुत अच्छी तरह से जानती थी कि उसका पति बहुत शांत तबियत का इंसान है और उसे किसी से लड़ना भिड़ना बिलकुल भी पसंद नही है और इसलिए वो श्रीकांत को तैश में आया देख कर उसकी ओर देख कर मुस्कराई थी और उसने मुस्कराते हुए ही श्रीकांत से कहा था "अब आप शांत हो जाइए उनका मामला कब का सुलझ चुका है और अब मैं आपके लिए गर्मा गर्म चाय बना कर लाती हूं" और इतना कह कर आशा रसोई घर में चाय बनाने लगी थी और श्रीकांत अपनी डायरी पर कुछ लिखने में व्यस्त हो गया था और जब आशा चाय के दो कप हाथों में लेकर वापिस लौटी थी तब चाय पीते पीते अचानक श्रीकांत ने आशा की ओर देख कर बहुत गंभीरता से कहा था "भाई साहब को अपनी बेटी अनुराधा की भी बहुत चिंता होगी" उस पल आशा ने भी कुछ सोचते हुए कहा था "हां यह बात तो सच है जवान बेटी घर पर हो तो किस बाप को चिंता नहीं होगी" तब कुछ सोचते हुए श्रीकांत ने आशा से कहा था "अगर आलोक मान जाए तो हम उसका विवाह अनुराधा से कर दें, मुझे तो अनुराधा अपनी बेटी जैसी ही लगती है और वो कितनी चुपचाप सी रहती है" तब आशा ने श्रीकांत की ओर देखते हुए कहा था "जब आलोक आएगा तब हम उससे बात करके देखेंगे और अगर वो इस रिश्ते के लिए मान गया तो हम दोनो को इस बात से बहुत खुशी होगी" तब श्रीकांत ने सोचते हुए कहा था "यह बहुत नाजुक मामला है और हमें आलोक से बात करने के बाद ही इस रिश्ते को बात को आगे बढ़ाना चाहिए नही इस बात से दो परिवारों में रिश्ता बिगड़ने का डर भी हो सकता है" और ये ही सब बातें करते करते कब उनकी बातों का विषय बदल गया उन्हें इस बात का पता

भी नहीं चला था पर एक बात निश्चित थी कि दोनो चाहते कि उनका बेटा आलोक अनुराधा से विवाह के लिए हां कर दे।

एक दिन श्रीकांत और कृष्णराव के पड़ोसी रिटायर्ड कैप्टन विक्रम सिंह अपनी पत्नी सुषमा के साथ श्रीकांत और कृष्णराव के घर पर जन्मदिन की पार्टी का न्योता देने के लिए आए थे और श्रीकांत और कृष्णराव ने कैप्टन विक्रम सिंह का दिया न्योता बहुत सम्मान के साथ स्वीकार कर लिया था और उन दोनो ने ही अपने अपने घर पर कैप्टन विक्रम सिंह और उसकी पत्नी सुषमा की बहुत खातिरदारी की थी। कैप्टन विक्रम सिंह की आदत थी कि वो हर छोटे बड़े इंसान का दिल से सम्मान करते थे और उनके साथ बहुत अदब से पेश आते थे और वैसे भी श्रीकांत और वो दोनो हमउम्र थे और कृष्णराव जी को वो अपने बड़े भाई तरह मानते थे और उनका बहुत सम्मान करते थे। कैप्टन विक्रम सिंह दिल्ली में आने से पहले महू (इंदौर के निकट) रहते थे और वहां पर वो फौजियों को कमांडो ट्रेनिंग देते थे और अब रिटायर्ड होने के बावजूद, भारत सरकार उनसे विशेष सेवाएं ले रही थी और उनकी इन विशेष सेवाओं की वजह से उन्हें मिल्ट्री की गाड़ी लेने और छोड़ने के लिए आती थी।

आज कैप्टन विक्रम सिंह के घर पर जन्मदिन की पार्टी के उपलक्ष्य में उनके घर पर बहुत से मेहमान उपस्थित थे और श्रीकांत और कृष्णराव भी एक सोफे पर बैठ हुए थे और पार्टी का आनंद ले रहे थे और इस बीच कावेरी और आशा, कैप्टन विक्रम सिंह की पत्नी सुषमा की सहायता करने लगे थे और वो तीनों मिल कर घर आए मेहमानों की खातिरदारी में व्यस्त हो गए थे। तभी कैप्टन विक्रम सिंह ने श्रीकांत की ओर देखते हुए उनसे कहा था "श्रीकांत माहौल बना हुआ है और अगर आपने कोई नई कविता लिखी है, तो आप सबको सुनाइये और महफिल में रंग जमा दीजिए" मिल्ट्री वाले सब लोग बहुत जिंदादिल होते हैं और उस दिन भी यारों दोस्तों के बीच, गिलासों में जाम भरे जा रहे थे और महफिल में जान आ चुकी थी और इस बीच श्रीकांत ने दो एक कविताएं पढ़ी थी और कुछ शेर कहे थे जिसे सुनकर सब वाह वाह कर उठे थे और सबने श्रीकांत की जम कर तारीफ की थी और लगते हाथ सुषमा ने भी आशा की ओर देखते हुए कहा था "भाई साहब तो जहां जाते होंगे अपनी कविताओं और शेरो शायरी सुना कर रंग जमा देते होंगे" यह सुनकर आशा मुस्कराने लगी थी और उसने हंसते हुए ही कहा था "मैं हर रोज़ इनकी लिखी कविताएं सुनती रहती हूं और सच कहूं तो इनकी लिखी कुछ कविताएं

तो मेरे सर के ऊपर से निकल जाती है” फिर आशा ने हंसते हुए कहा था “कहीं ये बुरा न मान जाएं इसलिए मैं इनकी तारीफ भी कर देती हूं” आशा की बातें सुनकर कावेरी और सुषमा दोनो मुस्कराने लगे थे और महफिल का आनंद लेने लगे थे पर कृष्णराव को भीतर से कैप्टन विक्रम सिंह का श्रीकांत को उस पार्टी में इतनी तवज्जो देना रास नहीं आया था और इसी दकियानूसी सोचों की वजह से वो एक दो जाम अधिक पी गए थे और उनके इस बदले हुए रंग को देख कर कावेरी सब कुछ समझ गई थी कि कैप्टन विक्रम सिंह की जन्मदिन की पार्टी में श्रीकांत को अधिक तवज्जो मिलने की वजह से वो मन ही मन में थोड़े नाराज़ हो गए हैं और यह अच्छी बात थी कि उस समय महफिल में रंग जमे होने की वजह से किसी ने भी कृष्णराव की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया था नही तो सारी पार्टी का मज़ा खराब भी हो सकता था और वक्त की नज़ाकत को समझते हुए कावेरी कृष्णराव को सहारा देकर घर ले जाने लगी थी और यह देखकर कैप्टन विक्रम सिंह और श्रीकांत कावेरी की मदद करने के लिए उठे थे और उन्होंने बहुत सम्मान के साथ उन्हें कहा था “भाभी जी आप रहने दीजिए भाई साहब को हम घर पर छोड़ आयेंगे” और चलती पार्टी में, श्रीकांत और कैप्टन विक्रम सिंह, कृष्णराव को घर पर छोड़ने के लिए चले पड़े थे और उस समय कृष्णराव को नशे में देख कर कावेरी मन ही मन में थोड़ी परेशान सी हो उठी थी और उसे भय था कि कहीं नशे की हालत में कृष्णराव कुछ गलत न बोल दें और यह अच्छा ही हुआ था कि उस समय कृष्णराव चुपचाप अपने घर आ गए थे। पर घर आने के बाद कावेरी अपना माथा पकड़ कर बैठ गई थी और वो समझ गई थी कि पार्टी में श्रीकांत को अधिक तवज्जो मिलने की वजह से कृष्णराव थोड़े नाराज़ हो गए हैं और कावेरी कृष्णराव के इस चिड़चिड़े रवैए से वर्षों से वाकिफ थी और यह अच्छा ही हुआ था कि कैप्टन विक्रम सिंह की पार्टी में किसी को भी यह बात समझ में नहीं आई थी कि कृष्णराव और कावेरी अचानक पार्टी अधूरी छोड़ कर घर क्यों चले गए थे।

अगले दिन कृष्णराव का नशा तो उतर गया था और उन्हें भीतर से इस बात का अफसोस भी हो रहा था कि उन्होंने कल रात की पार्टी में एक दो जाम अधिक क्यों पी लिए थे पर इस बीच वो अपने घर के आंगन में पत्तों को बिखरा देख कर एक बार फिर से वो भड़क गए थे और अभी कावेरी उन्हें शांत कर ही रही थी कि उन्होंने देखा कि श्रीकांत और आशा उनके घर पर चले आ रहे थे शायद रात को कृष्णराव की हालत को

देख कर वो उनके बारे में थोड़े चिंतित हो गए थे। उन्हें घर पर आया देख कर कावेरी उनकी खातिरदारी में जुट गई थी पर साथ ही उसका सारा ध्यान अपने पति की ओर भी लगा हुआ था और उसे मन ही मन में यह चिंता खाए जा रही थी कि कहीं कृष्णराव श्रीकांत से कोई कड़वी बात न कह दें और थोड़ी बातचीत और चाय पीने के बाद, कृष्णराव से रहा नही गया और उन्होंने श्रीकांत को कह ही दिया "श्रीकांत बहुत दिनों से मैं आपसे एक बात कहना चाह रहा था पर कुछ सोच कर रुक गया था" तब श्रीकांत ने अपनी आदत के मुताबिक बहुत ही नम्रता के साथ कहा था "आप कहिए नहीं भाई साहब, आप हुक्म कीजिए" और यह सच बात थी कि श्रीकांत की ये बातें सबका दिल जीत लेती थी और कावेरी भी श्रीकांत को अपने छोटे भाई की तरह ही समझती थी और वो श्रीकांत की बात सुनकर मुस्करा दी थी और उसे विश्वास था कि श्रीकांत बहुत बुद्धिमान और सुलझा हुआ इंसान है और वो मामले को जल्दी ही समझ कर सब कुछ सामान्य कर देगा और कावेरी के सोचने के मुताबिक वैसा ही हुआ था। जब कृष्णराव ने श्रीकांत से उनके आंगन में पत्तों के गिरने की शिकवा शिकायत की थी तब श्रीकांत ने हंसते हुए कृष्णराव से कहा था "इतनी छोटी सी बात थी भाई साहब अगर आप कहें तो मैं पेड़ ही कटवा दूंगा, भला वृक्ष हमें आपसे अधिक प्यारे कैसे हो सकते हैं" और श्रीकांत ने यह बात हंसते हुए कही थी और उसकी मुस्कराहट से बात की गंभीरता समाप्त हो गई थी और ऐसा कावेरी भी चाहती थी और सच तो यह था कि उस समय कावेरी मन ही मन में ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी कि "हे ईश्वर कुछ भी हो जाए पर हमारे रिश्ते आपस में खराब न हों" और ईश्वर ने कावेरी की प्रार्थना स्वीकार कर ली थी। श्रीकांत कृष्णराव को अपना बड़ा भाई समझते थे और उनकी कही हर बात का दिल से सम्मान करते थे और इसी वजह से श्रीकांत ने अपनी देख रेख में अपने माली की मदद से सब वृक्षों की कांट छांट कर डाली थी और फिर उन्होंने कृष्णराव का आंगन भी साफ करवा दिया था और सब काम समाप्त करने के बाद श्रीकांत ने बहुत हक से कावेरी से कहा था "भाभी जी अब इसी बात पर एक कप गर्म चाय हो जाए" कुछ पल के लिए कावेरी को लगा था कि श्रीकांत कृष्णराव की नाराजगी की वास्तविक वजह को समझ गया था क्योंकि वो एक लेखक था, इसीलिए मनो भावों को पढ़ लेना बहुत अच्छी तरह से जानता था और उसने भी बहुत खूबसूरती से अपने भाव सबसे छिपा लिए थे और शायद वो इस बात को समझता था कि पक्की उम्र में इंसान के स्वभाव को बदला नहीं जा सकता था और कई

लोग बुढ़ापे तक आते आते, थोड़े चिड़चिड़े भी जाते हैं और इस बात की बहुत सी वजह हो सकती हैं और एक वजह श्रीकांत को अनुराधा बेटी के तौर पर बहुत स्पष्ट दिखाई दे रही थी और इसी वजह से उसे कृष्णराव से बहुत हमदर्दी थी। पर अनुराधा के मामले को लेकर श्रीकांत ने कृष्णराव से कभी कोई बातचीत नहीं की थी क्योंकि वो जानता था कि यह बहुत नाजुक मामला है और इस विषय में अगर ठीक तरह से बातचीत न की गई तो उसके परिणाम खराब भी हो सकते थे।

अब तक कृष्णराव भी थोड़ा सामान्य हो गए थे और वो श्रीकांत से बहुत इधर उधर की सामान्य बातें करने लगे थे और बातों के उन्हीं सिलसिलों में श्रीकांत ने उन्हें बताया था कि उनकी फौजी बेटा आलोक घर पर आ रहा है और घर जाने से पहले श्रीकांत ने कृष्णराव और कावेरी को अपने घर पर आने का निमंत्रण भी दे दिया था।

जब श्रीकांत उठ कर चला गया, तब कावेरी के मुंह से अचानक ही निकल गया था "श्रीकांत कितने शांत स्वभाव का है और कितना सुलझा हुआ इंसान है" बहुत मुश्किल से कृष्णराव सामान्य हुआ था पर कावेरी की बात सुनकर एक बार फिर से कृष्णराव हत्थे से उखड़ गया था और कावेरी ने देखा कि श्रीकांत का नाम सुनकर कृष्णराव की सुई फिर से वहीं अटक गई थी और वो मुंह बनाकर अखबार पढ़ने लगे थे और कृष्णराव ने कावेरी की ओर देखे बिना ही उससे कहा था "तुम्हें तो उसमें सिर्फ अच्छाई ही दिखाई देती है" और कृष्णराव के मुंह से यह शब्द सुनकर कावेरी को अपनी गलती का अहसास हो गया था और उसी पल उसने फैसला कर लिया था कि अब वो अपने पति के सामने श्रीकांत की तारीफ कभी भी नही करेगी।

श्रीकांत और कृष्णराव के घर के बिल्कुल ठीक सामने ही शिवनारायण तिवारी का घर भी था और 84 वर्षीय शिवनारायण तिवारी बिल्कुल अकेले रहते थे और वर्षों पहले उनकी पत्नी का देहांत हो गया था और उनके दो बच्चे थे। उनका एक लड़का और एक लडकी थे और उनके दोनो बच्चे कम्पीयूटर इंजीनियरिंग करने के बाद USA चले गए थे और उन्होंने दूसरे सब हिन्दुस्तानी बच्चों की तरह ही वहां पर अपनी दुनिया बसा ली थी और वो दोनो वहां पर बहुत खुश थे और वो एक दो साल के बाद अपने पिता से मिलने हिन्दुस्तान आ जाते थे और कुछ दिन सुख पूर्वक उनके साथ बिताने के बाद नौकरी की मजबूरियों की वजह से वो USA वापिस लौट जाते थे। शिवनारायण के साथ

बंसी नाम का एक बूढ़ा नौकर रहता था और वो वर्षों से उनके साथ ही रहता आ रहा था और अब तक बंसी शिवनारायण तिवारी के परिवार का एक हिस्सा बन चुका था और अब बच्चे फोन करके बंसी से घर का सारा हाल चाल जान लेते थे और उन्हें इस बात की बहुत तसल्ली थी कि बंसी काका जैसा वफादार इंसान उनके पिता की देखभाल कर रहा है। शिवनारायण के बच्चों की भी कुछ मजबूरियां थी कि वो अपनी जमी जमाई नौकरी छोड़ कर हिन्दुस्तान वापिस नही आना चाहते थे, पर एक बात निश्चित थी कि उन्हें अपने पिता की फिक्र भी रहती थी। श्रीकांत, कृष्णराव और कैप्टन विक्रम सिंह, शिवनारायण तिवारी का हाल चाल जानने के लिए अक्सर उनके घर पर आते जाते रहते थे और उन तीनो के पास भी शिवनारायण तिवारी के बच्चों के फोन नंबर थे और उन्हें इस बात का अंदाज़ा था कि शिवनारायण के स्वस्थ को लेकर उन्हें कभी भी बच्चों को फोन करना पड़ सकता था और ये ही सब सोच कर वो तीनों शिवनारायण तिवारी का बहुत ध्यान रखते थे और सुषमा, आशा और कावेरी अक्सर उनके घर पर खाने पीने की चीजें भेजते रहते थे और सब शिवनारायण तिवारी की वृद्धावस्था को देखते हुए उनका बहुत आदर करते थे। एक दिन बंसी काका ने आधी रात को श्रीकांत को फोन करके बताया कि साहब की तबियत कुछ ठीक नहीं लग रही है और उसी पल यह खबर तीनों तक पहुंच गई थी और वो सब अपना सारा काम छोड़ कर शिवनारायण तिवारी को अस्पताल में ले आए थे और उनकी गंभीर अवस्था को देखते हुए उन्होंने शिवनारायण तिवारी को अस्पताल में भर्ती करवा दिया था। इस बीच कृष्णराव श्रीकांत और कैप्टन विक्रम सिंह आपस में सलाह मशवरा कर रहे थे कि अगर शिवनारायण की तबियत और बिगड़ी, तो वो फोन करके उनके दोनो बच्चों को खबर दे देंगे और रात में अस्पताल में रुकने को लेकर श्रीकांत ने कृष्णराव और कैप्टन विक्रम सिंह से कहा था “भाई साहब आप घर चले जाइए और आराम करिए, मैं यहां पर रुकूंगा और अगर जरूरत पड़ी तो आपको खबर कर दूंगा” पर श्रीकांत की इस बात से भी कृष्णराव थोड़े परेशान दिखाई दे रहे थे और उस पल उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे “श्रीकांत लोगों की निगाहों में अच्छा बनने की कोशिश कर रहा था” पर वास्तव में ऐसी कोई भी बात नही थी। कैप्टन विक्रम सिंह को श्रीकांत की बात मुनासिब लगी थी और उन्होंने कृष्णराव की ओर देखते हुए उनसे कहा था “तीनों का यहां रुकने से कोई फायदा नही है श्रीकांत ठीक कह रहा है, चलिए भाई साहब हम घर चलते हैं और सुबह 6 बजे तक हम दोनो वापिस अस्पताल

आ जायेंगे और श्रीकांत को आराम करने के लिए घर पर भेज देंगे" उस पल कृष्णराव के मन में चल रही कश्मकश उनके मन में ही रह गई थी और वो दोनो घर वापिस लौट आए थे और अगले दिन जब वो अस्पताल पहुंचे थे तब श्रीकांत ने उन्हें खुशखबरी सुनाई थी कि अब शिवनारायण जी एक दम ठीक हैं और उन्हें सुबह 10 बजे अस्पताल से छुट्टी मिल जायेगी। श्रीकांत और कृष्णराव के सोचने से पहले ही कैप्टन विक्रम सिंह ने अस्पताल का बिल अदा कर दिया था और वैसे भी पैसे के लेन देन के मामले में तीनो बहुत बड़े दिल के थे। शिवनारायण तिवारी के घर पर आ जाने के बाद, श्रीकांत उसकी पत्नी आशा, सुषमा और कावेरी भी शिवनारायण जी के घर पर आ गए थे और उन सबको एक साथ अपने घर पर आया देख कर शिवनारायण जी की आंखें नम हो गई थी और उन्होंने रूंधे गले से सबका धन्यवाद किया था और इस बीच बंसी काका सबके लिए चाय बना कर ले आए थे और कृष्णराव ने उम्र में बड़ा होने के नाते से सबकी तरफ से शिवनारायण जी से कहा था "अभी हम सबको बहुत वर्षों तक एक साथ रहना है" फिर कृष्णराव ने शिवनारायण तिवारी जी का हाथ अपने हाथों में लेकर उनसे कहा था "शुक्रिया या धन्यवाद बोल कर आप हमें शर्मिंदा न करिए आप हमारे बुजुर्ग हैं और आपकी देखभाल करना हम सबका कर्तव्य है" और यह बात कृष्णराव ने बहुत प्रेम से कही थी और उस पल उनके चेहरे पर बहुत कोमल भाव दिखाई दे रहे थे और यह देख कर कावेरी की आंखें भी नम हो गई थी और उस पल सुषमा और आशा, कावेरी की बाहें थामें उनके बिल्कुल करीब ही खड़े हुए थे और उस पल सबके चेहरे पर कृष्णराव के लिए प्रशंसा के भाव दिखाई दे रहे थे। कैप्टन विक्रम सिंह और श्रीकांत ने वर्षों के बाद कृष्णराव की भावुकता का ऐसा रंग देखा था और वो दोनो मन ही मन में कृष्णराव के कायल हो गए थे।

पर यह बात सच थी कि कृष्णराव के मन में श्रीकांत को लेकर कड़वाहट अभी भी बनी हुई थी और इसकी वजह अब वो खुद भी नही जानते थे।

अभी कुछ दिन ही बीते थे कि एक दिन आधी रात को श्रीकांत के घर से बहुत जोर जोर रोने की आवाज़ें आने लगी थी और बहुत जल्दी ही कैप्टन विक्रम सिंह उनकी पत्नी सुषमा, कृष्णराव और कावेरी श्रीकांत के घर की ओर भागे थे और जब उन्होंने वहां का नज़ारा देखा तो उसे देख कर उनका दिल दहल गया था, उन्होंने देखा कि श्रीकांत अपनी कुर्सी पर हमेशा की तरह बैठा हुआ था और उसका सर टेबल के एक ओर झुका हुआ

था और उस समय उसके सामने एक अधखुली डायरी पड़ी हुई थी जिस पर शायद श्रीकांत कोई रचना लिख रहे थे, जो उनकी आकस्मिक मृत्यु के बाद अब वो अधूरी रह गई थी और उस अधखुली डायरी के पन्ने अभी भी हवा से यहां वहां उड़ रहे थे और श्रीकांत की पत्नी आशा ने सबको रोते हुए बताया था कि "श्रीकांत को नींद नहीं आ रही थी, इसलिए वो कोई कहानी लिखने बैठ गए थे और उन्होंने मुझसे चाय बनाने के लिए कहा था और जब तक मैं चाय लेकर वापिस आई तो मेरे देखते ही देखते यह सब हो गया" और इतना कहने के बाद वो जोर जोर से रोने लगी थी और सब हक्के बक्के होकर दिल को दुखी कर देने वाले उस नज़ारे को देख रहे थे। जब सबको थोड़ा होश आया तब सुषमा और कावेरी आगे बढ़े और उन्होंने आशा को चुप कराने का प्रयास करते हुए उसे अपने गले से लगा लिया था, पर सच तो यह था कि उस पल सब इतने सदमे में थे कि किसी को यह समझ नही आ रहा था कि इस दुखद समय में वो श्रीकांत की पत्नी को दिलासा कैसे दें।

अगले दिन अड़ोस पड़ोस के सब लोग श्रीकांत के घर पर इकट्ठे होने लगे थे और इस बीच श्रीकांत का बेटा आलोक भी फौज की नौकरी से अवकाश लेकर घर पर आ गया था और उन दुखद घड़ियों में उनके रिश्तेदारों का आना जारी था और उसी मायूसी भरे माहौल में भारी मन से, सबने श्रीकांत का दाहसंस्कार कर दिया था और चार दिन तक श्रीकांत के घर पर शोक भरा वातावरण बना रहा था। पर इस बीच श्रीकांत की अक्समिक मृत्यु को लेकर कृष्णराव बेहद दुखी थे और वो अकेले बैठे हुए लगातार रो रहे थे और वो कावेरी से सिर्फ एक ही बात कह रहे थे कि "उन्होंने श्रीकांत से पत्ते गिरने की शिकायत क्यों की थी?" और उन दुखद लम्हों में वो बातें कृष्णराव के मन में घर कर गई थी और वो रोते हुए बार बार सिर्फ इसी बात को दोहराते जा रहे थे और बहुत अधिक मानसिक पीड़ा की वजह से वो श्रीकांत के घर पर रखी शोक सभा में भी नही जा पाए थे और कुछ दिन बीत जाने के बाद जब कावेरी ने आशा से कृष्णराव की इस हालत का जिक्र किया कि "वो पत्तों वाली बातों को याद करके लगातार रोते जा रहे हैं और मुझे डर है कि उन्हें कुछ हो न जाए" और कावेरी के मुंह से यह सब सुनकर, आशा और उसका बेटा आलोक कृष्णराव से मिलने उसके घर पर आ गए थे और आशा ने कृष्णराव को समझते हुए उनसे कहा था "भाई साहब वो आपकी बहुत इज्जत करते थे और आपको अपना बड़ा भाई मानते थे और वो आपकी कही किसी भी बात का कभी बुरा

नहीं मानते थे, कृपया आप ऐसा मत सोचिए" उस पल आलोक ने भी कृष्णराव के मायूस चेहरे को देख कर उनसे कहा था "वो अक्सर हमें आप सबके बारे में बताते थे और वो आपको अपना बड़ा भाई मानते थे, फिर वो इतनी छोटी सी बात को लेकर, आपसे नाराज़ कैसे हो सकते थे" सबके समझाने से थोड़ा अंतर पड़ा था और इस बीच कैप्टन विक्रम सिंह और उसकी पत्नी सुषमा भी कृष्णराव के घर पर आ गए थे और कैप्टन विक्रम सिंह ने फौजियों वाले अंदाज़ से कृष्णराव से कहा था "हिम्मत रखिए भाई साहब, अभी हम सब लोगों ने एक परिवार की तरह बहुत वर्षों तक साथ रहना है और जो बीत गया है उसे भी मुस्करा कर याद करिए और जिंदगी में आगे बढिये" आलोक को कैप्टन विक्रम सिंह की कही बात अच्छी लगी थी और उसने उनके सुर में सुर मिलाते हुए फौजी अंदाज से कृष्णराव से कहा था "अंकल बिल्कुल ठीक कह रहे हैं, आगे बढ़ते रहने का नाम ही जिंदगी है" जब यह सब बातें चल रही थी, तब कावेरी ने भोजन की थाली आलोक के हाथों में दे दी थी, ताकि वो कृष्णराव को खाना खाने के लिए कह सके, कावेरी ने आशा को बताया था कि बहुत दिनों से कृष्णराव ठीक से भोजन नहीं खा रहे थे और उनके मन में सिर्फ एक ही बात चल रही थी कि उन्होंने श्रीकांत से पत्तों के गिरने की शिकायत क्यों की थी, यह सब सुनकर आलोक ने कृष्णराव की ओर बहुत प्रेम से भोजन की थाली बढ़ा दी थी और उनसे कहा था "अंकल खाना खा लीजिए" बस श्रीकांत के बेटे से इतना सुनते ही वो सोफे से उठ खड़े हुए थे और उन्होंने रोते हुए ही आलोक को अपने गले से लगा लिया था और वो रोते हुए ही आलोक से कह रहे थे "बेटे मुझे माफ कर देना, मैं श्रीकांत की प्रसिद्धि की वजह से उससे थोड़ा जलने लगा था, पर मुझे ये नहीं पता था कि एक दिन ये सब भी देखना पड़ेगा" यह सब सुनकर आलोक का दिल भी पसीज गया था और उसने बहुत प्रेम से कृष्णराव जी को अपने गले से लगा लिया था और फिर उसने कृष्णराव जी से कहा था "पापा का मन बहुत विशाल था और वो कभी भी किसी की कही बात का बुरा नही मानते थे और उनका सारा ध्यान सिर्फ कहानियाँ लिखने की ओर ही लगा रहता था फिर वो आपकी इतनी छोटी सी बात का बुरा कैसे मान सकते थे" आलोक के कहे शब्दों ने जादू का सा असर किया था और कृष्णराव का रोना थम गया था और तब तक आलोक कृष्णराव के करीब ही सोफे पर बैठ गया था और कृष्णराव अपने आंसू पोंछते हुए खामोश हो गए थे, शायद आलोक ने उन्हें विश्वास दिला दिया था कि श्रीकांत की दुखद मृत्यु का कारण वो नही थे और

आलोक के मुंह से यह सब सुनकर वो धीरे धीरे सामान्य होने लगे थे। अभी उनके बीच यह सब बातें चल ही रही थी कि कावेरी और बंसी काका सबके लिए चाय बना कर ले आए थे, जिससे माहौल धीरे धीरे सामान्य होने लगा था और उसी माहौल में आशा ने कावेरी के हाथ अपने हाथों में थाम कर बहुत प्रेम से उससे कहा था "आज मैं आपसे आपकी सबसे कीमती चीज मांगना चाहती हूं" आशा की बात सुनकर सब आश्चर्य से उसे देखने लगे थे, तब आशा ने बहुत प्रेम से कावेरी की आंखों में देखते हुए उससे कहा था "मैं अनुराधा को अपने घर की बहु बनाना चाहती हूं और श्रीकांत की भी ये ही इच्छा थी" आशा के मुंह से यह आश्चर्जनक बात सुनकर कृष्णराव की आंखें भर आई थी और कावेरी ने अत्यधिक खुशी की वजह से आशा को अपने गले से लगा लिया था और कावेरी ने अनुराधा की ओर देखते हुए इस रिश्ते के लिए हामी भर दी थी और उस पल जैसे क्षण भर में ही माहौल बदल गया था और कावेरी ने आशा की इज़ाजत लेकर सब का शक्कर से मुंह मीठा करवा दिया था और कैप्टन विक्रम सिंह ने आलोक को गले से लगा कर बधाई दी थी और साथ ही उन्होंने आशा की ओर देखते हुए कहा था "भाभी जी आपने यह कदम एक फ़ौजी की तरह उठाया है और आपके इस कदम की जितनी भी तारीफ की जाए वह कम है" कुछ महीने शोक के बिताने के बाद लगभग 6 महीने के बाद, आसपास के सब पड़ोसियों की मौजूदगी में आलोक और अनुराधा का विवाह हो गया था और अनुराधा अपने घर से दो कदम चल कर श्रीकांत के घर पर आ गई थी और उस पल आशा श्रीकांत की तस्वीर के सामने खड़ी होकर उससे कह रही थी "मैंने तुम्हारा सपना सच कर दिया है" और इतना कह कर वो फूट फूट कर रोने लगी थी और सुषमा और कावेरी ने उसे सहारा देकर सोफे पर बिठा दिया था और उस पल सारा घर आसपास के पड़ोसियों से भरा हुआ था और सब नम आंखों से श्रीकांत को याद कर रहे थे और यह बात सच थी कि श्रीकांत जैसी सुलझी हुई शख्सियत को भुलाने में अब सबको वर्षों लगने थे और इस बीच कैप्टन विक्रम सिंह ने सबकी ओर देखते हुए कहा था "शायद आप सबको मालूम नही है कि हमारे यहां पर एक और नए पड़ोसी रहने के लिए आए हैं और अब हम सबको एक बार उनसे मिलने जाना चाहिए और उन्हें भी अपने इस खूबसूरत परिवार का हिस्सा बना लेना चाहिए" फिर कुछ रुककर उन्होंने कहा था "अगर हम सब मिल जुल कर ऐसे ही रहेंगे, तो हमारी जिंदगी का आने वाला हर दिन एक यादगार दिन होगा" और उस पल शिवनारायण तिवारी जी ने उम्र में सबसे बड़े होने की

वजह से, सबकी ओर देखते हुए कहा था "कैप्टन साहब बिल्कुल ठीक कह रहे हैं" और उस पल वो मन ही मन में श्रीकांत को याद कर रहे थे और क्षण भर के लिए उनकी आंखों के सामने श्रीकांत का मुस्कराता हुआ चेहरा लहराया था जिसे देख कर उनकी आंखें नम हो गई थी और उन्होंने चुपके से अपने आंसू पोंछ लिए थे।

समाप्त

कहानी 25: मैं एक लेम्प पोस्ट हूं

मैं एक लेम्पपोस्ट हूं और मैंने बहुत से लोगों के किस्से सुने हैं और उन्हें देखा है और उन किस्सों को सिर्फ मैं जानता हूं या वो लोग जानते हैं जिनके साथ घटना घटी होती है और किसी तीसरे को उस गुपचुप से किस्से की कानों कान खबर तक नही होती कि रिश्तों में दरार पड़ने की आखिर वजह क्या थी और उन नाज़ुक लम्हों में उनके दिल से निकली बातों का सिर्फ मैं एक मात्र गवाह था कि उन नाज़ुक पलों में उस पल वो एक दूसरे के बारे में क्या सोच रहे थे और उन दुखद लम्हों में वो दोनो एक दूसरे की बातों से बिलकुल अनभिज्ञ थे। पर मैं लेम्पपोस्ट बना हुआ बहुत से किस्सों का एक मात्र गवाह होता था, जो उस पल उनकी सब बातें सुन रहा होता था, देख रहा होता था और कभी कभी कुछ किस्सों को देख सुनकर मैं खुद भी बहुत भावुक हो जाता था।

पहाड़ के घुमावदार सड़क पर, मैं बरसों से एकांत में खड़ा हुआ था और मैंने बहुत से किस्से सुने और देखे थे और आज मैं आपको उन किस्सों में से एक किस्सा सुनाता हूं।

यह एक सर्द रात का किस्सा था और उस पल माहौल में बहुत ठंड थी और उस पल रात के 10 बजने को थे और सड़क पर दूर दूर तक किसी आदमी का नमोनिशान तक नज़र नही आ रहा था, तभी मैंने देखा कि उस सर्द रात में एक वृद्ध जोड़ा धीरे धीरे लेम्पपोस्ट के करीब चला आ रहा था और वो दोनो वृद्ध इंसान देखने से किसी गांव के प्रतीत हो रहे थे। वो वृद्ध दंपत्ति शायद बहुत दूर से चलते हुए आ रहे थे और अब थोड़ा सुस्ताने के लिए वो मेरी लेम्पपोस्ट के नीचे रखे एक बेंच पर बैठ गए थे और मैंने देखा कि वो दोनो पति पत्नी धीरे धीरे सिसक रहे थे और मैंने सुना कि वह बूढ़ा अपनी पत्नी से कह रहा था "उर्मिला तुम्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए था कि हम अपने बेटे के घर पर आए थे वह हमारा घर नही था तुम्हें बहु के रसोई घर में अधिक दखलंदाज़ी नही करनी चाहिए थी" उस पल उस बूढ़ी औरत की आंखों से गंगा जमना बहने लगी थी और उसने रोते रोते ही अपनी साड़ी के पल्लू से अपने आंसू पोछते हुए अपने बूढ़े पति से कहा था "अगर मैं रसोई घर में अपने बेटे का मनपसंद खाना बना रही थी तो इसमें इतनी नाराज़गी वाली क्या बात थी, मेरा बेटा तो बरसों से मेरे हाथ का खाना बहुत चाव से खाता आ रहा है, इसमें बुरा लगने वाली ऐसी कौन सी बात थी कि बहु मुझ से इतनी अधिक नाराज़ हो गई थी" तब उस बूढ़े ने अपनी पत्नी को थोड़ा समझाने वाले अंदाज़ से कहा था "उर्मिला हम गांव के लोग है अब हमारे बच्चे पढ़ लिख कर बड़े अफसर बन चुके हैं अब हमें उनके रहन सहन के मुताबिक ही चलना चाहिए" तब उर्मिला ने रोते रोते ही कहा था "मेरा बेटा साइंटिस्ट बन गया है और बहु भी बड़ी साइंस दान बन गई है, पर मां बाप तो हमेशा मां बाप ही रहते हैं, बहु को कुछ बोलने से पहले इतना जरूर सोच लेना चाहिए था कि उसका पति मेरा बेटा भी है" यह बात सुन कर वह बूढ़ा निरुत्तर हो गया था और उस पल वो मन ही मन सोच रहा था कि वो ऐसा क्या कहे, जिससे उसकी पत्नी को थोड़ा तसल्ली मिल जाए। बूढ़ा अधिक समझदार था और बेशक वो गांव का किसान था, पर उसने दुनिया देखी थी, पर यह भी सच था कि उसे अपने बेटे और बहू से ऐसे रूखे व्यवहार की उम्मीद बिलकुल भी नही थी। उस वृद्ध दंपति की बातचीत से मुझे इतना तो समझ आ ही गया था कि आफिस से थक हार कर आए बेटे के लिए उसकी मां की बस इतनी सी कोशिश थी कि वो अपने बेटे को कुछ अच्छा खाना बना कर खिला सके और इसी कोशिश में वो अपने बेटे का मन पसंद हलवा बना रही थी और शायद उस पल थकी हारी काम से लौटी बहु को यह बात थोड़ी नागवार गुजरी थी कि

मांजी बेटे की खुशामद करने में लगी हुई हैं और शायद वो उसकी खुशामद करके उससे कुछ पैसे लेने आई हैं, पर वास्तव में ऐसी बात बिल्कुल भी नही थी, यह केवल एक मां की ममता वाली बात थी जिसे बहु समझ नही पाई थी और उसी छोटी सी बात को लेकर घर में क्लेश हो गया था और बात इतनी बढ़ गई थी कि बेटे को मां से यह तक कहना पड़ गया था कि मां मेरी पत्नी रसोई में सब काम देख लेती है, कृपया आप रसोई घर में मत जाया कीजिए और बेटे की नाराज़गी से कही यह बात पिता को बहुत नागवार गुजरी थी और उन्होंने उसी पल अपने गांव जाने का फैसला कर लिया था और उनके बेटे और बहू ने उन्हें रोकने की कोई कोशिश भी नही की थी और उन्होंने उस पल इतना भी नही सोचा था कि इतनी रात को उसके बूढ़े माता पिता अब कहां जायेंगे और वो बूढ़े पति पत्नी अपना बिस्तर बांध कर देर रात घर से निकल पड़े थे और उन्हें भीतर से इस बात का बेहद अफसोस हो रहा था कि उनके बेटे और बहू ने उन्हें रोकने की कोशिश तक नही की थी।

वह बूढ़ा सारे रास्ते अपनी पत्नी को दिलासा देता हुआ आ रहा था और वो दोनो अपना सामान उठाए सुनसान सड़क पर धीरे धीरे चल रहे थे और चलते चलते वो पहाड़ के घुमावदार रास्ते पर मेरी नज़रों के सामने से ओझल हो गए थे और उस वृद्ध दंपति को इस हाल में देख कर मेरा मन बहुत दुखी हो गया था।

पर कुछ देर बाद मैंने देखा कि एक औरत और एक नौजवान आदमी बीच सड़क पर किसी को खोजते हुए चले आ रहे थे और फिर वो भी मेरे नीचे पड़े उसी बेंच पर ही बैठ गए थे जिस बेंच पर थोड़ी देर पहले वह बूढ़ा अपनी पत्नी के साथ बैठा हुआ था और उस पल उनके बीच होती बातचीत से मैंने इस बात का अंदाजा लगा लिया था कि हो न हो, यह उस बूढ़े दंपत्ति के बेटा और बहू ही थे और उस पल रात के सन्नाटे में वह औरत रोते रोते अपने पति से कह रही थी "आलोक तुम जानते हो कि मेरा मतलब तुम्हारी मां को दुख पहुंचाने का नहीं था, तुम्हारी मां मेरी भी मां है" तब उस लड़के ने जिसका नाम आलोक था, उसने बहुत सोच कर अपनी पत्नी से कहा था" मधु इस बात में सारा कसूर सिर्फ तुम्हारा नहीं है, इसमें मेरा भी कसूर है, अगर मैंने उस पल मामूली सी बात को इतना तुल न दिया होता तो शायद बात इस हद तक न पहुंचती और मेरे पिता का मुझ से नाराज़ होना बिलकुल जायज़ था क्योंकि अपनी पत्नी का अपमान होते देखकर, कोई भी पति नाराज़ हो सकता था और उस पर मां का कसूर सिर्फ इतना ही था

कि वो मुझे थका हुआ देख कर मुझे कुछ अच्छा खिलाने की लालसा लिए मुझ पर अपनी ममता उड़ेल रही थी और यह कहते समय उस नौजवान की आंखों में नमकीन पानी लहराया था और उसने रूंधे गले से अपनी पत्नी से कहा था "बस बात सिर्फ इतनी सी थी जिसे तुम भी समझ नही पाई थी और उस पल मेरी भी मत मारी गई थी" यह सब कहते हुए उसकी आंखों से झर झर आंसू बहने लगे थे और उस पल मधु ने आलोक को अधिक भावुक होता देख कर बहुत प्रेम से उसे अपने गले से लगा लिया था और वो अपने पति से रोते हुए कह रही थी "तुम जानते हो आलोक कि मेरा मतलब मांजी को दुख पहुंचाने का हरगिज़ नही था, तुम मुझे माफ कर दो, इस सब में, सिर्फ मेरा ही कसूर है, अगर मैंने मांजी को रसोई घर में कोई रोक टोक न की होती तो शायद बात इस हद तक नही बढ़नी थी कि वो नाराज़ होकर घर छोड़ कर निकल जाते" मधु की आंखों से पश्चाताप के आंसू बह रहे थे और उस पल मधु इतनी भावुक हो गई थी कि वो खुद को संभाल नहीं पा रही थी तब आलोक ने उससे कहा था "मधु तुम जानती हो कि मेरे पिता जी एक साधारण से किसान थे और उन्होंने अपनी सब ख्वाहिशों पर अंकुश लगाते हुए, सिर्फ मेरी शिक्षा की ओर ध्यान दिया था, जिसकी वजह से मैं आज पढ़ लिख कर एक साइंसटिस्ट बन पाया हूं और मैंने अपनी नासमझी से उनके प्यार का यह सिला दिया है, तुम नहीं समझ पाओगी कि इस समय मेरे दिल पर क्या बीत रही है" तब मधु ने अपने पति की आंखों में आए आंसुओं को अपने हाथों से पोछते हुए उससे कहा था "आलोक तुम चिंता मत करो हम दोनो मिल कर उन्हें सब जगह खोजेंगे और जब वो हमें मिले जायेंगे तब मैं उनके पांव पकड़ कर उनसे माफी मांग लूंगी और हम उन्हें सम्मान सहित घर पर वापिस ले आयेंगे तब सब ठीक हो जायेगा, तुम चिंता मत करो" कुछ पल रूक कर मधु ने आलोक से कहा था "आलोक माता पिता का दिल बहुत विशाल होता है और वो अपने बच्चों की बड़ी से बड़ी गलती को भी सच्चे दिल से माफ कर देते है" तब उस पल मधु ने रोते रोते ही आलोक से कहा था "और अगर मां पिता जी गांव चले गए तो हम भी गांव जायेंगे और उनसे माफी मांग कर उन्हें वापिस अपने घर पर ले आयेंगे" और मधु की बातें सुनकर आलोक ने सहमति से अपना सिर हिला दिया था और यह देख कर मधु ने भी अपने आंसू पोछ लिए थे और वो दोनो भी उसी ओर चल पड़े थे, जिस रास्ते पर कुछ देर पहले वह बूढ़ा अपनी पत्नी के साथ गया था।

मैं एक लेम्पपोस्ट हूं और इस सारे किस्से का एक मात्र गवाह हूं कि उन दुखद लम्हों में वह एक दूसरे की बारे में क्या सोच रहे थे और बेटे और बहू द्वारा उठाए गए अच्छे कदम का मैं सच्चे दिल से स्वागत करता हूं और मेरी ईश्वर से उनके परिवार के लिए यही प्रार्थना है कि वह बूढ़े दंपत्ति अपने बच्चों को सच्चे दिल से माफ कर दें और उनके बच्चे भी फिर कभी भी इस तरह की गलती वापिस न दोहराएं।

कई बार हमारी छोटी सी नासमझी से, या हमारी अज्ञानता से बात का बतंगड़ बन जाता है, पर जो लोग वक्त की नज़ाकत को समझते हुए अपनी गलती को सुधार लेते हैं फिर उनकी कहानी पटरी पर वापिस लौट आती है।

अगली बार मैं आपके समक्ष एक और किस्सा ले कर आऊंगा "मैं एक लेम्पपोस्ट हूं" और मैंने ऐसे अनगिनत किस्से देखे और सुने हैं।

समाप्त

कहानी 26: पोस्टमैन गौरीशंकर

पोस्टमैन गौरीशंकर की यह कहानी वर्ष 1960 के आसपास की है। पोस्टमैन गौरीशंकर को पोस्टमैन की नौकरी करते हुए लगभग 36 वर्ष हो चुके थे और अब उनके रिटायर्ड होने में कुल दो वर्ष ही बाकी थे। गौरीशंकर की उम्र अब लगभग 58 वर्ष की हो चुकी थी और वो बहुत ही बुद्धिमान और दयालु इंसान थे और वो अक्सर गांव के अनपढ़ लोगों के खत पढ़ने और लिखने का काम भी कर दिया करते थे और इसलिए गांव के सब लोग उनका बहुत सम्मान करते थे।

पर एक दिन गौरीशंकर जब एक बूढ़ी औरत के घर पर उसके बेटे का खत देने जा रहे थे तब उस 75 वर्षीय बूढ़ी औरत की दयनीय अवस्था को देख कर उन्होंने उस खत को पहले ही पढ़ लिया था और उस खत में लिखे संदेश को पढ़ कर उन्हें बेहद दुख हुआ था। वह खत "सिक्योरिटी" की एजेंसी चलाने वाली एक कंपनी की तरफ से लिखा गया था और उस खत में लिखा था कि बहुत दुख के साथ आपको सूचित किया जाता है कि 7/6/1960 की तारीख को आपके पुत्र का एक सड़क दुर्घटना में देहांत हो गया है। उस

दुखद समाचार को पढ़ कर पोस्टमैन साहब बिल्कुल हक्के बक्के रह गए थे और उस बूढ़ी की दुखद अवस्था को देख कर फिर उनकी हिम्मत नहीं हुई थी कि वो उसे उसके पुत्र के देहांत की दुखद खबर सुनाएं पर जब वो वापिस लौटने ही वाले थे कि उस बूढ़ी औरत ने उनको देख कर उनसे पूछ लिया था "पोस्टमैन साहब क्या मेरे बेटे का शहर से कोई खत आया है बहुत दिन हो गए उसने मुझे अपनी कोई खबर नहीं भेजी" पोस्टमैन साहब उस पल उस बूढ़ी औरत की आंखों में अपने बेटे की खबर पाने की उम्मीद की किरण देख रहे थे जिसे देख कर फिर उनकी हिम्मत नहीं हुई थी कि वो उससे आंख मिला कर बातचीत कर सकें पर कुछ सोच कर उन्होंने उस बूढ़ी औरत के घर के भीतर झांक कर देखा था और भीतर के दृश्य को देख कर उनका कलेजा मुंह को आ गया था क्योंकि उन्हें घर के भीतर देख कर उस बूढ़ी औरत की माली हालत का अंदाजा हो गया था और वैसे भी बहुत अधिक उम्र हो जाने की वजह से उस बूढ़ी औरत को आंखों से थोड़ा कम दिखाई देने लगा था जिसकी वजह से उसे अपने घर में आते जाते ठोकरें लगती रहती थी जिसकी वजह से उनके घर का सारा सामान कुछ बिखरा बिखरा सा दिखाई दे रहा था। उस मार्मिक दृश्य को देखने के बाद उनका दिल भर आया था और फिर वो वहां पर रुके नहीं रह सके थे। पर जाने से पहले उन्होंने उस बूढ़ी औरत को दिलासा देते हुए कहा था "चिंता मत करिए अम्मा, आपके बेटे का खत आ जाएगा" और इतना कहते ही उनका दिल भर आया था और फिर वो वहां पर रुके नहीं रह सके थे और वो जैसे उस बुढ़िया के घर पर गए थे वैसे ही उल्टे पांव वापिस लौट आए थे और उस दिन उनका काम में बिल्कुल भी मन नहीं लगा था और वो जल्दी ही अपना सारा काम समाप्त करने के बाद अपने घर पर वापिस लौट आये थे और गौरीशंकर ने घर के भीतर कदम रखते ही अपनी पोस्टमैन की टोपी और वर्दी उतारी थी और उसे दीवार पर लगी एक कील पर लटका दिया था और फिर वो अपना हाथ मुंह धो कर घर के एक कोने में चुपचाप से बैठ गए थे और तब तक उनकी पत्नी उनके लिए चाय बनाकर ले आई थी। पोस्टमैन साहब की पत्नी उन्हें यूं खामोश बैठा देख कर थोड़ी हैरान हुई थी और फिर कुछ सोच कर उसने पूछ ही लिया था "क्या हुआ आज आप बहुत चुपचाप से बैठे हुए हैं?" तब क्षण भर के लिए उन्होंने अपनी पत्नी की ओर देखा था और उससे पूछा था "शहर से आलोक का कोई खत आया है क्या?" तब उनकी पत्नी ने थोड़ा हैरान होते हुए उनसे कहा था "हां आया तो था और उस खत को तो आपने खुद ही पढ़ा था" फिर कुछ रुककर उनकी

पत्नी ने कहा था "उसने लिखा था कि वो एकदम ठीक है और छुट्टी मिलते ही वो घर आएगा" गौरीशंकर का बेटा फौज में था और उसके अक्सर खत आते रहते थे पर आज उस बूढ़ी औरत के खत को पढ़ने के बाद पोस्टमैन गौरीशंकर का मन कुछ भारी हो गया था और सच तो यह था कि वो धर्मसंकट में पड़ गए थे कि उन्हें पोस्टमैन का धर्म निभाना चाहिए या इंसानियत का धर्म निभाना चाहिए। कुछ सोच कर उन्होंने सारा किस्सा अपनी पत्नी को कह सुनाया था और उस दुखद किस्से को सुनकर उनकी पत्नी भी थोड़ी उदास हो गई और उन्होंने कुछ सोच कर अपने पति की ओर देखते हुए कहा था "आपको इंसानियत का धर्म निभाना चाहिए और उस औरत को वह खत नहीं देना चाहिए उस खत की खबर सुनकर उसका जीना मुश्किल हो जाएगा और हो सकता है कि कुछ दिन में वो भी अपने बेटे को याद करते करते दम तोड़ दे" पोस्टमैन साहब को अपनी पत्नी की बात ठीक लग रही थी। इस बात को लेकर दोनों बहुत देर तक आपस में विचार विमर्श करते रहे थे तब उनकी पत्नी ने उन्हें सुझाव दिया था कि उन्हें यह सारा किस्सा गांव के सरपंच को बताना चाहिए क्या पता वो इस बात का कोई हल निकाल दें और उस बूढ़ी औरत को जीने का कोई सहारा मिल जाए। पोस्टमैन साहब को अपनी पत्नी की बात ठीक लगी थी और अगले ही दिन उन्होंने गांव के सरपंच के घर का रुख किया था और उन्होंने सरपंच महोदय को सारा किस्सा कह सुनाया था। सब किस्सा सुनने के बाद सरपंच जी ने गांव के कुछ सम्मानित लोगों की बैठक बुलाई थी और उनके सामने उस बूढ़ी औरत की समस्या रखी थी। कुछ सोच कर गांव के कुछ बूढ़े बुजुर्गों ने एक समाधान सुझाया था कि उस बूढ़ी औरत को उसके बेटे की तरफ से कुछ पैसे भेजते रहना चाहिए और उन पैसों की व्यवस्था गांव के कुछ लोगों ने अपने सिर पर ले ली थी। इस बीच सरपंच साहब ने घोषणा की कि वो पोस्टमैन गौरीशंकर और गांव के कुछ लोगों को साथ लेकर शहर में उस सिक्योरिटी कंपनी में जाएंगे और उनसे उस बूढ़ी औरत के लिए कुछ मदद मांगेंगे जिससे उस बूढ़ी औरत का जीवन निर्वाह कुछ अच्छे से हो सके। सरपंच साहब का यह बहुत अच्छा सुझाव था और अगले ही दिन गांव के कुछ लोगों के साथ पोस्टमैन गौरीशंकर शहर की ओर रवाना हो गए और सिक्योरिटी कंपनी के मालिक ने जब गांव के इतने लोगों को एक साथ देखा तो उन्होंने सरपंच महोदय का सम्मान करते हुए अपने आफिस में वर्करों की एक छोटी सी बैठक बुला ली थी जिसमें उस कंपनी के सब वर्करों ने एक मत हो कर यह फैसला किया था कि उनकी वर्कर

एसोसियेशन उस बूढ़ी औरत को अपनी तरफ से महीने के कुछ रुपए भेजती रहेगी और उन पैसों में कंपनी के मालिक ने कुछ अपने पैसे भी जोड़ दिए थे और उसी शुभ दिन में उस कंपनी में वर्कर वेल फेयर एसोसिएशन की स्थापना भी हो गई थी जिसका कार्य कंपनी के वर्करों की कठिन समय में मदद करना था और इसका फैसला एसोसिएशन की वर्किंग कमेटी करने लगी थी और यह वास्तव में छोटे कामगारों और फैक्ट्री वर्करों के लिए एक अच्छा कदम था जिससे सब वर्करों के परिवारों को सुरक्षा मिलनी थी। कंपनी के वर्करों की दरियादिली से और मालिक की दयालु सोचों से 200/= महीना बूढ़ी औरत को देना तय हुआ था जो वर्ष 1960 को देखते हुए अच्छी खासी रकम थी। सरपंच साहब और गांव के कुछ सम्मानित व्यक्ति कंपनी के इस फैसले से बहुत खुश हुए थे और उन्होंने कंपनी के मालिक का और सब वर्करों का धन्यवाद किया था और वो सब खुशी खुशी गांव वापिस लौट आए थे।

आज गौरीशंकर बहुत खुश थे क्योंकि उनकी पत्नी और सरपंच साहब की बुद्धिमानी से आज उन्होंने उस बूढ़ी औरत के भविष्य को सुरक्षित कर दिया था जिसका इस भरी दुनिया में अब कोई भी नहीं था।

पोस्टमैन गौरीशंकर हर महीने उस बूढ़ी औरत के पास कुछ पैसों का मनीआर्डर ले कर जाते थे और अपनी तरफ से लिखा पत्र उस बूढ़ी औरत को पढ़ कर सुना देते थे और उस पत्र में सिर्फ एक ही बात लिखी होती थी "मां मैं कुछ पैसे भेज रहा हूं और काम बहुत अधिक होने की वजह से मैं गांव में नहीं आ सकता पर तुम इन पैसों से घर की मरम्मत करवा लेना और अपना ध्यान रखना मै जल्दी ही गांव आने की कोशिश करूंगा" और उस बूढ़ी औरत को अपना ही लिखा खत पढ़ कर सुनाने के बाद क्षण भर के लिए उनकी आंखें नम हो जाती थी क्योंकि वो इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानते थे कि अब इस बूढ़ी औरत का बेटा कभी भी घर वापिस नहीं लौटेगा।

कुछ वर्ष तक यह सिलसिले यूं ही चलते रहे थे पर एक दिन उस बूढ़ी औरत का रात को सोते समय दिल का दौरा पड़ने से देहान्त हो गया था और इस दुखद कहानी का, उस बूढ़ी औरत की मृत्यु के साथ ही अंत हो गया था।

गांव के सब लोगों ने मिल कर बहुत सम्मान के साथ उस बूढ़ी औरत का दाहसंस्कार कर दिया था और उस दुख भरी सभा में गांव के सरपंच ने गांव के सब लोगों से कहा था

कि अगले सप्ताह मुझे आप सबको एक खास खबर बतानी है इसलिए कृपया गांव के सब सदस्य उस बैठक में उपस्थित रहें और बीच सरपंच साहब ने मन ही मन में यह निर्णय कर लिया था कि वो पोस्टमैन गौरीशंकर को सारे गांव के सामने सम्मानित करेंगे और उस बूढ़ी औरत की कहानी गांव के सब लोगों को सुनाएंगे क्योंकि अभी तक उस बूढ़ी औरत की कहानी को गांव के कुछ सम्मानित व्यक्ति ही जानते थे और उस समय सरपंच साहब की बुद्धिमान पत्नी ने उन्हें सुझाव दिया था कि पोस्टमैन गौरी शंकर के इस अच्छे कार्य की जानकारी गांव के हर आदमी को होनी चाहिए और पोस्टमैन गौरीशंकर को गांव की बैठक में बुला कर सबके सामने उन्हें सम्मानित किया जाना चाहिए ताकि गांव में ऐसे अच्छे कार्यों का सिलसिला सदा जारी रहे। उस पल सरपंच महोदय ने अपनी पत्नी की ओर प्रशंसा भरी निगाहों से देखा था और उन्होंने उसकी कही बात पर तुरंत निर्णय भी ले लिए था और उन्होंने उसी पल एक पत्र लिख कर सिक्योरिटी कंपनी के मालिक और वर्करों से निवेदन किया था कि वो सब गौरीशंकर को सम्मानित किए जाने वाले दिन गांव में उपस्थित रहें और वैसा ही हुआ।

वह दिन पोस्टमैन गौरीशंकर की ज़िंदगी का सबसे अच्छा दिन था जब उन्हें लगभग 3000 लोगों से भरी सभा में, गांव के सरपंच महोदय और कंपनी के मालिक द्वारा उन्हें एक सम्मानित पत्र दिया गया था और उस सम्मानित पत्र में उनके अच्छे कार्यों का उल्लेख किया गया था और सरपंच महोदय ने जब गांव के लोगों को उस बूढ़ी औरत की कहानी सुनाई तब गांव के कई बुजुर्गों की आँखें भर आई थी क्योंकि जवान बेटे के गुज़र जाने का दर्द सब समझते थे और सरपंच महोदय के मुंह से उस दुख भरी कहानी सुनने के बाद सब लोगों की आँखें नम हो गई थी और गांव के सब लोग अपनी जगह पर खड़े होकर पोस्टमैन गौरी शंकर जी के लिए तालियां बजाने लगे थे और उस दिन कंपनी के मालिक ने पोस्टमैन गौरीशंकर के उस अच्छे कार्य को देखते हुए वहां पर प्रेस रिपोर्ट भी बुलाए हुए थे जिन्होंने पोस्टमैन गौरीशंकर की तस्वीर सहित उनकी सारी कहानी अखबार में लिख डाली थी और अगले ही दिन पोस्टमैन गौरीशंकर अपने अच्छे कार्य की वजह से देश भर में प्रसिद्ध हो गए थे और उस खबर को पढ़ते ही देश भर में बड़ी कंपनियों ने वर्कर वेलफेयर एसोसिएशन का निर्माण कर डाला था और उस एसोसियेशन को बनाने में, मिल मालिकों का भी योगदान था। इन वेलफेयर एसोसिएशन के बनने की वजह से वर्करों के परिवार का भविष्य कुछ हद तक सुरक्षित हो गया था और

इस अच्छी शुरुआत का सारा श्रेय पोस्टमैन गौरीशंकर जी को जाता था। आज गांव में 25 वर्षों के बाद एक बार फिर गांव की भरी सभा में पोस्टमैन गौरीशंकर जी को याद किया जा रहा था और अब गांव की उस सभा में गांव के लगभग सब लोग उपस्थित थे। पोस्टमैन गौरीशंकर जी का वर्षों पहले देहांत हो चुका था पर उस सभा में उनका फौजी बेटा अपने सारे परिवार के साथ उपस्थित था और वो खुद को बहुत सम्मानित अनुभव का रहा था। उस मंच पर पोस्टमैन गौरीशंकर की एक बहुत बड़ी तस्वीर लगी हुई थी जिसमें वो और उनकी पत्नी मुस्कराते हुए दिखाई दे रहे थे और यह बात सच थी कि पोस्टमैन गौरीशंकर जैसे ईश्वरीय व्यक्तित्व को कोई भला कैसे भूल सकता था और एक बात निश्चित थी कि ईश्वर अच्छे कर्म करने वाले पर अपने दोनो हाथों से फूल बरसाते थे और इस सत्य को अब किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी।

समाप्त

कहानी 27: लकी

"लकी" की यह कहानी एक बहुत प्यारे नन्हें से कुत्ते की है और जब वो इस घर में आया था वो केवल महीने भर का ही था और उसे देख कर सबके चेहरे पर मुस्कान आ गई थी और यह देख कर घर के सब सदस्यों ने मिल कर उसका नाम "लकी" रख दिया था। लकी एक प्यारा सा नन्हां सा काले सफेद रंग का कुत्ता था और घर के सब बच्चे लकी को दिलोजान से प्यार करते थे और इसी प्यार मोहब्बत के बीच नन्हें से लकी की इस घर में नई ज़िन्दगी शुरू हुई थी। घर के सब सदस्यों के पास लकी के लिए समय ही समय था और सब लकी से बहुत प्यार करते थे। काला-सफ़ेद रंग का नन्हा लकी बहुत ही मासूम था और लकी के माथे पर कुछ भूरे रंग के बाल भी थे जिन्हें देख कर कुछ ऐसा लगता था जैसे लकी के माथे पर प्राकृतिक तौर पर तिलक लगा हुआ हो। घर के सब बच्चे उसको हर पल गोद में उठाएं घूमते थे और लकी सब बच्चों के संग खेलता था और नन्हां सा लकी अब तक परिवार में सब का दुलारा बन चुका था और इस परिवार में आकर लकी बहुत खुश था। वह एक बहुत बड़ा घर था और उस घर का आँगन भी बहुत सुंदर था। उस घर में लगभग 10 सदस्य थे जिनमें 4 छोटे बच्चे थे और सब बच्चों

की उम्र लगभग 12 से 15 वर्ष के भीतर ही थी। यह एक बड़े सांझे परिवार का किस्सा था और इस परिवार में सबसे वरिष्ठ दादा दादी थे जो अब बहुत वृद्ध हो चुके थे और वो अब ढलती उम्र के अपने अंतिम पड़ाव पर थे। पर उस घर के सब सदस्यों का आपस में बहुत प्रेम था और उसका असर बच्चों में भी दिखाई देता था। बड़ों के देखा देखी सब बच्चे भी एक दूसरे से बहुत प्रेम करते थे। इतने सदस्यों वाला यह साँझा परिवार आस पास के लोगों में एक आदर्श परिवार के रूप में प्रसिद्ध था। लकी की दिनचर्या सुबह बच्चों की गोद से शुरू होती थी और रात को उन बच्चों के बिस्तरे में समाप्त होती थी। लकी को बच्चों और बड़ों से इतना प्रेम और आत्मीयता का मिलना, लकी की तकदीर का बहुत खूबसूरत किस्सा था। जब भी कभी परिवार के सब सदस्य बाहर घूमने जाते थे तो लकी कार की सबसे आगे की सीट पर विराजमान रहता था और फिर सारे सफ़र में लकी एक बच्चे की गोद से दूसरे बच्चे की गोद में जाता रहता था और यह बात सब बच्चे घर से तय कर के ही निकलते थे कि लकी कितनी देर तक किस की गोद में रहेगा और यह लकी की ज़िन्दगी के सुनहरी दिन थे।

पर कहते हैं न कि ज़िन्दगी में सब दिन एक समान नहीं रहते और यह बात पत्थर पर पड़ी लकीर की भांति सच साबित हुई थी और उस परिवार में वह समय भी आया जब सब बच्चे पढ़ लिख कर जवान हुए और काम की खोज में विदेशों में निकल गये और जो उस घर की लड़कियाँ थी वो विवाह होने के बाद अपने अपने परिवार में रम गई और ये ही इस दुनिया की रीत भी थी और सिर्फ कुछ दिनों में ही उस चहकते हुए घर की परिस्थितियाँ बदल गई और बरसों के प्रेम से बना वह घर वक्त के साथ बिखर गया। घर के कुछ सदस्य विदेश चले गये थे और व्यावसायिक मजबूरियों के रहते वो वहीं पर जा कर बस गए थे और अब उस चहकते हुए घर की परिस्थिति ऐसी हो गई थी कि उस घर में केवल दो वृद्ध व्यक्ति रह गये थे और वह चहकता हुआ घर अब घोर सन्नाटे की आवाजों में खो चुका था और अब उस घर में इतना सन्नाटा हो चुका था कि सुई गिरने की आवाज़ भी अपनी प्रतिध्वनियाँ करने लगी थी और चिड़ियों की तरह से चहकने वाला वह घर अब एकदम सुनसान सा हो चुका था। अब तक लकी की उम्र भी ढल सी चुकी थी और अब लकी 12 वर्ष का हो चुका था और उस समय उस घर में सिर्फ दो बूढ़े सदस्य ही रह गये थे और कभी न मिटने वाला सन्नाटा रह गया था। उस घर के बूढ़े सदस्य भी अपनी ढलती उम्र के अंतिम पड़ाव पर थे और ज़िन्दगी की गहमागहमी और

भागादौड़ी से बहुत थक चुके थे और वो चहकता हुआ सदस्यों से भरा हुआ घर अब धीरे धीरे सुनसान सा दिखाई देने लगा था और उसे देख कर कुछ ऐसा लगने लगा था जैसे शायद उस घर की तकदीर का अब अंतिम पन्ना लिखा जाने वाला था और उस घर की खूबसूरत कहानी अब समाप्त होने की ओर बढ़ चुकी थी।

घर की ऐसी हालत देख कर अब लकी भी थोड़ा मायूस रहने लगा था और उसके चेहरे पर छाई मायूसी को देख कर कुछ ऐसा आभास होता था जैसे लकी घर के सब बच्चों को बहुत याद करता था और इसी वजह से अब लकी चुपचाप सा घर के एक अंधेरे कोने में पड़ा रहता था और वो चेहरे पर मायूसी के भाव लिए हुए घर के कमज़ोर और बूढ़े हो रहे सदस्यों को देखता रहता था जो दिन प्रति दिन बहुत तेज़ी से ढल रहे थे और यह देख कर लकी की आँखों में घोर निराशा के बादल छा चुके थे और लकी के पास इस प्रश्न का कोई हल नही था।

एक दिन उस घर पर ऐसा समय भी आया जब उस घर के वृद्ध सदस्य भी बीमार से रहने लगे थे और उनकी बीमारी की वजह उनकी ढलती उम्र थी। लकी सब घटनाओं को बहुत बारीकी से देख रहा था और इन अचानक घटी घटनाओं से लकी भीतर से बहुत मायूस और उदास सा हो चुका था पर वह बेज़ुबान जानवर चाह कर भी उन वृद्ध सदस्यों की कोई सहायता नही कर सकता था और वह उन दुखद घटनाओं मूक दर्शक बना देखता रहता था और उस घर के सदस्यों को बुढ़ापे की वजह से परेशान देख कर वो भीतर से बहुत दुखी था। अब लकी चुपचाप सा घर के एक अन्धेरे कोने में बैठा रहता था पर उसकी निगाहें उन बूढ़े सदस्यों पर लगी रहती थी और उन दुखी कर देने वाले लम्हों में वो जब भी गुज़रे समय के बारे में सोचता था उसे वह सुनहरी दिन याद आ जाते थे जब सब बच्चे स्कूल से लौटते ही लकी लकी चिल्लाते हुए भागते हुए घर में प्रवेश करते थे और उसे गोद में उठा लेते थे। उन खूबसूरत दिनो को याद करके लकी की आँखों में से आंसू बहने लगे थे और उस पल उसकी निगाहें घर के दरवाज़े पर लगी रहती थी और उसे देख कर ऐसा लगता था जैसे लकी को बच्चों के वापिस लौट आने की हल्की सी उम्मीद अभी भी बाकी थी। उन दुखी कर देने वाले लम्हों में उसे सब बच्चे बहुत याद आते थे और वह बेज़ुबान जानवर घट रही घटनाओं से बहुत मायूस हो चुका था और एक दिन वह दिन भी आया जब उस घर के वृद्ध सदस्यों ने भी एक एक करके दम तोड़ दिया और उस कठिन समय में लकी घर के एक कोने में बैठा हुआ था और उन दुखद

पलों का एक मात्र साक्षी बना सब कुछ देख रहा था। पर उस पर यह और भी दुख की बात थी कि किसी का भी उस बेज़ुबान जानवर की तरफ कोई ध्यान नही गया था। लकी ने देखा कि न जाने कितने ही आदमी उस घर में दाहसंस्कार की रीत पूरी करने के लिए आए थे और वो बिना उसकी ओर देखे लौट भी गए थे पर किसी भी व्यक्ति ने, उसकी ओर आंख उठा कर देखा तक नहीं था और यह वास्तव में लकी के लिए बहुत गहरे दुख की बात थी।

लकी घर के एक अंधेरे कोने में बैठा हुआ अपनी खराब तकदीर पर आंसू बहा रहा था और आज बरसों बाद वो अपनी ढलती उम्र में अनाथ हो चुका था।

अब उस घर में कोई भी उसे देखने वाला नहीं था, कोई उसे प्यार करने वाला नही था कोई उससे सहानुभूति रखने वाला नही था और यह वास्तव में उसके लिए बहुत दुख की बात थी। फिर उस घर में एक समय ऐसा भी आया जब उस घर का सारा सामान घर से बाहर निकाला जाने लगा था क्योंकि अब उस घर को किसी और ने खरीद लिया था और इसी वजह से वह घर अब खाली हो रहा था और उस घर का अंतिम सामान निकालने के बाद कुछ लोग लकी की ओर बढ़े थे और जब लकी ने उनको अपनी तरफ आते हुए देखा तो वो समझ गया था कि वह लोग उसे घर से बाहर निकालना चाह रहे हैं, लकी ने जब यह देखा तब लकी खुद ही उठ कर धीरे धीरे कदमों से उस घर से बाहर जाने लगा था और लकी घर के लोहे के गेट के बाहर जा कर बैठ गया था और वो बड़ी उम्मीद से घर की ओर देखने लगा था और उस पल उसकी आँखों से मायूसी साफ झलक रही थी। जो लोग घर को खाली करने के लिये आये थे, वो घर का सारा सामान बाहर निकालने के बाद उस घर को ताला लगा कर चले गये थे। पर उन में से किसी ने भी आँख उठा कर लकी की ओर नहीं देखा था।

उन दुखी कर देने लम्हों को महसूस करके लकी की आँखें नम हो चुकी थी और वो उस घर के सब सदस्यों को बहुत याद कर रहा था और घोर निराशा की वजह से उसने अपनी गर्दन एक और फेंक दी थी।

लकी के लिये यह बहुत दुखद पल थे और यह किसी को भी बहुत मायूस सा कर देने वाला दृश्य था जो किसी भी नाज़ुक हृदय वाले को रुला सकता था और यह बहुत

दुख की बात थी कि वो बेज़ुबान जानवर अपने दिल का हाल किसी को बयाँ नही कर सकता था।

लकी की साथ तकदीर ने यह विचित्र खेल खेला था, पर अब इस बात की किसी को क्या फिक्र थी सब अपनी अपनी ज़िन्दगी की कहानी लिखने में व्यस्त थे और यह एक दुखद सच था कि उस पल किसी के पास भी उस बेज़ुबान जानवर की ज़िन्दगी के बारे में सोचने के का समय नही था और उस दिन लकी बिना कुछ खाए पिए और हिले डुले बस एक ही स्थान पर चुपचाप मरणसन्न सा पड़ा रहा था।

पर कहते हैं न कि ईश्वर सब कुछ देख रहा होता है और वक्त आने पर वो हर कमज़ोर की, हर निर्बल की सहायता अवश्य करता है और यह बात सच साबित हुई थी और ईश्वर की असीस से लकी पर भी ईश्वर की कृपा हुई।

उस घर के आसपास रहने वाले लोगों में लकी से प्रेम करने वालों की कमीं नहीं थी और पड़ोस के कुछ बच्चे भी यह सब देख रहे थे जो लकी को बरसों से देखते आ रहे थे और वो सब बच्चे लकी को दिल से चाहते थे और लकी से बहुत प्रेम करते थे। जब उन बच्चों को पता चला कि लकी बेघर होकर उस घर के बाहर भूखा प्यासा बैठा हुआ है तब कुछ बच्चे अपने माता पिता से ज़िद करने लगे थे कि उन्हें लकी को अपने घर पर ले कर आना है, पर एक भी बच्चे के माता पिताजी इस बात को मानने के लिए राज़ी नहीं थे, तब सब बच्चों ने मिल कर एक निश्चय किया कि वो बारी बारी से घर के बाहर बैठे हुए लकी का ध्यान रखेंगे और उसकी देखभाल करते रहेंगे।

लकी जब भी उन सब बच्चों को अपने करीब आते देखता था तब उसकी पूँछ खुदबखुद हिलनी शुरू हो जाती थी, पर लकी की मायूसी इतनी गहरी थी कि वह अपनी जगह से टस से मस भी नहीं हुआ था। कोई बच्चा लकी को रात की ठंड को देख कर उस पर कम्बल ओढ़ जाता था, तो कोई उसे गर्म दूध और रोटी खिला जाता था।

पर लकी भीतर से बहुत उदास था और उसकी निगाहें घर के भीतर की सीढ़ियों पर लगी रहती थी और लकी को हर पल कुछ ऐसा लगता था कि कोई बच्चा अभी भागता हुआ सीढ़ियों से नीचे उतरकर आयेगा और उसे अपनी गोद में उठा कर वापिस घर में ले जायेगा। पर शायद अब लकी भी जान चुका था कि यह सोच सिर्फ उसकी कोरी कल्पना थी क्योंकि अब वास्तविकता लकी के सामने आ चुकी थी। अब लकी बुझी आँखों से

घर में बीते उन सुनहरे पलों को याद करता था जब सब बच्चों में एक होड़ सी लगी रहती थी कि लकी को कौन पहले गोद में उठाएगा और बेशक यह आए पल लकी की बचीखुची सी ज़िन्दगी में घोर निराशा के पल बन चुके थे, क्योंकि लकी अब खुद भी बहुत बूढ़ा हो चुका था और अब वो रात रात भर कुं कुं की आवाज़ करता हुआ बिलखता रहता था और कुछ मासूम से बच्चे, बंटी, नीना, मिनी, बबलू अपने अपने घर की खिड़कियों से रात भर लकी को देखते रहते थे और सब बच्चे लकी के बन आए इन हालतों से बहुत दुखी थे।

उन सब बच्चों के माता पिता घर में कुत्ता पालने के खिलाफ थे पर यह बात भी सच थी कि उन्होंने अपने बच्चों को कभी भी लकी की मदद करने के लिए नहीं रोका था। लकी को उस घर के बाहर बैठे आज 5 वां दिन था और अड़ोस पड़ोस के सब बच्चों ने मिल कर बारी बारी से लकी का बहुत ध्यान रखा था और सब बच्चे लकी से बहुत प्रेम करते थे।

एक दिन सुबह जब मिनी लकी के पास गर्म दूध और रोटी लेकर आई तब मिनी ने देखा कि लकी की पूँछ भी नहीं हिल रही थी और घोर निराशा की वजह से लकी ने अपना सिर एक और फैंक दिया था। बस फिर क्या था यह देख कर मिनी ने चीखना चिल्लाना शुरू कर दिया था और जल्दी ही सब बच्चे लकी के आसपास इकट्ठे हो गए थे और लकी की हालत देख कर उन्होंने जल्दी ही जानवरों के डॉक्टर को बुलवा लिया था।

ठीक समय पर लकी की देखभाल होने से और सब बच्चों के प्रेम की वजह से लकी की हालत में सुधार होने लगा था और इस बात का सारा श्रेय, अड़ोस पड़ोस के बच्चों को जाता था और कुछ समय बाद ही बच्चों के प्रेम से भरे कोमल स्पर्श से लकी की पूँछ एक बार फिर से हिलने लगी थी। लकी उन बच्चों को अपनी जीभ से चाट रहा था और उन बच्चों के प्रति अपना प्रेम का प्रदर्शन कर रहा था। यह देख कर सब बच्चे बहुत प्रसन्न हुए थे और उन बच्चों के माता पिता भी अपने बच्चों को खुश देख कर खुश थे।

एक दिन उसी बंद घर के बाहर एक ट्रक आ कर रुका था और उस ट्रक में से घर का सामान बाहर निकाला जाने लगा था और उस सामान को देख कर कुछ ऐसा लगता था कि जैसे उन लोगों ने उस घर को खरीद लिया था और वह घर अब एक बार फिर से

आबाद होने जा रहा था। सब बच्चे टकटकी लगाये एक दूसरे को देख रहे थे और सब बच्चे अपने दिल में बस एक ही बात सोच रहे थे कि किसी भी तरह से लकी को भी उसी घर में जगह मिल जाये जिस घर में लकी की तमाम उम्र गुज़री थी। अड़ोस पड़ोस के सब बच्चों ने देखा कि कुछ समय के बाद ही उस घर के बाहर एक कार आ कर रुकी थी, जो शायद उस घर के नए मालिक की थी और उस कार में से एक छोटी सी लड़की बाहर निकली थी जो लगभग 5 वर्ष के आसपास की लग रही थी और वो नन्हीं सी लड़की अपनी कार से उतर कर सीधा लकी की ओर ही बढ़ गई थी और उस छोटी सी लड़की ने बहुत प्रेम से लकी को अपनी गोद में उठा लिया था और उस छोटी लड़की को अपनी और आता देख कर लकी भी अपनी पूँछ हिलाने लगा था शायद लकी को उस पल वह दिन याद आ गये थे, जब उस घर के सब बच्चे उसे कुछ इस तरह ही अपनी गोद में ले कर घूमते थे। उस छोटी लड़की की गोद में लकी को कुछ ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे उसके जीवन में पुराने दिन फिर से वापिस लौट आये हों।

अड़ोस पड़ोस के सब बच्चे उस घर के पास ही खड़े इस दृश्य को बहुत ध्यान से देख रहे थे और इस दृश्य को देख कर, उन सब बच्चों की आँखों से आंसू बहने लगे थे और उस पल सब बच्चे मन ही मन में ईश्वर से प्रार्थना करने लगे थे कि कुछ ऐसा हो जाए कि लकी को उसका खोया हुआ घर वापिस मिल जाये और लगता था जैसे ईश्वर ने उन सब बच्चों की प्रार्थना स्वीकार कर ली थी। उन सब बच्चों ने देखा कि उस छोटी लड़की ने लकी को अपनी गोद में उठा लिया था और वो लकी को गोद में उठाये हुए ही उस घर में प्रवेश कर चुकी थी।

घर के एक बुज़ुर्ग ने जब लकी को उस छोटी लड़की की गोद में देखा तो मुस्कराते से वह वृद्ध बोले थे "ठीक है भाई अब यह कुत्ता भी हमारे साथ इसी घर में रहेगा" और वो बुज़ुर्ग बहुत प्यार से लकी को स्पर्श करने लगे थे।

ईश्वर की असीस से लकी की उस घर में फिर से वापिसी हो रही थी जिस घर से लकी की सुनहरी यादें जुड़ी हुई थी। आंखों को नम कर देने वाले उन लम्हों में लकी को सब बच्चों की बहुत याद आ रही थी जिन बच्चों के साथ उसका बचपन बीता था और इस अनूठे अनुभव से लकी उन सब बच्चों को अपने आसपास ही अनुभव करने लगा था और इस अनोखे प्रेम से लकी की आँखें भर आईं थी और वो कुं कुं की आवाज़ करके

और अपनी पूंछ हिला कर अपने प्रेम को प्रकट करने लगा था। अड़ोस पड़ोस के सब बच्चे उस पल गेट पर खड़े हो कर रो रहे थे और वो सब इस बात से बहुत खुश थे कि लकी को उसका घर फिर से वापिस मिल गया था।

तब उस घर के नये मालिक ने उस छोटी लड़की से प्यार से यह पूछा था, इस कुत्ते का नाम क्या रखोगी, तभी गेट के पास खड़े सारे बच्चे भागते हुए उस घर में आए थे और उन सब बच्चों ने लगभग एक ही सुर में कहा था "अंकल इसका नाम लकी है और यह इसी घर में रहता था" और यह कहते समय उन सब बच्चों की आँखों में से आंसू बहने लगे थे जो उन मासूम बच्चों के दिल की सारी कहानी बयां कर रहे थे। वह बुज़ुर्गवार बच्चों के उतरे हुए चेहरे देख कर अब तक सारी कहानी समझ चुके थे और उन्होंने सब बच्चों के सामने घोषणा की थी कि अब लकी उनके परिवार के साथ ही रहेगा और उसका नाम हम लकी ही रखेंगे। इस बीच लकी उस छोटी लड़की की गोद से उतरकर धीरे धीरे चलता हुआ उन चारों बच्चों के पास आया था और अपनी पूँछ हिला कर उन सब बच्चों का अभिनन्दन करने लगा था और आंखों को नम कर देने वाले उन लम्हों में लकी सब बच्चों से अपनी ख़ुशी का इज़हार कर रहा था। यह देख कर सब बच्चों की आँखों में से ख़ुशी के आंसू बहने लगे थे और अब सब बच्चे लकी को सुरक्षित देख कर अपने अपने घर लौटने लगे थे। अब सब बच्चे इस बात को जान चुके थे कि लकी को लाड प्यार करने वाली एक छोटी बच्ची मिल गई थी और अब लकी को अपना घर भी वापिस मिल चुका था, जिस घर में उसने अपनी तमाम उम्र गुजारी थी और अच्छे लोगों के बीच वापिस आ जाने से लकी अब एकदम सुरक्षित हो चुका था।

विदेश में रह रहे बच्चे लकी से बेहद प्रेम करते थे इस बात में कोई शक नही था, पर उन सब बच्चों की व्यावसायिक मजबूरियां थी और वो अपनी नौकरी छोड़ कर हिन्दुस्तान वापिस नही आ सकते थे पर उन्हें लकी के बारे में अड़ोस पड़ोस के सब बच्चों से खबर मिलती रहती थी और एक दिन उसी घर में, विदेश से एक पत्र आया और यह पत्र उस घर के सबसे छोटे सदस्य उस छोटी सी बच्ची के नाम पर था, जिसमें विदेश में रह रहे बच्चों ने उस छोटी लड़की का धन्यवाद किया था और उन बच्चों ने उस छोटी सी प्यारी सी बच्ची को बहुत बड़ी धन राशि का एक चैक भी भेजा था।

लकी को मिलने के लिये अड़ोस पड़ोस के सब बच्चे हर रोज़ आते थे और वो लकी के साथ कुछ समय खेलते थे और अब तक वह छोटी लड़की भी सब बच्चों की बहुत अच्छी दोस्त बन चुकी थी। उस घर में अड़ोस पड़ोस के बच्चों के आने से वह घर एक बार फिर से चहकने लगा था और इस वजह से लकी की ज़िन्दगी के अंतिम पल बहुत सुखद थे। जब लकी ने अपने अंतिम समय में दम तोड़ा तब अड़ोस पड़ोस के सब बच्चे उसके आस पास ही थे और वो सब बच्चे लकी को बहुत प्रेम से देख रहे थे और अपनी जिंदगी के अंतिम लम्हों में लकी ने उन सब बच्चों की आँखों में देखा था और उस पल लकी की आँखों में से आंसू बह रहे थे ओर अचानक ही लकी ने अपनी गर्दन एक और फेंक दी थी और यहाँ पर लकी की सुखद जीवन यात्रा का अंत हो चुका था।

सब बच्चे रोते रोते अपने घरों को वापिस लौट गये थे और सब बच्चों के दिलों में लकी की तस्वीर हमेशा हमेशा के लिए बस चुकी थी। यह कहानी एक सच्ची घटना पर आधारित है। लकी अपना नाम और रूप बदल कर हर घर में मौजूद है और वो सदा रहेगा। आप सब भी अपने पालतू जानवरों से सदा प्रेम करें यह बेज़ुबान बोल नही सकते पर यह बात सच है कि जितना प्रेम आप इनसे करते हैं उससे कहीं अधिक प्रेम वह आप से करते हैं।

समाप्त

कहानी 28: यह ईश्वर का नियम था 'एक हाथ दे एक हाथ ले'

यह किस्सा 1975 के आसपास का था और उस समय गांव और शहरों में स्कूल की शिक्षा सिर्फ 11वीं कक्षा तक ही होती थी और उससे आगे पढ़ाई करने के लिए सब विद्यार्थियो को शिक्षा लेने के लिए शहर जाना पड़ता था।

शिवराम ने गांव में 11वीं कक्षा तक की शिक्षा ली थी और घर में गरीबी की वजह से उसने पढ़ाई छोड़ दी थी और वो गांव में ही कोई काम खोजने लगा था। पर गांव में खेत पर मजदूर बनने या बनिए की दुकान पर नौकरी करने के सिवा शिवराम को कोई और काम दिखाई नहीं दिया था और कुछ दिन गांव में बेरोजगारी के दिन काटने के बाद उसने शहर जाने का फैसला कर लिया था और अपने बूढ़े माता पिता को समझाया था कि वो जल्दी ही वापिस लौट कर आएगा और उन्हें जरूरत के मुताबिक पैसे भी दे जाया करेगा। शिवराम के पिता एक जमींदार के पास काम करते थे और उन्हें गुजारे लायक पैसे मिल जाते थे पर सच बात तो यह थी कि अब बुढ़ापे की वजह से अब उनसे अधिक काम नही होता था और शिवराम जानता था कि अब उसका घर की जिम्मेंदारी उठाने

का समय आ चुका था। शहर का रुख करने से पहले शिवराम ने अपने कुछ दोस्तो से कहा था कि वो उसके माता पिता का ध्यान रखें और वो शहर में नौकरी मिलते ही गांव वापिस आएगा और सबसे मिलेगा। पर शिवराम जानता था कि उसका शहर का सफर इतना आसान नहीं होने वाला था क्योंकि शहर में कोई भी उसकी जान पहचान वाला नहीं था।

शिवराम बहुत दयालु लड़का था और वो बहुत जल्दी ही अपने अच्छे स्वभाव की वजह से किसी का भी दिल जीत लेता था और शहर पहुंचने पर भी उसके साथ कुछ ऐसा ही हुआ था। शहर के बीच बाज़ार में एक बुजुर्ग दंपति बहुत भारी थैलों का बोझ उठाए पैदल चले जा रहे थे कि अचानक बूढ़े व्यक्ति को धूप की वजह से या शायद शरीर में कमज़ोरी की वजह से थोड़े चक्कर आ गए थे और जब वो जमीन पर गिरने को ही थे तो शिवराम ने अपना सामान वहीं सड़क पर रख कर भाग कर उन्हें अपनी बाहों में थाम लिया था और उनसे बहुत सम्मान से पूछा था "क्या हुआ साहब आप ठीक तो हैं न" इस बीच उसकी बूढ़ी पत्नी बहुत घबरा गई थी और घबराहट की वजह से वो रोने लगी थी। पर शिवराम ने उनसे बहुत प्रेम और सम्मान से कहा था "इन्हें कुछ नही हुआ मां जी ये एकदम ठीक हैं शायद इन्हें धूप की वजह से चक्कर आ गए होंगे आप परेशान मत होइए" और यह कह कर उसने अपने आसपास देखा था और तब तक उसकी मदद करने के लिए कुछ और लोग भी आ गए थे और उन्होंने उस बूढ़े व्यक्ति को एक अच्छी जगह देख कर कुर्सी पर बिठा दिया था और पीने के लिए पानी भी दिया था। अब तक वह बूढ़ा व्यक्ति संभाल चुका था और उसके ईश्वरीय चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ चुकी थी और उन्होंने धीमी सी आवाज़ से शिवराम को शुक्रिया अदा किया था। शिवराम अपने सामान के साथ अभी भी वहीं खड़ा हुआ था। तब तक पास के एक दुकानदार ने शिवराम की ओर देख कर कहा था "भाई तुम इनका सामान इनके घर तक छोड़ आओ, इनका घर पास में ही है" तब शिवराम ने अपनी आदत के मुताबिक उस दुकानदार से कहा था "हां ज़रूर यह तो मेरा फर्ज़ है" और वो उन बूढ़े दंपति का सारा बोझ अपने कंधों पर उठाए उनके साथ साथ चलने लगा था पर यह बात सच थी कि उस समय भी वो अपने रहने की व्यवस्था और नौकरी के बारे में ही सोच रहा था।

कहते हैं कि ईश्वर का एक नियम था कि वो एक हाथ से लेता था और एक हाथ से देता था पर किसी को भी ईश्वर की इस रीत की कभी समझ नहीं आई थी। जब शिवराम

शहर में उस बुजुर्ग दंपति की सहायता कर रहा था ठीक उसी समय पर शिवराम का एक मित्र शिवराम के माता पिता के राशन से भरे थैले उठा कर उन्हें उनके घर पर छोड़ कर आया था। शिवराम ने जिस बुजुर्ग दंपति की सहायता की थी वो दोनो रिटायर्ड प्रोफेसर थे। उस बूढ़े का नाम सत्यजीत मुखर्जी था और उनकी पत्नी का नाम दमयंती था और वो दोनो इस दुनिया में बिल्कुल अकेले थे और उनकी कोई औलाद नहीं थी। जब शिवराम उनका सामान रख कर वापिस लौटने लगा था। तब उस पल दमयंती ने बहुत प्रेम से उससे कहा था "बेटा ठहरो मै तुम्हारे लिए चाय बना कर लाती हूं" दमयंती के प्रेम से आग्रह करने से शिवराम उनके घर के बरामदे में वहीं नीचे सीढ़ियों पर बैठ गया था पर उस पल भी वो अपने रहने की व्यवस्था और नौकरी के बारे में ही सोच रहा था। थोड़ी सी बातचीत करने के बाद प्रोफेसर और उनकी पत्नी को शिवराम के बारे में सब कुछ पता चल गया था और उस पल कुछ सोचते से दोनो पति पत्नी रसोई घर में गए थे और दमयंती ने सत्यजीत से बहुत प्रेम से कहा था "लड़का संस्कारी लगता है क्यों न हम इसे अपने घर पर माली के काम के लिए रख लें" सत्यजीत ने अपनी पत्नी की ओर मुस्करा कर देखा था और उससे कहा "तुम मेरे दिल की सब बातें कैसे जान लेती हो" तब दमयंती ने हंसते हुए अपने पति से कहा था "तुम्हारे साथ रहते हुए मुझे 45 वर्ष जो बीत गए है इसलिए तुम कब क्या सोच रहे होते हो मुझे इस सब कुछ पता चल जाता है" और प्रोफेसर साहब और उनकी पत्नी ने शिवराम से अपने दिल की बात कह दी थी और शिवराम ने दमयंती की बात को खुशी खुशी स्वीकार कर लिया था और उस पल वो अपने हाथ जोड़ कर ईश्वर को धन्यवाद कर रहा था और उसे इस बात का यकीन नही हो रहा था कि उसकी रोज़ी रोटी और रहने की समस्या का समाधान इतनी जल्दी हो जायेगा। सत्यजीत ने अपने घर के बाहर बनी सीढ़ियों के नीचे एक छोटी सी जगह शिवराम को रहने के लिए दे दी थी। वह जगह बहुत छोटी सी थी पर शिवराम ने हाथ जोड़ कर वह जगह स्वीकार कर ली थी और अब वो सुबह 6 बजे ही उठ कर सारे बगीचे की साफ सफाई करने के बाद सब पौधों को पानी भी दे देता था और उसे इतनी तीव्रता से काम करते हुए देख कर सत्यजीत और दमयंती बहुत हैरान होते थे। शिवराम के पास खाना बनाने के लिए फिलहाल कोई साधन नहीं था इसलिए दमयंती उसे खाना परोस देती थी और शिवराम प्रेम से दिए हुए उस भोजन को बहुत आदर के साथ स्वीकार कर लेता था। पड़ोस के एक दुकानदार ने शिवराम को मेहनती ईमानदारी लड़का जानकर उसकी नौकरी एक बिजली

के दुकानदार के पास लगवा दी थी और शिवराम ने अपनी लगन से बहुत जल्दी ही बिजली का सारा काम सीख लिया था और अब अड़ोस पड़ोस में अपने अच्छे व्यवहार की वजह से वो बहुत जल्दी ही लोकप्रिय भी हो गया था। शिवराम बूढ़े और कमज़ोर लोगों का काम सबसे पहले करता था और अगर किसी वजह से उनके पास पैसे थोड़े कम भी होते थे तो वो हंसते हुए वह पैसे भी स्वीकार कर लेता था। एक दो वर्षों की कड़ी मेहनत से और अपने काम में माहिर हो जाने की वजह से एक छोटे बिल्डर ने शिवराम को कुछ नए फ्लैट्स की बिजली की फिटिंग का सारा काम सौंप दिया था और शिवराम ने वो काम दिन रात मेहनत करके वक्त से बहुत पहले ही समाप्त कर दिया था और जब पेमेंट का समय आया तब शिवराम ने उस बिल्डर से कहा था “जो आप ठीक समझें आप मुझे दे दें और मैं आपका शुक्रगुजार हूं कि आपने मुझ पर भरोसा करके इतना बड़ा काम मुझे दिया था” शिवराम की मीठी और सरल बातें सुनकर वह बिल्डर बहुत प्रभावित हो गया था और उसने शिवराम को उसी समय एक नई आफर भी दे दी थी कि अगर शिवराम चाहे तो वो उन्हें बिजली की फिटिंग का सामान भी सप्लाई कर सकता है पर शिवराम ने उस बिल्डर की उस पेशकश को बहुत विनम्रता से ठुकरा दिया था और उस बिल्डर से बहुत भावुक होकर कहा था “साहब मेरे खराब वक्त में उस दुकानदार ने मेरी बहुत मदद की थी और अब आपके साथ मेरा जो भी कारोबार होगा वो उस दुकानदार को बीच में रख कर ही होगा” फिर कुछ रुककर शिवराम ने उस बिल्डर से कहा था “साहब उस दुकानदार ने मेरे बुरे वक्त में मेरी बहुत मदद की थी और उसे मैं कैसे भूल सकता हूं” वह बिल्डर शिवराम की बातें सुनकर बहुत प्रभावित हुआ था और उसने शिवराम और उस दुकानदार के साथ अगले 5 वर्षों तक का बिजली से संबंधित सारा कारोबार उन्हें सौंप दिया था। यहां से शिवराम की तरक्की की शुरुआत हो चुकी थी और उसके पास थोड़ी जमा पूंजी बनने लगी थी। शिवराम प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती को दिन भर की सारी बातें बताता था और अब उन्हें पता था कि शिवराम धीरे धीरे तरक्की की राह पर चल पड़ा है और यह जानकार उन्होंने शिवराम से कहा था “शिवराम अगर तुम चाहो तो तुम हमारा माली का काम छोड़ सकते हो” यह सुनकर शिवराम ने बहुत भावुक होकर प्रोफेसर सत्यजीत से कहा था “साहब आपने मुझे मुश्किल समय में अपने घर में सहारा दिया था फिर मैं आपका काम कैसे छोड़ सकता हूं और आप दोनो को मैं अपने माता पिता की तरह मानता हूं” और यह कहते समय शिवराम बहुत भावुक हो

गया था। यह देख कर प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती माहौल को सामान्य करने की कोशिश करने लगे थे और उस पल सत्यजीत और दमयंती की आंखें एक दूसरे से मिली थी और उन्होंने इशारों ही इशारों में एक दूसरे को समझा दिया था कि अब वो शिवराम से ऐसी कोई भी बात कभी नही करेंगे जिसे सुनकर उसे दुख हो। वो दोनो इस बात को पहले से ही जानते थे कि शिवराम उनसे बहुत प्रेम करता है और वो उन्हें छोड़ कर कभी भी नही जायेगा। इस बीच दमयंती रसोई घर में चाय बनाने चली गई थी और सत्यजीत प्यार से शिवराम का कंधा थपथपा रहे थे और उसे सामान्य करने की कोशिश कर रहे थे और तभी दमयंती चाय के कप लेकर वापिस लौट आई थी और शिवराम को बरामदे की सीढी पर बैठा हुआ देख कर प्रोफेसर सत्यजीत ने शिवराम से बहुत स्नेह से कहा था "शिवराम तुम कुर्सी के ऊपर बैठ जाओ" पर शिवराम ने कुर्सी पर बैठने के लिए इंकार कर दिया था और उसने बहुत आदर के साथ प्रोफेसर साहब से कहा था "मैं आपके सामने कुर्सी पर कैसे बैठ सकता हूं" और यह कह कर वो मुस्कराने लगा था। प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती शिवराम की बात सुनकर मुस्कराने लगे थे और उनके मुंह से निकल ही गया था "शिवराम तुम किस युग के आदमी हो, इस युग के तो नही लगते" और यह कर कर सत्यजीत और दमयंती दोनो मुस्कराने लगे थे और उनको मुस्कराता हुआ देख कर शिवराम थोड़ा झेंप सा गया था। शिवराम जब भी अपने कार्य समाप्त करके घर वापिस जल्दी लौट आता था तब वो सत्यजीत और दमयंती को पास के मंदिर में ले जाता था और उस पल जैसे समय को पंख लग गए थे। इस तरह शिवराम दिन प्रतिदिन अपने अच्छे स्वभाव की वजह से तरक्की करता चला गया था और वो हर महीने के अंत में अपने गांव भी जाता था और अब उसने अपने माता पिता के लिए गांव में एक पक्का मकान भी बना लिया था और वो अपने माता पिता के सुख सुविधा का पूरा ध्यान रखता था। शिवराम जब भी गांव जाता था अपने सब दोस्तों के लिए कीमती तोहफे लेकर जाना कभी नही भूलता था और शिवराम के बचपन के सब मित्र जानते थे कि शिवराम बहुत ही सरल स्वभाव का इंसान था और उसमें लेशमात्र भी लालच नहीं था और यह उनके प्रति शिवराम का निस्वार्थ प्रेम था। इसी तरह सुख के साथ कुछ वर्ष और बीत गए थे। एक दिन प्रोफेसर सत्यजीत ने अपनी पत्नी से शिवराम के विवाह योग्य एक बेसहारा लड़की का ज़िक्र किया था और उस लड़की का नाम राधा था और उसने BA तक की शिक्षा ली हुई थी और दुर्भाग्यवश हाल ही में उसके माता पिता का एक दुर्घटना

में देहांत हो गया था। प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती उस लड़की को बहुत सालों से जानते थे और उन्हें लगता था कि राधा हर तरह से शिवराम के लिए एक योग्य लड़की थी। शिवराम ने प्रोफेसर सत्यजीत का मान रखते हुए उस रिश्ते के लिए हां कर दी थी और कुछ समय के बाद ही गांव में शिवराम का बहुत सादगी से विवाह हुआ था और उस विवाह में शिवराम का मालिक, वो दुकानदार और बिल्डर भी उपस्थित थे जिसने शिवराम को बहुत सा काम दिया था। शिवराम और राधा के विवाह में प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती ने लड़की के माता पिता बन कर उसका कन्यादान किया था। शिवराम के माता पिता प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती से मिलकर बहुत खुश हुए थे और उन्होंने प्रोफेसर साहब के बारे में शिवराम से बहुत कुछ सुन रखा था और उन्होंने प्रोफेसर साहब और उनकी पत्नी को उससे कहीं अधिक बढ़ कर पाया था और उन्होंने हाथ जोड़ कर प्रोफेसर साहब से कहा था "मेरे बेटे ने आपके बारे में मुझे सब कुछ बताया था और मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूं कि आपने मेरे बेटे को अजनबी जानते हुए भी अपने घर में रहने की जगह दी थी" और यह कहते समय उनकी आंखें थोड़ी नम हो गई थी। शिवराम के पिता की भावुक कर देने वाली बातें सुनकर प्रोफेसर सत्यजीत ने बहुत प्रेम से उन्हें अपने गले से लगा लिया था और उनसे कहा था "आपका बेटा एक हीरा है और वो जहां भी जाता है अपनी नेकनीयत की वजह से गहरी छाप छोड़कर आता है और हम बहुत तकदीर वाले है कि हमने शिवराम को तरक्की की राह पर चलते हुए देखा है, आपका बेटा बहुत अच्छा इंसान है और वो जहां भी जाता है सबका दिल जीत लेता था" प्रोफेसर साहब की कही बातें शिवराम के सब मित्र और शिवराम की नई नवेली दुल्हन राधा भी सुन रही थी और वो प्रोफेसर साहब से शिवराम की तारीफ सुनकर धीरे धीरे मुस्करा रही थी और वो खुद को बहुत भाग्यवान मान रही थी कि उसे इतना होनहार पति मिला था और उस पल उस विवाह में उपस्थित सब मेहमानों के चेहरे पर शिवराम के लिए प्रशंसा के भाव दिखाई दे रहे थे।

शहर वापिस आने पर प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती ने एक दूसरे से बातचीत करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला था कि अब शिवराम और राधा को एक बड़े कमरे की ज़रूरत पड़ेगी और वो इस बात को जानते थे कि शिवराम उन्हें छोड़ कर कहीं पर भी नहीं जायेगा और यही सब सोच कर उन्होंने अपने घर के आंगन में एक आरामदायक कमरा बनवा लिया था और वो दोनो अपने इस फैसले से बहुत खुश दिखाई दे रहे थे।

अब शिवराम अपनी पत्नी राधा के साथ उस कमरे में रहने लगा था और वो दोनो पति पत्नी प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती का बहुत ध्यान रखते थे और अब तो राधा भी रसोई घर में दमयंती की मदद करने लगी थी जिससे दमयंती को दो घड़ी का आराम नसीब हो जाता था और प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती शिवराम और राधा को मन ही मन में बहुत असीसें देते थे।

पर कहते हैं कि सब दिन एक जैसे नहीं रहते और एक दिन दमयंती को बहुत तेज़ी बुखार हुआ और सब लोग उन्हें पास के एक अस्पताल में ले गए और दमयंती की जांच पड़ताल करने पर डॉक्टर ने उन्हें बताया कि दमयंती को कैंसर हैं और अब वो कैंसर तीसरी स्टेज पर है। इस खबर को सुनकर प्रोफेसर सत्यजीत एक दम टूट कर बिखर गए थे और उनके सोचने समझने की शक्ति जवाब दे गई थी और उस मुश्किल घड़ी में प्रोफेसर साहब को शिवराम और राधा ने संभाला था और दमयंती ने दम तोड़ने से पहले शिवराम से यह वादा लिया था कि वो प्रोफेसर साहब का हमेशा ध्यान रखेगा और यह कहते ही दमयंती के जीवन की कहानी वहीं समाप्त हो गई थी। उन दुख भरी घड़ियों में शिवराम अपने सारे काम छोड़ कर हर पल प्रोफेसर साहब के साथ रहता था पर कुछ समय बाद दमयंती को याद करते हुए प्रोफेसर सत्यजीत ने भी अपने प्राण त्याग दिए थे। उन दुखद घड़ियों में जब उनका अंतिम संस्कार करने के बाद शिवराम और राधा घर पर वापिस लौटे ही थे कि एक वकील ने वसीयत के मुताबिक 1 लाख रुपए का एक चैक शिवराम के हाथों में थमा दिया था और उस चैक के साथ प्रोफेसर सत्यजीत का एक पत्र भी था, जिसमें उन्होंने शिवराम की सेवाओं के लिए उसे धन्यवाद किया था और उस पत्र में लिखा था यह धनराशि मैं आपके होने वाले बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए दे रहूं और कृपया आप इसे मेरा मान रखते हुए स्वीकार कर लेना। उस पल शिवराम की आंखों से आंसू बहने लगे थे और उसे 10 वर्ष पुराना वह समय याद आ गया था जब उसकी प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती से बीच बाज़ार में पहली मुलाकात हुई थी और उस पल उन लम्हों को याद करके शिवराम की आंखों से आंसू बहने लगे थे और उसको रोते हुए देख कर अब राधा भी रोने लगी थी और उसी पल शिवराम को कुछ ऐसा अनुभव हुआ जैसे प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती उसे मुस्कराते हुए कह रहे हों "तुम दिल छोटा मत करो शिवराम यह इस दुनिया की रीत है कि एक दिन सबको इस दुनिया से जाना ही पड़ता है तुम सदा सुखी रहो" और इतना कह कर दमयंती और प्रोफेसर सत्यजीत

मुस्कराते हुए शिवराम की नज़रों के सामने से अदृश्य हो गए थे। शिवराम ने घर के भीतर से प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती की एक तस्वीर ले ली थी और अपने कमरे से अपना सारा सामान बांध लिया था और घर को ताला लगाने के बाद शिवराम ने चाबी वकील साहब के हवाले कर दी थी और अंतिम बार भरी आंखों से उस घर को देखा था और फिर वो धीरे धीरे कदमों से चलते हुए अपने गांव वापिस लौट गए थे। शिवराम को ऐसा लगा था कि अब उसका शहर में रुकना मुमकिन नहीं था।

अभी शिवराम को शहर से गांव में आए हुए कुछ ही दिन बीते थे कि उसने देखा कि एक कार उसके घर के दरवाज़े पर आकर रुकी थी और उसमें से उसका मालिक और बिल्डर बाहर निकल रहे थे और यह वही बिल्डर था जिसने उसे बहुत सा काम दिया था और उन्होंने शिवराम के साथ बातचीत करने के बाद गांव में ही एक नया व्यापार खोलने का फैसला कर लिया था। जिस फैसले में यह तय हुआ था कि वो गांव में बिल्डिंग मैटीरियल की एक बड़ी दुकान खोलेंगे और उस दुकान के दूसरे हिस्से में वो खेती बाड़ी के उपयोग में आने वाले उपकरणों को बेचेंगे और उस उसके साथ साथ वो बीज और खादों का कारोबार भी करेंगे और इस कारोबार में शिवराम का एक भी पैसा नही लगने वाला था और इस नए कारोबार में सारा पैसा वो बिल्डर और शिवराम का मालिक लगाने वाले थे और यह उनकी तरफ से शिवराम को उसकी नेकनामियों का इनाम था और इस कारोबार में 50 % की कमाई का हिस्सेदार शिवराम ने होना था और बाकी 50 % के नफे में वह दोनो बराबर के हिस्सेदार बनने वाले थे। शिवराम के अच्छे व्यवहार से वह व्यापार जल्दी ही चल निकला था और शिवराम ने खेतीबाड़ी की दुकान में अपने पिता की जानकारी की उपयोगिता को समझते हुए उन्हें अपने साथ कारोबार में जोड़ लिया था और शिवराम ने अपने उन दोस्तों को भी काम पर लगा लिया था जो दोस्त उसके साथ स्कूल में पढ़ते थे पर उस समय वो कुछ व्यक्तिगत कारणों की वजह से उसके साथ शहर नही जा पाए थे पर अब शिवराम के वह दोनो दोस्त शिवराम के गांव वापिस लौट आने से बहुत खुश थे। यह शिवराम के वही दोस्त थे जिन्होंने शिवराम की गैरहाजिरी में शिवराम के माता पिता का बहुत ध्यान रखा था। जल्दी ही शिवराम की दोनो दुकानें आसपास के 15 से 20 गांव में प्रसिद्ध हो गई थी और शिवराम अब आसपास के गांव के लोगों में "बिजली वाले शिवराम" के नाम से प्रसिद्ध हो गया था। कुछ वर्षों के बाद शिवराम के पुत्र पढ़ लिख कर इंजीनियर बन गए थे और शिवराम ने प्रोफेसर साहब का

सम्मान रखते हुए उनके दिए पैसों का उपयोग अपने बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए किया था और आज शिवराम और राधा दोनो हाथ जोड़ कर प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती की तस्वीर के सामने खड़े हुए थे और नम आंखों से उन्हें याद कर रहे थे और उन्होंने अपने हाथ जोड़ कर उन्हें प्रणाम किया था और उस पल उन दोनो को कुछ ऐसा अनुभव हुआ था जैसे प्रोफेसर सत्यजीत और दमयंती उनसे बहुत खुश थे और उन्होंने शिवराम और राधा को सदा सुखी रहने का आशीर्वाद दिया था।

समाप्त

कहानी 29: जननी जन्मभूमि

अमरीका के एक अस्पताल में 62 वर्षीय कम्प्यूटर इंजीनियर अजय श्रीवास्तव बीमार पड़े हुए थे और गई रात को उन्हें हार्ट अटैक आया था और उनकी 58 वर्षीय पत्नी नैना उन्हें अपनी कार में बिठा कर बहुत जल्दी से निकट के अस्पताल ले आई थी जहां पर उन्हें ICU के वार्ड में दाखिल कर लिया गया था और अस्पताल हार्ट स्पेशलिस्ट डॉक्टर अजय का इलाज करने में जुट गए थे और नैना अस्पताल के ICU के उस कमरे के बाहर बेचैनी से चक्कर लगा रही थी और वो अस्पताल के कमरे की खिड़की से उस कमरे के भीतर देख रही थी जहां पर कुछ डॉक्टर और नर्सें अजय की इलाज कर रहे थे और लगभग तीन घंटों के बाद डॉक्टरों की एक टीम ने नैना को यह खुशखबरी दी थी कि अजय अब खतरे से बाहर है और वो अस्पताल के एक कमरे में आराम कर रहा है। नैना अस्पताल के कमरे के बाहर खड़ी हुई बहुत देर से इस बात का इंतजार कर रही थी और सबसे पहले उसने सब डॉक्टरों का धन्यवाद किया था और फिर वो डॉक्टरों की अनुमति लेकर कमरे के भीतर आ गई थी और उसने देखा कि अजय को अभी भी

ऑक्सीजन लगी हुई थी और उस पल वो होश में नहीं था। पर अब नैना को इस बात की तसल्ली हो गई थी कि उसका पति अब खतरे से बाहर था। नैना अजय के बेड के पास पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गई थी और उसकी निगाहें अजय के चेहरे की ओर देख रही थी और उस पल अजय का एक हाथ उसके हाथों में था और अधिक भावुक हो जाने की वजह से नैना की आंखों से आंसू बहने लगे थे। इस बीच अजय और नैना का इकलौता पुत्र आलोक अपनी पत्नी के साथ अस्पताल के बार बार चक्कर लगा रहा था और वो अपने पिता की सेहत को लेकर बहुत चिंतित था। आलोक अपने माता पिता का आज्ञाकारी पुत्र था और उसके माता पिता को उससे कभी भी कोई शिकवा शिकायत नहीं हुई थी और इतने वर्ष अमरीका में रहने के बाद भी आलोक को विदेश का कोई रंग नहीं चढ़ा था और बेशक यह अजय नैना और उसके दादा दादी की अच्छी परवरिश का नतीजा था।

अगले दिन सुबह अजय को होश आ गया था और अब डॉक्टर ने अजय का ऑक्सीजन मास्क भी उतार दिया था और डॉक्टरों की अनुमति लेकर अब नैना अजय को अपने हाथों से चाय पिला रही थी और वास्तव में उन दोनो के लिए वह बहुत सुकून भरे लम्हे थे। सुबह के उन लम्हों में अस्पताल के कमरे में गुनगुनी सी धूप भीतर तक आ रही थी और अब अजय की तबियत भी कुछ ठीक लग रही थी और उस पल अजय कमरे की खिड़की से बाहर देख रहा था और उस पल अजय मन ही मन में न जाने क्या सोच रहा था। अजय को सामान्य हालत में देख कर नैना के चेहरे पर सुकून भरी मुस्कान आ चुकी थी।

पर जब अजय अस्पताल में बेहोशी की हालत में था तब अजय अतीत की बहुत लम्बी यात्रा करके वापिस लौटा था और उन बेचैनी भरे लम्हों में अजय ने तीस वर्ष पीछे के उन दृश्यों को देखा था जब आज से 30 पहले उसके माता पिता पहली बार USA आये थे और उसके लिए जन्मदिन का एक नायाब तोहफा लेकर आए थे और बेहोशी के उन लम्हों में अजय उन लम्हों को याद करके थोड़ा बैचेन हो उठा था और उन भावुक कर देने वाले लम्हों से रूबरू होकर उसकी आंखों से आंसू बहने लगे थे और यह देख कर नैना थोड़ा घबरा गई थी और उसने जल्दी से डॉक्टर को बुलवा लिया था और डॉक्टर ने अजय की अच्छी तरह से जांच पड़ताल करने के बाद नैना से कहा था "डरने की कोई बात नहीं है" फिर कुछ पल सोच कर डॉक्टर ने नैना से कहा था "शायद इस समय ये

कोई सपना देख रहे हैं या हो सकता है कि इन्हें कोई बरसों पहले के पल याद आ रहें हों और इसमें घबराने वाली कोई भी बात नहीं हार्ट के मरीजों के साथ अक्सर ऐसा होता रहता है पर अब ये पूरी तरह से ठीक हो चुके हैं और आप इन्हें एक से दो दिन में अपने घर पर भी लेकर जा सकती हैं" डॉक्टर ने यह बात अजय का पूरा चेकअप करने के बाद कही थी और नैना को डॉक्टर साहब के कहे इन शब्दों से थोड़ी तसल्ली मिली थी पर फिर भी नैना यह सोच कर थोड़ी परेशान ज़रूर हो गई थी कि बीमारी की इस हालत में उसका पति आखिर ऐसे कौन से विचारों में खोया हुआ था जिससे उसकी आंखों में आंसू तक आ गए थे।

दूसरी तरफ अजय बेहोशी की हालत में अपने माता पिता के साथ था और उस पल वो अपने ख्यालों में देख रहा था कि उसकी मां उसको जन्मदिन का एक तोहफा दे रही थी और अजय को मां ने अजय के हाथों में एक छोटा सा लकड़ी का बॉक्स थमाते हुए उससे कहा था "बेटा इसे संभाल कर रखना इसमें हमारी मात्र भूमि की पवित्र मिट्टी है" और यह कहते हुए अजय की मां ने वह लकड़ी का बॉक्स खोल कर अजय को दिखाया था और वो बॉक्स भीतर से चार हिस्सों में बंटा हुआ था और उस बॉक्स के एक हिस्से में हिन्दुस्तान की मात्र भूमि की पूजनीय मिट्टी थी और उस बॉक्स के एक हिस्से में उसके बचपन की तस्वीरों के साथ उसके स्कूल के ग्रुप फोटोग्राफ भी पड़े हुए थे और उन तस्वीरों में सबसे नीचे उसके माता पिता की तस्वीर के साथ उनके पुराने घर की तस्वीर भी रखी हुई थी और उस बॉक्स के एक हिस्से में, उसके बचपन के कुछ कपड़े पड़े हुए थे जिन्हें पहन कर अजय बड़ा हुआ था और बॉक्स के एक हिस्से में उसके कुछ पुराने खिलौने पड़े थे जिन खिलौनों से वो अक्सर खेलता था। पर यह बहुत दुख की बात थी कि 30 वर्ष पहले अजय जन्मदिन के उस नायाब तोहफे को भावनात्मक दृष्टि से नहीं देख पाया था क्योंकि उसने कुछ वर्ष पहले ही बहुत मेहनत मुश्क्त करके कम्प्यूटर इंजीनियरिंग पास की थी और फिर वो मास्टर्स की डिग्री करने के लिए USA चला आया था और USA में पढ़ाई समाप्त करने के साथ ही उसने USA की एक कंपनी में नौकरी भी स्वीकार कर ली थी और अमरीका में खुद को थोड़ा स्थापित करने के बाद उसने अपने माता पिता को भी USA बुलवा लिया था और उन्हें USA के कुछ शहरों में खूब घुमाया था और अजय की ज़िंदगी में यह सब इतनी गतिशीलता के साथ हुआ था कि उन लम्हों में कड़ी मेहनत मुश्क्त के सिवा, उसके पास सोचने समझने का बिल्कुल भी समय नही था पर

यह बात भी सच थी कि अजय अपने कर्तव्यों को निभाने वाला एक सच्चा और ईमानदार इंसान था और उसके माता पिता को अपने बेटे से कभी कोई शिकवा शिकायत नहीं हुई थी क्योंकि वो इस बात को जानते थे कि उनका बेटा एक आज्ञाकारी पुत्र है और वो इस बात को भी अच्छी तरह से समझते थे कि काम में अधिक व्यस्त होने की वजह से उसके पास भावनात्मक दृष्टि से सोचने समझने का अधिक समय नहीं था और इसलिए उस पल अजय उस नायाब तोहफे की कीमत को समझ नहीं पाया था और अब बीमारी की हालत में उसे अपने माता पिता के साथ गुज़रे सब लम्हें याद आ रहे थे और इसी वजह से अजय बहुत भावुक हो गया था और इन ख्यालों की उसके सिवा किसी और को भनक तक नहीं थी कि उस पल उसके दिमाग में कौन सी उथल पुथल मची हुई थी।

जब अजय की बेहोशी टूटी तब नैना ने अजय को अपने हाथों से सूप पिलाया था और साथ में ही वो अपने हाथों में पकड़े एक कपड़े से बहुत प्रेम से अजय का मुंह पोंछ रही थी और यह सब देख कर उस कमरे में उपस्थित नर्स उन दोनो का आपसी प्रेम देख कर धीरे धीरे मुस्कराने लगी थी।

दो दिन बाद अजय को अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी और इस बीच उसका बेटा आलोक और बहु अस्पताल के चक्कर लगाते रहे थे। आलोक और उसकी पत्नी अमरीका की एक कंपनी में नौकरी करते थे और दोनो बच्चों को अपने पिता के स्वास्थ्य की बहुत चिंता थी और जब नैना ने अपने बेटे को फोन करके यह जानकारी दी कि पिता जी को आज अस्पताल से छुट्टी मिलने वाली है तब आलोक अपनी कंपनी से छुट्टी लेकर अपनी पत्नी के साथ अस्पताल आ गया था और वो अपने माता पिता को अपनी कार में बिठा कर घर पर ले आया था और आलोक और उसकी पत्नी ने अपना सारा दिन अपने पिता जी की देखभाल करते हुए गुज़ारा था।

अजय घर आते ही कुछ हल्का फुल्का खाना खाने के बाद दवाइयों के असर की वजह से बहुत गहरी नींद में सो गया था और उस पल नैना आलोक और उसकी पत्नी अजय के बिल्कुल निकट ही एक सोफे पर बैठे हुए थे और वो धीरे धीरे आपस में कुछ बातचीत कर रहे थे पर उस पल भी उन तीनों की निगाहें अजय पर ही लगी हुई थी।

जब रात को सब सुख चैन की नींद सो रहे थे और नैना को इस बात का सुकून था कि अजय अस्पताल से एक दम स्वस्थ हो कर वापिस आ गया था और उस पल नैना

मन ही मन में ईश्वर का धन्यवाद कर रही थी। पर आधी रात को जब अजय पर दवाइयों का असर समाप्त हुआ तब अजय धीरे से अपने बिस्तर से उठा था और वो अपनी अलमारी में से अपनी माता पिता का वर्षों पहले का दिया हुआ लकड़ी का वह बॉक्स खोजने लगा था जिसमें उसकी मां ने उसके लिए कुछ यादगार चीजें सजा कर रखी हुई थी और थोड़ा सा ढूंढने पर ही अजय को वह लकड़ी का बॉक्स मिल गया था और अजय ने उस बॉक्स को बहुत सावधानी से उस अलमारी से बाहर निकाल लिया था और वो सोफे पर बैठ कर उस बॉक्स की एक एक चीज़ को उलट पलट कर देख रहा था और उस पल अपने माता पिता को याद करके उसकी आंखों से आंसू बहने लगे थे और उन भावुक कर देने वाले लम्हों में उसके हाथों में अपने माता पिता की तस्वीर भी थी।

अभी अजय को बिस्तर से उठे हुए कुछ पल ही बीते थे कि अचानक नैना की आंख खुल गई थी और जब उसकी निगाहें अजय पर पड़ी तब वो अपने चेहरे पर आश्चर्य के भाव लिए हुए उठ बैठी थी और जब उसने अजय के करीब जाकर देखा तो वो लकड़ी के उस बॉक्स में पड़ी चीजों को देख कर खुद भी बहुत भावुक हो गई थी और उसकी आंखों से आंसू बहने लगे थे। तब अजय ने नैना के हाथों को अपने हाथों में थाम कर उससे बस इतना ही कहा था "तुम्हें याद है कि यह तोहफा मुझे मां ने मेरे जन्मदिन पर दिया था" तब अत्यधिक भावुक हो जाने की वजह से नैना भी रोने लगी थी और उस समय उसने अपना सिर अजय के कंधों पर रखा हुआ था। तब कुछ पल सोचते हुए अजय ने नैना की ओर देखा था और उससे बहुत भावुक होकर कहा था "नैना जब मां ने मुझे यह तोहफा दिया था तब मुझे इस तोहफे की कीमत का अंदाज़ा नहीं हो पाया था" और बस इतना कहते ही अजय फूट फूट कर रोने लगा था।

कमरे से आती आवाजों को सुनकर अब तक आलोक और उसकी पत्नी भी उठ गए थे और जब उन्होंने अपने माता पिता के कमरे का भावुक कर देने वाला दृश्य देखा तब वो दोनो अपने माता पिता के पांव के करीब नीचे जमीन पर ही बैठ गए थे और उस पल वो दोनो भी बहुत भावुक हो गए थे। तब अजय ने उन्हें उस बॉक्स में पड़ी एक एक चीज़ दिखाई थी और अपने दादा और दादी की तस्वीर को देख कर आलोक और उसकी पत्नी भी बहुत भावुक हो गए थे तब अजय ने उन्हें जमीन से उठा कर अपने करीब सोफे पर ही बिठा लिया था और उन दोनो को हिंदुस्तान में स्थित अपने घर की तस्वीरें दिखाने लगा था और अपने घर से संबंधित उन्हें वर्षों पुराने कुछ किस्से सुनाने लगा था और

बातों के उसी दौर के बीच उन्हें पता भी नहीं चला था कि कब सुबह हो गई थी। कुछ समय के बाद अजय थक कर बिस्तर पर सो गया था पर वह लकड़ी का बॉक्स अब भी उसकी छाती से लगा हुआ था और उस भावुक कर देने वाले दृश्य को देख कर कुछ ऐसा लगता था जैसे उस पल अजय को इस बात का भय था कि कहीं वह बेशकीमती बॉक्स उससे कहीं खो न जाए और यह देख कर नैना और आलोक की निगाहें एक दूसरे से मिली थी और आलोक ने अपनी मां से कहा था "मां पिता जी की इस अवस्था को देख कर मुझे कुछ ऐसा लगता है जैसे पिता जी हिंदुस्तान की हर चीज को बहुत याद कर रहे हैं" तब नैना ने अपने पुत्र की ओर देखते हुए उससे कहा था "हां बेटा, हमें हिंदुस्तान गए हुए अब लगभग 25 वर्ष बीत गए हैं और हम अपने काम में और तुम्हारी परवरिश करने में इतने व्यस्त हो गए थे कि सब कुछ भूल ही चुके थे पर जब अस्पताल में मैंने तुम्हारे पिता को बेहोशी की हालत में रोते हुए देखा था तब उस पल मुझे कुछ समझ नहीं आया था पर अब मैं यकीन के साथ कह सकती हूं कि उस पल भी तुम्हारे पिता जी अपने माता पिता को और अपनी मात्र भूमि हिंदुस्तान को याद करके रो रहे थे और इसीलिए वो आधी रात को उठ बैठे थे और अलमारी में उस लकड़ी के बक्से को खोजने लगे थे जो इनके माता पिता जी ने बहुत प्यार से इनको जन्मदिन के तोहफे के रूप में दिया था" अपनी मां के मुंह से सारा किस्सा सुनने के बाद आलोक ने अपनी मां से कहा था "मां तुम हिंदुस्तान जाने की तैयारी करो हम सब कुछ दिन के लिए हिंदुस्तान जाएंगे और क्या पता हमारे इस निर्णय के लेने से पिता जी को भी अच्छा लगे" आलोक की बात सुन कर नैना की आंख भर आई थी और उसने प्यार से आलोक को अपने गले से लगा लिया था। आलोक और उसकी पत्नी ने अपनी कंपनी में छुट्टी का आवेदन पत्र दे दिया था जिसे कंपनी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया था और सारी तैयारी के साथ सब लोग एक साथ हिंदुस्तान की यात्रा पर निकल पड़े थे। हिन्दुस्तान में अपने घर की हालत को देख कर अजय की आँखें भर आई थी। उस घर की अच्छे से देखभाल न होने की वजह से घर की दीवारों का प्लास्टर जगह जगह से उखड़ गया था और दीवारों में सीलन आ चुकी थी और कहीं कहीं पर दीवारों पर काई की मोटी परतें जम गई थी और घर की ऐसी हालत देख कर अजय की आँखें भर आई थी और बीमारी की हालत में भी अजय, घर की हर दीवार और खिड़की को भावुकता से भरा स्पर्श कर रहा था और उस पल पता नहीं क्या सोच कर अजय ने अपने बेटे से कहा था "आलोक अब मैं अपनी बाकी ज़िंदगी

हिंदुस्तान में रह कर बिताना चाहता हूं" और अजय ने ऐसा कह कर नैना के मुंह की बात छीन ली थी। नैना भी यही चाहती थी पर उसे आलोक और अपनी बहू की भी चिंता थी और इसी वजह से वो यह सब इतनी आसानी से नहीं कह सकती थी और वो जानती थी कि आलोक और उसकी बहू के लिए यह सब इतना आसान काम नहीं था। पर तब कुछ सोच कर आलोक ने अपने माता पिता को आश्चर्चकित कर दिया था और उन दोनो की ओर देखते हुए उसने कहा था "अगर आपकी ये ही इच्छा है तो मैं जल्दी से इस घर को ठीक करवा देता हूं ताकि आप इस घर में आराम से रह सकें और जहां तक हम दोनो का प्रश्न हैं हम दोनो भी अपने अपने प्रोजेक्ट समाप्त करने के बाद हमेशा हमेशा के लिए हिन्दुस्तान वापिस लौट आएंगे" आलोक और उसकी पत्नी ने,अमरीका में ही यह सब तय कर लिया था कि अगर उनके माता पिता हिन्दुस्तान में रहने की इच्छा प्रकट करेंगे तो वो उनके इस निर्णय का सम्मान करते हुए उनका साथ देंगे। उस पल आलोक की आंखों के सामने वह दृश्य लहराया था जब उसके पिता अपने माता पिता को याद करके रो रहे थे और आलोक नहीं चाहता था कि उसके साथ भी कुछ ऐसा ही हो और ये ही सब सोच कर आलोक और उसकी पत्नी ने अमरीका में ही बातचीत करके यह सब तय कर लिया था कि अब उन्हें अपने माता पिता के साथ ही रहना है और अगर वो हिंदुस्तान में रहना चाहते हैं तो हम भी अब उनके साथ हिंदुस्तान में ही रहेंगे और वो अपने इस निर्णय से बहुत खुश थे और अब सब एक साथ हिंदुस्तान के तीर्थ स्थलों की यात्रा पर निकल पड़े थे और उस पल उन तीर्थ स्थलो की सुंदरता को देख कर आलोक और उसकी पत्नी लगा था कि उन्होंने जो भी निर्णय लिया था वह बिल्कुल सही निर्णय था और अपनी मात्र भूमि पर आकर सारा परिवार बहुत खुश था।

समाप्त

कहानी 30: और चिड़िया उस वृक्ष से उड़ गई

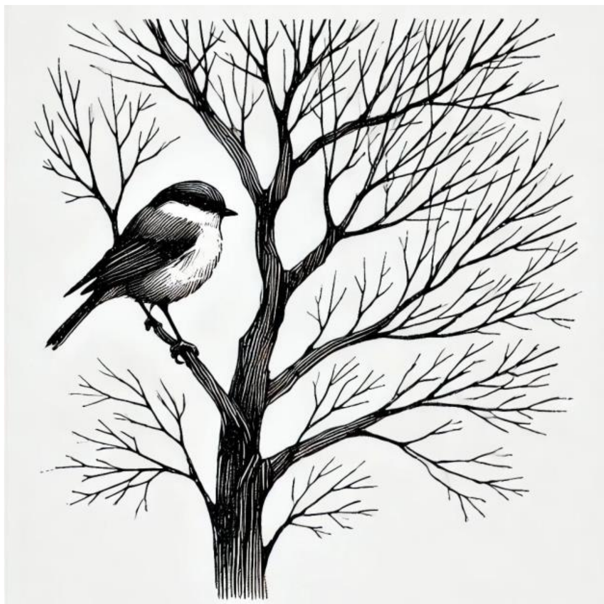

वह वृक्ष सूख चुका था और उसकी एक डाल भी हरी नहीं थी। धरती वहाँ की फट चुकी थी और पानी का वहां पर नामोनिशान तक नही था। बिन पत्तों के और सूखी डालियों से वह वृक्ष बहुत कुरूप लगने लगा था। यह वही वृक्ष था जिसके नीचे लोग विश्राम करते थे पर अब धीरे - धीरे उस निर्जीवी से वृक्ष की डालियों ने भी उसका साथ छोड़ दिया था। इससे उस वृक्ष की कुरूपता और भी बढ़ गई थी और अब वृक्ष की हालत बहुत दयनीय थी।

पर तभी एक सुनहरा दिन वृक्ष के जीवन में आया और एक सुन्दर छोटी सी चिड़िया उस वृक्ष पर बैठ कर उसे जीवन संगीत सुनाने लगी। उस मधुर संगीत को सुनकर वह वृक्ष खुशी से झूमने लगा था और उस वृक्ष पर एक सुन्दर पत्ते ने जन्म लिया था और अब वृक्ष में फिर से जीवन प्रमाण दिखने लगे थे। वृक्ष भीतर से उस चिड़िया का आभारी था। उस वृक्ष ने भावनाओ में बह कर चिड़िया से कहा था "ऐ सुन्दर चिड़िया तुम मुझ जैसे कुरूप वृक्ष पर आ कर ही क्यों बैठी, मेरी एक डाल भी हरी नहीं है जो तुम्हें ठंडी छांव दे सकें,

वृक्ष तो यहां पर और भी है जिन पर फूलो की बहारें है" पर भीतर से वह वृक्ष चिड़िया से बहुत प्रसन्न था और वो दिल से चिड़िया का अहसानमंद था।

वृक्ष की बात सुनकर वह चिड़िया मुस्कराई थी और उस वृक्ष से बोली थी "तुम्हें मेरी जरूरत थी और जरूरत मन्दों को सहायता का मैंने वचन लिया है" फिर कुछ रूककर उस चिड़िया ने वृक्ष से कहा था "कौन कहता है तुम कुरूप हो तुम्हारी भावनाओ में शीतल जल का सा प्रवाह है और कुरूप तो इंसान जीवन में किए कर्मों से होता है पर तुम मुझे आभार मानने वाले एक अच्छे वृक्ष लगते हो" चिड़िया के मीठे बोलों को सुनकर, वह वृक्ष खुशी से झूमने लगा था और उसने भावनाओं में बह कर उस चिड़िया से कहा था "तुम मेरे बारे में ऐसा सोचती हो" और उस पल वृक्ष की आंखों में से आंसू बहने लगे थे और उसने रोते रोते ही उस चिड़िया से कहा था "मुझे इतने मीठे स्वरों में कभी किसी ने कुछ नहीं कहा मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूँ" उस पल वह वृक्ष भावनाओं में बह चुका था और कुछ पल रूककर उस वृक्ष ने चिड़िया से कहा था "लेकिन ऐ सुन्दर चिड़िया, दयालु चिड़िया, सूर्य की तेज गर्मी से, तुम झुलस जाओगी, मेरी न तो डालियाँ है और न ही मुझ पर हरी पत्तियाँ है, जो सूर्य की तपती किरणों से तुम्हारी रक्षा कर सकें, तुम्हें मुझ से क्या मिलेगा" उस वृक्ष की कोमल बातें सुनकर वह चिड़िया मुस्कराई और उसने वृक्ष से कहा "मुझे तुम से सन्तुष्टी मिलेगी और मैं तुम्हें हराभरा देखना चाहती हूँ" चिड़िया की मीठी बातें सुनकर उस वृक्ष ने कहा "तुम बहुत दयालु हो और तुम्हारे बोल बहुत मीठे हैं" चिड़िया की बातें सुनकर वह वृक्ष खुशी से झूमने लगा था और उसी खुशी में उस पर नए पत्ते फुटाव लेने लगे थे और वृक्ष में जीवन लौट आया था।

कुछ समय बाद जब वह चिड़िया उस वृक्ष से उड़ने लगी, तो वृक्ष ने भावुक होकर चिड़िया से कहा था "मुझे अकेला छोड़ तुम कहां जा रही हो फिर कौन मुझे देखेगा और कौन मेरी सुरक्षा करेगा और कौन मुझ से मीठे बोल बोलेगा" और उन दुखद लम्हों में वह वृक्ष बहुत उदास हो चुका था।

चिड़िया वृक्ष को उदास देख कर बोली थी "तुम्हें हरा - भरा होना है, मेरे लिए, अपने लिए, हम सबके लिए, मैं फिर लौट कर आऊंगी और तुम्हारी हरी डालियों पर बैठ कर, तुम्हें मधुर संगीत सुनाऊंगी लेकिन अब मुझे जाना होगा, न जाने कितने ही सूखे वृक्ष मेरी राह देख रहे होंगे, जिन्हें मेरी सहायता की जरूरत होगी" इतना कहकर वह चिड़िया

खामोश हो गई थी। चिड़िया की बातें सुनकर वह वृक्ष उदास भी था और उत्साहित भी और यह सच था कि वह वृक्ष चिड़िया के अच्छे कामों में बाधा नहीं डालना चाहता था, फिर कुछ सोच कर उस वृक्ष ने चिड़िया से कहा था "हाँ तुम अवश्य जाओ, तुम बहुत अच्छी हो, तुम बहुत दयालु हो और तुम्हारे मीठे बोल जैसे जीवन सन्देश है, भगवान तुम्हारी रक्षा करे" और इतना कह कर उस वृक्ष की आंखों में से आँसू बहने लगे थे और वह रोने लगा था और वृक्ष ने रोते रोते ही उस चिड़िया से कहा था "लेकिन में तुम्हारा इन्तजार जीवन के अंत तक करूंगा और मुझे मालूम है कि तुम लौट कर अवश्य आओगी" वृक्ष की कोमल और भावनाओं से भरी बातें सुन कर चिड़िया भी बहुत भावुक हो गई थी और उड़ने से पहले उसने वृक्ष को एक सुन्दर धुन सुनाई जो विदाई की धुन थी और फिर चिड़िया उस वृक्ष से उड़ गई...

समाप्त

कहानी 31: गुल्लक

अब दिवाली को 4 दिन ही बाकी थे और 5 वर्षीय नन्हीं तान्या अपनी गुल्लक में पड़े पैसों के बारे में सोचती हुई सुख की मीठी नींद सो चुकी थी और वो अपने सपने में अपनी मां के साथ बाज़ार घूम रही थी और वो अपने सपने में अपने लिए कुछ दीए, मोमबत्तियां और अपने लिए कुछ खिलौने खरीद रही थी और उसने अपने सपने में उस गुड़िया को भी खरीदा था जिस गुड़िया ने गुलाबी रंग के सुन्दर वस्त्र पहने हुए थे और तान्या को वो गुलाबी पोशाक पहनी हुई गुड़िया बेहद पसंद थी। अपने सपने में इतने सुंदर खिलौनों को देख कर तान्या के चेहरे पर नींद में ही मुस्कराहट आ चुकी थी।

अभी कुछ दिन पहले ही तान्या के नाना और नानी तान्या से मिलने आए थे और उन्होंने तान्या की गुल्लक में कुछ पैसे भी डाले थे और यह देख कर तान्या बहुत खुश हुई थी। तान्या साल भर से उस गुल्लक में पैसे जोड़ती आ रही थी और तान्या की मां ने उससे कहा था कि हम इस गुल्लक को दिवाली की खरीददारी के लिए तोड़ेंगे और अब अगले ही दिन दिवाली थी और उन दोनों को दिवाली की खरीददारी करने के लिए बाज़ार जाना था और इस वजह से नन्हीं सी तान्या बहुत खुश थी।

पर तान्या की मां सुमन अपने मन में कुछ और ही सोच कर बैठी हुई थी और सुमन चाहती थी कि तान्या को छोटी उम्र में ही इस बात की समझ आ जाए कि चीजों की खरीददारी बहुत सोच समझ कर करनी चाहिए। सुमन केंद्रीय विद्यालय में शिक्षिका थी और उसका पति देवनाथ एक किसान था। सुमन जब अपने पति को खेतों में जी तोड़ मेहनत करते हुए देखती थी तब उस पल वो गहरी सोच में डूब जाती थी और इसी वजह से वो पैसों को बहुत सोच समझ कर खर्च करती थी और दूसरी तरफ देवनाथ अपनी खेती को और अच्छी तरह से करने के लिए पाई पाई जोड़ रहा था ताकि वो एक ट्रैक्टर खरीद सके और देवनाथ का ट्रैक्टर को खरीदने का वर्षों का सपना था। सुमन एक सुलझी हुई गृहणी के साथ साथ एक बुद्धिमान शिक्षिका भी थी और वो अपने पति की जहां तक हो सके हर क्षेत्र में उसकी सहायता करती थी और वो अपनी जिम्मेदारियों को बहुत अच्छी तरह से निभाती हुई आ रही थी और इसीलिए वो आज रात भी इसी विषय पर सोच रही थी कि वो कैसे तान्या को समझाए कि पैसे सूझ बूझ से खर्च करने चाहिए और इसी उधेड़ बुन में उसकी आंख लग गई थी।

ऐसा नहीं था कि सुमन के पास पैसों की कोई कमी थी पर उसने अपनी मां से यह शिक्षा ली थी कि पैसों को सोच समझ कर खर्च करना चाहिए और सुमन की मां सुमन को समझाती थी कि मुश्किल घड़ियों में क्या पता कब पैसों की जरूरत आन पड़े इसलिए पैसों को सोच समझ कर खर्च करने में ही समझदारी है और ये ही शिक्षा सुमन अपनी नन्हीं सी बेटी तान्या को भी देना चाहती थी और सुमन जानती थी कि ऐसी शिक्षा बचपन से ही देने की आवश्यकता थी।

अगले ही दिन सुमन ने तान्या के सामने उसकी गुल्लक तोड़ी और उसने सारे पैसे गिनने के बाद तान्या को बताया "तान्या इस गुल्लक में आपके पास 500 रुपए हैं और अब आपको इन पैसों को कैसे खर्च करना है इसका निर्णय आप खुद ही करेंगी" तब तान्या ने बहुत मासूमियत से अपनी मां से कहा था "मां मैं इन पैसों से अपने लिए खिलौने खरीदूंगी, दिवाली के पटाखे खरीदूंगी, दीए लूंगी और कुछ मोमबत्तियां खरीदूंगी" तब सुमन ने मुस्कराते हुए तान्या से कहा था "हां हां तान्या तुम इन पैसों से जो भी चाहो वो खरीद सकती हो पर सिर्फ इतना ध्यान रखना कि हमारे पास कुल 500 रुपयों का बजट ही हैं" तान्या उस समय इतनी खुश थी कि उसने ताली बजाते हुए अपनी मां से कहा था "ठीक है मां मैं इन्हीं पैसों से अपना सारा सामान खरीद लूंगी" सुमन अपनी बेटी को खुश

देख कर बहुत खुश थी पर वो जानती थी कि आज उसकी बेटी तान्या को ज़िंदगी की सबसे बड़ी सीख मिलने वाली थी और कुछ ऐसी ही शिक्षा सुमन की मां ने सुमन को भी दी थी और सुमन अपनी मां की दी हुई सीख को आज 30 साल के बाद दोहराने वाली थी और सुमन जानती थी कि तान्या एक बुद्धिमान बच्ची है और वो इस सीख को अपने जीवन में बहुत जल्दी ही अपना लगी।

सबसे पहले सुमन तान्या को मिट्टी के दीए बेचने वाले एक छोटे से दुकानदार के पास ले गई थी और उसने तान्या को समझाया था "तान्या मेरा ख्याल है कि हमें दिवाली के त्यौहार की खरीददारी दीयों की खरीददारी से शुरू करनी चाहिए" उस दुकानदार के पास रंग बिरंगे बहुत किस्म के दीए थे और तान्या ने उसमें कुछ दीए अपने लिए पसंद किए थे और उन दीयों की कीमत कुल 30 रुपए ही थी। सुमन ने जल्दी से वह पैसे दुकानदार को अदा कर दिए थे और सुमन ने वह दीए तान्या की टोकरी में संभाल कर रख दिए थे और साथ ही सुमन ने तान्या को बताया था कि अब उसके पास खर्च करने के लिए कुल 470 रुपए ही बाकी है। इसी तरह तान्या ने दिवाली की मोमबत्तियां और कुछ पटाखे भी खरीद लिए थे और सुमन तान्या का खरीदा हुआ सारा सामान तान्या की टोकरी में संभाल कर रखती जा रही थी और साथ ही सुमन हर खरीददारी पर तान्या को बताती जा रही थी कि अब उसके पास कुल कितने पैसे बचे हैं और पैसे बताते समय सुमन तान्या के चेहरे पर उभर आए भावों को बहुत बारीकी से देख रही थी और उसे लग रहा था कि तान्या इतने कम पैसे रह जाने की वजह से थोड़ी सोच में पड़ गई थी और ये ही सुमन भी चाहती थी कि तान्या पैसों के बारे में ध्यान से सोचे और उन्हें सोच समझ कर खर्च करे। जब सुमन तान्या को साथ लेकर खिलौनों की दुकान पर पहुंची थी तब तान्या के पास कुल 250 रुपए ही बाकी बचे थे तब सुमन ने तान्या को एक सुझाव देना ठीक समझा था और उसने तान्या से कहा था "तान्या क्यों न आप इन पैसों से कुछ अच्छी और शिक्षाप्रद कहानियों की किताबें खरीदें और साथ में एक ड्राइंग बुक और कलर पेंसिलें खरीद लें" मां का सुझाव सुनकर तान्या सोच में पड़ गई थी क्योंकि उसे पेंटिंग करने का भी शौंक था पर अपनी मां की बात सुनकर वो सोच में पड़ गई थी कि वो गुलाबी पोशाक पहनी गुड़िया ले या कहानियों की किताबें ड्राइंग बुक और कलर पेंसिलें ले, फिर कुछ पल सोच कर सुमन ने तान्या को सुझाव दिया था "तान्या मेरे ख्याल में जो चीजें कम पैसे में आ सकती हैं उन्हें आप पहले खरीद लें" तब तान्या ने अपनी

गुल्लक के पैसों को घटता हुआ देख कर अपनी मां का सुझाव मान लिया था पर मासूम तान्या का मन गुलाबी पोशाक वाली उस गुड़िया में ही अटका हुआ था पर फिर कुछ सोच कर सुमन ने तान्या से कहा था "देखो अगर तुम गुलाबी पोशाक वाली गुड़िया पहले खरीद लोगी तो तुम्हारे सारे पैसे इसी में समाप्त हो जाएंगे" और जब सुमन ने तान्या को सोचता हुआ देखा तब सुमन ने तान्या से कहा था "अगर तुम्हें गुड़िया ही लेनी है तो तुम ले सकती हो पर फिर गुड़िया खरीदने के बाद तुम्हारी गुल्लक के सारे पैसे समाप्त हो जाएंगे" और यह कह कर सुमन तान्या के चेहरे के भावों को बहुत ध्यान से देख रही थी। तब तान्या ने लालसा भरी नज़रों से गुलाबी पोशाक वाली उस गुड़िया को देखा था और अपनी मां से कहा था "मां मुझे कलर पेंसिलें और ड्राइंग बुक भी चाहिए और कहानियों की किताब भी चाहिए" तब सुमन ने मुस्कराते हुए तान्या से कहा था "तान्या तुम वास्तव में बहुत समझदार हो" और यह कह कर सुमन तान्या को पास की एक स्टेशनरी और किताबों की दुकान पर ले गई थी और वहां पर पड़ी रंगीन किताबों को देख कर, तान्या ने कुछ किताबें अपने लिए ले ली थी और उसने अपनी मां से कहा था "मां क्या तुम मुझे इन किताबों में से कहानी पढ़ कर सुनाओगी" तब सुमन ने मुस्कराते हुए तान्या से कहा था "हां तान्या मैं तुम्हें हर रोज़ इन किताबों में लिखी कहानियों को पढ़ कर सुनाऊंगी" अपनी मां की ममतामई और मीठी बातें सुनकर तान्या खुश होकर तालियाँ बजाने लगी थी और उसने अपनी मां से कहा था "मां मैं कलर पेंसिलें ड्राइंग बुक और कहानियों की किताब ही खरीदूंगी" तान्या की बात सुनकर सुमन ने तान्या का माथा बहुत प्यार से चूम लिया था क्योंकि सुमन इस बात को बहुत अच्छी तरह जानती थी कि तान्या ने कैसे अपना मन मारकर और समझदारी दिखाते हुए अपने पैसे खर्चे थे। अब तानिया की टोकरी बहुत सी चीजों से भर गई थी और तान्या अपनी खरीदी चीज़ों को देख कर बहुत खुश थी।

जब दिवाली की सारी खरीददारी हो गई तब सुमन ने अपनी बेटी तान्या से कहा था "तान्या अभी भी आपके पास 30 रुपए बचे हुए हैं क्या इन 30 रुपयों की हम एक और नई गुल्लक खरीद लें जिससे आप अगले वर्ष की दिवाली तक उसमें पैसे जोड़ सको" अपनी मां की बात सुनकर तान्या ने अपनी मां से कहा था "हां मां हम एक और गुल्लक खरीदेंगे" और जब दिवाली की सारी खरीददारी समाप्त करने के बाद सुमन और तान्या घर वापिस पहुंचे तो उन्होंने देखा कि घर पर नाना और नानी आए हुए थे और वो अपने

साथ तान्या की मनपसंद गुलाबी पोशाक वाली गुड़िया और उसके लिए बहुत सारे खिलौने और मिठाइयां भी लेकर आए थे और तान्या इतने सारे खिलौनों को एक साथ देख कर खुशी से तालियां बजाने लगी थी। पर आज सुमन बहुत खुश थी क्योंकि अब उसे इस बात का यकीन हो गया था कि जो शिक्षा उसकी मां ने उसे दी थी वो शिक्षा आज उसने अपनी बेटी तान्या को भी दे दी थी और सुमन खुश थी क्योंकि अब सुमन को इस बात का यकीन हो गया था कि अब धीरे धीरे उसको देख कर तान्या भी अपनी सूझ बूझ से खरीददारी करने लगेगी और उसकी दी हुई शिक्षा पर अमल करेगी और उसी खुशी भरे माहौल में सब घर को सजाने की तैयारियों में जुट गए थे। सुमन ने तान्या के खरीदे दीयों को एक थाली में सजा कर अपने मंदिर में रख दिया था और सबने मिलकर भगवान से सबकी कुशलता की प्रार्थना की थी और इस बीच सुमन यह देख कर बहुत खुश थी कि तान्या अपने गुल्लक के पैसों से खरीदी चीज़ों को बहुत संभाल कर रख रही थी और इस बीच तान्या के नाना नानी ने तान्या को 500 रुपए और भी दिए थे जिन्हें तान्या ने हिफाजत के साथ अपनी नई गुल्लक में डाल दिया था और तान्या ने मुस्कराते हुए अपनी मां की ओर देखते हुए कहा था "मां मैंने ठीक किया न" तब सुमन ने बहुत प्यार से अपनी बेटी से कहा था "हां तान्या आपने बिल्कुल ठीक किया है, अब अगले वर्ष की दिवाली तक इस गुल्लक में बहुत से पैसे इकट्ठे हो जाएंगे और आप उनसे दिवाली की बहुत सी चीजें खरीद सकेंगी" तब तान्या ने कुछ सोचते हुए अपनी मां से कहा था "मां क्या मैं अगले वर्ष दिवाली पर एक नई साइकिल खरीद सकूंगी" तब उसकी नानी ने बहुत प्यार से तान्या को अपनी गोद में उठाते हुए उससे कहा था "हां हां, हम तुम्हें अगले वर्ष दिवाली पर एक नई साइकिल ज़रूर लेकर देंगे" और दीवाली के त्यौहार पर इसी खुशी भरे माहौल में सुमन का घर दीए और मोमबत्तियों की रोशनी से जगमगाने लगा था और इस बीच तान्या के पिता जी ने दिवाली की खुशी को और बढ़ाते हुए सारे परिवार को एक और खुशखबरी दी थी कि उन्होंने वर्षों की मेहनत से पाई पाई जोड़ कर आज एक नया ट्रैक्टर खरीद लिया है और इस खबर से सुमन के घर में खुशियों को चार चांद लग गए थे और अपने घर पर आए नए ट्रैक्टर को देखकर तान्या ने बहुत प्यार से अपने पिता जी से पूछा था "पिता जी क्या यह ट्रैक्टर हमारा है" तब तान्या के पिता जी ने तान्या को अपनी गोद में उठाकर ट्रैक्टर पर बिठाते हुए उससे कहा था "हां बेटे यह हमारा खुद का ट्रैक्टर हैं और हमने इसे आज ही खरीदा है" इस खबर से सुमन के घर पर

सब तरफ दिवाली के त्यौहार की रोशनी हो उठी थी और मां की दी हुई शिक्षा से सुमन का घर खुशियों से जगमगाने लगा था और सुमन उम्मीद करती थी कि कुछ ऐसे ही तान्या की ज़िंदगी में भी खुशियां बहार बन कर आएंगी।

समाप्त

कहानी 32: एक किस्सा मां की ममता का

माया का विवाह लगभग पांच वर्ष पहले हुए था और वो अपने पति के साथ अमरीका चली गई थी। पर दुर्भाग्यवश उसका अपने पति से बहुत जल्दी ही तलाक हो गया था और माया अपने तीन वर्ष के छोटे बेटे आलोक को अपने साथ लेकर हिन्दुस्तान वापिस आ गई थी और यहां से माया की ज़िंदगी का सबसे कठिन दौर शुरू हो गया था। माया एक छोटे से शहर की रहने वाली थी और वो थोड़ी बहुत पढ़ी लिखी थी और ठीक वक्त पर उसे एक केंद्रीय विद्यालय में अध्यापिका की नौकरी मिल गई थी और माया ने लगभग दो वर्ष तक अपनी मां की मदद से अपने बेटे आलोक की परवरिश की थी पर यह बहुत दुख की बात थी कि कुछ वर्ष बाद ही माया की मां का देहांत हो गया था और अपने बेटे की पालन पोषण की सारी ज़िम्मेदारी माया के नाज़ुक कंधों पर आन पड़ी थी और यह माया की ज़िंदगी का सबसे कठिन दौर था।

घर पर किसी मददगार को न पाकर माया ने अपने पांच वर्षीय बेटे आलोक को अपने ही स्कूल में दाखिल करवा दिया था और अपने बेटे को स्कूल दाखिल करने के

बाद माया ने थोड़ी चैन की सांस ली थी। पर छोटे बच्चे की देखभाल करना कोई आसान काम नहीं था। इसलिए माया को कई बार बेटे की बीमारी की वजह से रात रात भर जागना भी पड़ता था और सुबह होते ही उसे अपने घर के सारे कार्य समाप्त करने के बाद स्कूल भी जाना होता था और इन सब कार्यों को ज़िम्मेदारी से करते करते माया बहुत थक चुकी थी। पर यह भी सच था कि माया जब भी अपने बेटे आलोक को मुस्कराते हुए देखती थी वो अपनी सारी थकान भूल जाती थी।

एक दिन आधी रात को माया का बेटा नींद से उठ कर अचानक जोर जोर से रोने लगा था और यह देख कर माया बहुत घबरा गई थी और माया ने अपने बेटे को चुप करवाने की बहुत कोशिश की थी पर जब वो अपनी इस कोशिश में असफल हो गई थी तब थक हार कर उसने मजबूरी में अपने पड़ोसी का दरवाज़ा खटखटाया था। माया के पड़ोसी कमला और उसका पति देवनाथ बहुत ही भले लोग थे और उनका बेटा माया के स्कूल में ही पढ़ता था और वो अपने माता पिता से अपनी टीचर की बहुत तारीफ करता था और इस कठिन समय में माया ने अपने इन्हीं पड़ोसियों का दरवाज़ा खटखटाया था और कमला और देवनाथ की मदद से माया आधी रात को अपने बेटे को निकट के एक अस्पताल में ले आई थी जहां पर डॉक्टर ने सारी जांच पड़ताल करने के बाद माया से कहा था "डरने की कोई बात नहीं है बच्चे को थोड़ी सर्दी हो गई है जिससे इसे बुखार आ गया है मैं इसे एक इंजेक्शन लगा देता हूं और कुछ दवाइयां दे देता हूं आपका बेटा दो से तीन दिन में एकदम ठीक हो जाएगा" डॉक्टर की बात सुनकर माया ने चैन की सांस ली थी और अब तक आलोक ने भी रोना बंद कर दिया था और अस्पताल से घर वापिस लौटने के बाद माया ने कमला और उसके पति देवनाथ का शुक्रिया अदा किया था और माया की कठिन परिस्थितियों को देखते हुए कमला ने बहुत हमदर्दी से माया से कहा था "माया तुम्हें कभी भी किसी मदद की जरूरत हो तो कृपया निसंकोच हमारे घर पर आ जाना, यह भी तुम्हारा ही घर है इसलिए तुम कभी भी किसी किस्म की सहायता मांगने में संकोच मत करना" माया के पड़ोसी कमला और देवनाथ बहुत भले लोग थे पर यह बात भी सच थी कि माया को अपने पड़ोसियों को आधी रात को जगाना कुछ अटपटा लगा था पर कहते हैं मां की ममता मां से सब काम करवा लेती है और उस समय माया को ये ही ठीक लगा था।

इसी तरह अपने बेटे के पालन पोषण में माया ने दिन रात एक कर दिए थे और माया ने अपने बेटे की बहुत अच्छी परवरिश की थी और इसी तरह समय का पहिया धीरे धीरे घूमता गया और कुछ वर्षों के बाद माया का बेटा आलोक जवान हो गया था और अब आलोक छोटे शहर से हाई स्कूल की शिक्षा लेने के बाद इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के लिए एक बड़े शहर में आ गया था। आलोक बहुत ही बुद्धिमान और आज्ञाकारी बेटा था और वो हर काम बहुत मन लगा कर करता था इसलिए दिन प्रतिदिन उसकी तरक्की होती गई पर अब इस बीच माया पर उम्र का रंग चढ़ने लगा था और उसके बालों में सफेदी आने लगी थी और उसकी शारीरिक क्षमता भी उम्र की वजह से थोड़ी कम हो चुकी थी पर माया इस बात से बहुत खुश थी कि अब आलोक पढ़ लिख कर जल्दी ही अपने पांव पर खुद खड़ा हो जाएगा और उसकी जीवन भर की तपस्या सफल हो जाएगी और चंद वर्षों के बाद ऐसा ही हुआ और आलोक ने बहुत अच्छे नंबरों के साथ कम्प्यूटर इंजीनियरिंग की पढ़ाई समाप्त कर ली थी और उसे मुंबई में ही एक कंपनी में नौकरी मिल गई थी। आलोक अब एक किराए के कमरे में मुंबई में ही रहने लगा था और आलोक के अकेले इतने बड़े शहर में रहने की वजह से माया को उसकी थोड़ी चिंता रहने लगी थी। पर जल्दी ही आलोक पर शहर की नई दुनिया का रंग चढ़ने लगा था और उसके बहुत से नए दोस्त बन गए थे और आलोक अपनी इस नई दुनिया से बहुत खुश था पर अभी आलोक को नौकरी करते हुए सिर्फ एक वर्ष ही बीता था कि आलोक ने अपनी मां से कहा था "मां मैं आगे और पढ़ना चाहता हूं और मास्टर्स की डिग्री करने के लिए अमरीका जाना चाहता हूं मेरे सब दोस्त अब वहीं पर हैं" बेटे की ज़िद के आगे माया की एक नहीं चली थी और माया ने अपने घर के पेपर बैंक में गिरवी रख कर बैंक से आलोक की मास्टर्स की पढ़ाई के लिए लोन ले लिया था और माया ने अपने दिल पर पत्थर रख कर, आलोक को मास्टर्स की पढ़ाई करने के लिए अमरीका भेज दिया था। पर आलोक को अमरीका भेज देने के बाद माया भीतर से बहुत उदास हो गई थी और यह बात सच थी कि माया चाहती थी कि उसका बेटा हर पल उसकी नज़रों के सामने रहे पर यह बात भी सच थी कि वो अपने बेटे की तरक्की की राह में रोड़ा नहीं बनना चाहती थी।

आलोक ने जल्दी ही अपनी मास्टर्स की पढ़ाई बहुत मेहनत के साथ समाप्त कर ली थी और पढ़ाई समाप्त होते ही उसे USA में ही नौकरी भी मिल गई थी और उसने इस शुभ समाचार को देते हुए अपनी मां से कहा था "मां अगर हमें अपना बैंक का कर्ज़ जल्दी

से उतारना है तो मुझे USA में ही नौकरी करनी पड़ेगी" कुछ सोचते हुए आलोक ने अपनी मां से कहा था "मां आप खुश तो हैं न" उस पल क्षण भर के लिए माया सोच में पड़ गई थी क्योंकि उसने अकेले रह कर बहुत मुश्किल से दिन काटे थे पर कुछ क्षण सोचने के बाद उसने अपने बेटे कहा था "तुम्हारा सपना पूरा हो गया और इससे अधिक खुशी की क्या बात हो सकती है" पर भीतर से माया थोड़ी उदास हो गई थी पर फिर भी वो अपने बेटे की खुशी में खुश थी।

आलोक ने दिन रात मेहनत करके जल्दी ही अपना बैंक का सारा कर्ज़ा समाप्त कर दिया था और कर्ज़ा समाप्त होते ही उसने फोन करके अपनी मां को सूचित किया था कि वो दिसंबर में कुछ दिनों की छुट्टी लेकर हिंदुस्तान आ रहा है और इस खबर को सुनकर माया की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा था और माया ने लगते हाथ ही कमला और देवनाथ को भी इस बात की सूचना दी थी कि "आलोक ने अपनी पढ़ाई समाप्त कर ली है और वो दिसंबर में कुछ दिनों के लिए हिंदुस्तान आने वाला है" और साथ ही माया ने उन्हें अपने घर पर भोजन करने का निमंत्रण भी दे दिया था। इस सुखद समाचार को सुनकर कमला की आँखें थोड़ी नम हो गई थी और उसने माया को प्यार से गले लगाते हुए कहा था "माया तुम्हारी तपस्या सफल हो गई है" और इस बीच देवनाथ ने हंसते हुए माया से कहा था "बहन जी इस बात का तो पता ही नहीं चला कि आलोक इतना बड़ा कब हो गया कि वो पढ़ लिख कर USA में नौकरी करने लगा है" तब माया ने कमला और देवनाथ की ओर देखते हुए बहुत सम्मान और प्रेम से कहा था "भाई साहब इस बधाई के आप भी हकदार हैं क्योंकि मेरे लिए यह सब आपकी मदद के बिना मुमकिन नहीं था" फिर माया ने अतीत के पन्ने पलटते हुए कमला की ओर देखते हुए हाथ जोड़ कर उनसे कहा था "मुझे वो रात भूले नहीं भूलती, कमला, जब मैंने आपको आधी रात को जगाया था और हम सब आलोक को अस्पताल लेकर गए थे" और इतना कह कर माया की आंखों से झर झर आंसू बहने लगे थे। यह देख कर कमला ने जल्दी से कहा था "यह कोई रोने का वक्त नहीं है माया यह तो खुशी मनाने का समय हैं और तुम तो बस हमारा मुंह मीठा करवाओ" इन मीठे शब्दों के आदान प्रदान के बाद माया ने कमला से कहा था "आलोक के आने से पहले मुझे अपना सारा घर ठीक करना होगा नए पर्दे लेने होंगे, दीवारों को नया रंग रोगन करवाना होगा ताकि आलोक को यह न लगे कि उसकी मां यहां पर सुख चैन से नहीं रह रही है" तब कमला ने हंसते हुए माया से कहा था "तुम

चिंता मत करो माया हम दोनो बहने मिल कर सारे घर का रूप रंग बदल देंगे जिसे देख कर आलोक खुश हो जाएगा" और कुछ समय माया के घर पर बिताने के बाद कमला और देवनाथ अपने घर पर वापिस लौट आए थे और कमला ने घर पर आते ही अपने पति से कहा था "माया ने कितनी कठिनाई से आलोक की परवरिश की है और अब देखो आलोक अपनी मां को अकेला यहां पर छोड़कर USA में नौकरी करने लगा है, USA में नौकरी स्वीकारने से पहले आलोक को अपनी मां के बारे में भी सोच लेना चाहिए था" उस पर देवनाथ ने हंसते हुए कमला से कहा था "हर मां चाहती है कि उसका बेटा तरक्की करे और इसमें हर्ज की क्या है और कमला जब बच्चे पढ़ लिख जाते हैं तब वो एक नई दुनिया में कदम रखते हैं और नए नए सपने देखते हैं और फिर अपने सपनो को सच करने के लिए वो सातवें आसमान पर उड़ने लगते हैं और यह तो इस दुनिया की रीत है और आलोक बहुत आज्ञाकारी और अच्छा बच्चा है और मुझे यकीन है कि वो अपनी मां का बहुत ध्यान रखेगा" अपने पति की बातें सुनकर कमला ने एक ठंडी सांस ली थी और अपने पति की ओर देखते हुए उससे कहा था "काश ऐसा ही हो और माया की ज़िंदगी में बेटा का सुख लिखा हो" और कमला और देवनाथ दोनों इस बात को जानते थे कि अब आलोक के आने तक माया चैन से नहीं बैठेगी और उसके आने तक एक एक दिन को गिनेगी और वो दोनो इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानते थे कि माया आलोक से कितना प्रेम करती थी।

आलोक तीन वर्ष के बाद हिंदुस्तान वापिस आ रहा था और अब वो अकेला नहीं आ रहा था उसके साथ उसकी एक दोस्त मधु भी आ रही थी और मधु ने आलोक के साथ ही मास्टर्स की पढ़ाई की थी और अब वो भी USA में नौकरी करने लगी थी और वहां किसी मित्र के न होने की वजह से दोनों में बहुत गहरी मित्रता हो गई थी और अब बात शादी तक आ पहुंची थी और आलोक मधु को अपनी मां से मिलवाने के लिए अपने साथ लेकर आ रहा था और वो मधु से विवाह करने के बाद अपनी मां से आशीर्वाद लेना चाहता था। एयरपोर्ट पर जब माया कमला और देवनाथ ने आलोक के साथ किसी लड़की को देखा तो क्षण भर के लिए वो बहुत हैरान हुए थे पर जब आलोक ने अपनी मां के पांव छुए तब उसने अपनी मां से कहा था "मां यह मधु है और ये मेरे साथ ही पढ़ती थी और अब हम दोनो शादी करने की सोच रहे हैं" इतने में मधु ने आगे बढ़ कर तीनों के पांव छुए थे और उनका आशीर्वाद लिया था। माया को पहली नज़र में ही मधु बहुत

भली लड़की लगी थी और आलोक के मुंह से शादी की बात सुनकर माया बहुत खुश हुई थी। जल्दी ही सब बातें करते हुए घर पहुंच गए थे और बरसों बाद अपने घर पर आकर आलोक बहुत खुश दिखाई दे रहा था और उसने बातों के सिलसिलों में अपनी मां से कहा था "मां मैंने बहुत बरसों के बाद सुकून चैन की सांस ली है। वहां पर पढ़ाई करने के लिए हमें बहुत मेहनत करनी पड़ी थी और फिर पढ़ाई समाप्त होते ही नौकरी शुरू हो गई थी और USA में हमें सांस लेने का भी मौका नहीं मिला था और ये अच्छा हुआ कि हम दोनो ने नौकरी करके अपना बैंक का कर्ज़ा जल्दी ही समाप्त कर दिया" माया खुद भी अध्यापिका थी और उसे मालूम था कि विदेश में रह कर पढ़ाई करना कोई आसान काम नहीं था। माया ने बहुत प्यार से आलोक को अपने गले से लगाते हुए कहा था "अधिक मेहनत करने की वजह से तुम थोड़े दुबले हो गए हो" तब आलोक ने हंसते हुए अपनी मां से कहा था "मां मेरा वजन दो किलोग्राम और बढ़ गया है और तुम्हें मैं दुबला दिखाई दे रहा हूं" तब कमला ने हंसते हुए कहा था "हर मां को अपना बेटा थोड़ा कमज़ोर ही नज़र आता है" और कमला की बात सुनकर सब मुस्कराने लगे थे। माया ने मधु और आलोक की रजामंदी से मंदिर में दोनों का विवाह करवा दिया था और पासपोर्ट की जरूरत के मुताबिक उन्हें मैरिज सर्टिफिकेट भी दिलवा दिया था और कुछ दिन सुख चैन से रहने के बाद आलोक और मधु USA वापिस जाने लिए अपना सामान बांधने लगे थे तब मौका देख कर आलोक ने अपनी मां से कहा था "मां फिलहाल हम दोनो एक किराए के घर में रहते हैं पर मेरे एक मित्र ने मुझे सुझाव दिया है कि मौका देख कर और बैंक का कर्ज़ा लेकर USA में अपना एक घर बना लो और मां USA में जितना घर का किराया होता है उससे थोड़े ही अधिक पैसे दे कर हम अपना खुद का घर भी ले सकते हैं और इस तरह से कुल 15 वर्षों में USA में हमारा खुद का अपना घर हो सकता है और मैं घर खरीदने से पहले आपकी आज्ञा लेना चाहता हूं" माया आलोक की बातें सुनकर एक क्षण के लिए सोच में पड़ गई थी पर फिर उसने मुस्कराते हुए आलोक से कहा था "बेटा तुम्हारी खुशी में ही मेरी खुशी है मैं भगवान से सदा ये ही प्रार्थना करती हूं कि तुम सदा खुश रहो और स्वस्थ रहो" पर आलोक की बातें सुनकर कमला और देवनाथ सोच में पड़ गए थे और वो उस पल मन ही मन में सोच रहे थे कि अगर आलोक ने USA में अपना घर खरीद लिया तो इसका मतलब यह होगा कि अब वो हिन्दुस्तान में वापिस कभी नहीं आएगा और यह सब सोच कर वो मन ही मन में माया के लिए बहुत

दुखी हो गए थे पर उन्हें यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ था कि आलोक की बातें सुनकर माया के चेहरे पर शिकन तक नहीं आई थी। आलोक और मधु हंसी खुशी USA वापिस लौट गए थे और जाने से पहले आलोक ने अपनी मां से कहा था "मां हम अगले वर्ष फिर वापिस आएंगे और हम सब अपने घर पर अच्छा समय बिताएंगे पर अभी हमें नौकरी पर वापिस लौटने की मजबूरी है" माया ने दोनों बच्चों को आशीर्वाद देते हुए हंसी खुशी विदा किया था "सदा सुखी रहो" और मां की असीस लेकर आलोक और मधु अमरीका वापिस लौट गए थे। माया जब घर पर वापिस आई तो वो बहुत उदास थी पर उसने कमला और देवनाथ पर अपनी उदासी जाहिर नहीं होने दी थी पर कमला और देवनाथ उसके सुख दुख के साथी थे और उनसे ऐसी बात छुपी नहीं रह सकती थी। कमला ने अपने घर वापिस आते ही अपने पति से कहा था "मुझे नहीं लगता कि आलोक अब कभी हिंदुस्तान वापिस लौटेगा" तब देवनाथ ने कमला को समझते हुए कहा था "पर जो बात आलोक कह रहा था वह बात भी सच है वहां पर किराए का घर लेने में और अपना घर खरीद कर किश्त भरने में अधिक फर्क नहीं है और वो जो भी कर रहा है मैं उससे सहमत हूं। हर बच्चा तरक्की करना चाहता है इसमें हर्ज ही क्या है" तब कमला ने थोड़ा नाराज़ होते हुए अपने पति से कहा था "वो यहां पर भी तरक्की कर सकता था उसे बाहर जाकर नौकरी करने की क्या जरूरत थी" तब देवनाथ ने मुस्कराते हुए कमला से कहा था "आलोक ने जो डिग्री ली है, उस डिग्री से उसे अमरीका में अधिक पैसे कमाने का मौका मिलेगा उसे हिंदुस्तान में इतनी अच्छी नौकरी नहीं मिल सकती थी" तब कमला ने थोड़ा नाराज़ होते हुए कहा था "और यहां उसकी मां का क्या होगा वो अब बूढ़ी हो रही है और अब उसे भी किसी के सहारे की जरूरत है, USA में नौकरी करने से पहले आलोक को अपनी मां के बारे में भी सोचना चाहिए था" देवनाथ को लगा कि कमला भी ठीक ही कह रही थी पर जो होना था वो हो चुका था, आलोक अपनी मां को हिन्दुस्तान में छोड़ कर USA वापिस लौट चुका था।

इस बीच कभी कभी आलोक अपनी मां को फोन करके उसका हालचाल पूछता रहता था और एक दिन आलोक ने अपनी मां को फोन पर एक खुशखबरी सुनाई और अपनी मां से कहा "मां अब तुम दादी बनने वाली हो और अब तुम जल्दी से अपना पासपोर्ट और वीज़ा बनवा लो मैं तुम्हें अमरीका आने जाने की टिकटें भेज रहा हूं" इस खुशखबरी को सुनकर माया की खुशी का ठिकाना नहीं रहा था और उसी दिन उसने यह

खबर कमला और देवनाथ को भी सुनाई थी और फिर तीनों ने मंदिर में प्रसाद चढ़ा कर ईश्वर का आशीर्वाद लिया था। कमला और देवनाथ की मदद से माया का पासपोर्ट और वीज़ा जल्दी ही बन गया था और माया ने कमला और देवनाथ की मदद से विदेश जाने के लिया अपने सारे आवश्यक कार्य कर लिए थे और उन्होंने इस बात की सूचना आलोक को भी दे दी थी और आलोक ने कुछ दिनों में ही अपनी मां की अमरीका आने और जाने की टिकटें भेज दी थी।

कमला और देवनाथ माया को एयरपोर्ट छोड़ने आए थे और कमला ने माया को गले से लगाते हुए कहा था "ऐसे लम्हें ज़िंदगी में बार बार नहीं आते माया और अब तुम सारी चिंताएं छोड़ कर इन खूबसूरत लम्हों का आनंद लेना अब तुम दादी बन गई हो" और यह कहते समय कमला की आँखें नम हो गई थी। तब माया ने बहुत प्रेम से कमला से कहा था "वहां पर मैं तुम्हें हर पल याद करूंगी" और इतना कहते ही माया की आंखों से झर झर आंसू बहने लगे थे। तब देवनाथ ने माया से कहा था "इतना भावुक मत होइए बहन जी यह खुशी का समय हैं और आप अपने बच्चों के साथ इसका आनंद लीजिएगा" और इतनी बातचीत करने के बाद माया एयरपोर्ट के भीतर चली गई थी और कुछ समय के बाद ही उसका जहाज अमरीका की ओर रवाना हो गया था। अमरीका का एक शहर सेनफ्रेंसिस्को में हवाईजहाज लैंड हुआ था और वहां पर आलोक अपनी मां को लेने के लिए एयरपोर्ट आया हुआ था। मां और बेटे के मिलन के यह बेहद खूबसूरत पल थे और अपनी पोती को देखने की खुशी में माया सब कुछ भूल गई थी।

आलोक और मधु ने बहुत प्रेम और सम्मान से मां का अमरीका में स्वागत किया था और परिवार में सुख शांति के माहौल को देख कर माया बहुत खुश थी। आलोक और मधु की यह कोशिश रहती थी कि मां को अमरीका में कम से कम काम करना पड़े पर मुश्किल यह थी कि अमरीका में सब काम खुद ही करने पड़ते थे और माया इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानती थी क्योंकि अपने विवाह के बाद उसने कुछ वर्ष अमरीका में ही गुजारे थे और माया जानती थी कि अब मधु और आलोक पर अपनी बेटी की देखभाल की भी ज़िम्मेदारी थी, पर माया अमरीका में अपने बेटे के पास आकर इतनी खुश थी कि उसने वहां पर सब काम करने के लिए अपनी कमर कस ली थी पर यह बात भी सच थी कि अब माया पर उम्र का रंग चढ़ चुका था और अब वो थोड़ा सा काम करने के बाद ही थक जाती थी पर उसने यह बात कभी भी बच्चों पर ज़ाहिर नहीं

होने दी थी। अमरीका में माया के 6 महीने सुख चैन से बीत गए थे और वीज़ा के कानून के मुताबिक इससे अधिक दिन रहने की उसे इजाज़त नहीं थी और उन्हीं खूबसूरत यादों को अपने दिल में संजोए, माया हिंदुस्तान वापिस लौट आई थी और उसने कमला और देवनाथ को वहां पर गुज़रे एक एक पल की जानकारी दी थी और कमला और देवनाथ यह देख कर बहुत खुश हुए थे कि माया अमरीका से बहुत खुश हो कर वापिस लौटी थी।

इसी तरह माया का अमरीका आना जाना जारी रहा और पांच साल कैसे बीत गए इस बात का पता भी नहीं चला पर जब माया अमरीका से अंतिम बार हिन्दुस्तान वापिस लौटी तो वो कुछ बीमार सी दिखाई दे रही थी और उसे देखने से ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसने अमरीका में अपनी शारीरिक क्षमता से अधिक कार्य किया था जिसकी वजह से अब माया थोड़ी बीमार भी रहने लगी थी पर अमरीका से जब भी आलोक का फोन आता था तब माया उससे ये ही कहती थी कि वो एक दम ठीक है पर वास्तविकता यह नहीं थी। अब माया बीमार रहने लगी थी और वो पिछले कुछ दिन से अस्पताल में दाखिल थी और कमला और देवनाथ ने माया को बहुत समझाया था कि वो अपने बीमार होने की खबर आलोक को भी कर दे पर माया इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानती थी कि आलोक अपने काम काज में इतना उलझा हुआ है कि अब उसके लिए हिंदुस्तान आना इतना आसान काम नहीं होगा और वो इस बात को भी जानती थी कि आलोक अमरीका में उसके बारे में सोच कर बहुत चिंतित हो जाएगा और ये ही सब सोच कर माया ने अपनी बीमारी की बात आलोक से छुपा ली थी पर एक दिन वही हुआ जिसका डर था अधिक चिंता करने की वजह से और शारीरिक क्षमता से अधिक काम करने की वजह से माया के स्वस्थ पर बहुत खराब प्रभाव पड़ा था और उसे गंभीर बीमारियों ने आ घेरा था और इस समय वो अस्पताल में ICU के वार्ड में दाखिल थी और माया ने कमला और देवनाथ को आलोक को कुछ भी बताने के लिए मना किया हुआ था पर जब डॉक्टरों ने कमला और देवनाथ को माया की गंभीर अवस्था की जानकारी दी और उन्हें बताया कि अब माया चन्द दिनों की ही मेहमान रह गई है क्योंकि उसका लिवर धीरे धीरे टूट कर टुकड़ों में बदलता जा रहा है और इस बीमारी का उनके पास कोई भी इलाज नहीं है। माया की गंभीर अवस्था को देखते हुए कमला ने आलोक को फोन करके उसे माया के स्वस्थ की सारी जानकारी दे दी थी और आलोक ने कमला से कहा था "मौसी जी मैं कुछ दिनों में ही हिन्दुस्तान पहुंच रहा हूं और मैं मां का अच्छे से अच्छा इलाज करवाऊंगा

और मां जल्दी ही ठीक हो जाएंगी" और फोन पर इतना कहने के बाद ही आलोक ने सपरिवार हिंदुस्तान जाने की तैयारी शुरू कर दी थी।

आलोक कोशिश करके जितना जल्दी हो सकता था उतना जल्दी हिन्दुस्तान पहुंच गया था और आधी रात के वक्त उसे लेने के लिए कमला और देवनाथ एयरपोर्ट पर आए हुए थे और जब उनसे मिलने के बाद आलोक ने उनसे अपनी मां का हालचाल जानना चाहा तब कमला ने आलोक से बस इतना ही कहा था "पहले घर चलो आलोक बाद में हम तुम्हें सब कुछ बता देंगे" और घर पहुंचने के बाद जब कमला ने माया के घर का दरवाज़ा खोला तब आलोक घर के हाल में अपनी मां की तस्वीर को लगा देख कर आलोक चौंक गया था और उसने प्रश्नसूचक निगाहों से कमला और देवनाथ जी की ओर देखा था तब कमला ने आलोक को रोते हुए बताया था "आलोक बेटे अब माया इस दुनिया में नहीं रही" और कमला ने आलोक को माया की बीमारी का शुरू से लेकर अंत तक का सारा किस्सा कह सुनाया था और कमला ने आलोक को यह भी बताया था कि मां तुमसे बेहद प्रेम करती थी और वो तुम्हें कोई भी तकलीफ नहीं देना चाहती थी इसीलिए माया मुझे तुम्हें कुछ भी बताने के लिए मना किया करती थी पर माया के अंतिम दिनों में उसके खराब स्वस्थ को देख कर मैं खुद को रोक नहीं पाई थी और मैंने तुम्हें फोन करके सब कुछ बता दिया था "कमला के मुंह से सारा किस्सा सुनकर आलोक और मधु फूट फूट कर रोने लगे थे और कमला उन्हें दिलासा देने का प्रयास कर रही थी और इस बीच आलोक की पांच वर्षीय छोटी बेटी ने अपने पिता को रोते देख कर उससे पूछा था" डैडी दादी मां कहां पर है वो कहीं दिखाई क्यों नहीं दे रही तब आलोक अपनी बेटी को घर के आंगन में ले आया था और उसने आसमान के एक तारे की ओर इशारा करते हुए रोते रोते ही अपनी बेटी से कहा था "बेटे दादी अब आसमान का तारा बन चुकी हैं और अब हम उसे कभी भी नहीं मिल पाएंगे" यह बहुत भावुक कर देने वाले पल थे तब कुछ सोच कर कमला ने आलोक के हाथों में माया का लिखा अंतिम पत्र पकड़ाया था और उससे कहा था "यह तुम्हारी मां का पत्र है जो उसने अपनी जिंदगी के अंतिम पलों में तुमको लिखा था" और उस पत्र को आलोक के हाथों में देते समय कमला बहुत भावुक हो गई थी और वो रोने लगी थी और उस पत्र में लिखा था।

आलोक शायद जब तक तुम हिन्दुस्तान पहुंचोगे तब तक मेरा देहांत हो चुका होगा पर बेटे मेरे मरने के बाद तुम अधिक दिन तक दुखी मत होना और अपना और मधु का

ध्यान रखना और मेरी पोती को बहुत प्यार देना और हो सके तो इस घर को कभी मत बेचना और एक बात कहना चाहती हूं बेटे कि कमला ने मुझे बहनों से भी बढ़ कर समझा है तुम उनका सदा सम्मान करना और तुम जब भी हिंदुस्तान आकर कमला से मिलोगे तुम्हें ऐसा अनुभव होगा जैसे तुम मुझ से मिल रहे हो। अपना ध्यान रखना।

तुम्हारी मां माया

अपनी मां के पत्र को पढ़ने के बाद मधु और आलोक फूट फूट कर रोने लगे थे और कमला और देवनाथ उन्हें चुप कराने का प्रयास कर रहे थे और आलोक रोते हुए सिर्फ एक ही बात कह रहा था "मां अमरीका जाकर मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई" और कुछ समय वहां पर बैठने के बाद कमला और देवनाथ अपने घर वापिस लौट गए थे और यह बात सच थी कि आलोक के साथ साथ अब कमला को भी माया को भूलने में वर्षों लगने थे क्योंकि उसने माया को अकेलेपन की चक्की में पिसते देखा था पर इस बात को आलोक को बता कर वो उसे और दुखी नहीं करना चाहती थी और कमला इस बात को भी जानती थी कि आलोक एक आज्ञाकारी पुत्र था पर अमरीका जाने के बाद वो वहां की चकाचौंध देखकर कुछ समय के लिए सब कुछ भूल गया था।

आलोक उस पल बहुत उदास था और वो अपनी मां की तस्वीर को बहुत ध्यान से देख रहा था और मां की तस्वीर देखने पर उसे कुछ ऐसा अनुभव हुआ था, जैसे उसकी मां उससे कह रही हो "चिंता मत करो आलोक सब ठीक हो जाएगा और तुम मुझे जब भी याद करोगे अपने करीब पाओगे" और आलोक ख्यालों में अपनी मां की आवाज़ सुनकर बहुत भावुक हो गया था और अचानक उसके मुंह से निकला था "मां तुम मुझे माफ कर देना" और इतना कह कर वो फूट फूट कर रोने लगा था और मधु उसको चुप कराने का प्रयास कर रही थी।

समाप्त

कहानी 33: यात्रा

मैं कुछ दिन के लिए ऋषिकेश में यात्रा पर आया हुआ था और मुझे खुद नहीं पता था कि मेरी इस यात्रा का मक़सद क्या था। मैं सुबह तड़के ही गंगा जी के किनारे नदी के साथ बने पथ पर पैदल निकल जाता था और उस समय साधु संत गंगा जी के तट पर पूजा अर्चना कर रहे होते थे और चारों तरफ मंदिर की घंटियों की संगीतमय आवाज़ गूंज रही होती थी जो बरबस ही सबका ध्यान अपनी तरफ खींच लेती थी। जब सुबह की सैर करने के बाद मैं वापिस लौट रहा होता था तब तक गंगा जी के तट पर आने जाने वाले तीर्थ यात्रियों का तांता लग चुका था। फिर मैं एक छोटी सी दुकान पर बैठ कर चाय का आनंद लेने लगा था और फिर कुछ समय के बाद मैं वापिस अपने होटल में लौट आया था। मेरी कुछ दिनों से किसी से भी कोई बातचीत नहीं हुई थी और पता नही क्यों शायद मैं उस पल अपने भीतर आत्म मंथन कर रहा था या शायद उस पल मैं खुद को खोज रहा था। वास्तव में मेरी इस यात्रा का मक़सद क्या था, इस बारे में मुझे खुद भी ठीक से पता नही था। शायद उस पल मेरा मन अशांत था या शायद मैं उस पल जीवन में कोई नई राह ढूंढने की कोशिश कर रहा था या शायद यह सिर्फ मेरे आराम के पल थे और मैं अपनी

सोचों पर पूर्णविराम लगाने की कोशिश में था, पर यह बात सच थी कि मुझे खुद पता नहीं था कि मेरी यात्रा का असली मक़सद क्या था।

मेरे होटल की बालकनी से गंगा जी के तट का नज़ारा बहुत साफ नज़र आता था और मेरा अधिकतर समय बालकनी में बैठ कर ही गुजारता था और एक दिन मेरी निगाह एक वृद्ध इंसान पर पड़ी थी, जो पिछले एक दो दिन से नदी के तट पर एक पतली सी चादर के ऊपर लेटा हुआ था और उसके पास ऊपर ओढ़ने के लिए बस एक पतली सी शाल ही थी जो ठंड को देखते हुए काफी नहीं थी। मैं उस वृद्ध के बारे में सोचने पर मजबूर हो गया था और उस पल मैंने मन ही मन में यह फैसला किया था कि कल सुबह मैं उनसे मिलूंगा और अगर मैं उनकी कोई मदद कर सकता हूं, तो इस विषय पर उनसे पूछ लूंगा और उस वृद्ध के बारे में सोचते सोचते पता नही कब मेरी आंख लग गई थी और मैं गहरी नींद में सो गया था।

अगले ही दिन जब मैं सुबह सैर करने के लिए निकला तो मैं उस वृद्ध इंसान के करीब गया और पता नही क्यों मैंने उनसे पूछा ही लिया था "बाबा आपकी तबियत ठीक है क्या आपने खाना खाया है" उस वृद्ध ने लेटे लेटे ही अपनी आंखें खोली थी और मेरी ओर देखा था और मुझे देख कर उनके तेजस्वी चेहरे पर बहुत कोमल सी मुस्कराहट आ गई थी। पता नही उनके व्यक्तित्व में ऐसी कौन सी कशिश थी कि मैं उनकी तरफ एक अजीब सा खिंचाव अनुभव कर रहा था। मैंने धीरे से उनके हाथ को स्पर्श किया था और फिर उनसे बहुत प्रेम से पूछा था "बाबा आपको कुछ चाहिए" तब उन्होंने मेरी और मुस्करा कर देखा था और अपने हाथ उठा कर मुझे असीस दी थी। उन्हें स्पर्श करने के बाद मुझे इस बात का अहसास हुआ कि उन्हें बहुत तेज़ बुखार था। मै उनकी इस अवस्था से हैरान था, वो वृद्ध लगभग 90 वर्ष से ऊपर के लग रहे थे और उनके आसपास अपना कोई भी नही दिखाई दे रहा था। उनकी ऐसी अवस्था देख कर मुझे उनसे थोड़ी सहानुभूति सी हो गई थीं और तब मैंने उस वृद्ध से कहा था "बाबा आपको तो बहुत तेज़ बुखार है" और मैंने उसी पल अनुभव किया कि इन्हें डॉक्टर की बहुत आवश्यकता है और ये ही सोच कर मैं पास के एक अस्पताल से डॉक्टर को साथ लेकर लौटा था। डॉक्टर ने उनकी जांच पड़ताल की और कुछ दवाइयां भी लिख कर दी थी और डॉक्टर ने मुझ से कहा था "इन्हें बुखार से बहुत कमजोरी हो गई है और इनकी यह हालत वृद्ध अवस्था की वजह से है" डॉक्टर के मुंह से यह सुनकर पता नही क्यों मुझे बहुत दुख हुआ था और मैंने उस

वृद्ध से कहा था "बाबा मैं आपके लिए दवाईयां लेकर वापिस लौटता हूं, दवाई लेने से आप बहुत जल्दी ही ठीक हो जाएंगे" उस पल उन्होंने बहुत स्नेह से मेरी ओर देखा था और वो मुस्करा दिए थे। मैं वापिस जल्दी ही लौट आया था और बाबा के पास आने से पहले मैंने दवाइयों के साथ साथ बाबा के लिए एक गद्दा, तकिया और कंबल भी ले लिया था और उस वृद्ध के पास बैठे एक आदमी की मदद से, मैंने उनको उठाया था और उनके नीचे गद्दा डाल दिया था और ऊपर से उन्हें कंबल ओढ़ दिया था। मैं उनके लिए थोड़ा भोजन भी ले कर आया था, पर उन्होंने दो तीन कोर ही खाए थे और उन्हें दवाई खिलाने और उनके करीब कुछ फल रखने के बाद मैंने बाबा से पूछा था "बाबा आपको कुछ चाहिए" तब उन्होंने मुस्करा कर मेरी ओर देखा था और मेरे हाथों पर स्नेह से स्पर्श किया था और पहली बार हाथ जोड़ कर मुझ से कहा था "आपका बहुत बहुत धन्यवाद" और मैंने महसूस किया था कि यह शब्द भी उन्होंने बहुत कठिनाई से बोले थे। जाने से पहले मैंने उनसे कहा था "बाबा मैं कल फिर आऊंगा" और उस पल उन्होंने मेरी ओर मुस्करा कर देखा था और पता नही क्यों मुझे उनकी उस मुस्कराहट से अपने भीतर एक अजीब सा सुकून का अहसास हुआ था, पता नही वह क्या था और जब मैं वहां से अपने होटल में लौट रहा था तब मैंने महसूस किया था कि वो वृद्ध मुझे जाते हुए बहुत प्रेम से देख रहे थे।

उस दिन मैंने बहुत बेमन से भोजन किया था और मैं मन ही मन यह सोचने पर मजबूर हो गया था कि इस वृद्ध की ऐसी हालत क्यों हुई थी, क्या वो इस सब के खुद जिम्मेदार थे, क्या वो एक खोजी इंसान हैं, साधु हैं या शायद घर से नाराज़ होकर यहां आ गए होंगे या शायद उनका इस दुनिया में कोई था ही नहीं, वो इस दुनिया में बिलकुल अकेले थे, क्या पता इस बात का सच क्या था, पर फिलहाल वो बहुत दयनीय अवस्था में थे और उस वृद्ध के बारे में सोच कर रात भर मैं करवटें बदलता रहा था और सारी रात मुझे बहुत अजीब सी बैचेनी सी रही थी और सुबह 4 बजे के लगभग मेरी आंख लग गई। सुबह जब मेरी आंख खुली उस समय सुबह के 8 बज रहे थे और उस पल भीतर जिज्ञासा लिए हुए मैं उस वृद्ध का हाल चाल जानने के लिए अपनी बालकनी से उन्हें देखने लगा था और मैंने देखा कि जहां पर बाबा लेटे हुए थे वहां पर अब कुछ लोग इकट्ठे हुए थे और यह देख कर मैं जल्दी से तैयार हुआ था और नदी के तट पर पहुंचा गया था और मुझे यह देख कर बहुत निराशा हुई कि बाबा ने अपने प्राण त्याग दिए थे और उनके पास फल

और दवाई अभी भी पड़े हुए थे। मैंने निकट से उनके चेहरे को बहुत ध्यान से देखा था और मैंने देखा कि उनके चेहरे पर अभी भी हल्की सी मुस्कराहट थी और उन्हें देख कर ऐसा अहसास हो रहा था जैसे उन्हें पूर्ण रूप से तृप्ति मिल गई थी। यह देख कर मैं सोच में पड़ गया था पता नही मैं उस पल निराश था या क्या था पर उस पल भी मेरे मस्तिष्क में उनका मुस्कराता हुआ चेहरा घूम रहा था और उनके कहे शब्द मेरे कानों में प्रतिध्वनियाँ कर रहे थे, जो मुझ से बार बार कह रहे थे "आपका बहुत बहुत धन्यवाद", उस पल मैंने देखा कि वहां पर बहुत से लोग इकट्ठे हो चुके थे और सब उनके दाहसंस्कार की तैयारी करने में लगे थे। बस उसके बाद मैं ऋषिकेश एक दो दिन और रुका था और फिर वापिस अपने घर लौट पड़ा था और घर वापिस आते ही मेरी पत्नी सुधा ने मुझ से पूछा था "आपकी यात्रा कैसी रही" मैंने चुपचाप अपना बैग एक कोने में रख दिया था और खामोश सा सोफे पर बैठ गया था। शायद उस पल मेरे दिमाग पर बाबा की मृत्यु का बहुत गहरा आघात लगा था और यह सच था कि वो मेरे कुछ भी नही थे पर पता नही क्यों, वो फिर भी मुझे अपने अपने से ही लगे थे, ऐसा क्यों होता है और मैं इसी बात पर मन ही मन में विचार कर रहा था कि तब तक सुधा मेरे लिए चाय बना कर ले आई थी और फिर मैंने उसे वह सब किस्सा कह सुनाया था जिसे सुनकर वह भी थोड़ी उदास हो गई थी पर फिर उसने मुझे दिलासा देते हुए मुझ से कहा था "शायद आपका उस बाबा से पिछले जन्मों का कोई लेना देना होगा और शायद वो आपका ही इंतज़ार कर रहे होंगे" मेरी पत्नी की ईश्वर पर बहुत आस्था थी और उसने उसी पल घर में बने मंदिर में दीया जला दिया था और भगवान को प्रणाम किया था और मुझे भी सोफे से उठाया और मुझ से कहा था कि "आप ईश्वर को प्रणाम कीजिए और इससे बाबा की आत्मा को शांति मिलेगी, आप उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना कीजिए इससे आपको भी शांति का अनुभव होगा" उस पल मैं सुधा को बहुत प्रेम से देख रहा था और मुझे लगा कि वो ठीक कह रही थी और मैंने प्रार्थना करने के बाद अनुभव किया था कि प्रार्थना करने के बाद मुझे मेरे भीतर एक अजीब सी तृप्ति का अहसास हुआ था जिसे शब्दों से बयां कर पाना शायद मेरे लिए मुमकिन नहीं था।

समाप्त

कहानी 34: बोलने वाला नीला तोता

आज कमला को मालकिन ने फिर गुस्सा किया था और कमला रुआंसी सी होकर उस घर से बाहर निकली थी और वो अपने साड़ी के पल्लु से बार बार अपने आंसू पोंछ रही थी।

कमला का 12 वर्षीय बेटा "गणेश" घर के बाहर अपनी साइकिल पर उसका इंतज़ार कर रहा था और गणेश को देख कर कमला ने झट से अपने आंसू पोंछ लिए थे वो नही चाहती थी कि उसका बेटा गणेश उसकी आँखो में कोई दुख के भाव देखे पर वो कहते हैं न कि चेहरे की मायूसी सारे अनकहे किस्से ब्यां कर देती है और इसी वजह से गणेश अपनी माँ के उदास चेहरे को देख कर ही सारी कहानी समझ गया था कि आज फिर मालकिन ने उसकी माँ को डांटा होगा।

कमला लोगों के घर पर साफ सफाई और चुल्हे चौके का काम करती थी और अक्सर लोग उसके काम में नुक्स निकाल कर उसे गुस्सा कर दिया करते थे। पर वो कहते

हैं न कि ईश्वर हर किसी की ज़िन्दगी में उम्मीद की एक किरण ज़रूर जगाये रखता है और कमला की ज़िन्दगी में उम्मीद की वो किरण उसका बेटा "गणेश" था।

माँ की उदासी को भांप कर गणेश ने बहुत मायूस हो कर अपनी माँ से पूछा था "क्या हुआ माँ ? क्या आज फिर मालकिन ने तुम्हें गुस्सा किया है" अपने मासूम से बच्चे के चेहरे पर आए मायूसी के भावों को देख कर कमला ने झट से अपने बेटे से कहा था "अरे नही रे तू तो कुछ भी सोचता रहता है" माँ बेटे के इस खूबसूरत रिश्ते में यह अजीब बात थी कि माँ अपने बेटे से कुछ भी नही कहती थी पर बेटा माँ के चेहरे की उदासी देख कर दिल का सारा किस्सा समझ लेता था। गणेश की माँ गणेश की साइकिल पर पीछे बैठ गई थी पर अभी तक उसकी नज़रों के सामने मालकिन का गुस्से से तमतमाया हुआ चेहरा घूम रहा था। गणेश ने जब माँ को खामोश देखा तब उसने माँ से कहा "माँ माँ आज मैंने एक नीले रंग का तोता देखा था" कमला अपने बेटे की कहानियों के मीठे किस्से बरसों से सुनती आ रही थी, उस पल गणेश के दिल की सब कहानी समझ कर कमला ने अपने बेटे से प्यार से कहा था "चल हट, तोता भी कहीं नीले रंग का होता है, तोता तो हरे रंग का होता है" फिर कुछ सोच कर कमला ने गणेश से कहा था "अच्छा बता तो, तुमने वह नीला तोता कहां पर देखा था"।

"माँ मैं सच कह रहा हूँ वो नीले रंग का तोता एक आम के वृक्ष पर सबसे ऊँची डाल पर बैठा हुआ था" गणेश ने यह बात साइकिल चलाते हुए बहुत मासूमियत से कही थी।

"झुठा कहीं का, चल बता तो वो कौन से वृक्ष पर बैठा था" गणेश की मीठी बातें सुन कर कमला का गुस्सा फुर्र से हवा में उड़ कर कहीं खो गया था और यही तो गणेश भी चाहता था। गांव से हर रोज़ लगभग 2 किलोमीटर साइकिल चला कर गणेश अपनी माँ को पास की सोसाइटी में लेने आता था और गांव से सोसाइटी तक का रास्ता बेहद खूबसूरत था। रास्ते में आम के बगीचे भी लगे हुए थे और एक जगह पर गणेश ने अपनी साइकिल रोक कर अपनी माँ से कहा था "माँ मैंने इसी वृक्ष पर उस नीले तोते को देखा था" और कुछ पल के लिए गणेश उस नीले तोते को खोजने का अभिनय करने लगा था। पर सच तो यह था कि गणेश खुद भी बहुत अच्छी तरह से जानता था कि उसने किसी नीले तोते को नही देखा था। माँ भी गणेश के साथ साथ उस नीले तोते को खोजने का अभिनय करने लगी थी और मज़े की बात यह थी कि गणेश की माँ जानती थी कि उसका

बेटा गणेश उसका मन बहलाने के लिए एक काल्पनिक किस्सा सुना रहा था। पर सच को छूपाते हुए कमला ने गणेश से कहा था "अब बता कहाँ है वो तेरा नीला तोता" तब गणेश ने भोला सा मुंह बनाते हुए अपनी मां से कहा था "अरे माँ तोते भी कोई एक जगह पर थोड़े ही बैठ रहते हैं, वो शायद कहीं पर उड़ गया होगा" गणेश अभी भी उस नीले तोते को खोजने का अभिनय कर रहा था। कमला गणेश की सारी कहानी समझती थी और उसने नकली गुस्से से अपनी आँखे बड़ी करके गणेश से कहा था "अब घर चल तेरे पिता जी रास्ता देख रहे होंगे"।

"हाँ मां चलो, पर अगर मुझे फिर वो नीला तोता कहीं पर दिखाई दिया, तो आपको ज़रूर बताऊँगा" और इतना कह कर गणेश चुपके से मां के चेहरे पर उभर आए भावों को देख रहा था पर उसका वृक्ष पर तोता खोजने का अभिनय अभी तक समाप्त नहीं हुआ था।

तब मां ने गणेश से कहा था "हाँ चल अब देर हो रही है"और यह कहते हुए गणेश की माँ ने गणेश के सिर पर प्यार से हल्की सी चपत लगाई थी। गणेश एक बार फिर अपनी साइकिल पर सवार हो गया था और उसकी माँ साइकिल पर पीछे बैठी गई थी। गणेश खुश था क्योंकि अब उसकी माँ फिर से मुस्कराने लगी थी और सच में अपने बेटे की भोली बातें सुन कर कमला के चेहरे से उदासी फूर्र से कहीं उड़ चुकी थी और भीतर से कमला जानती थी कि गणेश उसे रुआंसा देख कर उसे खुश करने की कोशिश कर रहा था और उधर गणेश भी अपनी माँ के चेहरे पर मुस्कान को आया देख कर मन ही मन में बहुत खुश था। गणेश ने साइकिल चलाते हुए अपनी माँ से कहा था "माँ तुम्हें लगता है कि मैं झूठ बोल रहा हूँ" तब कमला ने साइकिलों पर पीछे बैठे हुए ही बहुत प्यार से अपने बेटे गणेश को पीछे से पकड़ लिया था और कमला ने गणेश से कहा था "अरे नहीं रे, एक बार मैंने भी उस नीले तोते को देखा था" उस पल गणेश ने अपने चेहरे पर अश्चार्य लिए हुए अपनी माँ से कहा था "अच्छा!"

"हाँ रे मैं सच कह रही हूँ" अब गणेश की मां भी गणेश की मीठी बातों का आनंद लेने लगी थी और उसके रंग में रंग चुकी थी और मां बेटे की बातों के इन्हीं मीठे सिलसिलों में अब तक उनका घर आ चुका था। तब कमला ने बहुत प्यार से गणेश को अपनी छाती से लगा लिया था और उसके माथे को चुमा था और छोटे से गणेश ने भी

अपनी माँ को कस कर झप्पी डाली थी जैसे छोटा सा गणेश उस पल अपनी माँ के सब दुख हर लेना चाहता था और यह बात सच थी कि कमला का नीला तोता उसका बेटा गणेश था जिसकी मीठी वाणी उसके सब दुख हर लेती थी और फिर उस पल कमला अपने हाथ जोड़ कर ईश्वर से प्रार्थना करने लगी थी और वो ईश्वर से अपने बेटे गणेश की लम्बी उम्र की दुआ मांग रही थी। ईश्वर करे कि हर घर में गणेश जैसे बेटे हों और उनसे असीम प्रेम करने वाली उन्हें कमला जैसी मां मिले।

समाप्त

कहानी 35: सुघड़ गृहणी

यह कहानी 1970 के आसपास की है। 1970 में कमला का विवाह एक छोटे किसान भानुदास से हुआ था। कमला ने 10 वीं कक्षा तक पढ़ाई की हुई थी पर भानुदास अधिक पढ़ा लिखा नहीं था पर भानुदास बहुत मेहनती और ईमानदार इंसान था और वो अपने खेतों पर जी जान से मेहनत करता था। भानुदास के पास 4 एकड़ ज़मीन थी जिसकी देखभाल वो अकेला ही करता था और खेती की ज़मीन के पास ही उनका एक छोटा सा दो कमरों का कच्चा सा घर था और उन्होंने अपने घर के आसपास बगीचा लगाया हुआ था और उनके बगीचे में देसी आम के 3 बहुत बड़े वृक्ष भी लगे हुए थे जिन पर बहुत फल आता था पर देसी आम के फल का अधिक मूल्य न होने कारण आम के उस फल से उन्हें कोई विशेष लाभ नहीं होता था। भानुदास अपने खेतों पर जी तोड़ मेहनत करता था और खेतों से जो भी गेहूं और चावल पैदा होते थे उससे उनका साल भर का निर्वाह हो जाता था और कमला और भानुदास अपनी छोटी सी दुनिया में बहुत खुश थे। भानुदास के पास एक गाय और एक जोड़ी बैल थे जिससे उनकी खेती बाड़ी की और घर की सारी जरूरतें पूरी हो जाती थी। पर कमला थोड़ी पढ़ी लिखी महिला थी इसलिए वो अपने

परिवार के भविष्य के बारे में भी सोचती थी और घर पर लगे आम के ऊंचे लम्बे वृक्षों को देख कर उसके मन में उम्मीद की एक किरण जगी थी और इसी विचार ने कमला को काम करने के लिए एक नई राह दिखाई दी थी। कमला को लगता था कि अगर अपने पति के साथ वो भी कोई काम कर लेगी तो उससे उनके घर की आमदनी थोड़ी बढ़ जाएगी और उससे उनकी जिंदगी की राहें थोड़ी आसान हो जाएगी और ऐसा ही हुआ। कमला की मां ने उसे आम का आचार बनाना सिखाया था और कमला ने इसी सोच के रहते अपने घर पर लगे आम के वृक्ष के फल से आम का आचार बनाने का निर्णय कर लिया था क्योंकि उसने देखा था कि भानुदास आम के वृक्षों पर लगे आमों को बहुत सस्ते दामों पर बेच देता था। सब सोच विचार करने के बाद कमला ने भानुदास को अपने दिल की बात बताई थी कि वो आम के आचार का व्यापार करने की सोच रही है। भानुदास दिल का बहुत अच्छा इंसान था और वो अपनी पत्नी के दिल की बात रखनी जानता था और उसे इस कार्य में नफे नुकसान की भी कोई विशेष चिंता नहीं थी और उसे लगता था कि जो भी होगा पर उसका अपनी पत्नी का साथ देने के इस निर्णय से कमला का दिल खुश हो जाएगा और अपने पति का साथ मिलने से अब कमला दो गुना अधिक उत्साह से आम का आचार बनाने की अपनी योजना पर काम करने लगी थी और उसने कुछ दिनों में ही आम का आचार बनाने के लिए बहुत सारी सामग्री अपने घर पर इकट्ठी कर ली थी और उसने अपने घर में लगे तीनों वृक्षों के कच्चे आम बारी बारी से वृक्षों से नीचे उतरवा लिए थे और उन्हें बहुत सफाई से काटने के बाद और उनका आचार बना कर, 1 किलो, 1/2 किलो और 1/4 किलो के छोटे डिब्बों में भर लिया था और उन डिब्बों पर बाज़ार से बनवाया हुआ सुघड़ गृहणी का स्टीकर चिपका दिया था। आम के 3 वृक्षों से उन्हें लगभग 700 किलोग्राम कच्चे आम प्राप्त हुए थे और कमला ने बिना किसी महिला की सहायता के लगभग एक महीने में ही उन कच्चे आमों का आचार बनाकर सुरक्षित डिब्बों में पैक कर दिया था और वो अपने इस काम से बहुत खुश थी। अगले ही दिन भानुदास और कमला शहर की उस दुकान पर गए थे जिस दुकानदार के पास वो अपने खेतों से उपजा गेहूं और चावल बेचते थे और उस दुकानदार को उन्होंने अपना सुघड़ गृहणी के आचार का डिब्बा दिखाया था और एक डिब्बा खोलकर उस दुकानदार को अपने हाथों से बना आचार खाने के लिए दिया था और उस दुकानदार को कमला के हाथों से बना हुआ आम का आचार बहुत पसंद आया था पर उसने इतने

अधिक डिब्बे खरीदने में अपनी असमर्थता दिखाई थी पर साथ ही उसने कमला और भानुदास को एक सुझाव भी दिया था कि वो अपने आम के आचार के सारे डिब्बे उसके एक मित्र को, जो होलसेलर का कारोबार करता था उसे बेच दें और कमला और भानुदास की थोड़ी से मेहनत से और उस दुकानदार के सहयोग से उन्होंने अपना सारा आम का आचार उस होलसेल के दुकानदार को बेच दिया था और उस दुकानदार ने लगभग एक महीने के भीतर ही उन्हें पैसे भी दे दिए थे और इस तरह से कमला का सुघड़ गृहणी का आम का आचार बनाने का कारोबार सफलता पूर्वक चल निकला था। इस कार्य से उत्साहित होकर कमला ने भानुदास को सुझाव दिया था कि वो अपने खेतों के किनारों पर आम के और अधिक वृक्ष लगा दे जिससे भविष्य में उन्हें कच्चे आम और अधिक मात्रा में प्राप्त हो सकें और भानुदास ने ऐसा ही किया था और आज उस बात को 12 वर्ष बीत चुके थे और कमला का आम का आचार बनाने का कारोबार अब जोर पकड़ चुका था इसलिए अब कमला अपने आसपास के किसानों से भी कच्चे आम खरीदने लगी थी और उसने अपनी सहायता करने के लिए दो महिलाओं का सहयोग लेना भी शुरू कर दिया था। इसी तरह कमला को आम के आचार का व्यापार करते हुए अब लगभग 12 वर्ष हो गए थे और अब कमला और भानुदास के दो बच्चे एक लड़का और एक लड़की थे और वो कमला के मार्गदर्शन से अच्छे स्कूल में पढ़ने लगे थे और उनका छोटा सा परिवार बहुत सुख से रहने लगा था।

लगभग 18 वर्ष के बाद कॉलेज की शिक्षा समाप्त कर लेने के बाद कमला का बेटा फौज में भर्ती हो गया था और कमला ने अपनी बेटी की कॉलेज की शिक्षा समाप्त होने के बाद एक योग्य वर देख कर उसका विवाह कर दिया था और विवाह वाले दिन कमला ने अपनी बेटी से बहुत भावुक होकर कहा था "बेटी अपने घर को अपने हाथों से संवारना और अपने पति की हर क्षेत्र में सहायता करना और पाई पाई जोड़ कर अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देना और ये ही तुम्हारा कर्तव्य है" कमला की बेटी ने अपने माता पिता से अच्छे संस्कार लिए थे और उसने भावुक होकर अपनी मां से कहा था "मां आप जैसा इस दुनिया में कोई भी नहीं हो सकता आपने कैसे अपनी बुद्धिमानी से तिनका तिनका जोड़ कर इस घर को बनाया है और मैं आपकी दी हुई शिक्षा को हमेशा याद रखूंगी" उस पल कमला के चेहरे पर ममतामई मुस्कान आ गई थी और उसने अपनी बेटी को अपने गले से लगा लिया था। कुछ वर्षों के बाद कमला और भानुदास के बेटे का भी विवाह हो

गया और नौकरी की मजबूरी की वजह से उसे अपनी पत्नी को साथ लेकर जाना पड़ा था क्योंकि फौज की नौकरी में उसका एक दो वर्ष के बाद तबादला हो जाता था उसकी रहने की व्यवस्था भी वहीं पर कर दी जाती थी। कमला और भानुदास ने अपनी बहू और बेटे को भी वो ही शिक्षा दी थी और उनसे उन्होंने कहा था "आप दोनो भी तिनका तिनका जोड़ कर अपना घर बनाना और अपने होने वाले बच्चों को अच्छी शिक्षा देना" कमला और भानुदास के लिए वह पल बहुत भावुकता भरे थे और उन्हें पता था कि अब उनके बेटे को उनके साथ रहने का अधिक समय नहीं मिलेगा पर फिर भी कमला और भानुदास इस बात से बहुत खुश थे कि उनके दोनो बच्चे अपने पांव पर खड़े हो चुके थे और अब उन्हें उनकी जरूरत नहीं थी और शायद हर मां बाप के लिए यह बहुत खुशी की बात होती है पर साथ ही थोड़ी उदासी भी होती है क्योंकि हर मां बाप को इस बात का पता होता है कि जब उनके बच्चे अपने पांव पर खड़े हो जाते हैं, तब उनके पास अपने माता पिता के लिए अधिक समय नहीं होता और जब कमला और भानुदास के दोनो बच्चे अपने माता पिता का घर छोड़कर अपनी मंज़िल की ओर रवाना हुए तब वह क्षण कमला और भानुदास के लिए बहुत भावुकता भरे पल थे पर दोनो इस बात को जानते थे कि एक ना एक दिन यह सब तो होना ही था और परिंदों को अपना नया घोंसला बनाने के लिए अपने माता पिता के बनाए घोंसले में से उड़ना ही था और ये ही समाज का नियम था।

अब तक अपनी जिम्मेदारियां निभाते निभाते कमला और भानुदास बूढ़े हो चुके थे और अब वो दोनो नाती पोतों वाले हो गए थे पर अब इसके साथ ही उनकी जिंदगी की कठिन परीक्षा का समय भी शुरू हो चुका था क्योंकि 65 वर्ष की उम्र में भानुदास का खेतों पर जाकर काम करना अब इतना आसान काम नहीं था और परिवार में उनका हाथ बटाने वाला अब कोई सदस्य नहीं था और दूसरी तरफ कमला की कमर भी अब उम्र के इस पड़ाव पर पहुंच कर थोड़ी झुक सी गई थी पर कमला अब भी कमर कस कर भानुदास के साथ मेहनत करने में जुटी हुई थी और वो अभी भी सुघड़ गृहणी का आम का आचार बनाने का काम करती थी पर यह बात भी सच थी कि अब उसमें पहले जैसी ऊर्जा और उत्साह नहीं रहा था।

रात को खाना खाने के बाद दोनो अपने काम से थके हारे अपने बिस्तर पर आराम कर रहे थे पर उस समय भानुदास के चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ दिखाई दे रही थी

और यह देख कर कमला ने भानुदास से पूछा था "क्या बात है जी, आप बहुत चिंतित दिखाई दे रहे हैं" तब भानुदास ने कमला की ओर देख कर दुखी मन से उससे कहा था "समय पर बारिश न होने के कारण इस साल फसल आधी ही हो पाएगी फिर हमारा साल भर का गुज़र बसर कैसे होगा और कुछ दिनों में हमारी बेटी अपने बच्चों को साथ लेकर घर पर आने वाली है और उसे भी तो हमें कुछ देकर भेजना होगा बस ये ही सब सोच कर मैं चिंतित हो रहा था" तब कमला ने प्यार से अपने पति का हाथ अपने हाथों में थाम कर उससे कहा था "तुम चिंता मत करो जी, मैंने कुछ पैसे बचा कर रखे हुए हैं और सब ठीक हो जाएगा और हम बेटी को भी खाली हाथ नहीं भेजेंगे, मैंने उसके दुख सुख के लिए एक सिलाई मशीन खरीद कर रखी हुई है और अबकी बार जब वो घर पर आएगी तो मैं उसे वही सिलाई मशीन दे दूंगी जो उसे सुख दुख में काम आएगी तुम चिंता मत करो और ईश्वर पर विश्वास रखो, वो सब ठीक कर देगा" कमला के मुंहसे सांत्वना के मीठे बोल सुनकर भानुदास को कुछ सुकून का अहसास हुआ था और वो दोनो सुख चैन की मीठी नींद सो गए थे।

कुछ दिनों के बाद कमला की बेटी अपने दो बच्चों को साथ लेकर अपनी मां के घर रहने के लिए आई तो कमला ने अपनी बेटी के उतरे हुए चेहरे को देख कर उससे पूछा था "क्या बात है बेटी तुम्हारा चेहरा क्यों उतरा हुआ है" तब कमला की बेटी ने अपना दुखड़ा रोते हुए दुखी मन से अपनी मां से कहा था "मां आजकल इनका कारोबार इतना अच्छा नहीं चल रहा है क्या करूं कुछ समझ नहीं आता" तब कमला ने बहुत प्यार से अपनी बेटी का हाथ अपने हाथों में थाम कर ममतामई मीठी वाणी से अपनी बेटी से कहा था "तुम चिंता क्यों करती हो सब ठीक हो जाएगा हम हैं न बस तुझे एक काम करना होगा और वो ये कि मुश्किल समय में अपने पति का साथ देना होगा और अपने घर को जोड़ कर रखना होगा" फिर कुछ सोच कर कमला ने अपनी बेटी से कहा था "मैंने तेरे सुख दुख के समय के लिए एक सिलाई मशीन खरीद कर रखी हुई है और अगर तुम सिलाई का काम सीख लोगी तो इससे तुम अपने पति की थोड़ी मदद कर पाओगी सिलाई के काम से तुम्हें थोड़ी आमदनी हो जाएगी, और बेटी, काम करते रहने से इंसान खुश रहता है और उसमें ज़िंदगी की कठिनाइयों से जूझने की शक्ति आ जाती है, मुझे यकीन है कि तुम बहुत जल्दी ही अपनी कठिनाइयों पर विजय पा लोगी" इतना कह कर कमला बहुत स्नेह से अपनी बेटी की ओर देखने लगी थी और कमला के मीठे बोलों ने उसकी

बेटी पर जादू का सा असर किया था और वो बहुत भावुक हो गई थी और कमला ने बहुत प्यार से अपनी बेटी को अपने गले से लगा लिया था।

कमला की बेटी 15 दिनों तक गांव में रही थी और कमला ने उसे 15 दिनों में ही एक दर्जी की सहायता से सिलाई कढ़ाई का थोड़ा बहुत काम सिखा दिया था और काम सीखने की तीव्र इच्छा के रहते वो बहुत जल्दी ही सिलाई कढ़ाई का काम सीख गई थी और जब कमला की बेटी का वापिस लौटने का समय आया तब कमला ने नई सिलाई मशीन अपनी बेटी को दी और उसे सदा सुखी रहने का आशीर्वाद दिया और कमला ने देखा कि अब उसकी बेटी की आंखों में आत्मविश्वास झलक रहा था और यह देख कर कमला ने सुख चैन की सांस ली थी।

कमला और भानुदास के कुछ और वर्ष सुख पूर्वक बीत गए थे और इस बीच कभी उनकी बेटी उनसे मिलने गांव में आ जाती थी, तो कभी उनका बेटा अपनी पत्नी और बच्चों को लेकर गांव आ जाता था और तब कमला दादी और नानी बन कर अपनी बेटी और बहु को घरेलू इलाज के उपाय और दूसरी आवश्यक जानकारियां देती थी जो जीवन में बहुत उपयोगी थी और कमला की बहु और बेटी दोनो ही अपने गांव में आकर बहुत खुश होते थे और परिवार की सुख शांति के मामले में कमला और भानुदास बहुत भाग्यशाली थे और उन्हें अपने बच्चों से सब सुख प्राप्त हुए थे और सब बच्चे उनका बहुत आदर करते थे।

इसी तरह कुछ वर्ष और बीत गए पर कहते हैं कि सब दिन एक समान नहीं रहते और वो ही हुआ भी, एक दिन भानुदास अपने खेतों पर से थक कर घर पर आए थे और उन्होंने आते ही कमला से कहा था कि उन्हें छाती में कुछ दर्द हो रहा है पर कमला जब तक कुछ समझ पाती तब तक देखते देखते भानुदास अपने बिस्तर पर ही गिर पड़े और हार्ट अटैक की वजह से उनकी वहीं पर मृत्यु हो गई। कमला के लिए यह बहुत दुख भरे पल थे और जिंदगी की राह पर बीच रास्ते में जीवन साथी का यूं साथ छोड़ कर चले जाना बहुत दुखी कर देने वाले अहसास थे और अब कमला भी अपने पति की मृत्यु के शोक में डूब गई थी और बस अब दीवार पर लगी चंद तस्वीरें ही उनकी कहानी की याद दिलाती थी कि उन्होंने ज़िंदगी के हर मोड़ पर कैसे एक दूसरे का साथ दिया था और उन तस्वीरों को देख कर कमला की आँखें भर आती थी। यह सब देख कर कमला के बेटे ने

अपनी मां को अपने साथ ले जाना ही ठीक समझा था और कमला के बेटे ने अपने पिता की ज़मीन को काम करने के लिए ठेके पर दे दिया था जिससे उन्हें जमीन बेचनी न पड़े और अपने गांव के घर को ताला लगा कर वो अपनी मां को हमेशा हमेशा के लिए अपने साथ ले गया था और कुछ वर्ष तक अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के बाद एक दिन कमला ने भी इस दुनिया को अलविदा कह दिया था और सुघड़ गृहणी की कहानी का यही अंत हुआ था। पर कमला जहां भी थी वो अपने सब बच्चों को काम करते हुए देख रही थी क्योंकि उसके सब बच्चों ने उसकी दी हुई शिक्षा को दिल से अपना लिया था और अब वो सब सुख पूर्वक रह रहे थे और शायद यही कमला और भानुदास के किए अच्छे कर्मों का फल था।

समाप्त

कहानी 36: शिवराम

शिवराम ने गांव की एक पाठशाला में 11 वीं तक की शिक्षा ली थी और उसके माता पिता उसे आगे पढ़ाने में असमर्थ थे क्योंकि उसके माता पिता घर बनाने वाले मामूली से मजदूर थे और गांव में खेती करने के लिए उनके पास सिर्फ थोड़ी सी ही जमीन थी जिससे उनके परिवार के खाने के लिए साल भर का अनाज पैदा हो जाता था। शिवराम के दो छोटे भाई बहन भी थे जो उससे 6 से 8 वर्ष छोटे थे और वो दोनो अभी गांव की पाठशाला में पढ़ रहे थे। शिवराम ने गांव में रोज़गार तलाश करने की बहुत कोशिश की थी पर गांव में बनिए की दुकान पर मामूली सी नौकरी का काम था या फिर खेतों में मेहनत मजदूरी का काम था जिस काम से भविष्य में उनके परिवार का निर्वाह होना कठिन हो जाने वाला था और ये ही सब सोच कर शिवराम ने माता पिता की अनुमति लेकर शहर की ओर रुख किया था और उस समय उसे अपने परिवार की चिंता के साथ साथ अपने रोज़गार की चिंता भी सता रही थी क्योंकि उसे इस बात का पता नही था कि शहर में उसे कौन सा कार्य करना पड़ेगा और शिवराम कुछ दिन तक शहर में नौकरी की तलाश में यहां वहां भटकता रहा था पर उसे किसी ने कोई काम नही दिया था और इसकी एक

वजह यह भी थी कि उसका शहर में रहने का कोई ठिकाना नहीं था और शहर में किराए का कमरा लेकर रहना बहुत अधिक खर्चे वाला काम था और ये सब सोचें शिवराम को चिंता में डाल रही थी।

पर एक दिन शिवराम की मुलाकात भानुदास नाम के एक लड़के से हुई थी जो कुछ महीने पहले ही गांव से शहर आया था और उसने शिवराम को बताया कि उसने महीने भर का मरीजों की देखभाल करने का प्रशिक्षण लेने के बाद वो शहर में बूढ़े मरीज़ों की देखभाल का काम बहुत सफलतापूर्वक करने लगा था और उसने शिवराम को बताया कि अगर वो भी मरीजों की देखभाल करने का एक महीने का प्रशिक्षण ले लेता है तो वो भी इस कार्य को सफलता पूर्वक कर सकता है और इस कार्य में सबसे अच्छी बात यह थी कि अगर कोई 24 घंटे के लिए किसी बूढ़े मरीज़ की देखभाल करता है तो उसकी रहने की समस्या के साथ साथ उसके खाने पीने की समस्या का भी समाधान हो जाता था और उसके लिए उसे पल्ले से एक पैसा भी खर्चा करने की आवश्यकता नही पड़ती थी और यह देखते हुए शिवराम को यह काम अपने लिए बहुत उपयुक्त लगा था क्योंकि इस कार्य में उसके रहने और खाने पीने की समस्या का समाधान हो जाना था। मरीजों की देखभाल करने का विशेष प्रशिक्षण लेते समय शिवराम भानुदास के साथ उसके कमरे में रहने लगा था और अब तक वो दोनो बहुत अच्छे दोस्त बन चुके थे। शिवराम भानुदास को कमरे का आधा किराया और खाने पीने का आधा पैसा समय पर दे देता था और इस तरह शिवराम का एक महीने का प्रशिक्षण समाप्त हो गया था और इस बीच भानुदास ने शिवराम का उस संस्था से परिचय करवा दिया था जो संस्था कुल वेतन में से थोड़ा सा कमीशन रखकर प्रशिक्षित लोगों को बूढ़े मरीज़ो की देखभाल करने के लिए अस्पताल में या जरूरत पड़ने पर उन्हें लोगों के घर पर भी भेज देती थी और इस अच्छी व्यवस्था की वजह से प्रशिक्षित लोगों को काम ढूंढने का झंझट नहीं उठाना पड़ता था। उस संस्था ने शिवराम को उसका प्रशिक्षण समाप्त होते ही पहले ही दिन से 24 घंटे के लिए एक बूढ़े मरीज़ की देखभाल करने के लिए नियुक्त कर दिया था और अपने काम के पहले ही दिन शिवराम रात भर जागते रहने की वजह से बहुत थक गया था पर फिर भी उसने बहुत मेहनत से उस बूढ़े को सुबह नहलाया धुलाया था और सारे काम ठीक से करने के बाद वो खुद इतना थक गया था कि वो मरीज़ के पास पड़ी कुर्सी पर ही ऊंघने लगा था, पर उस पल भी उसके ख्यालों में गांव के वो दृश्य घूम रहे थे जिन दृश्यों में उसे अपने माता

पिता अपने सर पर ईंटों और बिल्डिंग बनाने का बोझ उठाए जी तोड़ मेहनत करते हुए दिखाई दे रहे थे और अपने ख्यालों में ऐसे दृश्य देख कर उसकी आंखों से आंसू बहने लगे थे जो बहुत जल्दी ही खुदबखुद सूख भी गए थे। नए काम की वजह से और अनुभव कम होने की वजह से शिवराम के कुछ दिन बहुत मेहनत मुशक्त करते हुए बीते थे और कई बार उसे रात रात भर मरीज़ के साथ जागना भी पड़ता था पर अब शिवराम ने मन ही मन में ठान लिया था कि वो सारी जिंदगी ये ही काम करेगा क्योंकि इस काम में उसे 30000/ = रुपए महीने का वेतन मिल रहा था और शिवराम जानता था कि इतने पैसे उसे और किसी भी काम में मिलने वाले नही थे और उस पर एक अच्छी बात यह थी कि इस काम में उसके रहने और खाने पीने का एक पैसा भी पल्ले से नही जाने वाला था और महीने के अंत में वेतन मिलने पर शिवराम कुछ पैसे अपने पास रख कर बाकी सब पैसे अपने माता पिता को गांव भेज देता था और दो वर्षो में ही उसके माता पिता ने गांव का कच्चा घर तोड़ कर दो कमरों का पक्का घर बनवा लिया था और उसके साथ साथ उन्होंने एक गाय भी खरीद ली थी।

शिवराम कभी कभी बनिए की दुकान पर फ़ोन करके अपने माता पिता से बातचीत कर लेता था और उसकी मां उससे हमेशा एक ही बात पूछती थी कि "तुम शहर में क्या काम कर रहे हो" तब शिवराम अपने माता पिता को झूठ बोल देता था और वो उनसे कहता था "मां मैं एक आफिस में काम कर रहा है और हमारे मालिक बहुत अच्छे इंसान हैं और उन्होंने मुझे आफिस में ही रहने के लिए एक छोटी सी जगह भी दी हुई है और मैं यहां पर बहुत खुश हूं" शिवराम जानता था कि अगर उसने अपने माता पिता को यह बताया कि वो शहर में 24 घंटे के लिए बूढ़े मरीजों की देखभाल करता है तो उसके माता पिता को बेवजह ही उसकी सेहत के बारे में थोड़ी चिंता होने लगेगी। शिवराम की मां जब भी उससे पूछती थी "शिव तू कैसा है रे" तब उस पल शिवराम हंसते हुए अपनी मां से कहता था "मां मैं बिल्कुल ठीक हूं तुम मेरी चिंता मत किया करो और हो सके तो मेरे भाई और बहन को गांव की शिक्षा समाप्त होने के बाद शहर भेज दो मैं उन दोनो को शहर में आगे पढ़ाना चाहता हूं" माता पिता शिवराम की बात सुनकर उस पर बहुत गर्व महसूस करते थे। पर वास्तविकता यह थी कि शहर में दिन रात काम करने की वजह से शिवराम के स्वस्थ पर बहुत बुरा असर पड़ा था जिससे वो थोड़ा कमज़ोर हो गया था पर शिवराम को भीतर से एक ज़िंद थी कि वो अपने सारे परिवार की परिस्थितियां बेहतर करना चाहता

था क्योंकि शिवराम को वह वक्त बहुत अच्छी तरह से याद था जब उनका परिवार दाने-दाने को मोहताज था और पैसों की किल्लत की वजह से अक्सर उनके घर में अनाज के डिब्बे खाली हो जाते थे। शिवराम ने अपने परिवार के गरीबी के दिनों को बहुत निकट से देखा और अनुभव किया था।

ऐसे ही कुछ वर्ष बीत गए थे और शिवराम के घर की परिस्थितियां अब पहले से कहीं अधिक बेहतर हो गई थी और अब उसके छोटे भाई बहन भी शहर में पढ़ाई समाप्त करने के बाद अब शहर में ही नौकरी करने लगे थे और अब तक शिवराम के माता पिता ने गांव में एक पक्का मकान बनावा लिया था और साथ ही घर के एक कोने में एक छोटी सी किराने की दुकान भी खोल ली थी जिससे उन्हें दो पैसे की आमदनी हो जाती थी।

इस बीच शिवराम के माता पिता ने शिवराम की अनुमति से एक अच्छा घर देख कर शिवराम का विवाह पक्का कर दिया था और शिवराम अपने काम से एक सप्ताह की छुट्टी लेकर गांव आ गया था और अपनी होने वाली पत्नी सुषमा को शिवराम ने अपने काम के विषय में बस इतना ही बताया था कि वो शहर में एक आफिस में काम करता है और शिवराम ने अपनी होने वाली पत्नी सुषमा को विवाह से पहले ही कह दिया था कि वो उसे अपने साथ शहर में नही रख पाएगा क्योंकि उसने अपने रहने की व्यवस्था आफिस के एक छोटे से कोने में की हुई है और बातों ही बातों में उसने अपनी पत्नी को समझाया था कि उसे गांव में ही रह कर सारे परिवार की देखभाल करनी है और वो महीने में कुछ दिन के लिए गांव ज़रूर आया करेगा और उन सबकी जरूरत के मुताबिक सब इंतज़ाम करके शहर वापिस लौट जाएगा। शिवराम की पत्नी ने भी गांव में 11 वीं तक की शिक्षा ली हुई थी और उसे शहर की कठिनाइयों के बारे में पहले से अंदाज़ा था इसलिए उसने शिवराम की आज्ञा को तुरंत मान लिया था और घर पर पढ़ी लिखी बहु के आ जाने की वजह से घर पर सब कुछ सुख शांति से चलने लगा था। पर इस बीच लगभग 10 वर्षों से लगातार 24 घंटे काम करते रहने की वजह से शिवराम का स्वस्थ धीरे धीरे खराब होने लगा था और दूसरी तरफ गांव में उसकी मां कई बार कोई दुख भरा सपना देख कर आधी रात को उठ बैठती थी और उस पल उसे शिवराम की बहुत फिक्र होने लगती थी पर उस पल शिवराम की पत्नी सुषमा बहुत बुद्धिमानी से बात को संभाल लेती थी और वो अम्मा को यह कह कर शांत कर देती थी कि शिवराम एक दम कुशलमंगल है अम्मा और आप उसकी चिंता बिल्कुल भी मत करिए और वो आफिस

से छुट्टी मिलते ही गांव में आयेगा और सबसे मिल कर जायेगा और जब महीने भर बाद शिवराम शहर से काम की छुट्टी ले कर गांव में आता था तब उसकी मां उसके हाथों को अपने हाथों में पकड़ कर उसकी आंखों में गहराई से देखते हुए उससे पूछती थी "बेटे तू शहर में ठीक से रहता है न" तब शिवराम बहुत प्रेम से अपनी मां से कहता था "अरे मां तुम बेकार में चिंता करती रहती हो मैं एक दम भला चंगा हूं और शहर में काम अधिक होने की वजह से सब लोग थोड़े थक जाते हैं और शहर में गांव जैसी अच्छी हवा थोड़े ही होती है" अब तक शिवराम शहर की चतुराई वाली बातें बनाना सीख चुका था और इसी वजह से वो बहुत प्यार से अपनी मां को समझा भी लेता था पर यह बात दूसरी थी कि उसकी मां को अपने बेटे की कही बातों पर रति भर भी यकीन नही होता था क्योंकि कहते हैं कि मां की आंखें अपने बच्चों के हृदय के भीतर तक देख सकती थी।

इसी तरह धीरे धीरे 20 वर्ष बीत गए थे और अब तक शिवराम के बच्चे भी स्कूल की पाठशाला से अपनी पढ़ाई समाप्त करने के बाद शहर में पढ़ने लगे थे और शिवराम के छोटे भाई और बहन की शादी भी बहुत धूमधाम से हो गई थी और शिवराम के माता पिता ने अपने दोनो बच्चों की शादी में दिल खोलकर खर्चा किया था और अपनी बेटी के दहेज में बहुत सारा दहेज भी दिया था और शिवराम अपने सारे परिवार को खुश देख कर बहुत खुश था और उस पल उसे कुछ ऐसा अनुभव हुआ था जैसा उसने सब कुछ पा लिया था।

पर यह बात भी सच थी कि जरूरत से अधिक काम करने की वजह से वो थोड़ा कमज़ोर हो गया था और उसके परिवार के किसी भी सदस्य को उसकी कुर्बानी की भनक तक नहीं थी और कोई भी नही जानता था कि इतने सारे पैसे इतने कम पढ़े लिखे इंसान ने कैसे कमाए होंगे और इस बात को किसी ने जानने की कोशिश भी नही की थी क्योंकि सब शिवराम की कहीं बातों पर यकीन करते थे और शिवराम के काम के बारे में सिर्फ इतना ही जानते थे कि शिवराम शहर में किसी आफिस में बहुत अच्छी स्थान पर नियुक्त है और उसका मालिक उससे बहुत खुश है। उसके घर का कोई भी सदस्य नही जानता था कि पिछले लगभग 20 वर्षों से 24 घंटे बूढ़े मरीजों की देखभाल करते हुए शिवराम ने पाई पाई जोड़ी थी और अधिक पैसा कमाने के लिए उसने जी तोड़ मेहनत की थी।

एक दिन शिवराम की मां ने रात को एक बुरा सपना देखा और उसने अपनी बहु सुषमा से ज़िद की कि वो सुबह की पहली गाड़ी से शहर जाए और शिवराम की खुशहाली का समाचार लेकर वापिस लौटे। शिवराम को लेकर मां का बुरा सपना देखने की वजह से सुषमा भी थोड़ी घबरा गई थी और उसने सुबह की पहली गाड़ी से शहर जाने का निश्चय कर लिया था। कुछ वर्ष पहले शिवराम ने सुषमा को शहर का पता दिया था और उसे अपने शहर का पता देते हुए बताया था कि यह उसके दोस्त भानुदास के कमरे का पता है। शिवराम की पत्नी शहर में गली गली भटकते हुए शिवराम के दोस्त के कमरे तक पहुंच गई थी और उसने उस कमरे के दरवाज़े पर धीरे से दस्तक दी थी और थोड़ी ही देर में उस कमरे का दरवाज़ा खुला था और दरवाज़ा एक महिला ने खोला था और उसके ठीक पीछे एक आदमी भी खड़ा हुआ था और एक अजनबी औरत को अपने दरवाज़े पर आया देख कर वो दोनो थोड़े चौंक गए थे। तब तक शिवराम की पत्नी सुषमा ने खुद को थोड़ा संभाल लिया था और उसने थोड़ा हिचकिचाते हुए उनसे कहा था "मैं शिवराम की पत्नी सुषमा हूं और मैं शिवराम के बारे में अता पता करने शहर आई हूं और उन्होंने कुछ वर्ष पहले मुझे इसी घर का पता दिया था" शिवराम का नाम सुनकर भानुदास और उसकी पत्नी ने सुषमा को बहुत आदर के साथ कमरे के भीतर आने को कहा था और उन्होंने उससे कहा था "मेरा नाम भानुदास है और ये मेरी पत्नी राधा है" और अपना परिचय देने के बाद उन्होंने एक साथ पूछा था "शायद आप शिवराम का हालचाल जानने के लिए शहर चली आई है" अब तक शहर के भीड़ भाड़ को देख कर सुषमा थोड़ा घबरा सी गई थी पर जान पहचान के लोगों में आकर अब उसे अच्छा अनुभव हो रहा था और उसने थोड़ी चैन की सांस ली थी और उसने जल्दी से कहा था "जी हां" फिर कुछ रुककर उसने उन दोनो की ओर देखते हुए कहा था "शिवराम की अम्मा ने एक बुरा सपना देखा था इसीलिए मुझे शिवराम का हालचाल पता करने के लिए शहर आना पड़ा" भानुदास की पत्नी अब तक रसोई घर में चाय नाश्ते का इंतज़ाम करने के बाद वहां पर वापिस लौट आई थी और सुषमा को चिंतित देख कर भानुदास ने कहा था "यहां सब कुछ कुशलमंगल है भाभी जी और आप निश्चिंत रहिए, पर आप ने शहर आकर अच्छा किया है, इसी बहाने आपसे मुलाकात भी हो गई" तब भानुदास ने सुषमा से कहा था "भाभी जी आप आराम से बैठ कर चाय नाश्ता कर लीजिए फिर मैं आपको शिवराम के पास ले जाऊंगा" और बातों ही बातों में भानुदास ने सुषमा से कहा था "भाभी जी मैंने शिवराम

जैसा मेहनती और ईमानदार व्यक्ति कभी नही देखा उसमें बहुत धीरज है" और अब भानुदास की पत्नी राधा ने सुषमा की ओर देखते हुए उससे कहा था "भाई साहब तो हीरे जैसे इंसान हैं और उनमें छल कपट जैसा कुछ भी नही है और उन्होंने कितनी ही बार हमारी भी मदद की हुई है" सुषमा शिवराम की तारीफ सुनकर फूला नहीं समा रही थी और जब चाय नाश्ता समाप्त हुआ तो भानुदास सुषमा को साथ लेकर उस घर की ओर रवाना हो गया था जहां पर शिवराम एक बूढ़े मरीज़ की देख भाल कर रहा था और रास्ते में उसने सुषमा के पूछने पर उसे यह भी बता दिया था कि शिवराम पिछले 20 वर्षों से 24 घंटे लगातार बूढ़े मरीज़ो की देख भाल करता आ रहा है और उसने आराम करने के लिए कभी छुट्टी भी नही ली है। भानुदास के मुंह से यह सब सुनकर सुषमा हक्की बक्की रह गई थी और अत्यधिक भावुक हो जाने की वजह से उसकी आंखों से आंसू बहने लगे थे जिन्हें वो बार बार अपनी साड़ी के पल्लू से पोंछ रही थी। कुछ समय के बाद दोनों उस जगह पर पहुंच गए थे जिस घर में शिवराम एक परिवार के बहुत बूढ़े सदस्य की देखभाल कर रहा था और उसने उस बूढ़े मरीज़ के निकट ही नीचे ज़मीन पर अपना बिस्तर लगाया हुआ था और अपनी पत्नी को शहर में आया देख कर वो बहुत हैरान हुआ था और वो अपने बिस्तर से उठ कर खड़ा हो गया था और उस समय शिवराम को जमीन पर बिस्तर डाले देख कर सुषमा की आंखों से झर झर आंसू बहने लगे थे। बहुत मुश्किल से शिवराम ने सुषमा को शांत किया था और उसे कसम दी थी कि वो घर में कभी किसी को यह नहीं बताएगी कि वो शहर में क्या काम करता है। पर इस बीच सुषमा अपने पति के गले से लग कर बहुत रोई थी और उसने रोते हुए ही शिवराम से कहा था "अम्मा का सपना सच्चा था वो दिन रात तुम्हारी चिंता ऐसे ही नहीं करती थी शायद मां को तुम्हारी मेहनत का अंदाज़ा हो गया था" तब उस पल शिवराम ने बहुत प्रेम से सुषमा को समझाया था "अरे पगली कौन बेटा अपने घर के लिए मेहनत नहीं करता और अगर मैंने थोड़ी अधिक मेहनत कर भी ली तो इसमें कौन सी बड़ी बात हो गई सब लोग अपने परिवार की खातिर जी तोड़ मेहनत करते है और तुम जानती हो कि जब मैं अपने भाई बहन और माता पिता और बच्चों को सुख से रहते हुए देखता हूं तो खुशी से मेरा सीना चौड़ा हो जाता है और मेरी बात पर विश्वास करो कि जितना सुख मैंने अपने परिवार को पहुंचाया है उससे दो गुना अधिक सुख मुझे तुम सबको सुखपूर्वक रहते हुए देख कर मिला है" अब सुषमा नम आंखों से अपने पति की आंखों में देख रही थी जिसमें उसे सारे परिवार के लिए आपार

प्रेम दिखाई दे रहा था और यह देख कर उसने अपने पति के पैरों को छू कर उसका आशीर्वाद लिया था और अब तक सब कुछ देख समझ कर भानुदास की निगाहों में शिवराम की इज़्ज़त और भी बढ़ गई थी। सुषमा भीगी आंखों के साथ शहर से विदा हुई थी और गांव वापिस लौट कर आते ही उसने सबसे पहले अम्मा जी को शिवराम के सुख का समाचार सुनाया था और फिर वो खुद चुपचाप अपने कमरे में छिप कर घंटों रोती रही थी। वो इस बात को अच्छी तरह से समझती थी कि 24 घंटे बूढ़े मरीजों की देखभाल करने का मतलब खुद को आग की भट्टी में झोंक देना जैसा काम था और पिछले 20 वर्षों से शिवराम ने अपने परिवार की खुशियों की खातिर जी तोड़ मेहनत की थी और यह बहुत ही दुख की बात थी कि उसके परिवार में किसी को भी उसकी इस मेहनत का पता तक नही था। दूसरी तरफ जब भानुदास ने शिवराम की सारी कहानी अपनी पत्नी राधा को सुनाई तब भानुदास की पत्नी राधा ने भानुदास को देखते हुए उससे कहा था "विश्वास नहीं होता कि इस युग में भी शिवराम जैसे इंसान होते हैं" और उस पल भानुदास ने अपनी पत्नी की कही बात का समर्थन करते हुए उससे कहा था "तुम बिल्कुल ठीक कह रही हो शिवराम वास्तव में साधु जैसा इंसान है और इस दुनिया में उसके जैसा दूसरा इंसान मिलना मुमकिन नहीं है" और भानुदास ने यह बात शिवराम की 20 वर्षों की कठिन तपस्या को देखते हुए कही थी।

इसी तरह कुछ वर्ष और बीत गए और अब शिवराम शहर से गांव वापिस लौट आया था और उसने अपने घर में किराने की दुकान के साथ साथ, 10 से 12 कम्पीयूटर रख कर कम्पीयूटर की शिक्षा का कारोबार शुरू कर लिया था और शिक्षक के तौर पर उसने गांव की पाठशाला के एक अनुभवी शिक्षक को नियुक्त कर दिया था और उसका यह कारोबार चल निकला था और इस कारोबार के साथ ही उसने एक ट्रैवल एजेंसी भी खोल ली थी और अब वो आसपास के आठ से दस गांव के लोगों को रेलगाड़ी, बस और टैक्सी की बुकिंग की सुविधा देता था और इस काम में शिवराम बहुत निपुण हो गया था। बरसों की मेहनत करने के बाद अब वो सुख चैन से अपने घर में बैठा हुआ था और सुषमा और बच्चे उसका बहुत ध्यान रखते थे पर अब तक शिवराम के सिर से माता पिता का साया उठ चुका था और अब शिवराम अपने भाई बहन और उनके परिवार का एक पिता की भांति ध्यान रखता था और शिवराम और सुषमा को इस बात का बहुत संतोष था कि उन्होंने अपनी जिम्मेदारियां बहुत अच्छे तरीके से निभाई थी पर शिवराम

की कड़ी मेहनत का राज़ अभी भी राज़ ही बना हुआ था और उस राज़ को उसकी पत्नी सुषमा के सिवा और कोई भी नही जानता था।

समाप्त

कहानी 37: घर वापसी

सत्यप्रकाश सक्सेना और अनुराधा आज से 40 साल पहले गांव से शहर में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इरादे से आए थे और पढ़ाई समाप्त होने के बाद उन दोनो को शहर में ही नौकरी भी मिल गई थी। सत्यप्रकाश और अनुराधा ने एक ही कालेज से शिक्षा ली थी और दोनो के परिवारों की रज़ा मंदी के साथ उनका विवाह हो गया था और फिर दोनो शहर की व्यस्त जिंदगी में इतना खो गए थे कि उन्हें गांव वापिस जाने का मौका ही नही मिला था और अब उन दोनो को रिटायर्ड होने में कुल एक वर्ष बाकी रह गया था और इस बीच उन दोनो ने शहर में बहुत मेहनत मुशक्त करने के बाद अपने दो लड़के पढ़ा लिखा कर बढ़े कर लिए थे और उन दोनो लड़कों में से बड़ा लड़का फौज में कैप्टन के पद पर कार्य कर रहा था और छोटा बेटा कम्पीयूटर इंजीनियर था और अब दोनो विवाहित थे और अपनी विवाहित जिंदगी से बहुत खुश थे। सत्यप्रकाश के दोनो बेटों की नौकरियां देश की अलग अलग राज्यों में होने के कारण वो साल में एक आध बार घर पर आते थे और सत्यप्रकाश और अनुराधा अपने दोनो बेटों को खुश देख कर बहुत

संतुष्ट थे और अब धीरे धीरे उनका परिवार बढ़ रहा था और अब सत्यप्रकाश और अनुराधा दो बच्चों के दादा दादी भी बन चुके थे।

सत्यप्रकाश सक्सेना शहर की एक नामी कंपनी में मैनेजर के पद पर कार्य कर रहे थे और उनके निर्देशन में लगभग 30 लोग कार्य करते थे और उनके काम काज को देखना सत्यप्रकाश की ज़िम्मेदारी थी और पिछले 35 वर्षों से उन्होंने अपनी इस ज़िम्मेदारी को बहुत अनुशासन और ईमानदारी के साथ निभाया था और उनकी कंपनी के सब अधिकारी उनके काम करने के तरीके से बहुत खुश थे पर यह भी सच था कि अपनी ज़िम्मेदारी को निभाते निभाते अब सत्यप्रकाश बहुत थक से चुके थे और अपने रिटायर्ड होने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे और रिटायर्ड होने के बाद वो बरसों से देखते आ रहे अपने सपनो को सच करना चाहते थे और उनका सपना था कि वो रिटायर्ड होने के बाद अपने गांव वापिस लौट जाएंगे और गांव में अपना एक छोटा सा घर बनायेंगे। सत्यप्रकाश और अनुराधा रात को खाना खाने के बाद अक्सर एक डायरी लिखते थे और उस डायरी में वो हर रोज़ अपने सपनो और ख्वाहिशों के बारे में लिखते थे और कई बार वो दोनो मिलकर भविष्य में बनने वाले अपने घर का नक्शा भी बनाते थे और उस नक्शे को लेकर उन दोनो में अक्सर मीठी सी बहस हो जाती थी और उनकी बहस का मुद्दा अक्सर यह ही होता था कि उनके उस घर में कितने कमरे होंगे और उनके घर का आंगन कितना बढ़ा होना चाहिए और उन्हें गांव में जाकर सिर्फ घर बनाने का खर्च ही करना था क्योंकि उनके पास वर्षों से उनकी पुश्तैनी जमीन पड़ी हुई थी जिस ज़मीन पर एक बहुत पुराना सा घर बना हुआ था जिसकी दीवारें अब लगभग गिरने के करीब ही थी।

अनुराधा शहर के एक कालेज में प्रोफेसर के पद पर कार्य कर रही थी और वषों से उन दोनो का नियम था कि वो दोनो रात का खाना खाने के बाद पास के ही बाज़ार में टहलने के लिए निकल जाते थे और इस तरह बेफिक्र घूमने की वजह से उनका मानसिक तनाव कम हो जाता था और सुबह वो फिर पूरे जोश के साथ अपने काम पर निकल जाते थे। सत्यप्रकाश और अनुराधा ने वर्षों से नियम के साथ अपना काम काज किया था और अपनी गृहस्थी को सफलता पूर्वक चलाया था और उनकी वर्षों की कड़ी मेहनत की वजह से अब उनके दोनो लड़के अपने पांव पर खड़े हो चुके थे और दोनो अच्छे पदों पर कार्यरत थे और उनका विवाहित जीवन भी बहुत सुखमय था इसलिए अब सत्यप्रकाश

और अनुराधा उनकी तरफ से बिल्कुल बेफिक्र हो गए थे और अब वो अपने रिटायर्ड होने का बहुत बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे।

हर रोज एक ही तरह से ज़िंदगी जीते जीते वो दोनो भीतर से बहुत उकता चुके थे और अब वो दोनो अपने जीवन में बदलाव की सोच रहे थे और उन दोनो का बस एक ही सपना था कि वो कैसे भी करके गांव में अपना एक छोटा सा घर बना लें और अब उन्हें ऐसा लगने लगा था कि जैसे वो अपने सपने को सच करने के बिल्कुल करीब पहुंच चुके थे।

दीपावली की छुट्टियों में दोनो लड़के एक ही समय पर घर आ जाते थे और उनके आने से घर पर बहुत शानदार माहौल बन जाता था और फिर घर पर तरह तरह के पकवान बनने लगते थे और रात को उनके घर पर ताश के पत्तों की महफिल जम जाती थी और सारा परिवार एक साथ बैठ कर बहुत अच्छा समय व्यतीत करता था और वह पल सत्यप्रकाश और अनुराधा के जीवन के सबसे अच्छे पल होते थे। पर जब बच्चे दीपावली की छुट्टी बिताने के बाद अपने घर वापिस लौट जाते थे तब सत्यप्रकाश और अनुराधा का घर बहुत सूना सूना सा हो जाता था और उदासी के उस माहौल में वो दोनो रात का भोजन कर लेने के बाद बरसों से लिखते आ रहे उस डायरी को एक बार फिर से खोल लेते थे जिस डायरी के हर पन्ने पर उन्होंने अपनी ख्वाहिशें और सपने लिख हुए थे और हर रोज़ की तरह ही वो एक बार फिर से अपना दिल बहलाने के लिए गांव की ज़मीन पर घर बनाने को लेकर एक दूसरे से बहस करने लगे थे कि उस घर में कहां पर क्या क्या बनाना है और उस घर में कौन कौन से वृक्ष लगाने हैं और इस तरह से बातचीत करते हुए उनका समय बहुत अच्छी तरह से व्यतीत हो जाता था और उन बेमिसाल लम्हों में सत्यप्रकाश अक्सर अनुराधा का हाथ अपने हाथों में लेकर उससे कहते थे "हम अपने उस नए घर में गुलमोहर, पीपल और आम के वृक्ष ज़रूर लगाएंगे" तब अनुराधा सत्यप्रकाश की आंखों में बहुत ध्यान से देखती थी और उस पल उसे कुछ यूं लगता था जैसे सत्यप्रकाश अपनी ख्वाहिशें बताते बताते कहीं खो जाते है और तब उनका ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए वो अक्सर उनसे कहती थी "उस घर में कार की पार्किंग की जगह भी तो होनी चाहिए नही तो बच्चे अपनी कार कहां पर खड़ी करेंगे" तब सत्यप्रकाश उससे हंसते हुए कहते थे "हां हां, हम उस नए घर में कार खड़ी करने की जगह भी जरूर बनायेंगे" और जब दोनो बहस करते हुए बहुत थक जाते थे तब उस पल सोने से पहले

अनुराधा सत्यप्रकाश का हाथ अपने हाथों में पकड़ कर अक्सर उससे कहती थी "तुम्हारे साथ ज़िंदगी कैसे बीत गई इस बात का मुझे पता तक नहीं चला" और उस पल सत्यप्रकाश भी मुस्करा कर अनुराधा से कहते थे "तुमने मेरे सारे परिवार को एक ही सूत्र में बांध कर रखा हुआ है और तुम्हारे बिना यह मुमकिन नही हो सकता था क्योंकि एक औरत ही सारे घर को जोड़ कर रख सकती है और तुमने यह काम बहुत अच्छी तरह से निभाया है मैं बहुत भाग्यशाली इंसान हूं कि मेरी जिंदगी में तुम आई" और दोनो के लिए यह इतने अच्छे लम्हें होते थे कि वो दोनो भविष्य के मीठे सपने देखते देखते कब सुख की मीठी नींद सो जाते थे और उन्हें इस बात का पता तक नहीं चलता था और उनकी डायरी अधखुली सी उनके बिस्तर के करीब पड़ी रहती थी जिसके पन्ने पंखे की हवा से यहां वहां उड़ रहे होते थे और उस अधखुली डायरी को देख कर कुछ ऐसा लगता था जैसे अब उनकी डायरी भी उनके सपने सच होने का इंतजार कर रही थी।

इसी तरह दिन बीतने लगे थे और आखिर वो दिन भी आया जब दोनो रिटायर्ड हो गए और उस दिन दोनो ने अपने रिटायरमेंट की खुशी में एक शानदार होटल में डिनर किया था और उस समय उन दोनो को कुछ यूं लग रहा था जैसे वो अभी अभी ही वर्षों की कैद से छूटे थे और आज़ादी के उन बेमिसाल लम्हों में वो दोनो बहुत खुश थे।

उस शानदार होटल में खाना खाने के बाद दोनो शहर के बाज़ार में टहलने के लिए निकल पड़े थे और आसपास की दुकानों पर अपने नए घर के लिए पर्दे सोफा सेट और घर के दूसरे जरूरत के सामान को देखने लगे थे और उस पल उन्होंने मन ही मन में यह तय कर लिया था कि जब वो गांव में अपना घर बना लेंगे, तब वो घर का सारा सामान यही से खरीदेंगे और इन्हीं मीठे सपनो के बीच उनके दिन बीतने लगे थे और रात को सोने से पहले वो अपनी ख्वाहिशें लिखने वाली डायरी में अपने सपने लिखना नहीं भूलते थे और इन खूबसूरत सिलसिलों की वजह से उनका हर दिन एक त्यौहार की तरह बीतने लगा था।

पर एक दिन रात को सत्यप्रकाश को सीने में बहुत जोर से दर्द हुआ और वो बिस्तर के करीब ही जमीन पर नीचे गिर पड़े थे और सत्यप्रकाश की गंभीर परिस्थिति को देखते हुए अनुराधा ने जल्दी से अस्पताल से एंबुलेंस बुलवा ली थी और वक्त पर प्राथमिक उपचार मिलने की वजह से सत्यप्रकाश हार्ट अटैक जैसी गंभीर घटना से बच गए थे और

अगले ही दिन उनके दोनो बेटे अपने सारे काम काज छोड़ कर अस्पताल पहुंच गए थे और डॉक्टर से बातचीत करने पर डॉक्टर ने उन्हें बताया कि "आप जितना हो सके अपने पिता को चिंताओं से दूर रखें, नही तो इनकी सेहत पर फिर से खराब प्रभाव पड़ सकता है" डॉक्टर के मुंह से यह सब सुनकर अनुराधा और उसके दोनो बच्चे बहुत चिंतित हो गए थे। सत्यप्रकाश को हफ्ते भर में अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी पर अब उनके चेहरे को देख कर कुछ ऐसा लगता था जैसे उनके भीतर से उत्साह नाम की चीज कहीं खो गई थी। सत्यप्रकाश को घर पर लाने के बाद अनुराधा उनका बहुत ध्यान रखती थी और इस बीच कुछ दिन अपने पिता की देखभाल करने के बाद उनके दोनो बेटे अपनी अपनी नौकरी पर वापिस लौट गए थे और जाने से पहले उन्होंने अपने पिता को समझाया था कि अब उन्हें हर रोज़ थोड़ा पैदल चलना है और अपनी सेहत का ख्याल रखना है और अपने दोनो बच्चों की बातें सुनकर सत्यप्रकाश के चेहरे पर फीकी सी मुस्कान चली आई थी और अपने पति की ऐसी हालत देख कर अनुराधा बहुत चिंतित हो उठी थी और वक्त की नज़ाकत को समझते हुए उनके दोनो बच्चों ने अपनी मां को समझाते हुए कहा था "पिता जी अभी अभी दिल का दौरा पड़ने जैसी गंभीर बीमारी से बाहर निकले है और अब उन्हें सामान्य होने में थोड़ा वक्त लगेगा" और अनुराधा ने अपने बेटों की नौकरी की मजबूरी को समझते हुए उन्हें हंसते हंसते विदा किया था और उन्हें तसल्ली दी थी कि वो उनके पिता का बहुत ध्यान रखेंगी और उन्हें पल पल की खबर करती रहेंगी।

रात होने पर सोने से पहले अब अनुराधा अकेली बैठी हर रोज़ उस डायरी को देखती थी और अपने पति के चेहरे पर मायूसी के भाव देख कर उसका दिल बैठा जाता था और कई बार रात के सन्नाटे में, बीती ज़िंदगी के कुछ किस्सों के बारे में सोच कर उसकी आंखों से आंसू बहने लगते थे जो क्षण भर बाद गालों तक आते आते सूख भी गए थे क्योंकि अनुराधा इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानती थी कि अब उसे हिम्मत से काम लेना पड़ेगा और उसे अपने पति से ऐसी कोई भी बात नही करनी होगी जिससे उन्हें बेवजह की चिंता हो जाए और जब वो पास में सो रहे अपने पति की ओर देखती थी उस पल उसकी आंखों के सामने बीती ज़िंदगी के किस्से लहरा जाते थे कि वो दोनो कैसे अपने सपने और ख्वाहिशें हर रोज़ अपनी डायरी पर लिखते थे और घंटों बैठ कर भविष्य की योजनाएं बनाते थे पर अब अनुराधा को वह सब सपने धूमिल होते दिखाई दे रहे थे

और यह सब सोच कर उसकी आंखों से आंसू बहने लगे थे जिन्हें वो बार बार अपनी साड़ी के पल्लू से पोंछ रही थी।

इसी तरह दिन बीतने लगे थे और अनुराधा सत्यप्रकाश का बहुत ध्यान रखती थी पर वो देख रही थी कि सत्यप्रकाश में अब पहले की तरह कोई उत्साह दिखाई नहीं देता था और अब उनके चेहरे से उदासी झांकने लगी थी पर उन दुखद लम्हों से दो चार होने के बाद भी अनुराधा ने खुद को कभी टूटने नहीं दिया था और वो सत्यप्रकाश को खुश करने के लिए कई तरह के प्रयास करती रहती थी और इसी वजह से वो सत्यप्रकाश से बाज़ार चलने की ज़िद भी करती थी और उसे लगता था कि बाज़ार की रंगीनियों को देखने के बाद शायद सत्यप्रकाश में उत्साह वापिस लौट आएगा, पर बाज़ार में जाने के बाद भी सत्यप्रकाश के भावों में कोई अंतर नहीं दिखाई दिया था और यह देख कर अनुराधा का दिल बैठने लगा था और सत्यप्रकाश की बिगड़ती हालत को देख कर अनुराधा ने अपने दोनो बच्चों को सब किस्सा कह सुनाया था और उनके दोनो बच्चे कुछ दिनों की छुट्टी लेकर अपने पिता की देखभाल करने के लिए घर पर आ गए थे और एक दिन अनुराधा के बड़े बेटे की निगाह उस डायरी पर पड़ी थी जिस डायरी पर सत्यप्रकाश और अनुराधा अपने सपने और ख्वाहिशें लिखते थे और उन्होंने उस डायरी में अपने घर के नक्शे तक बनाए हुए थे और जिज्ञासावश अनुराधा के बड़े बेटे ने उस डायरी को पढ़ना शुरू किया था और सारी डायरी को पढ़ने के बाद उसने वह डायरी अपने छोटे भाई के हाथों में थमा दी थी और सब कुछ जानने और समझने के बाद उन दोनो ने तय किया था कि अब वो दोनो मिल कर अपने माता पिता के सब सपने सच करेंगे और अब वो गांव की ज़मीन पर उस घर को बनायेंगे जिस घर का उनके माता पिता सपना देखते थे और यह फैसला करते ही उन्होंने गांव की ज़मीन पर घर बनाने का कार्य युद्ध स्तर पर शुरू कर दिया था और इस बात की खबर उन्होंने अपने माता पिता को भी नही दी थी और जब कुछ महीनो के बाद उनके माता पिता के सपनो के मुताबिक वह घर बन कर तैयार हो गया था तब वो अपने बीमार पिता और माता जी को कार में बिठा कर गांव की ओर रवाना हो गए थे और उस पल दोनो बच्चों के दिमाग में बस एक ही बात थी कि वो अपने माता पिता को गांव का नया घर दिखा कर उन्हें आश्चर्यचकित कर देना चाहते थे।

अनुराधा गांव में बना अपना नया घर देख कर बहुत खुशी हुई थी और उसने देखा कि उनके दोनो बच्चों ने वह घर बिल्कुल वैसा ही बनाया था जैसे सत्यप्रकाश और उसने कल्पना की थी और उस घर के आंगन में पीपल, गुलमोहर और आम के वृक्षों के पौधे भी रखे हुए थे, जिन वृक्षों को, सत्यप्रकाश अपने घर के आंगन में लगाना चाहते थे तब अनुराधा के बहुत जोर देकर पूछने पर उनके दोनो बेटों ने उन्हें बताया कि उन्होंने उनकी डायरी पढ़ी थी जिसमें उनकी और पिता जी की ख्वाहिशें और सपने लिखे हुए थे और उन्होंने बताया कि उस डायरी में उन्होंने यह भी पढ़ा था कि रिटायर्ड होने के बाद वो अपने सपनो वे को सच करने की कोशिश करेंगे और ये ही सोच कर उन्होंने अपने माता पिता का वर्षों का सपना सच कर दिया था। अनुराधा अपने बच्चों के मुंह से यह सब बातें सुनकर खुशी से रोने लगी थी क्योंकि उसने इतनी खुशी की कभी कल्पना भी नहीं की थी और उस पल अनुराधा ने हाथ जोड़ कर ईश्वर का धन्यवाद किया था और उसे लगता था कि शायद यह सब देख कर सत्यप्रकाश की सेहत ठीक जायेगी और आंखों को नम कर देने वाले उन खूबसूरत लम्हों में अनुराधा ने अपने दोनो बच्चों को अपने गले से लगा लिया था और इस बीच अनुराधा के पोते नए घर में आने के बाद खुशी से यहां वहां भागने लगे थे और बच्चों की किलकारियों से सारा घर गूंजने लगा था और बच्चों को खुश देख कर घर का माहौल बदल गया था। इस बीच अनुराधा की दोनो बहुएं रसोई घर में सब के लिए खाना तैयार करने लगी थी और इस बीच अनुराधा ने देखा कि नए घर में आने के बाद भी सत्यप्रकाश के चेहरे पर किसी भी प्रकार की कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई दे रही थी और यह देख कर अनुराधा और उसके दोनो बेटे थोड़े उदास हो गए थे। अनुराधा की रात जैसे तैसे बिस्तर पर करवट बदलते बदलते कट गई थी और उस पल अनुराधा यह सोच कर बहुत परेशान हो गई थी कि अगर सत्यप्रकाश की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ तो वो इस नए घर में रह कर क्या करेगी। उस पल अनुराधा इस बात की कल्पना से भी डर गई थी कि अगर सत्यप्रकाश को कुछ हो गया तो वो अकेले जीवन कैसे व्यतीत करेगी और उन दुख भरे लम्हों के बारे में सोचते सोचते न जाने कब उसकी आंख लग गई थी और जब सुबह उसकी आंख खुली और सत्यप्रकाश को अपने बिस्तर पर न देख कर वो थोड़ा घबरा गई थी पर जब उसकी निगाह खिड़की से बाहर पड़ी तब उसने देखा कि सत्यप्रकाश अपने हाथों से आंगन में पीपल का वृक्ष लगा रहे थे और उनके दोनो पोते सत्यप्रकाश के बिल्कुल करीब बैठे उनकी सहायता कर रहे थे और यह

देख कर अनुराधा ने अपने दोनो बेटों और बहुओं को जगाया था और उन्हें उस खिड़की के निकट ले आई थी जहां से आंखों को नम कर देने वाला वह नज़ारा दिखाई दे रहा था। थोड़ी सी मेहनत करने पर ही सत्यप्रकाश थोड़ा थक गए थे और वो अपने पोतों के साथ आंगन में पड़े झूले पर बैठ गए थे और उस पल उनके चेहरे पर वही मुस्कराहट थी जिस मुस्कराहट से वो सबका दिल जीत लेते थे और यह दृश्य देख कर अनुराधा की आंखों से झर झर आंसू बहने लगे थे और अब तक सारा परिवार आंगन में आ चुका था और अनुराधा हाथों में चाय की ट्रे पकड़े सबके हाथों में चाय के कप थमा रही थी और उस पल कुछ ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे उस घर में खुशियां वापिस लौट आई थी। उस दृश्य को देख कर कुछ ऐसा लगता था जैसे ईश्वर ने अनुराधा और सत्यप्रकाश की जीवन भर की तपस्या का उन्हें फल दिया था।

समाप्त

कहानी 38: अलविदा

ऊंचे लम्बे कद के रंगनाथ बैनर्जी फायर ब्रिगेड में काम करते थे और अब वो लगभग 58 वर्ष के हो चुके थे और कुछ ही दिनों में वो अपनी इस शानदार नौकरी से रिटायर्ड होने वाले थे और उन्होंने अपने जीवन में बहादुरी और साहस से भरे बहुत से कारनामें किए थे और फायर ब्रिगेड का सारा महकमा उनके साहस और कर्तव्यनिष्ठा की प्रशंसा करता था। रंगनाथ बैनर्जी की पत्नी को गुज़रे हुए लगभग 5 वर्ष हो चुके थे और उनकी कोई भी औलाद नहीं थी। रंगनाथ बैनर्जी अपने काम से घर आने के बाद अपने सारे काम खुद ही किया करते थे और वो अपने रोजमर्रा के काम करते हुए कई बार बहुत भावुक भी हो जाते थे जब वो अपने घर की दीवार पर लगी अपनी पत्नी की तस्वीरें देखते थे और उस पल क्षण भर के लिए अपनी पत्नी को याद करके उनकी आँखें नम हो जाती थी। पर यह बात भी सच थी कि अब उन्होंने अपने आपको काम में इतना व्यस्त कर लिया था कि अब उन्हें इधर उधर की कोई भी बात सोचने का अधिक समय नहीं मिलता था पर कुछ दिनों से वो थोड़े परेशान रहने लगे थे क्योंकि उनकी रिटायर्डमेंट का समय निकट आता जाता रहा था और वो यह सोचकर थोड़े परेशान थे कि रिटायर्ड होने के

बाद वो अपना समय कैसे व्यतीत करेंगे और यह बात वास्तव में उनके लिए बहुत सोच विचार करने का विषय था।

फायर ब्रिगेड के ऑफिस में उनके रिटायर्ड होने की बातें होने लगी थी और उनके साथ काम करने वाले सब लोग इस बात से खुश भी थे कि अब रंगनाथ बैनर्जी को अपने काम से थोड़ा आराम करने का एक सुनहरा मौका मिलेगा पर साथ ही रंगनाथ बैनर्जी के सब सहयोगी यह सोच कर भी थोड़े उदास थे क्योंकि कुछ ही दिनों के बाद 5 सितंबर को रंगनाथ बैनर्जी को फायर ब्रिगेड की नौकरी से हमेशा हमेशा के लिए छुट्टी मिल जाने वाली थी। रंगनाथ बैनर्जी बहुत असाधारण व्यक्तित्व के मालिक थे और उन्होंने अपने अच्छे कार्यों और अपने दोस्ताना व्यवहार की वजह से अपने ऑफिस के सब लोगों का दिल जीत रखा था और उनके साथ काम करने वाले सब लोग उनका दिल से आदर करते थे।

एक दिन एक घटना घटी जिस घटना ने फायर ब्रिगेड के सब कर्मचारियों को हिला कर रख दिया था और उस दुखद दुर्घटना में एक बहुमंज़िला इमारत में एक बड़े धमाके के बाद बहुत भयानक आग लग गई थी और उस बिल्डिंग में हुए धमाके के कारण का किसी को भी कुछ पता नहीं चला था। पर बहुमंज़िला इमारत में धमाके के बाद लगी आग बहुत तेज़ी से फैलने लगी थी और यह देखते हुए दुर्घटनाग्रस्त बिल्डिंग के पास कुछ ही समय में 5 फायर ब्रिगेड की गाड़ियाँ पहुंच गई थी और आग पर काबू पाने के लिए और लोगों को उस भयानक आग से बचाने के लिए फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों ने युद्ध स्तर पर कार्य शुरू कर दिया था पर वो आग इतनी भयानक थी कि देखते ही देखते उस आग ने सारी बिल्डिंग को अपनी चपेट में ले लिया था और मौके की गंभीरता को देखते हुए फायर ब्रिगेड के उच्च्च अधिकारियों ने उस घटना स्थल पर फायरब्रिगेड की 10 और गाड़ियाँ रवाना कर दी थी। अग्नि शामक के कर्मचारियों के उस दस्ते के साथ उस समय उनके सबसे अनुभवी कर्मचारी रंगनाथ बैनर्जी भी थे और वो अपनी पूरी ऊर्जा और शक्ति के साथ लोगों को उस भयानक आग से बचाने के कार्य में जुट गए थे और उस पल उस भयानक आग की वजह से सब तरफ अफरा तफरी का माहौल बना हुआ था और उस इमारत में फंसे सब लोग अपनी जान बचा कर भागते हुए नज़र आ रहे थे।

उस समय उस घटनाग्रस्त बिल्डिंग की 6वीं मंज़िल पर एक बहुत बड़े हाल में छोटे बच्चों के स्कूल का कोई कार्यक्रम चल रहा था और उस बिल्डिंग में लगी भयानक आग की चपेट में स्कूल के छोटे बच्चे भी आ चुके थे और उस समय बिल्डिंग की 6 वीं मंज़िल के उस हाल में नर्सरी स्कूल के लगभग 10 टीचर उनके सहायक और लगभग 80 से 90 छोटे बच्चे भी मौजूद थे और आग की तपिश की वजह से सब बच्चे जोर-जोर से रोने लगे थे और वह दृश्य इतना भयानक था कि उस दृश्य को देख कर कोई भी व्यक्ति विचलित हो सकता था। आग का विकराल रूप देख कर और मौके की गंभीरता को देखते हुए रंगनाथ बैनर्जी ने आग बुझाने वाले सब कर्मचारियों की मानव चेन बना दी थी और उस समय फायर ब्रिगेड का एक दल आग पर काबू पाने के कार्य में पूरी शक्ति के साथ कार्य कर रहा था और दूसरा दल रंगनाथ बैनर्जी के निर्देशन में बच्चों को बचाने का कार्य युद्ध स्तर पर कर रहा था और उस समय किसी के पास भी एक दूसरे से बातचीत करने का समय नहीं था। उस समय रंगनाथ बैनर्जी के साथ जयदेव चक्रवर्ती नाम का एक नौजवान अधिकारी भी था जिसकी हाल ही में फायर ब्रिगेड में नियुक्ति हुई थी और उस समय जयदेव चक्रवर्ती रंगनाथ बैनर्जी के साथ उस हाल के निकट पहुंच गया था जिस हाल में छोटे बच्चे फंसे हुए थे और कुछ सोचते हुए रंगनाथ बैनर्जी ने जयदेव को अपने पीछे रहने का आदेश दिया था और इस बीच रंगनाथ बैनर्जी बिल्डिंग के बाहर की खिड़की को तोड़ कर उस हाल में प्रवेश करने का कोई रास्ता खोज रहे थे और उन्होंने देखा कि वो जिस जगह पर खड़े हुए थे वो उस बिल्डिंग का स्टोर रूम था और उस कमरे में बिल्डिंग का बहुत सा सामान भरा हुआ था और उस स्टोर रूम से उस हाल तक पहुंचने का रास्ता बहुत ही तंग था और रंगनाथ बैनर्जी उस स्टोर रूम से होते हुए उस हाल में प्रवेश कर गए थे और उन्होंने भीतर जाने से पहले जयदेव को बच्चों को वहां से सुरक्षित बाहर निकालने के सारे निर्देश दे दिए थे। जयदेव मौके की गंभीरता को समझ रहा था और उसे मालूम था कि रंगनाथ बैनर्जी का यूं आग में प्रवेश करना रंगनाथ बैनर्जी के लिए खतरे से खाली नहीं था, पर उस समय एक दूसरे से संवाद करने का भी समय नहीं था और वक्त की नज़ाकत को समझते हुए फायर ब्रिगेड की तीन गाड़ियां 6 वीं मंज़िल के उस हाल के निकट सुरक्षा की सारी व्यवस्था के साथ पहुंच चुकी थी और फायर ब्रिगेड के उन कर्मचारियों के पास बच्चों और दूसरे लोगों को उस बिल्डिंग से सुरक्षित बाहर निकालने के सारे उपाय मौजूद थे पर उस मुश्किल कार्य को अंजाम तक पहुंचाने के लिए

फायर ब्रिगेड के किसी एक कर्मचारी का उस भयानक आग में प्रवेश करना बहुत आवश्यक था और यह वास्तव में जान जोखिम में डालने वाला कार्य था क्योंकि उस हाल में आग की वजह से उठते हुए धुएं से उस बिल्डिंग के भीतर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था और धुएं और आग की तपिश की वजह से उस हाल के भीतर प्रवेश करना इतना आसान काम नहीं था और उस पर भी सबसे मुश्किल बात यह थी कि उस हाल में प्रवेश करने के लिए और वहां से खिड़की तक वापिस लौटने के लिए, स्टोर रूम के कमरे में से होते हुए भीतर जाना था और स्टोर रूम में जगह इतनी तंग थी कि उस जगह से केवल एक ही व्यक्ति भीतर प्रवेश कर सकता था और रंगनाथ बैनर्जी बिना अपनी जान की परवाह किए हुए उस भयानक आग में प्रवेश कर चुके थे और वो बहुत जल्दी ही स्कूल के छोटे बच्चों तक पहुंच गए थे और जयदेव उनसे कुछ कदम की दूरी पर ही उस बिल्डिंग की 6 वीं मंज़िल की खिड़की के निकट खड़ा हुआ था और दिल को हिला देने वाले उस भयानक दृश्य को देख रहा था और यह बात सच थी कि उस अफरा तफरी के माहौल में किसी के पास भी सोचने समझने तक का समय नहीं था पर फिर भी क्षण भर के लिए रंगनाथ बैनर्जी को बिना किसी भय के धुएं में प्रवेश करता हुआ देख कर जयदेव बहुत भावुक हो गया था क्योंकि वो इस बात को जानता था कि रंगनाथ बैनर्जी ने आग में फसे बच्चों को बचाने के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा दी थी।

रंगनाथ बैनर्जी ने भीतर जाने के बाद, जब छोटे छोटे बच्चों को रोते बिलखते देखा तो उनका कलेजा मुंह को आ गया था और उन्होंने जल्दी से वहां पर उपस्थित स्कूल टीचरों से कहा था "आप चिंता मत कीजिए मैं आप सब लोगों को इस आग में से सुरक्षित बाहर निकाल कर ले जाऊंगा पर सबसे पहले आप मेरी बात को ध्यान से सुनिए, हम सबको मिलकर काम करना होगा और सबसे पहले हमें सब बच्चों को इस मंज़िल की खिड़की तक पहुंचाना होगा और इसके लिए हमें स्टोर रूम के छोटे से रास्ते में से होकर गुज़रना होगा और आग में से निकलने के लिए हमें मानव चेन बनानी होगी और यहां से बच कर निकलने का अब सिर्फ ये ही एक उपाय है जिस उपाय से हम सब बच्चों को यहां से सुरक्षित बाहर निकाल सकेंगे" और इतना कह कर उन्होंने सब टीचरों के हाथों में रोते बिलखते बच्चे पकड़ाने शुरू कर दिए थे और उन्हें स्टोर रूम से खिड़की की ओर जाने का रास्ता भी दिखा दिया था और जब सब टीचर बच्चों को उठा कर खिड़की के पास पहुंच रहे थे तब वहां पर खड़े जयदेव ने उन सब टीचरों की मदद की थी और उस

खिड़की के पास खड़े फायर ब्रिगेड के कर्मचारी उन सब बच्चों और टीचरों को फायर ब्रिगेड की सीढ़ी की मदद से नीचे उतारने लगे थे। इतने में कुछ फायर ब्रिगेड के कर्मचारी उस खिड़की के रास्ते से भीतर प्रवेश कर गए थे पर वो आग और धुएं की वजह से उस हाल में जाने का साहस नहीं जुटा पा रहे थे पर इतने में जयदेव ने थोड़ी हिम्मत दिखाई थी और वो छोटे बच्चों को बचाने के लिए रंगनाथ बैनर्जी के बिल्कुल निकट पहुंच गया था और उसने देखा कि बच्चों को बचाने की कोशिश करते हुए, रंगनाथ बैनर्जी भी काफी ज़ख्मी हो चुके थे पर जयदेव को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ था कि इतना घायल हो जाने के बाद भी रंगनाथ बैनर्जी जी जान से बच्चों को बचाने के कार्य में जुटे हुए थे। अब जय देव और रंगनाथ बैनर्जी में सिर्फ 40 कदमों का फासला ही रह गया था और जयदेव को निकट आया देख कर रंगनाथ बैनर्जी के बच्चों को बचाने के प्रयास कुछ और तेज़ कर दिए थे और वो दोनो हाथों में बच्चों को उठा कर जयदेव के हाथों में सौंप रहे थे और जयदेव सामान से भरे उस स्टोर रूम में से लगभग भागता हुआ खिड़की के निकट जा रहा था जहां पर पहले से ही फायर ब्रिगेड के तीन कर्मचारी खड़े हुए थे जो बच्चों को फायर ब्रिगेड की सीढ़ी पर खड़े कर्मचारियों के हाथों में पकड़ा रहे थे और इस तरह से सारे बच्चे और टीचर उस भयानक आग में से सुरक्षित बाहर निकल आए थे और उस भागा दौड़ी में जयदेव खुद भी बहुत थक गया था पर थके होने के बावजूद भी उसकी नजरें अब रंगनाथ बैनर्जी को धुएं और आग की लपटों में ढूंढ रही थी और उसी कोशिश में जयदेव तेज़ी से भीतर की ओर भागा था और उसने देखा कि रंगनाथ बैनर्जी कमरे के एक कोने में नीचे गिरे हुए थे और थक जाने और अधिक जल जाने की वजह से उनकी सांसें थोड़ी उखड़ी हुई थी। मौके की गंभीरता को देख कर जयदेव ने जल्दी से आगे बढ़ कर रंगनाथ बैनर्जी को अपने हाथों का सहारा दे कर उन्हें जमीन से उठाया था और उन्हें अपने कंधे का सहारा देते हुए वो उन्हें खिड़की के पास तक ले आया था और इस कोशिश में वो खुद भी थोड़ा जल गया था और फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों की मदद से उन दोनों को भी सुरक्षित नीचे उतार लिया गया था और रंगनाथ बैनर्जी की गंभीर अवस्था को देखते हुए फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों ने उन्हें जल्दी से अस्पताल पहुंचा दिया था और अस्पताल पहुंचने पर सिर्फ क्षण भर में ही रंगनाथ बैनर्जी का इलाज शुरू हो गया था और उनकी गंभीर अवस्था को देखते हुए डॉक्टरों ने उन्हें ऑक्सीजन लगा दी थी पर यह बहुत दुख की बात की थी कि रंगनाथ बैनर्जी बच्चों को बचाते हुए खुद भी 50% से

अधिक जल गए थे और उनकी गंभीर अवस्था को देखते हुए अस्पताल के डॉक्टरों ने उन्हें ICU के वार्ड में शिफ्ट कर दिया था।

अगले दिन समाचार पत्रों के मुख्य पृष्ठ पर फायर ब्रिगेड के सब कर्मचारियों की दिल खोलकर प्रशंसा लिखी हुई थी और विशेष करके रंगनाथ बैनर्जी के बारे में लिखा हुआ था कि कैसे उन्होंने अपनी जान की परवाह ना करते हुए स्कूल के बच्चों और शिक्षकों को उस भयानक आग से बाहर निकाला था और सारे शहर में यह चर्चा का विषय बन गया था।

फायर ब्रिगेड के सब उच्च अधिकारी और शहर के जाने माने लोग रंगनाथ बैनर्जी को मिलने के लिए अस्पताल आने लगे थे और इस बीच फायर ब्रिगेड के सब कर्मचारी रंगनाथ बैनर्जी के अच्छे स्वस्थ के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे।

इस बीच डॉक्टरों ने फायर ब्रिगेड के उच्च अधिकारियों को रंगनाथ बैनर्जी के बारे में एक जानकारी दी थी और उन्होंने कहा था कि अब रंगनाथ बैनर्जी के बचने की कोई उम्मीद नहीं है और इस बात को सुनकर फायर ब्रिगेड के सब कर्मचारी बहुत दुखी हो गए थे और वो सब बारी-बारी से रंगनाथ बैनर्जी को मिलने के लिए अस्पताल के कमरे में जा रहे थे और इस बीच 5 सितंबर की तारीख भी आ पहुंची थी और आज के दिन ही रंगनाथ बैनर्जी को अपनी फायर ब्रिगेड की नौकरी से रिटायर्ड हो जाना था और उस दिन सारा अस्पताल फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों और उन बच्चों के परिवार के सदस्यों से भरा हुआ था जिन बच्चों को रंगनाथ बैनर्जी ने अपनी जान की परवाह ना करते हुए उस भयानक आग से बाहर निकाला था। उस समय अस्पताल का दृश्य बहुत ही भावुक कर देने वाला था और वहां पर उपस्थित लभभग हर इंसान की आंखों में आंसू थे और सब लोग रंगनाथ बैनर्जी के ठीक होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे। जब जयदेव चक्रवर्ती ने रंगनाथ बैनर्जी से मिलने के लिए अस्पताल के कमरे में प्रवेश किया था वह दृश्य बहुत भावुक कर देने वाला दृश्य था। जयदेव ने रंगनाथ बैनर्जी का हाथ अपने हाथों में लेकर बहुत प्रेम से उनसे कहा था "आप बहुत बहादुर इंसान है सर" उस पल रंगनाथ बैनर्जी ने धीरे से अपनी आँखें खोली थी और जयदेव को अपने निकट बैठा देख कर उनके चेहरे पर मुस्कराहट आ गई थी और उन्होंने बहुत ही धीमी आवाज़ में जयदेव से कहा था "मुझे बहुत गर्व है कि मैं अपनी डयूटी ठीक तरह से निभा पाया" फिर कुछ पल रुकने के बाद

उन्होंने जयदेव की ओर देखते हुए उससे कहा था “तुम बहुत बहादुर इंसान हो” इस बीच उनकी सांसें थोड़ी उखड़ने लगी थी और उन्होंने बहुत मुश्किल से कहा था “हर इंसान को अपनी डयूटी पूरी ईमानदारी से निभानी चाहिए” और यह उनके मुंह से निकलने वाले अंतिम शब्द थे और उनकी गर्दन एक ओर लुढ़क गई थी और उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए थे और रंगनाथ बैनर्जी की मृत्यु का समाचार आग की तरह सारे शहर में फैल गया था और उस पल शहर के सब जाने माने लोग अस्पताल में उपस्थित थे और यह बहुत आश्चर्य और साथ में दुख की बात थी कि रंगनाथ बैनर्जी की मृत्यु ठीक उनके रिटायर्डमेंट वाले दिन 5 सितंबर को हुई थी और उनका कमरा फूलों के गुलदस्तों से सजा हुआ था।

समाप्त

कहानी 39: एक अनकही कहानी

आदिनाथ बैनर्जी अब 75 वर्ष के हो गए थे और परिवार के नाम पर अब उनके घर का कोई भी सदस्य जीवित नहीं था और यह वास्तव में बहुत दुख की बात थी। आदिनाथ बैनर्जी को धन संपत्ति की कोई कमी नहीं थी और उनके घर पर नौकर चाकर थे जो उनका पूरा ध्यान रखते थे पर यह बात भी सच थी कि किसी की भी उनसे ऐसी नजदीकियाँ नहीं थी जैसी नजदीकियाँ किसी परिवार के सदस्य एक दूसरे के साथ होती थी और आदिनाथ बैनर्जी की जिंदगी के दिन अब बिना किसी उद्देश्य के बीत रहे थे और वो भीतर से बहुत निराश हो चुके थे। वो हर रोज़ बिना किसी उद्देश्य के घर से पैदल ही दिशाहीन निकल जाते थे और कहीं पर भी बैठ जाते थे और चुपचाप लोगों को आता जाता हुआ देखते रहते थे और लोगों की उस भीड़ में किसी को भी उनसे कोई मतलब नहीं था कि कोई उनसे उनका सुख-दुख पूछता और उनसे थोड़ा सहानुभूति का व्यवहार करता। एक दिन आदिनाथ बैनर्जी एक बगीचे में घूमते हुए निकल गए थे और एक शांत जगह को देख कर वो चुपचाप वहीं पर बैठ गए थे। उनको वहां पर बैठे हुए बहुत समय हो चुका था पर किसी ने भी उनसे कोई बातचीत नहीं की थी और यह सब एक 20 वर्षीय लड़की बहुत

देर से देख रही थी और पता नहीं क्या सोच कर वो उनके पास आई थी और उनके करीब पड़े एक बैंच पर बैठ गई थी और उसने बातचीत शुरू करते हुए उसने आदिनाथ बैनर्जी से कहा था ‘‘मेरा नाम रेनू है और मैं इस बगीचे के पास ही रहती हूं और मैं एक रेस्टोरेंट में नौकरी करती हूं मैं आपको बहुत दिनों से बगीचे में आते हुए देख रही हूं और आप मुझे हमेशा अकेले ही बैठे दिखाई देते हैं’’ आदिनाथ बैनर्जी ने उस लड़की को बहुत ध्यान से देखा था और थोड़ा मुस्करा कर उससे कहा था ‘‘मेरा नाम आदिनाथ बैनर्जी है और मैं एक रिटायर्ड प्रोफेसर हूं और एक समय था जब मेरे घर में बहुत से सदस्य थे’’ और उस पल आदिनाथ बैनर्जी को देख कर कुछ ऐसा लग रहा था जैसे वो अपनी जिंदगी की किताब के पन्ने पलट रहे थे और उन्होंने कुछ सोचते हुए कहा था ‘‘जब मैं 24 वर्ष का था तब मेरे माता पिता ने मेरा विवाह कर दिया था और मेरी पत्नी देविका बहुत सुंदर थी और वो मेरा बहुत ख्याल रखती थी और मेरी पसंद नापसंद का उसे बहुत ध्यान रहता था इसी तरह हमारे दिन हंसी खुशी बीतने लगे थे और एक वर्ष बाद हमारे परिवार में एक नया सदस्य आ गया था और हम दोनों मिलकर उसकी अच्छी तरह से परवरिश करने लगे थे और जब वो कुछ बड़ा हुआ था तो हमने उसे स्कूल भेजना शुरू कर दिया था और मुझे आज भी याद है कि कुछ दिन तक वो स्कूल बहुत रो कर जाता था और उसे स्कूल छोड़ते हुए हमें भी बहुत दुख होता था पर जब वो स्कूल से वापिस लौटता था तब हम बहुत खुश होते थे और इसी तरह से हमारे दिन बीतते गए और हमारे बेटे ने अपनी स्कूल की पढ़ाई खत्म की और वो अब कालेज जाने लगा था’’ तब आदिनाथ ने एक बार उस लड़की की ओर देखा था जो उनकी बातों को बहुत ध्यान से सुन रही थी और फिर आदिनाथ बैनर्जी ने अपनी जिंदगी की कहानी के बारे में अनंत में देखते हुए फिर से कहना शुरू किया था ‘‘हमारा बेटा बहुत बुद्धिमान था और उसने कालेज की पढ़ाई प्रथम श्रेणी के अंकों के साथ पास की थी और हम इस बात से बहुत खुश थे और वो हमसे बहुत प्यार करता था और वो प्यार से मुझे बाबा कहता था और एक दिन उसने हम दोनों से कहा कि वो आगे पढ़ना चाहता है और उसके लिए उसे विदेश जाना होगा और उसकी बात सुनकर हम दोनों कुछ समय के लिए बहुत उदास हो गए थे पर फिर हमने उसकी खुशी का सोच कर यह निर्णय लिया कि हम उसे विदेश भेजेंगे और उसे आगे पढ़ने का मौका देंगे कुछ समय के बाद वो विदेश चला गया और वहां से उसके खत आते रहे और अधिक बुद्धिमान होने की वजह से उसने वहां की पढ़ाई जल्दी ही समाप्त कर ली थी और

उसके अच्छे नंबरों की वजह से एक विदेशी कंपनी ने उसे नौकरी पर रख लिया था'' और एक क्षण के लिए आदिनाथ बैनर्जी ने पास बैठी लड़की की ओर देखा था और उन्होंने देखा कि उस लड़की की जगह पर अब वहां पर एक वृद्ध इंसान बैठा हुआ था और वो उनकी एक तरफा बातचीत को बहुत गौर से सुन रहा था और वो लड़की वहां से कब की जा चुकी थी पर आदिनाथ बैनर्जी की कहानी यही पर समाप्त नहीं हुई थी और फिर उन्होंने एक बार उस वृद्ध की ओर देखा था और फिर अपनी जिंदगी की कहानी आगे कहनी शुरू कर दी थी ''कंपनी के लोग मेरे बेटे को बहुत पसंद करते थे और वो बहुत मेहनती था और वो अपने पत्रों में लिखता रहता था कि आज उसे कंपनी के लोगों द्वारा सम्मानित किया जा रहा है और उस पल वो हम दोनों को बहुत याद करता था और वो हमें हर महीने पैसे भेजना कभी नहीं भूलता था पर इस बीच मेरी पत्नी देविका कुछ उदास रहने लगी थी और अब वो चेहरे से भी थोड़ी बीमार दिखाई देने लगी थी पर उसने मुझ से कहा था कि उसकी बीमारी के बारे में मैं उसके बेटे को कोई खबर न करूं क्योंकि उसे लगता था कि यहां की परेशानी की खबर सुनकर उनका बेटा बेवजह ही परेशान होगा। मेरी पत्नी और मैं सदा अपने बेटे को खुश देखना चाहते थे और ऐसे ही समय बीतता गया और इस बीच हम दोनों अपना जन्मदिन किसी अच्छे होटल में मानते थे और उस दिन हम दोनों अपने बेटे को बहुत याद करते थे और ऐसे ही कुछ वर्ष और बीत गए थे और अब मेरी पत्नी कुछ अधिक बीमार रहने लगी थी'' और इतना कह कर क्षण भर के लिए आदिनाथ बैनर्जी ने उस वृद्ध की ओर देखा था पर अब तक वो वृद्ध भी वहां से जा चुके थे और अब उसके स्थान पर एक नौजवान पति पत्नी बैठे हुए थे और वो मेरी ओर बहुत ध्यान से देख रहे थे और क्षण भर के लिए आदिनाथ बैनर्जी ने उस पति पत्नी की ओर देखा था और फिर उन्होंने अपनी जिंदगी की कहानी आगे कहनी शुरू कर दी थी ''एक दिन हमारे बेटे का हमें खत मिला, जिसमें उसने लिखा था कि उसने वहां पर एक घर खरीद लिया है और उस खुशखबरी को सुनकर मेरी पत्नी और मैं बहुत खुश हुए थे और उसने पत्र के साथ हमें उस घर की कुछ तस्वीरें भी भेजी थी जिन्हें हम दोनों बार-बार देखते थे और इसी तरह हंसते खेलते एक वर्ष कब बीत गया था और हमें इस बात का पता तक नहीं चला था और एक दिन हमारे बेटे ने हमें पत्र लिख कर बताया कि उसने विवाह कर लिया है और उसने अपनी पत्नी के साथ खिंचवाई बहुत सी तस्वीरें हमें भेजी थी और उसकी पत्नी एक अंग्रेज़ लड़की थी और वो बहुत सुंदर थी और हमारे बेटे ने

हमें पत्र लिख कर बताया था कि वो लड़की उसके साथ कालेज में पढ़ती थी और उसके माता पिता ने उसे विवाह का प्रस्ताव भेजा था जिसे हमारे बेटे ने तुरंत स्वीकार कर लिया था और उस खबर को सुनकर हम खुश भी हुए थे पर साथ ही थोड़े उदास भी हो गए थे और इसकी वजह यह थी कि हम अपने बेटे से बहुत दूर थे और उससे अब हमारा मिलना मुमकिन नहीं था। हमारे बेटे की पत्नी बहुत पढ़ी लिखी और बहुत सुंदर थी" और इस बीच आदिनाथ बैनर्जी ने एक बार फिर अपने पास बैठे उस नौजवान पति पत्नी की ओर देखा था पर अब तक वो पति पत्नी भी जा चुके थे और अब उनकी जगह पर एक 12 वर्षीय छोटा बच्चा वहां पर बैठा हुआ था जो उनकी बातों को बहुत ध्यान से सुन रहा था और उसने अचानक आदिनाथ बैनर्जी का हाथ पकड़ कर उनसे पूछा था "आगे क्या हुआ अंकल" और आदिनाथ बैनर्जी ने मुस्करा कर उस बच्चे की ओर देखा था और फिर उन्होंने अपनी जिंदगी की कहानी कहनी शुरू कर दी थी "एक वर्ष के बाद हमारा पोता हुआ था और हम पति पत्नी इस खबर को सुनकर बहुत खुश हुए थे और उस दिन हम दोनों ने एक शानदार होटल में डिनर किया था और हमने दादा और दादी बनने का जश्न मनाया था और वो हमारे जीवन के ऐसे पल थे जैसे ईश्वर ने हमारे सब सपने सच कर दिए थे। ऐसे ही थोड़े वर्ष और बीत गए थे और इस बीच हमारा बेटा हमें तस्वीरें भेजता रहा और हम उन तस्वीरों को देख कर खुश होते रहे और अब हमारा पोता 5 वर्ष का हो गया था और उसने स्कूल जाना भी शुरू कर दिया था" इस बीच आदिनाथ बैनर्जी की निगाह पास बैठे बच्चे की ओर गई थी और उन्होंने देखा कि उस बच्चे के दोस्त उसे अपने साथ फुटबाल खेलने के लिए बुला रहे थे और वो बच्चा भागता हुआ अपने दोस्तों के बीच चला गया था और अब उस बच्चे के स्थान पर एक वृद्ध महिला बैठी हुई थी जो लगभग उनकी ही उम्र की थी और उस वृद्ध महिला की ओर देखने के बाद आदिनाथ बैनर्जी ने अपनी जिंदगी की कहानी के बारे में आगे कहना शुरू किया था "कुछ साल ऐसे ही सुख से बीत गए थे पर इस बीच मेरी पत्नी कुछ अधिक बीमार रहने लगी थी, पर उसने मुझे जोर देकर कहा था कि उसकी बीमारी की खबर वो बच्चों को न दे पर मुझे मालूम था कि वो अपने बेटे और पोते को याद करके भीतर ही भीतर से घुल रही थी और मैं खामोश बैठा उसे तिल-तिल कर मरता हुआ देख रहा था और इसी बीच एक दिन मेरी अंग्रेज़ बहु का तार आया और उस तार में उसने लिखा था कि आपका बेटा बहुत बीमार है और आप जल्दी से यहां आ जाइए और उस तार को पढ़ कर मैं और मेरी पत्नी बहुत

चिंतित हो उठे थे और उस समय मुझे अपनी पत्नी की भी फिक्र थी क्योंकि कुछ दिनों से वो अपने बिस्तर से भी नहीं उठ पा रही थी पर जैसे तैसे करके मैंने अपनी पत्नी के लिए एक औरत को उसकी देखभाल करने के लिए रख कर मैं खुद विदेश रवाना हो गया था और वहां पहुंच कर मुझे बहुत दुखद समाचार मिला" और इतना कहते ही आदिनाथ बैनर्जी की आंखों से आंसू बहने लगे थे और उनके पास बैठी वृद्ध महिला ने उन्हें सांत्वना देने के लिए उनका हाथ पकड़ लिया था और उस पल उस वृद्ध महिला की आंखों से भी आंसू बहने लगे थे और वो बार बार अपने पल्लू से उन्हें पोंछ रही थी तब क्षण भर ठहर कर आदिनाथ बैनर्जी ने अपनी जिंदगी की कहानी आगे कहनी शुरू कर दी थी "मेरी अंग्रेज़ बहु ने मुझे बताया कि आपके बेटे को कैंसर था और वो तीसरी स्टेज पर था और डॉक्टरों ने उसे बचाने की बहुत कोशिश की थी" और यह कह कर आदिनाथ बैनर्जी सुबकने लगे थे पर फिर उन्होंने खुद को संभाला था और कहानी आगे कहनी शुरू कर दी थी "हमने उसका दाहसंस्कार वहीं पर कर दिया था और अपने पोते को मिलने के बाद मैं भारत वापिस चला आया था पर अब मुझे इस बात की चिंता होने लगी थी कि अपनी पत्नी को मैं यह दुखद समाचार कैसे बताऊंगा और मैंने उसी पल यह निर्णय कर लिया था कि जब तक वो ठीक नहीं हो जाती मैं उसे कुछ भी नहीं बताऊंगा पर इस बीच हमारी बहु ने पत्र लिखने कम कर दिए थे और एक दिन ऐसा भी आया कि वो हमें लगभग भूल ही गई थी और अपने पोते के बारे में सोच कर मैंने उसे कुछ पत्र लिखे थे पर उसने मेरे लिखे पत्रों का कोई जवाब नहीं दिया था और मैंने उसके इस रवैए से इस बात का अंदाजा लगा लिया था कि अब वो हमसे कोई भी रिश्ता नाता नहीं रखना चाहती थी और यह हमारे लिए बेहद दुख की बात थी कुछ वर्ष तक मैं खुद ही अपने पुत्र की तरफ खुद को पत्र लिखता रहा और अपनी पत्नी को खुद के लिखे पत्र पढ़ कर सुनाता रहा पर शायद मेरी पत्नी बहुत पहले से ही सब कुछ समझ गई थी क्योंकि उस दिन के बाद उसकी तबियत दिन प्रतिदिन बिगड़ती ही जा रही थी और मैं कुछ भी नहीं कर पा रहा था और एक दिन वही हुआ जिसका मुझे डर था" और उस पल आदिनाथ बैनर्जी ने भरी आंखों से उस वृद्ध महिला की ओर देखा था जिसकी आंखों से आंसू बह रहे थे और उन्होंने अपनी कहानी आगे कहनी शुरू कर दी थी पर इस बीच वो महिला रोते हुए उठ कर एक ओर चल दी थी शायद अब उसमें आगे की कहानी सुनने की हिम्मत नहीं थी या शायद उसे पता था कि इस कहानी में आगे क्या हुआ होगा। कुछ समय तक आदिनाथ बैनर्जी

खामोश बैठे रहे और फिर रूंधे गले से उन्होंने कहा था "और रात को सोते हुए मेरी पत्नी मुझे इस दुनिया में अकेला छोड़ कर विदा हो गई" और उस पल आदिनाथ बैनर्जी खुद को संभाल नहीं पाए थे और वो रोने लगे थे पर उस पल उनके पास उनके आंसू पोंछने वाला कोई भी नहीं था।

समाप्त

कहानी 40: एक किस्सा अधूरी प्रेम कहानी का

पुरातत्व विभाग के लोग एक बहुत पुरानी हवेली की खुदाई कर रहे थे कि तभी एक मजदूर की आवाज़ आई थी "साहेब यहाँ पर एक बक्सा दबा पड़ा है" मैं वहाँ पर इंजीनियर था और मैंने उस मजदूर को निर्देश दिया "उस बक्से को सावधानी से बाहर निकाल लो" और मेरे कहे मुताबिक उन मजदूरों ने बक्से को बहुत सावधानी से बाहर निकाल लिया था। वह वर्षो पुराना संदूक था और बहुत कोशिशों के बाद जैसे ही उस लोहे के पुराने संदूक को खोला गया तो मैंने देखा कि उस बक्से में कुछ पुरानी सी चीज़ें पड़ी हुई थी जो शायद किसी की यादों से सम्बंधित थी और मैंने जब उस बक्से की अच्छी तरह से छानबीन की तो मुझे उस बक्से में से किसी के लिखे हुए सैकड़ों पत्र मिले जो उस पुराने से संदूक में किसी ने बरसों से बहुत संभाल के रखे हुए थे। मैं उन पत्रों को पढ़ने की कोशिश करने लगा था पर वह पत्र बरसों पहले लिखे गए थे इसलिए उन पत्रों को पढ़ना थोड़ा मुश्किल हो रहा था। उन पत्रों में कहीं कहीं पर लिखाई थोड़ी धुंधली सी पड़ चुकी थी पर फिर भी कुछ लाइने पढ़ी जा सकती थी और उन पत्रों की अस्पष्ट भाषा को पढ़ने के बाद मैंने इस बात का अंदाज़ा लगा लिया था कि वह सारे प्रेम पत्र थे जो

किसी ने अपनी प्रेमिका को याद करते हुए लिखे थे और उन प्रेम पत्रों में जैसे किसी ने अपने दिल की दास्ताँ लिख दी थी पर प्रेम पत्र लिखने वाले ने वह पत्र अपने तक ही सीमित रखे थे। मैंने उस संदूक में थोड़ी और छानबीन की और अब मुझे उस शख्सियत की तस्वीर की तलाश थी जिस शख्सियत को याद करके किसी ने इतने सारे प्रेम पत्र लिख डाले थे। न जाने क्यों मुझे कुछ ऐसा आभास हो रहा था कि हो न हो उस प्रेम पत्र लिखने वाले ने कम से कम एक तस्वीर तो उस शख्सियत की बहुत हिफाज़त से इस संदूक में कहीं न कहीं पर ज़रूर रखी होगी। इसी सोच के तहत मैं उस पुराने संदूक का एक एक सामान बहुत सावधानी से बाहर निकाल रहा था और मैंने देखा कि उस संदूक में एक लकड़ी का छोटा सा बॉक्स भी पड़ा था, जो जगह जगह से टूट गया था और मैंने जिज्ञासावश उस लकड़ी के बक्से को खोला और मैंने देखा कि उस लकड़ी के बॉक्स में किसी ने बहुत हिफाज़त से एक तस्वीर रखी हुई थी जो समय के साथ थोड़ी धुंधली पड़ चुकी थी और उस तस्वीर के साथ ही गुलाब के कुछ सूखे फूल पड़े हुए थे। मैं उन प्रेम पत्रों के बारे में सोच ही रहा था कि वहाँ पर काम कर रहे मजदूरों ने मुझ से पूछा था “इस बॉक्स का क्या करें हजूर” मैंने कुछ सोचा और उन मजदूरों से कहा था “इस संदूक को मेरी कार में रखवा दो” अब मेरे भीतर उस प्रेम कहानी को जानने की जिज्ञासा जन्म ले चुकी थी और इसी जिज्ञासावश मैंने अपने सब काम जल्दी से समाप्त कर लिए थे और उस संदूक को लेकर मै अपने घर की ओर रवाना हो चुका था। पर रास्ते भर मैं उन प्रेमियों के बारे में सोचता रहा था और घर पहुंचते ही मैंने सबसे पहले उन प्रेम पत्रों को उस बॉक्स से बाहर निकाला था और उन्हें पढ़ने की कोशिश करने लगा था और मुझे लगा कि शायद इससे मोहब्बत करने वालों का कोई सुराग मिल जायेगा। पत्रों को पढ़ने के बाद मैंने उस धुंधली सी तस्वीर को उस बक्से में से बाहर निकाला था और बहुत बारीकी से उसका निरीक्षण करने लगा था। वह एक बहुत खूबसूरत शख्सियत की तस्वीर थी जो वक्त के साथ थोड़ी धुंधली सी पड़ चुकी थी पर अब भी उस धुंधली सी तस्वीर से उस शख्सियत की खूबसूरती का अंदाज़ा लगाया जा सकता था। संदूक में पड़े उन प्रेम पत्रों को पढ़ने के बाद मैं बहुत भावुक हो गया था। वह प्रेम पत्र किसी के असफल प्रेम की दास्ताँ को बयाँ कर रहे थे और उन पत्रों को पढ़ने के बाद मुझे यह अहसास हो गया था कि शायद किसी मजबूरी के रहते उन दो प्रेमियों का मिलन नही हो सका था और मुझे आस पास के गाँव के लोगों से पूछताछ करने के बाद इस बात का पता चला था कि

बरसों पहले यह हवेली एक जमींदार की थी और उसके दो बेटे थे जिसमें से उनका बड़ा बेटा किसान था और उस ज़मीदार का छोटा बेटा एक शिक्षक था और वो बहुत दयालु और परोपकारी इन्सान था। इससे अधिक मुझे कोई विशेष जानकारी नहीं मिली थी। मेरे भीतर उन प्रेम पत्रों के बारे में सोच कर कुछ पल के लिये बहुत उदासी छा गई थी। वह पुराना सा संदूक अब भी मेरे सामने खुला पड़ा हुआ था और किसी प्रेमी के लिखे वह बेमिसाल प्रेम पत्र भी मेरे सामने ही टेबल पर पड़े थे। पूरी रात मैं उन प्रेमियों के बारे में सोचता रहा था कि आखिर ऐसा क्या हुआ होगा कि उन प्रेमियों का मिलन नही हो सका और करवट बदलते बदलते मालूम नही कब मैं नींद की आगोश में समा गया था। पर अगले ही दिन मैंने उन प्रेम पत्रों को लेकर एक फैसला लिया और पहली गाड़ी से निकट के एक शहर रवाना हो गया और उस पल मैंने निश्चय किया था कि वह प्रेम पत्र, सूखे हुए फूल और उस धुँधली सी पड़ चुकी तस्वीर को मैं गंगा जी में बहा दूँगा और अगले ही दिन मैंने उन प्रेम पत्रों को और उस तस्वीर को बहुत सम्मान पूर्वक गंगा जी में बहा दिया था और उन्हें सम्मान पूर्वक गंगा जी में बहाने के बाद मैं अपने भीतर अदभुत तृप्ति का अहसास कर रहा था।

घर वापिस आने पर, मैंने उस पुराने संदूक को बहुत बेमन से घर के बाहर रखवा दिया था और मैंने देखा कि एक कबाड़ बेचने वाले ने उस संदूक को उठा लिया था पर साथ ले जाने से पहले वो मन ही मन में उस संदूक का मूल्यांकन कर रहा था पर मेरे हिसाब से उस पुराने संदूक का सही सही मूल्यांकन करना लगभग नामुमकिन था। कुछ पल के लिये उस अधूरी प्रेम कहानी के बारे में सोच कर मेरी आँख भर आई थी। पर अब मैं इस बात को जानता था कि उस प्रेम कहानी का अब सदा सदा के लिये अंत हो चुका था। अब कभी कोई नही जान पायेगा कि वह प्रेम पत्र किसने लिखे थे और किस शख्सियत के नाम पर लिखे गए थे। पर मैं अपने ख़यालों में मन ही मन में उस शख्सियत की कल्पना कर रहा था जिसकी याद में किसी ने सैकड़ों पत्र लिख डाले थे। आज मेरा खाना खाने को मन नहीं हुआ था इसलिए मैं नदी के किनारे जा बैठा था जहां पर मेरे सिवा और कोई भी नही था और उस पल भी मैं मन ही मन में यह सोच रहा था कि किसी के प्रेम की अधूरी कहानी को सुनकर इंसान इतना उदास क्यों हो जाता है और यह बात सच थी कि इस दुनिया में प्रेम के सिवा और रखा ही क्या था।

समाप्त

कहानी 41: एक जोकर

बहुत समय पहले की बात है एक बूढ़े लेखक ने अपने जीवन में जीवंत किरदार बनने की ठानी ली थी और “जोकर” की कहानी का यह किस्सा लगभग वर्ष 1970 की बात है जब बच्चों की शिक्षा को लेकर सरकार और समाज दोनों ही बहुत जागरूक हो चुके थे।

इस विषय पर बहुत सोच विचार करने के बाद एक बूढ़े लेखक ने अपनी एक मित्र से जो की एक स्कूल की प्रिंसिपल भी थी उससे बात की थी कि वो खुद एक जोकर का लिबास पहन कर जोकर की भूमिका में आकर स्कूल के बच्चों का कुछ मनोरंजन करना

चाहता है और बच्चों को हंसाने के साथ साथ वो उन्हें कुछ शिक्षाप्रद बातें भी सिखाना चाहते है।

स्कूल की प्रिंसिपल उस बूढ़े लेखक की अभिन्न मित्र थी और उस लेखक को वर्षो से जानती थी और साथ ही दिल से अपने मित्र का बहुत सम्मान करती थी। उस प्रिंसिपल ने स्कूल के आयोजकों और स्कूल की शिक्षा समीति से इस विषय पर बहुत गहराई से बातचीत की थी और प्रिंसिपल महोदया ने उनका समर्थन हासिल कर लिया था और प्रिंसिपल महोदया ने शिक्षा समिती को विश्वास दिलाया था कि बच्चों के मानसिक विकास के लिये यह एक नया प्रयोग हो सकता है। प्रिंसिपल महोदया के इस खूबसूरत सुझाव को शिक्षा समिति ने सर्वसम्मति से मान लिया था और वह दिन उस बूढ़े लेखक की ज़िन्दगी का एक सुनहरा दिन बन गया था क्योंकि उस बूढ़े लेखक ने जिस कार्य का सपना देखा था अब उस सपने को अंजाम तक पहुंचाने का उन्हें एक सुनहरा अवसर मिल गया था इसलिए वह बूढ़ा लेखक प्रिंसिपल महोदया को तहे दिल से शुक्रिया अदा कर रहा था।

पर उस बूढ़े लेखक ने जोकर की भूमिका में आने से पहले प्रिंसिपल महोदया से एक वादा लिया था कि वो इस भेद को सदा भेद ही रहने देंगी और वो कभी भी किसी यह बात नही बताएंगी कि जोकर की भूमिका करने वाला वह व्यक्ति वास्तव में कौन है। वह बूढ़ा लेखक अपने जीवन के दो किरदारों के इस भेद को किसी भी व्यक्ति को नही बताना चाहता था और उस स्कूल की प्रिंसिपल महोदया ने भी अपने मित्र को यह वादा किया था कि वो इस राज़ को सदा राज़ ही रहने देंगी। उस समय प्रिंसिपल महोदया उस बूढ़े लेखक की दिल की बात को समझ नहीं पाई थी कि वह बूढ़ा लेखक अपने अच्छे कामों को छुपा कर क्यों रखना चाहता है। पर इस बात का सच तो यह था कि वह बूढ़ा लेखक इस नेक कार्य को अपनी मानसिक संतुष्टि के साथ साथ निस्वार्थ भाव से मानवता की सेवा करना चाहता था और उस बूढ़े लेखक को इस सामाजिक कार्य से धन कमाने की कोई लालसा नही थी। सही शब्दों में यह उस बूढ़े लेखक की बहुत दयालु और रचनात्मक सोचे थी। ऐसी भूमिका को स्वीकार करने के बाद उस बूढ़े लेखक को अपने सारे जीवन में अब दो किरदारों का अभिनय एक साथ करना था।

उस बूढ़े लेखक की इस बेमिसाल सोच से उसका सोचा समझा ख्वाब सच हो गया था और वह अपनी ही लिखी एक खूबसूरत कहानी का खुद ही जीवंत किरदार बन गया था और इस पर एक विचित्र बात यह थी कि कोई भी इस विषय में कुछ भी नही जानता था।

वह लेखक बाजा (माउथ ऑर्गन) बजाने में निपुण था और अपनी इस संगीत विद्या से वो सब सुनने वालों का मन मोह लेता था। उस बूढ़े लेखक की बेरंग सी ज़िन्दगी में जोकर का जीवंत किरदार का अभिनय करने की वजह से जैसे बहार आ गई थी और इस दोहरी ज़िंदगी की भूमिका से वह बूढ़ा लेखक बहुत खुश था।

वह बूढ़ा लेखक चुपचाप पाठशाला के एक कमरे में जाता था और अपने झोले में से जोकर की पोशाक निकाल कर पहनता था और वो अपना भेस बदल कर एक जोकर बनकर छोटे बच्चों के साथ नाचता गाता और अपने बाजे से उन्हें मधुर धुने सुनाता था और जो बच्चे थोड़े चुपचाप और उदास बैठे होते थे वो उन बच्चों पर विशेष ध्यान देता था और वह जोकर जब भी स्कूल में आता था सब बच्चों के लिए वह पल जैसे सुनहरी पल बन जाते थे। कहाँ तो बच्चों के लिए स्कूल में सिर्फ और सिर्फ पढ़ाई ही होती थी और स्कूल के कड़े नियम थे पर अब जोकर के स्कूल में आ जाने की वजह से सब बच्चों की बुद्धि का बहुत तेज़ी से विकास होने लगा था। उस जोकर के साथ गुज़रे आज़ादी के वह पल सब बच्चों को बहुत भाने लगे थे और अब सब बच्चे स्कूल में अधिक से अधिक समय बिताना चाहते थे। बूढ़े लेखक बने जोकर की निगाहें बहुत तेज़ थी और वो हर बच्चे को बहुत पैनी नज़र से देखता था और जिस बच्चे में भी उसे आत्मविश्वास की कुछ कमी दिखाई देती थी वो बूढ़ा लेखक उन बच्चों को अपनी कलाबाज़ियों से और नटखट हरकतों से खूब हंसाता था और उन बच्चों के संग खेल कर उनका दिल जीत लेता था। फिर सब बच्चों के लिये जोकर के साथ बीते वह पल उनकी ज़िंदगी के सुनहरी पल बन जाते थे। सब बच्चे जोकर के साथ खूब हंसते खेलते थे और उस स्कूल की सब शिक्षक भी स्कूल में आए इस सुखद परिवर्तन से बहुत हैरान थे। स्कूल के वातावरण में यह एक सुन्दर परिवर्तन था और अब कोई भी बच्चा स्कूल जाने के लिए रोता नहीं था और अब सब बच्चे जैसे बहुत बेसब्री से उस जोकर के स्कूल में आने का इंतज़ार करते थे और उस जोकर का मंत्रमुग्ध कर देने वाला संगीत भी सब बच्चों का मन मोह लेता था। स्कूल के इस सुन्दर माहौल से सब बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ने लगा था

और अब सब बच्चे हंसते खेलते स्कूल आने लगे थे और स्कूल में आए इस सुखद परिवर्तन का सारा श्रेय उस बूढ़े लेखक को जाता था।

जोकर के आने से पूरे स्कूल का माहौल बदल चुका था और अब स्कूल के कड़े नियम भी इस अदभुत माहौल की वजह से थोड़ी आज़ादी महसूस करने लगे थे और इसी वजह से स्कूल का सारा स्टाफ भी बहुत प्रसन्न था। उन खूबसूरत लम्हों की वजह से जैसे समय को पंख लग चुके थे। एक समय वह था जब स्कूल का स्टाफ और सब बच्चे स्कूल की छुट्टी होने का बहुत बेसब्री से इंतज़ार करते थे पर अब स्कूल का माहौल आश्चर्यजनक तौर से बदल चुका था और अब स्कूल में सब बच्चे और शिक्षकगण भी प्रसन्न रहने लगे थे। स्कूल के इस खूबसूरत परिवर्तन पर प्रिंसिपल महोदया की बहुत पैनी निगाहें थी और भीतर से प्रिंसिपल महोदया भी इस सुखद परिवर्तन से बहुत खुश थी और उन्हें इस बात की भी बहुत खुशी थी कि उनके अभिन्न मित्र की लगाई फूलों की बगिया अब महकने लगी थी और कहते हैं कि जैसे बुरी खबरें बहुत तेज़ी से फैलती हैं कुछ वैसे ही यह बात भी सच थी कि अच्छी खबरें भी बहुत तेज़ी से फैलती थी। बच्चों में आये इस सुन्दर परिवर्तन से यह बात कस्तूरी की महक की तरह से सब तरफ फैल चुकी थी। सब बच्चों के माता पिता अब उस जोकर के करतब को देखना चाहते थे और उस जोकर से मिलना चाहते थे। पर वह बूढ़ा लेखक चुपचाप स्कूल के एक अंधेरे कमरे में अपनी पोशाक बदलता था और स्कूल के बाहर खड़े लोगों के बीच में से होकर निकल जाता था और यह बहुत विचित्र बात थी कि कोई सोच भी नही सकता था कि वह करतब दिखाता हुआ जोकर कोई बूढ़ा इंसान हो सकता है।

बच्चों के माता पिता उस जोकर को देखने की तमन्ना लिए घंटों स्कूल के बाहर खड़े रहते थे पर वो इस बात को नही जानते थे कि वो जोकर कितनी ही बार उन सब के बीच में से हो कर स्कूल के भीतर प्रवेश करता था और उन सब लोगों के बीच में से होता हुआ उस स्कूल से बाहर भी आ जाता था। एक बार सब लोगों ने मिल कर प्रिंसिपल महोदया पर बहुत दबाव डाला और उस जोकर को देखने की तमन्ना ज़ाहिर की और प्रिंसिपल महोदय ने भी उस बूढ़े लेखक को समझाया था कि बच्चों के माता पिता आपसे मिलना चाहते हैं। पर प्रिंसिपल महोदया के बार बार समझाने पर भी उस बूढ़े लेखक पर इस बात का कोई भी असर नही पड़ा था।

शिक्षा में विकास को देखते हुए शिक्षा समिति ने हर स्कूल में इस प्रकार की व्यवस्था की थी जिससे सब बच्चे स्कूल के कड़े नियमों के मानसिक तनाव से मुक्त रह सकें क्योंकि अब शिक्षा समिति के सब सदस्य उस प्रयोग के अच्छे परिणामों को साक्षात देख रहे थे। वह देख रहे थे कि इस अदभुत प्रयोग से बच्चे निर्भय होने लगे थे और उनका बहुत अच्छा मानसिक विकास हो रहा था।

वह बूढ़ा लेखक अपनी वास्तविक जिंदगी में कुछ कथा कहानियाँ लिख कर दो पैसे कमा लेता था और उससे उसका जीवन निर्वाह हो जाता था और वो अपनी थोड़ी सी पूंजी में ही बहुत संतुष्ट था। उसके घर में एक लकड़ी की पुरानी सी अलमारी थी और उसके पास कुछ ही कपड़े थे जो उसकी ज़रूरत के मुताबिक भी बहुत कम थे। पर जोकर के इस किरदार ने उस बूढ़े लेखक के जीवन में जान फूँक दी थी जिससे वह लेखक अब बहुत खुश रहने लगा था। वह बूढ़ा लेखक सड़कों चौराहों और बाज़ारों में जब कभी स्कूल के छोटे बच्चों को देखता था जो उसे स्कूल में बहुत उदास से दिखाई देते थे और उन बच्चों को वो अपनी कलाबाजियों से हंसाता था और उन बच्चों को बाज़ार में देख कर वो उन बच्चों से शरारत करने से बाज़ नहीं आता था पर वो बच्चे उस बूढ़े लेखक के चरित्र को देख कर उस जोकर की कल्पना भी नही कर सकते थे जो उन्हें स्कूल में हंसा हंसा कर लौटपोट कर देता था। वह बूढ़ा लेखक छोटे बच्चों के चेहरे पर आए आश्चर्य के भाव देख कर बहुत आनंदित होता था और वो इस बात को जानता था कि सब बच्चे बहुत भोले और मासूम हैं और वो चाह कर भी इस बात की कल्पना नहीं कर सकते थे कि यह बूढ़ा इंसान ही वह जोकर है जो उन्हें स्कूल में हंसा हंसा कर लोटपोट कर देता है। वह बूढ़ा लेखक इस बात को जानता था कि छोटे बच्चों की बाल सुलभ बुद्धि चाह कर भी इतनी दूर तक नही सोच सकती थी।

जोकर का किरदार निभाते निभाते दिन महीने और साल गुज़र गए थे और वह लेखक अब कुछ और अधिक बूढ़ा हो चुका था। पर वो लेखक अब भी पूरे जोश से जोकर बन कर स्कूल में आता था और सब बच्चों का मनोरंजन करता था। कितने ही छोटे बच्चे उस बूढ़े जोकर के करतब देखते देखते अब जवान हो चुके थे और अब उनके बच्चे भी उसी स्कूल में पढ़ने लगे थे।

पर कहते कि सब दिन एक समान नहीं होते और इसी परिवर्तन के रहते एक दिन एक घटना घटी और जिसका डर वही हुआ। उस दिन सब लोग स्कूल में उस जोकर का इंतज़ार करते रहे थे पर वो जोकर स्कूल में नही आया था। स्कूल के सब बच्चे इस बात से बहुत उदास हो चुके थे और शिक्षकगण भी उस जोकर के न आने से थोड़े हैरान थे। उस जोकर का किसी को कुछ पता नहीं था कि वास्तव में वह जोकर कौन है उस बूढ़े लेखक को जोकर की भूमिका करते हुए अब तक बहुत वर्ष बीत चुके थे और इस दौरान उस स्कूल की प्रिंसिपल भी बदल चुकी थी। उस स्कूल के शिक्षकगण जोकर के किरदार को जानते थे, पर उन में से एक भी शिक्षक इस बात को नहीं जानता था कि वास्तव में वह जोकर कौन व्यक्ति है। पुरानी प्रिंसिपल को जब इस चौंका देने वाली खबर का पता चला कि स्कूल में आज जोकर नही आया तो उन्हें यह जानकर थोड़ी चिंता हुई और आश्चर्य भी हुआ था और उसी चिंता की वजह से प्रिंसिपल महोदया स्कूल के कुछ शिक्षकों अपने साथ लेकर उस बूढ़े लेखक के घर पर पहुंची थी। तो प्रिंसिपल महोदया ने देखा कि उस लेखक के घर का दरवाज़ा भीतर से बंद था और कुछ शिक्षकों ने उस बूढ़े लेखक के घर के द्वार को बहुत देर तक खटखटाया था पर भीतर से जवाब नदारद था। घर के भीतर एक दम सन्नाटा छाया हुआ था और साथ आये सब शिक्षक इस बात से भी हैरान थे कि प्रिंसिपल महोदया उन सबको साथ लेकर इस लेखक के घर पर क्यों आई है। पर उस स्कूल की सिर्फ पुरानी प्रिंसिपल महोदया ही जानती थी कि वास्तव में वह बूढ़ा लेखक ही जोकर है। जब उस बूढ़े लेखक का द्वार बहुत खटखटाने पर भी नही खुला तब प्रिंसिपल महोदया को थोड़ी चिंता हुई और उसी चिंता की वजह से प्रिंसिपल महोदया ने एक कठिन निर्णय लिया और उन्होंने अपने साथ आए शिक्षकों को लेखक के घर के दरवाज़े को तोड़ देने का हुक्म दे दिया और जब उस बूढ़े लेखक के घर का द्वार टूटा तब उस बूढ़े लेखक के घर का भीतर का नज़ारा देख कर सब लोग हक्के बक्के रह गए थे। वह बूढ़ा लेखक अपने बिस्तर पर मृत पड़ा हुआ था और उसकी आँखें खुली हुई थी और उस पल मृत अवस्था में भी उसके चेहरे पर तृप्ति भरी मुस्कान थी और उसकी मुस्कान को देख कर कुछ ऐसा आभास होता था जैसे वह बूढ़ा लेखक अपनी ज़िन्दगी से वह पूर्ण रूप से संतुष्ट था। प्रिंसिपल महोदया के कहने पर उस बूढ़े लेखक के सामान को उल्टपल्ट कर देखा गया और अब प्रिंसिपल महोदया को उस बूढ़े लेखक के जोकर के लिबास की तलाश थी जिस पोशाक को पहन कर वह बूढ़ा लेखक जोकर का किरदार

निभाता था। उस बूढ़े लेखक की आकस्मिक मृत्यु से प्रिंसिपल महोदया की आँखों में से आंसू बहने लगे थे और प्रिंसिपल महोदया को यूं रोता हुआ देख कर स्कूल के सब शिक्षकगण बहुत हैरान हुए थे क्योंकि उनमें से कोई भी इस सच्चाई को नही जानता था कि उस बूढ़े लेखक ने अपनी सच्चाई को छुपाते हुए कितने अच्छे सामाजिक कार्य किये थे और उस बूढ़े लेखक को अपने उन परोपकारी कार्यो के बदले में किसी से कुछ भी नहीं चाहिए था। प्रिंसिपल महोदया जानती थी कि उनका अभिन्न मित्र बिल्कुल भी लोभी नही था और न ही उसे प्रसिद्ध होने की कोई लालसा थी और उस बूढ़े लेखक को किसी से भी किसी प्रकार के इनाम की तमन्ना भी नहीं थी। उस बूढ़े लेखक ने अपना सारा जीवन "नेकी कर दरिया में डाल" वाले मुहावरे पर अमल किया था।

उस लेखक के घर पर छानबीन करने के बाद जब उस बूढ़े लेखक के घर पर पड़ी लकड़ी की अलमारी को खोला गया तो सब यह देख कर हैरान रह गए थे कि उस टूटीफूटी सी लकड़ी की अलमारी में, केवल और केवल एक ही पोशाक रखी हुई थी और वो पोशाक एक जोकर की थी जिसे पहन कर वो बूढ़ा लेखक स्कूल के सब बच्चों का मनोरंजन करता था।

उस बूढ़े लेखक के दुखद अंत को देखने के बाद प्रिंसिपल महोदया ने उस गहरे राज़ से पर्दा उठा दिया था जिस राज़ को प्रिंसिपल महोदया ने वर्षों से अपने दिल में छिपा कर रखा हुआ था। प्रिंसिपल महोदया ने उन दुखी कर देने वाले लम्हों में वहाँ पर उपस्थित सब लोगों को यह बता कर अचंभित कर दिया था कि यह बूढ़ा लेखक ही उनके स्कूल में वर्षों से जोकर का किरदार निभा कर स्कूल के सब बच्चों का मनोरंजन करता आ रहा था और उसने अपनी अदभुत अभिनय प्रतिभा से बच्चों के भविष्य को तनाव रहित बना दिया था। शहर में इस खबर के फैलते ही उस बूढ़े लेखक के घर पर लोगों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी थी और हर छोटा बड़ा इंसान उस परोपकारी जोकर को एक बार ज़रूर देखना चाहता था और लेखक की मौत के बाद उस बूढ़े लेखक के घर पर लोगो का ताँता लग गया था। उस बूढ़े लेखक का टूटाफुटा सा घर उसकी मृत्यु के पश्चात प्रेम की रोशनी से जगमगाने लगा था और लोगो ने रोते रोते उस बूढ़े लेखक को अंतिम विदाई दी थी और अगले दिन बहुत से अख़बारों में उस बूढ़े लेखक पर लेख छपे थे जिन लेखों में लिखा था "गुमनाम मसीहा" और उस लेख के साथ ही उस बूढ़े लेखक की जीवन भर की जमा पूंजी की कुछ तस्वीरें भी छपी थी जिसे देख कर पत्थर से पत्थर दिल के इंसान की आँखों

से भी आंसू बहने लगे थे। उस लेखक की जीवन भर की पूंजी मात्र एक जोकर की पोशाक ही थी और उसके सिवा उस बूढ़े लेखक के पास पूंजी के नाम पर कुछ भी नही था। कितने ही बच्चों ने उस बूढ़े लेखक की अर्थी को कन्धा दिया था और ये सब वो ही बच्चे थे जो अब जवान हो चुके थे और उन सब बच्चों की आँखों में वह खूबसूरत पल किसी चलचित्र की भांति चल रहे थे जब वह बूढ़ा लेखक जोकर बन कर तरह तरह की कलाबाजियाँ खा कर उन्हें हंसाने का प्रयत्न कर रहा होता था। उस बूढ़े लेखक की अंतिम यात्रा में शायद ईश्वर भी रो रहा था क्योंकि अब हल्की हल्की बारिश गिरने लगी थी और उस दृश्य को देख कर कुछ ऐसा लगता था जैसे आज ईश्वर भी उस बूढ़े लेखक की अंतिम यात्रा पर आंसू बहा रहा था।

समाप्त

कहानी 42: किस्सा पासपोर्ट टिकट और यात्रा का

20 वर्षीय आलोक ने जब अपने माता पिता को बताया कि वो कम्प्यूटर इंजीनियरिंग करने के बाद अब मास्टर्स की डिग्री करने के लिए USA जाना चाहता है तो उसके माता पिता आर्थिक तंगियों की वजह से सोच में पड़ गए थे और यह बात सच थी कि इतने पैसों का इंतज़ाम करना उनके लिए लगभग नामुमकिन सा था। पर फिर कुछ दिन के सोच विचार के बाद आलोक के माता पिता ने यह तय किया कि यह उनके बच्चे के भविष्य का सवाल है और उन्होंने आलोक की पढ़ाई के पैसों की व्यवस्था करने के लिए अपने घर के कागज़ात बैंक में गिरवी रख दिए थे। आलोक के पिता एक छोटे से किसान थे और उन्होंने बहुत मेहनत करके अपने बच्चे को उच्च शिक्षा दिलवाई थी और उन्हें इस बात का यकीन था कि जब आलोक अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी करेगा तो वो बैंक का कर्जा भी अदा कर देगा। आलोक बचपन से ही बहुत होनहार विद्यार्थी था और उसके सब शिक्षक उसकी बहुत प्रशंसा करते थे और आलोक के माता पिता अपने बेटे

की प्रशंसा सुनकर बहुत खुश होते थे। आलोक की पढ़ाई के लिए घर के कागज़ात बैंक में गिरवी रखने का निर्णय आलोक के माता पिता के लिए बहुत कठिन निर्णय था और अपने इस निर्णय की वजह से आलोक के माता पिता भीतर से बहुत चिंतित भी थे पर उन्होंने यह बात आलोक पर कभी ज़ाहिर नही होने दी थी। आलोक ने अपने कुछ मित्रों की सहायता से अपना पासपोर्ट और वीज़ा बनवा लिया था और उसने USA के एक कालेज में अपनी एडमिशन फीस भी भर दी थी और सारी कार्यवाही सफलता से समाप्त करने के बाद आज वो USA जाने के लिए घर से निकल रहा था और आलोक की मां बार बार उसको अपने गले से लगा रही थी और उस पल वो मन ही मन में आलोक के लिए बहुत चिंतित थी। वो इस बात को जानती थी कि विदेश में उसके बच्चे की सहायता करने वाला वहां पर कोई भी नही होगा। आलोक के पिता अपने पुत्र को हिदायतें दे रहे थे कि उसे क्या कब और कैसे करना है और आलोक अपने पिता की बातें बहुत ध्यान से सुन रहा था। जब आलोक और उसके माता पिता उबर टैक्सी से दिल्ली एयरपोर्ट की ओर रवाना हुए उस पल विदाई के लम्हों के बारे में सोचकर टैक्सी में सन्नाटा छाया हुआ था और दिल्ली एयरपोर्ट पर पहुंचने पर आलोक के माता पिता एयरपोर्ट की चमकदमक और गहमागहमी को देख कर बहुत हैरान हुए थे। आलोक के माता पिता एक छोटे से किसान परिवार से ताल्लुक रखते थे और शहर से बहुत दूर गांव में रहते थे और इतनी चकाचौंध उन्होंने अपने सारे जीवन में कभी भी नही देखी थी। इस बीच आलोक ने बहुत जल्दी से टैक्सी से अपना सारा सामान बाहर निकाला था और एक एयरपोर्ट में ट्राली की मदद से वो एयरपोर्ट के भीतर जाने के लिए द्वार की ओर बढ़ गया था और उसके माता पिता आसपास की चकाचौंध देखते हुए आलोक के साथ ही चल रहे थे। आलोक वक्त से 5 घंटे पहले ही दिल्ली एयरपोर्ट पर पहुंच गया था और अभी गेट खुलने में 2 घंटे का समय लगभग बाकी था। इस बीच आलोक अपने सारे सामान की बहुत ध्यान से जांच कर रहा था पर वो उस वक्त बहुत चिंतित हो गया था जब उसका एक छोटा सा कमर में लटकाने वाला पाउच उसे अपने सामान में कहीं पर भी दिखाई नही दिया था और उसी पाउच में उसकी USA जाने की टिकटें थी पासपोर्ट था, वीज़ा था और कुछ डालर थे और जब बहुत ढूंढने पर भी उसे वह पाउच कही दिखाई नही दिया तब वो अपना सिर पकड़ कर वहीं ज़मीन पर बैठ गया था और रोने लगा था वो जानता था कि अब उसके पास वक्त बहुत कम है और उसके माता पिता ने कितनी कठिनाई से इस सब की व्यवस्था

की थी और आलोक को अब सब कुछ मिट्टी में मिलता दिखाई दे रहा था और उसके माता पिता इस सब के लिए बिलकुल भी तैयार नहीं थे और वो भी अपना सिर पकड़ कर आलोक के पास ही जमीन पर बैठ गए थे और आने जाने वाले सब यात्री उनकी तरफ बहुत सहानुभूति से देख रहे थे और उस बीच किसी यात्री ने एक पुलिस अधिकारी को भी इस बात की जानकारी दे दी थी और वह पुलिस अधिकारी आलोक से इस बारे थोड़ी पूछताछ करने लगा था और फिर उसने उसकी छानबीन शुरू कर दी थी और इस बीच समय धीरे धीरे बीतता जा रहा था और आलोक ने देखा कि एयरपोर्ट का प्रवेश द्वार अब तक खुल चुका था और लोग अपना टिकट और पासपोर्ट दिखा कर भीतर जाने लगे थे और जो लाइन आलोक को बहुत लम्बी दिखाई दे रही थी वो लाइन अब धीरे धीरे छोटी होने लगी थी और उस दृश्य को देख कर आलोक का दिल बैठा जा रहा था और आलोक के माता पिता को उस पल कुछ भी समझ नही आ रहा था कि अब उन्हें क्या करना चाहिए और वैसे भी वो अनपढ़ किसान थे और यह ऐसी परिस्थितियाँ थी जिससे अच्छे अच्छे पढ़े लिखे लोगों के मनोबल गिर सकते थे। आलोक की मां अपने बेटे की हालत को देख कर मन ही मन में ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी और वो ईश्वर से कह रही थी "हे ईश्वर आप हमारी मदद कीजिए और हमें इस विपदा से बचाइये" उसी समय एयरपोर्ट पर एक टैक्सी आ कर रुकी और उसमें से एक शख्स बाहर निकला और वो एयरपोर्ट के उस गेट की ओर बढ़ गया था जहां से सब यात्री धीरे धीरे एयरपोर्ट के भीतर जा रहे थे। वो आदमी सब तरफ अपनी नज़र दौड़ाने के बाद उस ओर बढ़ गया था जहां पर आलोक अपने सारे परिवार के साथ हैरान परेशान सा बैठा हुआ था और उस शख्स ने आते ही आलोक के कंधे पर अपनत्व से अपना हाथ रखते हुए बहुत आत्मीयता से उससे कहा था "आलोक आपका ही नाम है" उस पल आलोक की आंखों से झर झर आंसू बह रहे थे और वो अब अपने पासपोर्ट और टिकट के मिलने की उम्मीद बिलकुल खो चुका था और उसी मायूसी की अवस्था में उसने उस शख्स की ओर देख कर रुआंसी सी आवाज़ में उससे कहा था "जी मेरा ही नाम आलोक है" और क्षण भर के लिए आलोक की नम आंखों में हैरानी के भाव उभर आए थे कि यह कौन आदमी जो मेरे बारे में पूछताछ कर रहा है।

तब उस शख्स ने अपना बैग खोलकर आलोक का पासपोर्ट और टिकट वाला पाउच निकाला था और उसे आलोक की ओर बढ़ा दिया था और आलोक की ओर

देखते हुए उससे कहा था "शायद आप अपना यह बेशकीमती सामान उबर टैक्सी में भूल गए थे और मुझे यह टैक्सी की सीट के नीचे पड़ा हुआ मिला था" उस पाउच को देख कर आलोक की प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं रहा था और सच बात तो यह थी कि वो अपनी चीजों की मिलने की उम्मीद बिलकुल खो चुका था उसके लिए यह पल किसी चमत्कार से कम नहीं थे और खुशी से उसकी आंखों से झर झर आंसू बहने लगे थे और उस पल आलोक उस शख्स के पैरों में गिर पड़ा था और उनका धन्यवाद कर रहा था। उस शख्स ने जब यह देखा तो उसने आलोक को उसके कंधे पकड़ कर ऊपर उठाया था और उसे अपने गले से लगा लिया था और आसपास खड़े जितने भी यात्रियों ने यह दृश्य देखा था उन सब की आंखें नम हो चुकी थी और इस बीच आलोक के माता पिता उस शख्स का धन्यवाद कर रहे थे और उस पल आलोक की मां की आंखों से आंसू बह रहे थे और वो मन ही मन में ईश्वर का धन्यवाद कर रही थी। उस शख्स ने बताया कि अचानक उसकी मां की तबीयत खराब हो गई थी और वो भी उसी उबर टैक्सी से अस्पताल जा रहे थे जिस टैक्सी पर कुछ समय पहले आलोक अपने माता पिता के साथ बैठा हुआ था और उस शख्स को टैक्सी की सीट के नीचे यह पाउच पड़ा हुआ दिखाई दिया था और पाउच के सामान की जांच पड़ताल करने के बाद उसे यह पता चला था कि यह पाउच किसी आलोक नाम के विद्यार्थी का है और यह समान उसके लिए बहुत कीमती है और उसने अपनी मां को अस्पताल में दाखिल करवाने के बाद अपनी पत्नी से कहा था कि तुम मां का ध्यान रखो तब तक मैं यह पाउच एयरपोर्ट पर उस विद्यार्थी के हवाले करके आता हूं। वो शख्स पाउच में पड़े सामान से यह समझ चुका था कि इस पाउच को न पा कर वह विद्यार्थी बहुत परेशान हो रहा होगा। आलोक उस शख्स की सब बातें बहुत ध्यान से सुन रहा था और उसने उस शख्स से कहा था कि "मैं अपनी जान देकर भी आपका यह अहसास नही चुका पाऊंगा" और यह कहते हुए आलोक बहुत भावुक हो चुका था। आलोक की भावनाओं को समझ कर उस शख्स ने मुस्कराते हुए आलोक से कहा था "इसमें अहसान वाली कोई बात नही है यह मेरा फ़र्ज़ था"अब तक वह टैक्सी ड्राइवर अपनी टैक्सी पार्किंग में लगाने के बाद वहां पर आ चुका था और वो आलोक से कह रहा था "अब आप अमरीका में जाकर खूब मन लगा कर पढ़िएगा और फिर जल्दी से वापिस लौट आईयेगा" उस टैक्सी ड्राइवर की इस प्यार भरी बात को सुनकर वहां पर खड़े सब यात्री मुस्कराने लगे थे और मौका देख कर आलोक के पिता ने उस

टैक्सी ड्राइवर को एयरपोर्ट आने के पैसे भी दे दिए थे जिसे उस टैक्सी ड्राइवर ने बहुत विनम्रता से वहां का माहौल देखते हुए इंकार कर दिया था पर आलोक के पिता का बहुत जोर देने पर उसने वह पैसे स्वीकार कर लिए थे। अब तक आलोक की खोई हुई चीजों को छानबीन करने वाला वह पुलिस अधिकारी भी वहां पर आ चुका था और उस शख्स की सब बातें बहुत ध्यान से सुन रहा था और उसने आगे बढ़ कर उस शख्स से हाथ मिलाया था और उसकी इस अच्छी बात के लिए उसे बधाई दी थी और उस पल आसपास खड़े सब यात्रियों ने उस शख्स के लिए तालियाँ बजा कर उसका स्वागत किया था और इसी खुशी भरे माहौल में उस शख्स के मोबाइल की घंटी बजी थी और उसके फोन उठाने पर दूसरी तरफ से उसकी पत्नी ने उसे इस बताया था कि "मां अब बिल्कुल ठीक है और कुछ समय बाद हम उन्हें घर वापिस लेकर जा सकते है" यह सुनकर उस शख्स की जान में जान आई थी और वो मन ही मन में ईश्वर का धन्यवाद कर रहा था और विदाई के आंखों को नम कर देने वाले उन लम्हों में आलोक एयरपोर्ट के प्रवेश द्वार पर अपनी टिकट और पासपोर्ट दिखाकर एयरपोर्ट के भीतर जा रहा था और भीतर जाने से पहले उसने हाथ जोड़ कर सबका तहे दिल से धन्यवाद किया था और आंखों को नम कर देने वाले उन लम्हों में वहां पर खड़े बहुत से अजनबी लोगों ने भी आलोक को उसके अच्छे भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी थी और आलोक ने मुस्करा कर उसे स्वीकार किया था और फिर आलोक सिर्फ क्षण भर में ही उस शीशे के प्रवेश द्वार से अपने माता पिता की आंखों के सामने से ओझल हो गया था पर आलोक के माता पिता हाथ हिलाते हुए बहुत देर तक उस शीशे के प्रवेश द्वार से भीतर देखते रहे थे और फिर नम आंखों से अपने गांव की ओर जाने वाले रास्ते पर आगे बढ़ गए थे।

समाप्त

कहानी 43: माता पिता

एक वृद्ध दंपति जयराम और मीरा श्रीवास्तव रक्षा मंत्रालय में 38 वर्ष कार्य करने के बाद 60 वर्ष की उम्र में रिटायर्ड हो गए थे और जिंदगी में कुछ रचनात्मक कार्य करने की सोच की वजह से एक दिन वो शहर से बहुत दूर एक छोटे से गांव में अनाथ लड़कियों के एक आश्रम में गए थे और उन्होंने देखा कि उस खूबसूरत पहाड़ी क्षेत्र में बने उस अनाथाश्रम के साथ एक पाठशाला भी थी और उस पाठशाला के साथ ही कुछ कमरों में बच्चों के रहने की व्यवस्था भी की हुई थी पर यह बहुत दुख की बात थी कि आश्रम वालों के पास अधिक पैसे न होने के वजह से अनाथाश्रम और पाठशाला की हालत बहुत दयनीय थी। अनाथाश्रम के स्कूल में 5वीं कक्षा से लेकर 12कक्षा तक की पढ़ाई की व्यवस्था थी और आश्रम की पाठशाला में सब शिक्षक, बच्चों को अच्छी शिक्षा देने को कोशिश कर रहे थे क्योंकि सब शिक्षक इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानते थे कि बिन मां बाप के बच्चों का भविष्य पूरी तरह से शिक्षा के ऊपर ही निर्भर करेगा।

जयराम और मीरा ने सारा आश्रम घूम कर वहां की व्यवस्था देखी थी और उन्होंने आश्रम के कुछ बच्चों से बातचीत भी की थी और बच्चों के साधारण से वस्त्र और उनके

चेहरे पर मायूसी के भावो को देख कर उनका दिल भर आया था। जयराम और मीरा बच्चों की दयनीय अवस्था को देख कर मन ही मन में बहुत दुखी हो गए थे और जब पाठशाला की व्यवस्था संभालने वाली एक शिक्षिका ने उन्हें बच्चों की साथ हुई कुछ दुखद घटनाओं का वर्णन किया तो उन दुखद घटनाओं को सुनकर उन दोनो की आँखें भर आई थी और वो दोनो अनाथाश्रम से भारी मन से अपने घर वापिस लौटे थे और उस पल दोनो ने ही मन ही मन में यह निश्चय कर लिए था कि अब वो अपना सारा जीवन अनाथ बच्चों की मदद करते हुए बिताएंगे और यही सब सोचकर उन्होंने अनाथालय की संचालिका को अपने दिल की बात बता दी थी कि वो अनाथाश्रम की सहायता करना चाहते हैं और इस संदर्भ में उन्होंने अनाथाश्रम की उस संचालिका को बताया कि वो अनाथाश्रम के सब बच्चों की छोटी छोटी जरूरतों को पूरा करने की जी जान से कोशिश करना चाहते हैं और इसके साथ ही उन्होंने हाथ जोड़ कर उस संचालिका से विनती भी की थी कि वो अनाथाश्रम के सब बच्चों की सहायता करने के बाद भी उन सब बच्चों के सामने कभी भी नहीं आना चाहते हैं और वो सब बच्चों से छिप कर ही रहना चाहते हैं और संचालिका के पूछने पर कि "आप ऐसा क्यों करना चाहते है अगर आप उनकी सहायता कर रहे हैं तो आपको उनके सामने भी आना चाहिए" संचालिका के इस प्रश्न का जयराम और मीरा के पास कोई संतोषजनक उत्तर नहीं था पर वो अपने इरादे से टस से मस भी नही हुए थे और उन्होंने बातों ही बातों में उस संचालिका महोदया से एक वादा भी ले लिया था कि वो बच्चों को उनके बारे में कभी भी कुछ नहीं बताएंगी। फिर जयराम और मीरा ने उस संचालिका को अपनी सारी योजना बताई थी कि वो किस प्रकार से बच्चों की सहायता करना चाह रहे हैं और उनकी सारी बातें सुनकर संचालिका उनसे बहुत प्रभावित दिखाई दे रही थी और उसने उनसे वादा किया था कि बिना उनकी इजाज़त के वो बच्चों को उनके बारे में कभी कुछ नहीं बताएंगी। जयराम और मीरा की योजना थी कि अनाथाश्रम की सब लड़कियाँ सप्ताह में एक बार अपनी छोटी छोटी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने माता पिता को पत्र लिख कर उन्हें बताएंगी और उस पत्र को पाठशाला के लैटर बॉक्स में डाल दिया जाएगा और सप्ताह में सिर्फ एक बार उनके माता पिता बच्चों के लिखे खत पढ़ेंगे और उनका जवाब देने के साथ साथ उनकी जरूरतों को पूरा करने की कोशिश भी करेंगे और अनाथाश्रम की संचालिका को जयराम और मीरा का यह सुझाव बहुत पसंद आया था और वो इस बात को जानती थी कि इस

खूबसूरत योजना से अनाथ बच्चियों का मनोबल तो बढ़ेगा ही पर साथ ही इस योजना से उनमें एक नई ऊर्जा का संचार भी होगा।

जयराम और मीरा को उस गांव का शांत माहौल बहुत भा गया था और उन्होंने उस गांव में अनाथाश्रम से कुछ ही दूरी पर एक छोटा सा घर खरीद लिया था और उस घर पर कुछ पैसे खर्च कर के उन्होंने उस घर को अपने रहने लायक बना लिया था और गांव के उस शांत वातावरण में आकर वो बहुत खुश थे। जयराम और मीरा पैसे के मामले में हर तरह से संपन्न थे और उन दोनो को सरकार से लगभग 1.5 लाख रुपए की पेंशन आ रही थी और सादी सी ज़िंदगी जीने की वजह से उन्होंने अपनी जिंदगी में बहुत से पैसे जोड़ कर रखे हुए थे और उनकी खुद की जरूरतें बहुत कम थी और वो दोनो पुश्तैनी तौर पर भी बहुत अमीर थे पर उन दोनो में अमीरों वाले कोई भी चोंचले नहीं थे और अपने खुद के बच्चे न होने की वजह से उन्होंने अनाथाश्रम के बच्चों को सहारा देने का अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लिए था और उनके इस नेक कार्य में उनकी मदद करने के लिए उनके साथ वर्षों पुराने नौकर नौकरानी बनवारी और पार्वती थे और उनका एक बेटा भी था जो अभी कालेज में ग्रेजुएशन कर रहा था और उसका सारा खर्चा जयराम और मीरा जी कर रहे थे और बनवारी और पार्वती का बेटा आलोक उनके सामने ही पल कर बड़ा हुआ था और वो अपने माता पिता की तरह ही बहुत आज्ञाकारी था। बनवारी और पार्वती घर के सब काम बहुत अच्छे तरीके से कर लेते थे और बनवारी, जयराम और मीरा जी की कार भी चलाता था और वर्षों से उनके साथ रहने की वजह से जयराम और मीरा उन दोनो को अपने परिवार का सदस्य ही समझते थे और बनवारी और पार्वती उम्र में जयराम और मीरा से थोड़े ही छोटे थे और वो दोनो जयराम और मीरा का बहुत सम्मान करते थे और उनके बोलने से पहले ही वो उनके दिल की बात समझ लेते थे और उनकी इसी बात से उनके आपसी रिश्ते को समझा जा सकता था और वो दोनो इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानते थे कि उनके मालिक ईश्वर के नेक बंदे हैं।

एक दिन अनाथालय की संचालिका ने स्कूल में प्रार्थना के बाद सब बच्चों को बताया कि आपकी छोटी छोटी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए स्कूल की तरफ से माता पिता के नाम से मदद करने का एक नया सिलसिला शुरू किया गया है और आप सब बच्चों को सिर्फ इतना ही करना है कि आपको पत्र लिख कर अपने माता पिता को अपनी छोटी छोटी जरूरतों को जानकारी देनी है और अगर आपके माता पिता को लगा कि वो

आपकी उन जरूरतों को पूरा कर सकते है तो वो इसकी कोशिश ज़रूर करेंगे और आपको आपके लिखे पत्र का जवाब भी देंगे पर आप सब को अपने लिखे खत पर अपनी तस्वीर और अपने नाम के साथ अपनी कक्षा के बारे में भी उन्हें जानकारी देनी होगी कि आप किस कक्षा के विद्यार्थी हैं और उन पत्रों पर तस्वीरें लगाने का काम आपकी शिक्षिका करेंगी। सब कुछ बताने के बाद अनाथालय की संचालिका ने सब बच्चों की ओर देखते हुए उनसे पूछा था "क्या इस विषय में किसी को कुछ और पूछना है?" तब एक 5 वीं कक्षा की विद्यार्थी ने हाथ खड़ा करने के बाद संचालिका महोदया से पूछा था "क्या वो हमें खिलौने भी लाकर देंगे?" उस छोटी सी बच्ची की बात सुनकर स्कूल के सब बच्चे हंसने लगे थे, तब संचालिका महोदया ने सब बच्चों की ओर देखते हुए उनसे कहा था "जैसे आप अपने माता पिता से कुछ मांगते थे और वो आपको कुछ चीजें लाकर देते थे और कुछ चीजों के लिए वो आपको मना भी कर देते थे इसमें भी सब कुछ वैसा ही होगा पर हो सके अगर तो आप इस बात का ध्यान रखना कि माता पिता को 180 बच्चों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उनकी छोटी छोटी जरूरतों को पूरा करना है इसलिए आप कभी भी निराश मत होइएगा अगर उन से आपकी कोई जरूरत पूरी नहीं हो सकी तो अगली बार आप फिर खत लिख कर उन्हें अपनी कोई दूसरी जरूरत बताइएगा हो सकता है कि वो आपकी उस जरूरत को मुनासिब समझ कर उसे पूरा कर दें और आप सब इस बात को याद करना कि कभी कभी आपके माता पिता भी आपकी जरूरत नहीं पूरी कर पाते थे और इसकी बहुत सी वजह हो सकती हैं" सब बच्चे संचालिका महोदया की सब बातें बहुत ध्यान से सुन रहे थे तब एक 11 वीं कक्षा की एक विद्यार्थी ने संचालिका महोदया से पूछा था "पर ये माता पिता कौन हैं क्या हम उनसे मिल सकते हैं" तब संचालिका महोदया ने बहुत चतुराई के साथ उस विद्यार्थी को जवाब देते हुए उससे कहा था "आप सिर्फ इतना समझ लें कि यह व्यवस्था सरकार ने आप सबकी जरूरतों का ध्यान रखते हुए की है और वास्तव में ऐसा कोई भी आदमी नही हैं" पर वो विद्यार्थी संचालिका महोदया के इस जवाब से कुछ खास संतुष्ट नहीं दिखाई दे रही थी। इस बीच कुछ शिक्षकाओं ने सब बच्चों को पत्र दे दिए थे और उन पत्रों को सब बच्चे अपने स्कूल के बस्तों में हिफाज़त से रख कर अपनी अपनी कक्षाओं में जाने शुरू हो गए थे और उन सब बच्चों के जाने के बाद अनाथालय की सब शिक्षिकाएं माता पिता की उस नई योजना पर बातें करने लगे थे और इतना तो सब शिक्षक समझ ही गए थे कि उनकी संस्था को

कोई दयालु मददगार मिल गया है और वो किसी वजह से उन सबके सामने नहीं आना चाहता है और अब सब शिक्षकों और संचालिका महोदया को भी पहले हफ्ते का बहुत बेसब्री से इंतजार था और उन्हें इस बात का खुद भी पता नहीं था कि बच्चों के लिखे पत्रों की माता पिता क्या प्रतिक्रिया देंगे और माता पिता के पिटारे में से बच्चों के लिए कौन कौन से तोहफे निकलेंगे।

जयराम और मीरा अनाथाश्रम को पैसे देकर उनकी सीधी तौर पर सहायता भी कर सकते थे पर वो इस बात को जानते थे कि उनके इस तरह करने से वो दिमागी तौर पर सब बच्चों के साथ नही जुड़ पाएंगे और इस प्रकार उनके व्यक्तिगत तौर पर पत्र व्यवहार करने से उन्हें इस बात का भी पता चल जाना था कि वह बच्चा किस प्रकार की मुश्किल में से गुजर रहा है और वो जानते थे कि इतने सारे बच्चों के साथ व्यक्तिगत तौर पर जुड़ना कोई इतना आसान काम भी नही था पर उन्होंने इस मुश्किल कार्य के लिए अपनी कमर कस ली थी और अब वो पीछे हटने वाले नही थे।

अनाथाश्रम की संचालिका बहुत विशाल हृदय की मालिक थी और उसने सब कुछ समझते बुझते हुए बच्चों की सहायता करने के ख्याल से वहां पर नौकरी की थी और उनके पति बैंक मैनेजर थे और वो भी बहुत दयालु और ईमानदार इंसान थे। अनाथाश्रम की संचालिका महोदया ने सब शिक्षकों को बच्चों की बहुत सी तस्वीरें भेज दी थी और अनाथाश्रम के बच्चों ने पहली बार माता पिता को खत लिखने की हिम्मत जुटाई थी और उन्हें अपनी छोटी छोटी जरूरतों से अवगत करवाया था और उन सब बच्चों के शिक्षकों ने बच्चों के लिखे पत्रों के ऊपर उनकी तस्वीरें लगा दी थी और उन्हें सही सलामत अनाथाश्रम के लैटर बॉक्स में डाल दिया था और अब अनाथाश्रम के सब बच्चों के साथ साथ शिक्षकों को भी बच्चों के लिखे पत्रों के जवाब आने का बहुत बेसब्री से इंतजार था और यह बात सच थी कि सब शिक्षक भी इस तरह के किसी प्रयोग को जीवन में पहली बार देख रहे थे और उनके लिए भी वह क्षण किसी करिश्में से कम नहीं थे।

जब बनवारी पोस्टमैन के कपड़े पहन कर अनाथाश्रम से सब बच्चों के पत्र लेकर वहां से निकला उस पल जयराम और मीरा बहुत बेसब्री से उसके घर वापिस लौटने का इंतज़ार कर रहे थे। उन बेमिसाल लम्हों में सब भीतर उत्साह लिए हुए और बहुत चाव से

बच्चों के लिखे पत्रों को पढ़ने लगे थे और उन भावुक कर देने वाले पत्रों को पढ़ कर कभी कभी उन सब की आंखें क्षण भर के लिए नम हो जाती थी।

बच्चों की प्यारी बातों को पढ़ कर सबके चेहरे खिल गए थे और अब चारो कार पर सवार होकर शहर की ओर चल दिए थे और अब वो अपने जादू के पिटारे में सब बच्चों की ख्वाहिश के मुताबिक उनकी जरूरत की छोटी छोटी चीजें खरीदने लगे थे और उन्हें अच्छी तरह पैक करने के बाद उन्होंने अनाथाश्रम के हर बच्चे को उसके लिखे पत्र का जवाब भी दिया था और इस खूबसूरत सिलसिलों की वजह से बच्चों और उनके बीच एक खूबसूरत रिश्ते का जन्म हुआ था और उस दिन जयराम और मीरा ने तय कर लिया था कि अब यह सिलसिले उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त होंगे।

सब बच्चे बहुत बेसब्री से अपने लिखे खत के जवाब का इंतजार कर रहे थे और जिस दिन उनके लिखे पत्रों का जवाब आया और उनकी बताई चीजें उन सब बच्चों को मिल गई उस पल उन सब बच्चों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था और सब शिक्षक भी उस आश्चर्जनक दृश्य को देख रहे थे और उस जादू के पिटारे में से उन सब के लिए भी बहुत से तोहफे निकले थे और माता पिता ने सब शिक्षकों के लिए भी एक पत्र लिखा था और उस पत्र को पढ़ने के बाद संचालिका महोदया के साथ साथ सब शिक्षक थोड़े भावुक हो गए थे और उस पत्र में माता पिता ने लिखा था "आपके महत्वपूर्ण योगदान के बिना इन बिन माता पिता के बच्चों का भविष्य उज्ज्वल नही बन सकता और हमें उम्मीद हैं कि जब सब बच्चे इस खूबसूरत संस्था से पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़े हो जाएंगे उस पल सब बच्चे आप सबको याद करेंगे और निश्चित तौर पर अगर घर पर माता पिता बच्चों की देखभाल करते हैं तो बाहर की दुनिया से जूझने के लिए उन्हें उनके शिक्षक तैयार करते हैं और सब शिक्षकों की कोशिश होती है कि उनके पढ़ाए हुए बच्चे बाहर की दुनिया में सफलता प्राप्त करें और उनका भविष्य उज्जवल बने। अब आपकी और हमारी कोशिश होगी कि जो भी बच्चे इस अनाथाश्रम में आयेंगे हम और आप मिलकर उन्हें घर जैसा माहौल देने की कोशिश करेंगे और अब यह सिलसिले सदा जारी रहेंगे और आपके महत्वपूर्ण योगदान के बिना यह सब मुमकिन नही हो सकता। आप सब से सहयोग की आशा है"।

आप सब का शुक्रिया ..

आपके माता पिता ..

संचालिका महोदया ने उस पत्र को सब शिक्षकों के बीच में पढ़ा था और उस पत्र का उन सब पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा था।

इसी तरह हर सप्ताह बच्चे माता पिता को पत्र लिखते रहे और इस सकारात्मक माहौल से अनाथाश्रम का माहौल बदल गया था और अब सब बच्चों के साथ शिक्षकों को भी सप्ताह के अंत का बहुत बेसब्री से इंतज़ार रहता था और जब उन सबके सामने माता पिता का भेजा हुआ पिटारा खोला जाता था उस पल सारे अनाथाश्रम का माहौल रातरानी के फूलों की तरह महकने लगता था।

एक बार एक पांचवीं कक्षा की छात्रा ने उन्हें बहुत मासूम सा खत लिखा था, जिसे पढ़ कर चारों की आंखों में आंसू आ गए थे और इस खत में उस बच्चे ने लिखा था "मैंने अपने माता पिता को अंतिम बार लातूर के भूकंप में देखा था और उस समय मैं अपनी कुछ सहेलियों के साथ अपने घर के आंगन में खेल रही थी कि मैंने देखा कि अचानक बहुत जोर से धरती हिलने लगी थी और मेरे देखते ही देखते हमारा घर गिर गया और उसमें मेरे माता पिता दब गए थे और बहुत कोशिश करने पर भी उन्हें बचाया नहीं जा सका था और उस दिन मैंने गांव में बहुत से लोगों को मरते हुए देखा था और अब वो भयानक दृश्य मेरी आंखों के सामने हमेशा रहता है और मैं रात को डर कर उठ जाती हूं, मां तुम कहां हो, तुम मुझ से मिलने क्यों नहीं आती" और उस खत पर जयराम और मीरा ने आंसुओं के निशान देखे थे जिन्हें देख कर उन्हें कुछ ऐसा अहसास हुआ था जैसे खत लिखते समय वह छोटी बच्ची रो रही होगी और उस बच्ची के भावुकता से भरे उस खत को पढ़ कर उन चारों का कलेजा मुंह को आ गया था और अधिक भावुक हो जाने की वजह से मीरा अपने आंसुओं को रोक नहीं पाई थी और वो रोने लगी थी। उस बच्ची के पत्र को पढ़ने के बाद जयराम, बनवारी और पार्वती भी बहुत भावुक हो गए थे और वो सब उस दुखद दृश्य की कल्पना कर रहे थे और उन्हें इस बात का भी अहसास था कि उस बच्ची को अपने माता पिता की आकस्मिक मृत्यु का बहुत गहरा सदमा लगा था और उस पर उसका अनाथाश्रम में आकर रहना उसके लिए और भी दुख की बात बन गई थी। जयराम जी ने बहुत प्रेम से मीरा के कंधे पर हाथ रखकर उन्हें समझाने वाले अंदाज़ में कहा था "मीरा हमें बच्चों के दुख को समझ कर उसका समाधान खोजना है

और अगर हम खुद भी भावुकता की बातों में उलझ जाएंगे तो निश्चित तौर पर हम थोड़े कमज़ोर हो जायेंगे और फिर हम उन मासूम बच्चों की मदद नहीं कर पाएंगे, इसलिए पत्र पढ़ते समय अधिक भावुक होने की आवश्यकता नही है बल्कि बच्चों के लिखे पत्रों को पढ़ कर उसका समाधान खोजना हमारे लिए अधिक जरूरी है" तब तक मीरा जी अपनी आंखों में आए आंसुओं को पोंछ चुकी थी और उन्होंने जयराम से कहा था "आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं अब इसके बाद ऐसा कभी भी नहीं होगा और मैं अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखने की कोशिश करूंगी" यह कहते हुए मीरा सामान्य होने की कोशिश करने लगी थी क्योंकि उन्हें इस बात का पता था कि इतने अच्छे कार्य में किसी भी वजह से बाधा उत्पन्न होना अनाथाश्रम के सब बच्चों के भविष्य पर ग्रहण लगने जैसा हो जाएगा और वो ऐसा हरगिज़ भी नही चाहती थी।

बनवारी और पार्वती का बेटा आलोक कम्प्यूटर इंजीनियरिंग की शिक्षा लेने के बाद शहर से गांव में आ गया था और वो अपने माता पिता की अच्छी परवरिश की वजह से अधिक महत्वकांक्षी नही था और वो थोड़े में ही संतोष करने वाला एक ईमानदार और दयालु इंसान था। आलोक को अच्छी तरह से परखने और उससे बातचीत करने के बाद जयराम और मीरा ने अनाथाश्रम की संचालिका महोदया से आलोक की नौकरी के लिए सिफारिश की थी और उनकी बात को सम्मान सहित स्वीकार करने के बाद संचालिका महोदया ने आलोक को अनाथाश्रम में कम्प्यूटर के शिक्षक की नौकरी दे दी थी और इस नए युग को देखते हुए अनाथाश्रम के सब बच्चों को आलोक जैसे पढ़े लिखे शिक्षक की बहुत अवश्यकता भी थी। आलोक ने शहर के सबसे अच्छे कालेज से कम्प्यूटर इंजीनियरिंग की शिक्षा ली थी और अब वो बहुत ईमानदारी और मेहनत से अनाथाश्रम के सब बच्चों को कम्प्यूटर की शिक्षा देने लगा था जो आजकल के आधुनिक युग को देखते हुए सब बच्चों के लिए अतिआवश्यक थी।

ऐसे ही कुछ वर्ष बीत गए थे और अब उसी अनाथाश्रम से पढ़ कर निकली एक लड़की तारा को जयराम और मीरा ने अपने पास नौकरी पर रख लिया था। तारा बहुत ईमानदार और मेहनती लड़की थी और अब वो जयराम और मीरा जी के सब सामाजिक कार्यों में उन्हें अपना सहयोग देने लगी थी और तारा को काम पर रखने से पहले जयराम और मीरा जी ने उस बच्ची से वादा लिया था कि वो उनके बारे में कभी भी किसी को कुछ भी नही बताएगी और तारा को इस बात का पहली बार पता चला था कि वास्तव

में अनाथाश्रम की सहायता करने वाले माता पिता कौन हैं और यह जानकर उसका मीरा जी और जयराम जी के लिए सम्मान और भी बढ़ गया था। इस बीच जयराम और मीरा जी को लगा कि आलोक और तारा एक दूसरे को पसंद करने लगे है और यह बात उनकी तेज़ नजरों से छिपी नहीं रह सकी थी और मीरा और जयराम जी ने बनवारी और पार्वती की रज़ामंदी से आलोक का विवाह तारा के साथ कर दिया था और विवाह के बाद आलोक और तारा जयराम और मीरा जी के साथ ही रहने लगे थे।

इसी तरह शांतिपूर्वक 20 वर्ष बीत गए थे और माता पिता का खत लिखने और बच्चों को उनकी जरूरत के मुताबिक सामान भेजने का सिलसिला जारी रहा था और इस बीच आलोक और तारा ने दो बहुत प्यारे से बच्चों को भी जन्म दिया था और अब वो बच्चे भी बहुत बड़े हो गए थे और वो शिक्षा ग्रहण करने के लिए शहर में रहते थे।

एक दिन एक दुखद घटना घटी और 83 वर्ष की उम्र में रात को दिल का दौरा पड़ने से जयराम जी का देहांत हो गया और उन दुखद लम्हों में सारा परिवार और अनाथाश्रम की संचालिका महोदया भी बहुत दुखी हुए थे। इतने वर्ष तक साथ में काम करने की वजह से संचालिका महोदया को भी अब जयराम और मीरा जी की आदत सी पड़ चुकी थी और उन्हें इस बात का यकीन नही हो रहा था कि जयराम जी अब उनके बीच में नही रहे थे। संचालिका महोदया वर्षों से जयराम और मीरा जी के साथ काम करने की वजह से अब वो जयराम और मीरा जी को अपना माता पिता ही समझने लगी थी और दुख की उन घड़ियों में मीरा जी ने अनाथाश्रम की संचालिका महोदया को अपने निकट बुलाया था और उनसे कहा था कि किसी भी हालत में माता पिता का शुरू किया हुआ यह कार्यक्रम थमना नहीं चाहिए और उन्होंने संचालिका महोदया से विनती की थी कि भविष्य में आलोक और तारा को और उनके बच्चों को भी उनके सहयोग की आवश्यकता पड़ेगी और उन्होंने बातों के उन्हीं सिलसिलों में संचालिका महोदया को बताया था कि जयराम जी ने अपनी मृत्यु से पहले एक वकील से बातचीत करके घर की एक ट्रस्ट बना दी थी और अब अगले 30 वर्षों तक अनाथाश्रम को जयराम जी की बनाई हुई उस ट्रस्ट की तरफ से वैसा ही सहयोग मिलता रहना था और माता पिता का वह बेमिसाल सिलसिला अगले 30 वर्षों तक ऐसे ही जारी रहना था और सुख दुख के इन्हीं लम्हों के बीच कुछ वर्ष पहले बनवारी और पार्वती का भी देहांत हो गया था।

कुछ वर्ष सुख शांति से गुजारने के बाद एक दिन अचानक मीरा जी भी दिल का दौरा पड़ने से चल बसी थी और उन्होंने अपना किया वादा निभाया था और मरने से पहले उन्होंने आलोक और तारा से वचन लिया था कि अब वो दोनो माता पिता बन कर अनाथाश्रम के बच्चों की सहायता करेंगे और आलोक और तारा ने पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ मीरा जी से किया हुआ वादा निभाया था।

अनाथाश्रम की संचालिका महोदया ने अपने कमरे में बने मंदिर में जयराम जी और मीरा जी की एक तस्वीर लगाई हुई थी और वो उस तस्वीर के सामने दीया जलाना कभी नहीं भूलती थी और वो अक्सर उन्हें याद करती थी और उस पल उनकी आंखें नम हो जाती थी।

एक दिन जब आलोक और तारा अनाथाश्रम की संचालिका महोदया के आफिस में बैठे हुए थे तब एक अधेड़ उम्र के दंपति उनके आफिस में आए थे और उन्होंने आश्रम के लिए कुछ सहायता राशि संचालिका महोदया के हाथों में सौंपी थी और उन्होंने तस्वीर की ओर देखते हुए अचानक संचालिका महोदया से पूछा था "ये किसकी तस्वीर हैं" तब संचालिका महोदया ने जयराम जी और मीरा जी की तस्वीर की ओर देखते हुए बहुत सम्मान के साथ उनसे कहा था "ये मेरे माता पिता की तस्वीर है" और संचालिका महोदया का उत्तर सुनकर आलोक और तारा बहुत सम्मान से संचालिका महोदया की ओर देखने लगे थे और उस पल उन्हें संचालिका महोदया के भीतर जयराम और मीरा जी के अंश दिखाई देने लगे थे।

समाप्त